

**TEXT FLY
WITHIN THE
BOOK ONLY**

UNIVERSAL
LIBRARY

OU_182091

UNIVERSAL
LIBRARY

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. 81.092/356H Accession No. G.H. 2139

Author बुक्क, उदादिक्क

Vol. II

Title नंददास 11942

This book should be returned on or before the date
last marked below

राजा पन्नालाल गोवर्द्धनलाल ग्रंथमाला

नंददास

द्वितीय भाग

संपादक

उमाशंकर शुक्ल, एम० ए०

राजा पन्नालाल स्कॉलर

प्रकाशक

प्रयाग विश्वविद्यालय, प्रयाग

प्रकाशक
प्रयाग विश्वविद्यालय
प्रयाग

प्रथम संस्करण, अक्टूबर सन् १९४२
मूल्य ६)

मुद्रक
जे० के० शर्मा
इलाहाबाद लाँ जर्नल प्रेस
इलाहाबाद

सिद्धांत पंचाध्यायी

जै जै जै श्री कृष्ण, रूप, गुण, कर्म अपारा ।
परम धाम, जग-धाम, परम अभिराम. उदारा ॥
प्रागम, निगम, पुरान, स्मृती-गन जे इतिहासा ।
प्रवर सकल बिद्या-बिनोद, जिहि प्रभु की उसासा ॥
रूप, गंध, रस, सब्द, स्पर्श जे पच विषै वर ।

५

महाभूत पुनि अच, पवन, पानी, अवर, धर ॥
इस इंद्रिय अरु अहकार, महत्त्व, त्रिगुण, मन ।
प्रह सब माया कर बिकार, कहै परमहंस गन ॥
सो माया जिन के अधीन नित रहत मृगी जस ।
बिस्व-प्रभव, प्रतिपाल, प्रलै-कारक, आयस-वस ॥

१०

जाग्रति, स्वप्न, प्रसुप्ति, धाम परब्रह्म प्रकासै ।
इन्द्रियगन मन-प्रान, इनहि परमात्म भासै ॥
षट् गुण अरु अवतार-धरन, नाराइन जोई ।
सब को आश्रय, अवधि-भूत, नंद-नदन सोई ॥

सिसु, कुमार, पौगड, धरम पुनि बलित, ललित लस ।
वरमी, नित्य-किसोर, नवल चित-चोर एक रस ॥
जे जग मै जगदीस कहै, अति रहै गरब भरि ।
सब कौ कियौ निरोध, अपन निज सहज खेल करि ॥

१५

- महा मोहिनी-मय माया मोहे तिरसूली ।
 २० कोटि कोटि ब्रह्माड निरखि, विधि हू गति भूली ॥
 महा प्रलै कौ जल-बल लै, गिरि पै बरस्यौ हरि ।
 न जनौ गरब गिरि तै गिरि, कत गयौ धूरि मूरि ररि ॥
 ब्रह्मादिक कौ जीति, महा मद मदन भरचौ जब ।
 दरप-दलन नँद-ललन, रास-रस प्रगट करचौ तब ॥
- २५ अवधि-भूत गुन-रूप-नाद-तरजन जहँ होई ।
 सब रस कौ निरतास, रास-रस कहियै सोई ॥
 ननु विपरीत धरम यह, अति सुदर दरसन करि ।
 कौन धरम-रखवारौ, अनुसरै जीउ-सदृस हरि ॥
 काल, करम, माया अधीन, ते जीउ बखाने ।
- ३० विधि-निषेध, अरु पाप-पुन्य, तिन में सब साने ॥
 परम धरम ब्रह्मान्य, ग्यान - विग्यान - प्रकासी ।
 ते क्यौ कहियै जीउ-सदृस, श्रुति - सिखर - निवासी ॥
 करम, काल, अनिमादि जोगमाया के स्वामी ।
 ब्रह्मादिक कीटांत जीउ, सर्वांतरजामी ॥
- ३५ बहे जात संसार-धार, जिय - फदे - फंदन ।
 परम तरुन करुना करि, प्रगटे श्री नँद-नंदन ॥
 सघन सच्चिदानंद, नद-नदन ईस्वर जस ।
 तैसैई तिन के भगत, जगत में भये भरे रस ॥
 श्री बृदावन चिदघन, छन छन घन छबि पावै ।
- ४० नंद-सुवन कौ नित्य-सदन, श्रुति-स्मृति जिहि गावै ॥

सुदर सरद सुहाई रितु, जहँ सदा बिराजै ।
 नव अखंड-मडल-ससि, सब ही रजनी भ्राजै ॥
 जमुन-तीर बलवीर चीर हरि, बर जिन दीनौ ।
 तिन-सँग बिबिधि विलास रास रमिवे मन कीनौ ॥
 तिहि छिन सोई उडराज उदिन, रसराज सहाइक । ४५
 कुमकुम-मडित प्रिया-वदन, जनु नागर नाइक ॥
 कमल-नयन पिय कौ हिय, सुदर प्रेम-समुद जस ।
 पूरन ससि तन निरखि, हरखि बाढी तरंग रस ॥
 अरुन किरन मिलि अरुन भयौ, छवि कहि नहिं जाही ।
 जनु हरि-हिय अनुराग, निकसि विकस्यौ बन माही ॥ ५०
 सव्द-ब्रह्म मै बेनु बजाइ सबै जन मोहे ।
 सुर - नर - गन - गधर्व, कछु न जानै हम को हे ॥
 परम मधुर मादक मु नाद, जिहि ब्रज-जुव मोही ।
 त्यों ही धुनि सुनि चली, छटा सी अनिसय सोही ॥
 मन पहिलेई आकरपे, सुदर घन-मूरति-हरि । ५५
 अब मधुराधर-मधु मिलाइ, बोली मुनाइ करि ॥
 सुनि उमगी अनुराग-भरी, सावन-सरिता जस ।
 सुदर नगधर, नागर-सागर मिलन बढी रस ॥
 कोउ गमनी तजि सोहन, दोहन, भोजन, सेवा ।
 अजन, मजन, चदन, दुजपति - देवन - खेवा ॥ ६०
 धरम, अरथ, अरु काम, कर्म ये निगम निदेसा ।
 सब परिहरि हरि भजत भई, करि बड उपदेसा ॥

- प्रीतम-सूचक सब्द सुनत जब, अति रति बाढत ।
 होत सहज सब त्याग, नाग कंचुकि जिमि छाँडत ॥
- ६५ जदपि कहूँ के कहूँ बधुन आभरन बनाये ।
 हरि पिय पै अनुसरत, जहाँ के तहँ चलि आये ॥
 कृष्ण-तुष्टि करि कर्म करै जो आन प्रकारा ।
 फल बिभिचार न होइ, होइ सुख परम अपारा ॥
- ७० मात, पिता, पति, कुलपति, सुत अति रोकि रहे जब ।
 नाहिन रुकी, रस-धुकी, जाइ सो मिली तहाँ तब ॥
 मोहन नद-सुवन पिय, हिय हरि लीनौ जाकौ ।
 कोटि कोटि बिघनेस, विघन करि सकै न ताकौ ॥
 जे अरवर मै अति अधीर, रुकि गई भवन जब ।
 गुनमय तन तजि, चित्सरूप धरि, पियहि मिली तब ॥
- ७५ ग्यान बिना नाह् मुक्ति, यहै पडित गन गायौ ।
 गोपिन अपनी प्रेम-पथ, न्यारौई दिखरायौ ॥
 ग्यान आत्मा-निष्ठ गुनत यौ आनम-गामी ।
 कृष्ण अनावृत परम ब्रह्म, परमात्म स्वामी ॥
 नाहिन कछु सिगार-कथा इहि पचाध्याई ।
- ८० सुदर अति निरवृत्ति-परा तै इती बडाई ॥
 जिन गोपिन कौ प्रेम निरखि सुक भये अनुरागी ।
 ब्रह्मानंद मगन, ते निकसे ह्वै बैरागी ॥
 पुनि तिन की पद-पंकज-रज, अज अजहूँ बाछै ।
 ऊधौ बुद्धि बिसुद्धन सौ पुनि सो रज इछै ॥

सकर नीके जानत, सारद, नारद गानत । ८५
 तातै सबै जगतगुरु, गोपिन गुरु करि मानत ॥
 ब्रज-रमनी, गज-गमनी, कानन में जब आई ।
 सुदर बृदावन घन, छन छन घन छबि पाई ॥
 त्रिगुन पवन लै, आगे ह्वै, अलि धाये आये ।
 अवर सहेली चेली, तिन हूँ अति सुख पाये ॥ ९०
 मनिमय तूपुर किकिनि, ककन के भनकारा ।
 तैसिय अलि-भकारनि, चचल कुडल-हारा ॥
 आनि हरि निकट ठाढी, मोहति प्रेम नबेली ।
 मानहुँ सुदर मुरतरु, चहुँ दिसि आनँद-बेली ॥
 नागर गुरु नँद-नदन, बोले अति अनुरागे । ९५
 काम-विपै-पर बचन, कहे सब रस के पागे ॥
 जे पडित सिगार-ग्रथ-मत यामै सानै ।
 ते कछु भेद न जानै, हरि कौ विपई मानै ॥
 अनाकृष्ट-मन कृष्ण, दुष्ट-मद-हरन पियारे ।
 जहँ जहँ उज्जल परम धरम, ताके रखवारे ॥ १००
 धरम-अरथ-पर बचन, कहे ते काहे तै इत ।
 ब्रज-देविन के सुद्ध प्रेम-रस प्रगट करन हित ॥
 सुनि पिय के अस बचन, चकित भई ब्रज की बाला ।
 गदगद कठ रसाला, बोली यौ तिहि काला ॥
 अहो अहो जसुमति प्यारे, सुदर नददुलारे । १०५
 जिनि कहौ बचन अन्यारे, तुम तौ प्रानपियारे ॥

- धरम करचौ दृढ ताकौ, जो धरमहि रत होई ।
 जा धरमहि आचरत, समल मन निरमल होई ॥
 मन निरमल भये सुबुधि, तहाँ विग्यान प्रकासै ।
 ११० सत्य ग्यान आनद, आनमा तब आभासै ॥
 तब तुम्हरी निज प्रेम-भगति-रति अति है आवै ।
 तौ कहूँ तुम्हरे चरन कमल कौ निकटहि पावै ॥
 तिन कहूँ हो तुम प्राननाथ, फिरि धरम सिखावौ ।
 समझि कहौ पिय बात, चतुर सिरमौर कहावौ ॥
 ११५ अरु जे सास्त्र-निपुन जन, ते सब करहि तुमहिं रति ।
 तुम अपने आतमा नित्य पिय नित्य धरम गति ॥
 दार, गार, सुत, पति इन करि कहौ कौन आहि सुख ।
 बढै रोग सम दिन दिन, छिन छिन देहि महा दुख ॥
 ब्रह्मादिक जा चितवन लागि नित सेव करी है ।
 १२० सो लछिमी सब छोडि, तिहारे पाइ परी है ॥
 तैसेहि हम सब पगिहरि, तिहारे चरननि आई ।
 नाहि तजो, पिय भजौ, तजौ यह सब निठुराई ॥
 सुनि गोपिन के प्रेम-बचन, हँसि परे भरे रस ।
 जदपि आतमा-राम, रमत भये नवल नेह बस ॥
 १२५ बिहरत विपिन विहार, कहत कछु नाहि कहि आवै ।
 बार बार तन पुलकित, सुक मुनि तिहि तहँ गावै ॥
 अवधि-भूत नागर नगधर-कर-पारस पायी ।
 अधिक अपनपौ जानि, तनक सीभग-मद छायी ॥

गरवादिक जे कहे काम के अग आहि ते ।
 सुद्ध प्रेम के अग नाहि, जानहि प्राकृत जे ॥ १३०
 कमल-नैन करुनामय, सुदर नद-सुवन हरि ।
 रम्यौ चहत रस रास, इनाहि अपनी समसरि करि ॥
 तातैं तिन ही माहि तनक दुरि रहे ललन यौ ।
 दृष्टि-बध करि दुरै, बहुरि प्रगटै नटवर ज्यौ ॥
 अलक, पलक की ओट, कोट जुग-सम जिन जाहीं । १३५
 तिन कहैं पल छिन ओट, कोट दुख गनना नाही ॥
 सुधि न रही कछु तन मै, वन मै बूझति डोलै ।
 निगम-मार सिद्धात-वचन, ते अलवल बोलै ॥
 कृष्ण-विरह नहि विरह, प्रेम-उच्छलन कहावै ।
 निपट परम सुख-रूप, इतर सब दुख विसरावै ॥ १४०
 ढुंढन लगी ब्रज-वाल, लाल मोहन पिय कौ तहँ ।
 नूत, प्रयाल, कदव, निव अरु अब, पनस जहँ ॥
 आवहु री ये बड महान बट, पीपर बूझै ।
 मोहन पियहि बतैहै, जौ कहूँ इन कौ सूझै ॥
 आगे चलि ब्रज-जुवती, रोवति आनि परी तहँ । १४५
 नूत, प्रयाल, कदव, निव अरु अब, पनस जहँ(?) ॥
 सखि ये तीरथ-बासी, पर उपकारी सब दिन ।
 बूझहु री नँद-नदन-मग, इन सूझत है किन ॥
 रूप-गुनन-भरी लता, जे सोहति अति वन माही ।
 नँद-नंदन इन बूझौ, निरखे है कै नाही ॥ १५०

- इहि बिधि बन घन ढूँढ़ि, प्रेम-बस लगत सुहाई ।
 करन लगी मन-हरन, लाल-लीला मन-भाई ॥
- सिसु, कुमार, पौगंड-बलित, अभिनय दिखराये ।
 कमल-नैन प्रापति उपाइ, सब लोक सिखाये ॥
- १५५ अरु जे आहि उपासक, तिनहि अभेद बतायौ ।
 सिसु, कुमार, पौगंड-कान्ह एकै दिखरायौ ॥
 अवतारी अवतार-धरन, अरु जितक बिभूती ।
 इह सब आश्रय के अधार, जग जिहि की ऊती ॥
- १६० तातै जग, गोपी, सुक मुनि हू पुनि पुनि गावै ।
 सनक-सनदन जग-बंदन, तेऊ सिर नावै ॥
 नंद-नंदन-लीला करि, ललना धन्य भई जब ।
 सुदर चरन-सरोज-खोज, निकटहि पायौ तब ॥
 सुनि सब धाई आई, जीवनमूरि सी पाई ।
 पुनि पुनि लेहि बलाई, आपनी करति बडाई ॥
- १६५ सखि इहि कृष्ण-चरन-रज, अज-सकर सिर धारै ।
 रमा रमनि पुनि धारै, अपने दोस निवारै ॥
 पुनि पेखे ढिँग जगमगात, पग प्यारी के जब ।
 कौन आहि इहि वड़भागिनि, यौ कहन लगी तब ॥
 इन नीके आराधे, हरि ईसुर बर जोई ।
- १७० तातै अधर-सुधा-रस, पीवत निधरक सोई ॥
 सोऊ पुनि अभिमान भरी, यौ कहन लगी तिय ।
 मो पै चल्यौ न जाइ, जहाँतुम चलन चहत पिय ॥

जब जब जो उदगार होइ अति प्रेम-विधुसक ।
 सोइ सोइ करै निरोध, गोपकुल - केलि - उतसक ॥
 नहिं कछु इद्रियगामी, कामी कामिन के बस । १७५
 सब घट अंतरजामी स्वामी परम एक रस ॥
 नित्य आत्मानद, अखड सरूप उदारा ।
 केवल प्रेम सुगम्य, अगम्य अवर परकारा ॥
 तातै तिन ही माहि पुरचौ, परि दूरि न भायौ ।
 सो बाला अति बिलपि, अखडित प्रेम दिखायौ ॥ १८०
 जैसैई कृष्ण अखड-रूप, चिदरूप उदारा ।
 तैसैई उज्जल रस अखड तिन करि परिवारा ॥
 जगत - उधारन - कारन, गुरु ह्वै मग दिखावावै ।
 कामी कामिनि समभावै, ज्यौ जिनि इहि गावै ॥
 सो तव तिन हूँ देखी, ठाढी सोहति ऐसी । १८५
 नव अबुद तै अब ही, बिछरी बिजुरी जैसी ॥
 सोचै, चितवै, वन मे, मन मै, अचरज भारी ।
 किन कीनी चद तै चारु चद्रिका न्यारी(?) ॥
 धाइ भुजन भरि, लै पुन तिहि, जमुना-तट आई ।
 कृष्ण - दरस - लालसा, सु तरफै मीन की नाई ॥ १९०
 अपनेई प्रेम-सुधा-निधि बढि गई अधिक कलोलै ।
 बिह्वल ह्वै गई बाल, लाल सौ अलबल बोलै ॥
 तब प्रगटे नैद-नदन, सुदर सब-जग-बदन ।
 गोपी - ताप - निकंदन, को है कोटिक चदन ॥

- १६५ मधुर मधुर मुसकाते, बिलुलित उर-बनमाला ।
 केवल मनमथ मन-मथ, चचल नैन बिसाला ॥
 पियहि निरखि ब्रजबाल, उठी सब एकहि काला ।
 ज्यौ प्रानन के आये, उभकहि इद्रिय-जाला ॥
 साँवरे पिय-कर-परस पाइ, सब सुखित भई यौ ।
 परमहंस भागवत मिलत, संसारी जन ज्यौ ॥
 जैसे जागत स्वप्न सुषुप्ति, अवस्था में सब ।
 तुरिय अवस्था पाइ जाइ सब भूलि गई तब ॥
 मिलि जमुना-तट बिहरत, सुदर नंद के लाला ।
 तैसिय ब्रज की बाला, भरी अति प्रेम रसाला ॥
- २०५ जदपि अखडानद, नंद-नदन ईस्वर हरि ।
 तदपि महा छवि पाई, छत्रीली ब्रज-देविन करि ॥
 पुनि ब्रज-सुदरि संग मिलि, सोहत सुदर वर यौ ।
 सक्ति अनेक करि आवृत, सोहत परमात्म ज्यौ ॥
 पुनि जस पुरुष उपासक ग्यानादिक करि सोहै ।
- २१० यौ रस-ओपी गोपी मिलि, मनमोहन मोहै ॥
 कृष्ण-दरस आनद-वरस, दुख दूरि भयौ मन ।
 पाइ मनोरथ अपनी, जैसे हरषे श्रुतिगन ॥
 जब लगि श्रुति करि कर्म-काड करमनन प्रमानै ।
 तब लगि इद्र-बरुन-रवि, ईस्वर इन ही गानै ॥
- २१५ ग्यान-काड में परमेस्वर, विग्यान परम सुख ।
 बिसरि गयौ सब काम्य, कर्म-अग्यान महा दुख ॥

तैसैई गोपी प्रथम काम, अभिराम रसी रस ।
 पुनि पाछे नि सीम प्रेम, जिहि कृष्ण भये बस ॥
 जेन-केन परकार होइ अति कृष्ण-मगन मन ।
 अनाकर्न चैतन्य, कछु न चितवै साधन तन ॥ २२०
 महा द्वेष करि महा सुद्ध, सिसुपाल भयौ जब ।
 मुक्त होत वह दुष्टपनौ, कछु संग न गयौ तब ॥
 अरज्या, मरवा, सुवा, जग्य-साधन अविसेखै ।
 सरग जाइ, सुख पाइ, बहुरि को तिन तन देखै ॥
 जोगी जिहि अष्टाग-साधना हू साधत ते । २२५
 पाइ परम परमात्म, बहुरि का बहुरि करत ते ॥
 तैसैई ब्रज की बाम, काम-रस उत्कट करि कै ।
 सुद्ध प्रेममय भई, लई गिरिधर उर धरि कै ॥
 आरभित तब रुचिर रास, अद्भुत हुलास जहँ ।
 अमल अष्टदल-कमल, महा मडल मडित तहँ ॥ २३०
 मधि कमनीय करनिका, ता पर विवि किसोर बर ।
 पुनि द्वै द्वै गोपी करि, हरि-मडित मडल पर ॥
 एकै मूरति ललित, लाल आलात की नाई ।
 सब के अंसनि धरी, साँवरी बाँह सुहाई ॥
 जदपि बछस्थल रमति, रमा रमनी बर कामिनि । २३५
 तदपि न यह रस पायौ, पायौ जो ब्रज-भामिनि ॥
 जितक हुती ब्रज-बधू, कोटियन कोटि भरी रति ।
 तितेई तहाँ रागिनी-राग, संगीत भेद गति ॥

- काहू के काहू न गीत-सगीत छुयौ जहँ ।
 २४० भिन्न भिन्न अपनाइ, अनागत प्रगट कियौ तहँ ॥
 बनिता जहँ सतकोटि, कहत कछु नहि कहि आवै ।
 अपने गुन गति, नृत्य, नाद, कोउ पार न पावै ॥
 जग मै जो संगीत-नाट, जिहि जगत रिभायौ ।
 सो ब्रज-तियन कौ सहज गमन, यौ आगम आयौ ॥
 २४५ जो ब्रज-देबी नितति मडल रास महा छबि ।
 तिहि कोउ कैसे बरनै, ऐसौ कौन आहि कबि ॥
 राग - रागिनी - सम, जिन कौ बोलिबौ सुहायौ ।
 सु कौन पै कहि आवै, जो ब्रज-देविन गायौ ॥
 जैसे कृष्ण अमित महिमा, कोउ पार न पावै ।
 २५० ऐसे ही ब्रज-वनिता गुन गन गनत न आवै ॥
 जब नाइक के भेद-भाउ, लावन्य, रूप, गुन ।
 अभिनय करि दिखरावै, गावै अद्भुत गति उन ॥
 तहाँ साँवरे कुँवर, रीझि कै रीझि रहत यौ ।
 निज प्रतिबिब-विलास, निरखि सिसु भूलि रहत ज्यौ ॥
 २५५ जिन की गीत-धुनि, छटा, सकल जग छाइ रही है ।
 जिमि रचक लछिमी कटाच्छ, सब बिभव कही है ॥
 ते तौ मदनमोहन पिय, रीझि भुजन भरि लीनी ।
 चुबन करि मुख-सदन, बदन तै बीरी दीनी ॥
 लटकि लटकि ब्रज-बाला, लाला उर जब फूली ।
 २६० उलटि अनंग अनंग दह्यौ, तब सब सुधि भूली ॥

रीभि सरद की रजनी, न जनी केतिक बाढी ।
 बिलसत सजनी स्याम, जथारुचि अनिरति गाढी ॥
 थके उड़प अरु उड़गन, उन की कौन चलावै ।
 काल-चक्रपुनि चकित थकित, कछु मरम न पावै ॥
 निरखत सारद, नारद, सकर, मनक-सनदन । २६५
 हरषत, बरषत फूलन, जै जै जै नँद-नंदन ॥
 अद्भुत रस रह्यो रास, कहत कछु कहि नहि आवै ।
 सेस सहस मुख गावै, अजहँ अत न पावै ॥
 हो सज्जन-जन रसिक ! सरस मन कै यह सुनियै ।
 सुनि सुनि पुनि आनद हृदैं ह्वै, नीके गुनियै ॥ २७०
 सकल सास्त्र-सिद्धात, परम एकात, महा रस ।
 जाके रचक सुनत-गुनत, श्री कृष्ण होत बस ॥
 सकल रास-मडल-रस के जे भँवर भये है ।
 नीरस बिषै-बिलास, छिया करि छाँडि दिये है ॥
 'नददास' सौ नद-मुवन ! जौ करुना कीजै । २७५
 तिन भक्तन की पद-पकज-रज सौ रुचि दीजै ॥

दशम स्कंध

प्रथम अध्याय

नव लच्छन करि लच्छ जो, दसये आश्रय रूप ।

‘नंद’ बंदि लै प्रथम तिहि, श्री कृष्णाख्य अनूप ॥

परम बिचित्र मित्र इक रहै, कृष्ण-चरित्र सुन्यौ सो चहै ।

तिन कही ‘दशम स्कंध’ जु आहि, भाषा करि कछु बरनौ ताहि ।

५ सबद संस्कृत के है जैसे, मो पै समुझि परत नहि तैसे ।

तातै सरल सु भाषा कीजै, परम अमृत पीजै, सुख जीजै ।

तासौ ‘नंद’ कहत है तहाँ, अहो मित्र ! एती मति कहाँ ।

जामे बड्डे कबिजन उरभे, ते वे अजहूँ नाहिन सुरभे ।

तहँ हौ कवन निपट मतिमद, बौना पै पकरावौ चद ।

१० अरु जु महामति श्रीधर स्वामी, सब ग्रंथन के अतरजामी ।

तिन कही यह जु भागवत ग्रंथ, जैसे दूध उदधि कौ मथ ।

मंदर गिरि से मज्जत जहाँ, रेनुकनूका हौ को तहाँ ।

तामे यह श्री ‘दशम स्कंध’, आश्रय वस्तु कौ रसमय सिंधु ।

तिहि मधि हौ किहि विधि अनुसरौ, क्यौ सिद्धात-रतन उद्धरौ ।

१५ मित्र कहत है तौ यह ऐसे, अहो ‘नंद’ ! तुम कहत हौ जैसे ।

ऐ परि जथासक्ति कछु कीजै, अमृत की इक बुदहि जीजै ।

जो गुरु गिरिधर देव की, सुदर दया दरेर ।

गुग सकल पिगल पढै, पगु चढै गिरि मेर ॥

प्रथम कहौ नव लच्छन कौन, तिन की नीके समभक्त हौ न ।
जब लगि इन के भेद न जानै, आश्रय वस्तु सु क्यौ पहिचानै । २०

‘नंद’ कहत तौ सुनिनव लच्छन, जैसै वरनत बडे बिचच्छन ।
‘सर्ग’, ‘विसर्ग’, ‘स्थान’ अरु ‘पोपन’, ‘ऊति’ ‘मन्वंतर’ ‘नृपगन तोषन’ ।
इक ‘निरोध’ अरु ‘मुक्ति’ सु दच्छन, आश्रय वस्तु के ये नव लच्छन ।
महदादिक जे कारन बर्ग, तिन की सृष्टि जु कहियै ‘सर्ग’ ।
कारज सृष्टि यह विस्व जु आहि, विदुष ‘विसर्ग’ कहत है ताहि । २५

सूर्जादिक मर्जाद वितान, ताहि सु ‘थान’ कहत कवि जान ।
जद्यपि भक्त भरचौ बहु दोषन, ताकी रच्छा कहियै ‘पोपन’ ।
साधु-असाधु वासना जहाँ, ‘ऊति’ बिभूति समझि लै तहाँ ।
समीचीन धर्म की प्रवृत्ति, सो कहियै ‘मन्वतर’ वृत्ति ।
मुचुकुदादि नृपन की कथा, सो ईसान कथा है जया । ३०

दुष्ट नृपन कौ हरन अबोध, ताकौ बुधजन कहत ‘निरोध’ ।
अन्य रूप की त्यागन जुक्ति, निज स्वरूप की प्रापति ‘मुक्ति’ ।
इन लच्छन करि लच्छन जोई, आश्रय वस्तु कहावै सोई ।
सो आश्रय इहि दसम निकेत, प्रगट आहि भक्तन के हेत ।
दसयै मधि जु निरोध बखान्यौ, दुष्ट नृप-दलन सब ही जान्यौ । ३५
अवर निरोध भेद है जिते, अति अद्भुत तू सुनि लै तिते ।
भक्तहि इतर बिपै ते निरोध, उतहि मोक्ष सुख तै अवरोध ।
सुद्ध प्रेम मधि प्रापति करै, इक निरोध इहि बिधि बिस्तरे ।

- ज्यौ ब्रजवासिन मोक्ष दिखाइ, ब्रह्मानन्द बहुरि लै जाइ ।
 ४० मधुर मूर्ति बिन जब अकुलाने, तब फिरि बहुरचौ ब्रज ही आने ।
 अवर निरोध भेद सुनि मित्र, बरनत जा कहूँ परम बिचित्र ।
 जदपि कोटि ब्रह्माड के कर्ता, अरु तिन के भर्ता-सहर्ता ।
 परम सनेह भक्ति होइ जाके, ईस्वरता कछु फुरै न ताके ।
 ज्यौ जसुमति मुख मै जग पेख्यौ, सुत ईस्वर करि नाहिन लेख्यौ ।
 ४५ ललित लाल लीला लपटानी, सो वह भूत-क्रिया सी जानी ।
 अब सुनि कृष्ण-विषैक निरोध, जदपि अनंत अखंडित बोध ।
 सो तब रचक ताहि न फुरै, जब हठि मातस्तन अनुसरै ।
 अवर निरोध भेद जो आहि, रस-लीलन मै लीज्यौ चाहि ।
 अब सुनि भक्ति परीच्छित बातै, श्री भागवत प्रगट है जातै ।
 ५० सुंदर हरि मूर्ति जो आहि, उदर मध्य सो आयौ चाहि ।
 सब ठाँ कृष्ण परीच्छित लह्यौ, तातै नाउँ परीच्छित कह्यौ ।
 जे उत्तम श्रोता रस-सने, तिन मै मुख्य परीच्छित गने ।
 बिसरे जाहि अहार-बिहार, केवल हरिगुन-श्रवन-अधार ।
 तैसैई उत्तम बक्ता बने, श्री सुक परम प्रेम-रस सने ।
 ५५ कृष्ण ललित लीला अनुरागी, ब्रह्म तै निकसि भये वैरागी ।
 सनकादिक अरु श्री सुक कहियाँ, अंतर बहु इन दोऊ महियाँ ।
 वे कामादिक के डर डरै, रहत है बालबैस मै ररै ।
 ये नव जोबन बर बपु धरै, कामादिक जाके डर डरै ।
 तिन सौ प्रश्न परीच्छित करी, नख-सिख कृष्ण-चरित रस भरी ।
 ६० हो प्रभु! तुम करि रवि-ससि-बस, नीके कहे रहे नहि संस ।

अरु जे उभय बस के भूप, तिन के जे जे चरित अनूप ।
 ते सब पाछे आछे बरने, मनहरने, जग-मगल करने ।
 अरु जदु धर्मसील कौ बस, सो पुनि तुम करि भले प्रसंस ।
 धर्मसास्त्र-बल निर्मल हियौ, पितहि न अपनौ जोवन दियौ ।
 तिहि कुल मै ईस्वर अवतरे, अंस कला विभूति करि भरे । ६५
 मच्छ-कच्छ अवतार विभावन, भूतन के भावन, मनभावन ।
 सो प्रभु इहि जदुकुल मै आइ, कीने जे जे कर्म सुभाइ ।
 ते बिस्तार सौ मो सौ कहौ, हो मुनि सत्तम! अलस न गहौ ।
 कृष्ण-गुनानुवाद के बिपै, सब अधिकारी अपनी इपै ।
 मुक्त तेउ गावत रस-भीने, जदपि सकल तृप्ता करि हीने । ७०
 मुमुषन कौ भव औपधि यहै, जातै ससृति रोग न रहै ।
 बिषई जन-मन अति अभिराम, जातै सब ही रस कौ धाम ।
 बिना पसुघनहि पुरुष सु कौन, कहै कि हरि गुन हौ न सुनौ न ।
 पसुघन सो जो करम दिढावै, कृष्ण-गुनानुवाद नहि भावै ।
 हमरे तौ हरि कुल के देव, तुम सब नीके जानत भेव । ७५
 अर्जुन आदि पितामह मेरे, जब कुरुसेना-सागर घेरे ।
 अमरन करि जु न जीते जाही, भीष्मादिक अतिरथि जिहि माही ।
 तेई तहाँ तिमिगिल भारे, अपनी जाति के भच्छनहारे ।
 'तिमि' इक जाति मीन की आहि, सत जोजन बिस्तार है जाहि ।
 ताहि गिलत जो जलचर लहियै, ताकौ नाउँ 'तिमिगिल' कहियै । ८०
 तिन करि महा दुरत्यय सोई, जो देखै सो अचरज होई ।
 तहँ श्री कृष्ण सु नौका भये, कब धौ तिनिहि पार लै गये ।

- अरु केवल तेई नहि तारे, मेरेऊ तन के रखवारे ।
 द्रोन-पुत्र कौ बान अन्यारौ, अग्नि तै तातौ, रातौ भारौ ।
- ८५ जव आयौ तव मैया मेरी, दौरी, सरन गई तिहि केरी ।
 मेरे हितकर वे हरि कैसे, कुत्सित उदर-दरी मै पैसे ।
 कुरुवन की तौ संतति मात्र, पाडवन की भक्ति कौ पात्र ।
 सो यह मेरौ अंग सुहायौ, भस्म भयौ पुनि फेरि जिवायौ ।
 तिन के चरित अमृतमय जिते, हो सर्वग्य ! सुनावहु तिते ।
- ९० तुम करि वे सकर्षन अर्भ. प्रथमहि कह्यौ देवकी गर्भ ।
 बहुरचौ ताहि रोहिनी जने, देहातर विन कैसे बने ।
 अरु ईस्वर भगवान मुकुद, परमानंद कद सुच्छंद ।
 ते काहे ते पितु गेह तै, ब्रज आये सु कवन नेह तैं ।
 ब्रज बसि कवन कवन पुनि कर्म, कीने पर्म धर्म के बर्म ।
- ९५ पुनि मधुपुरी आइ नंदनद, बरपे कवन कवन आनंद ।
 अरु साच्छात मात कौ भ्रात, सो वह कस हत्यौ किहि बात ।
 कितिक बरस द्वारावति बसे, कितिक ललित ललना मै लसे ।
 जदपि तज्यौ है मै जल अन्न, तदपि न द्वैहै मो तन खिन्न ।
 तुव मुख-कमल हरिचरित-सार, चलिहै परम अमृत की धार ।
- १०० पान करत अस रस अनयास, काके छुधा कौन के प्यास ।
 ता राजा कौ करि सनमान, बोले बैयासिक भगवान ।
 कही कि धन्य धन्य नृप सत्तम, नीके करि निश्चै मति उत्तम ।
 जातै कृष्णकथा रसमई, तातै उपजी अति रति नई ।
 प्रश्न जु कृष्णकथा कौ जहाँ, बक्ता, श्रोता, पृच्छक तहाँ ।

पावन करै सवन कौ ऐसे, गगाजल-धारा जग- जैसै । १०५

निगम-कल्पतरु कौ सु फल, बीज न वकला जाहि ।

कहन लगे रस रँगमगे, सुदर श्री सुक ताहि ॥

भूप रूप द्वै असुर विकारी, कीनी भूमि भार करि भारी ।

तब यह गाइ रूप धरि धरती, कंदन करती अँसुवन भरती ।

विधि सौ जाइ कही सब बात, सुनि कलमल्यौ कमल कौ तात । ११०

अमरन करि संकर सँग लये, तीर छीरसागर के गये ।

देव देव पुरुषोत्तम जहाँ, स्तुति करि बिनती कीनी तहाँ ।

गगन में भई देव की धुनी, सो ब्रह्मा समाधि में सुनी ।

सुनि कै बोल्यो अबुजतात, मुनहु अमरगन मो तै बात ।

आग्या भई बिलंब न करौ, जदुकुल विषै जाइ अवतरौ । ११५

श्री बसुदेव धाम अभिराम, प्रगटहिगे प्रभु पूरनकाम ।

सेस सहसमुख सब सुख-दाता, ह्वैहै प्रभु कौ अग्रज भ्राता ।

अरु जो जोगमाया गुनमई, ताहू कौ प्रभु आग्या दर्ई ।

इहि विधि विधि बिबुधन सौ कही, पुनि आस्वासित कीनी मही ।

मथुरा जादव की रजधानी, श्री गोविदचंद की मानी । १२०

जितक आहि ब्रह्माड अनेक, असन करि निवसत हरि एक ।

जिहि ब्रह्माड मधुपुरी लसै, पूरन ब्रह्म कृष्ण तहँ बसै ।

जब हरि लीला इच्छा करै, जगत में प्रथम भक्त अवतरे ।

तिन कै प्रभु कौ परिकर जितौ, प्रगट होत लीला हित तितौ ।

तब श्री कृष्ण अवतरहि आइ, सिद्ध करै भगतन के भाइ । १२५

सूरसेन जादव इक नाम, परम भागवत सब गुन धाम ।

- ताके निर्मल निगम सरूप, प्रगट्यौ सुत बसुदेव अनूप ।
जाके जन्मत अमर नगर में, दुदुभि बाजी बगर बगर में ।
देवक जादव के इक कन्या, देवमई देवकी सु धन्या ।
- १३० सब सुभ लच्छन भरी, गुन भरी, आनि ब्रह्म-बिद्या अवतरी ।
स्याम वरन तन अस कछु सोहै, इद्रनील मनि की दुति को है ।
राजति रुचिर जनक के ऐना, चद सौ बदन, डहडहे नैना ।
बोलत हसति, हरति इमि हियौ, जनु विधि पुतरी में जिय दियौ ।
ब्याहन जोग जानि छबिमई, सो देवक बसुदेवहि दई ।
- १३५ भयौ विवाह परम रँग भीनौ, देवक बहुत दाइजौ दीनौ ।
षट्सत रथ कचन के नये, गज सत चारि मत्त छबि छये ।
पंद्रह सहस सुभग किंव्यान, कनक भरे, नग जरे पलान ।
बर वरनी, तरुनी रँग भीनी, दासी बीनि दोइ सत दीनी ।
भई बरात बिदा ह्वै सजे, भेरी मदल-कंदल बजे ।
- १४० उग्रसेन देवक कौ भ्रात, ताकौ पूत कस बिख्यात ।
भीनौ नव कुकुम के रंग, कंचन रथ अनेक जिहि संग ।
भगनी-रथ कौ सारथि भयौ, प्रीति विवस सु दूरि लौ गयौ ।
बानी भई गगन में गूढ, रे रे कंस ! महा मतिमूढ ।
जाकौ तू भयौ जात है जता, अठयौ गर्भ सु तेरौ हता ।
- १४५ सुनतहि पापरूप वह कंस, धाइ गही देवकी नृसस ।
सुदर बदन बिमन भयौ ऐसे, राहु के छुवत छपाकर जैसे ।
काढ़ि खरग मारन कौ भयौ, आनकदुदुभि तब तहँ गयौ ।
महाराज जिनि करि अस काज, जा काज तै हौइ जग लाज ।

भगिनी, बाला, अरु यह समै, तू बड़भागि, न करि अस अमै ।
 जौ तू कहहि मरन-भय भारी, हौ आपनी करौ रखवारी । १५०
 तौ वह मरन न ढिँग ह्वै जाइ, विधना लिख्यौ लिलार बनाइ ।
 अबहि मरौ कि वरष सत बीते, छुटे न कोऊ काल बली ते ।
 तातें पापाचरन न करियै, रचक मुख बहुरचौ दुख भरियै ।
 पुनि नहि दूरि जवाह यह मरै, तब ही और देह कौ धरै ।
 ज्यौ तृन-जोक तृनन अनुसरै, आगे गहि पाछे परिहरै । १५५
 तैसे कर्मबिबस ये जन, देह धरत दुख भरत अनत ।
 इन बतियन मु कस क्यों मानै, आसुर ग्यान प्रतच्छ प्रमानै ।
 तब बसुदेव दया दिखरावै, साम वचन कहि कहि समभावै ।
 यह तेरी अनुजा बर बाला, पुतरी सी विधि रची रसाला ।
 न करि अमगल मगल काल, जातै तू बड दीनदयाल । १६०
 तदपि न ताके रचक व्यापी, केवल पापी, महा सुरापी ।

निपट निकट, सगम अगम, जिमि दर्पन मै छाँह ।

जदपि रहति आगे तदपि, मिलै न भरि भरि बाँह ॥

निपटहि ताकौ निग्रह जान्यौ, तब बसुदेव अवर मत ठान्यौ ।
 नीचहि सुत अपिबौ दिढाऊँ, मीच के मुख तै याहि छूडाऊँ । १६५
 जब मेरे उपजाहिगे तात, धाता की अनेक है बात ।
 ज्यौ बन-नगर अगिनि परजरै, ढिँग के रहै दूरि के जरै ।
 तब बसुदेव बिहँसि कै कहै, हे राजन रचक इत चहै ।
 डर तौ तोहि अठयै गर्भ कौ, नहि याकौ नहि अवर अर्भ कौ ।
 हौ तोहि दैहौ सिगरे तात, छुये कहत यह तेरौ गात । १७०

- करि प्रतीति जिय बसुदेव की, छाँड़ि दई हँसि कै सु देवकी ।
 प्रथमहि कीर्त्तिमंत सुत भयौ, बसुदेव ताहि लये ही गयौ ।
 सत्यप्रतिग्य अनृत तैं डरचौ, लालनादि लालच परिहरचौ ।
 अरु साधुन के दुस्सह कौन, जिन के नहि ममता, मति औन ।
- १७१ अति कोमल विलोकि कै बाल, कस भयौ तिहि काल दयाल ।
 घर लै जाहु देव । इहि अरभै, दीजौ मोहि आठ्यौ गरभै ।
 चलयौ सदन, पै वदन उदास, नीचन कौ कछु नहि विस्वास ।
 बसुदेव घर लौ जान न पायौ, नारद तबहि कस पै आयौ ।
 कंस के साति हौइ जौ अबै, देव-काज तौ बिगरचौ सबै ।
- १८० आइ कही तासौ सब बातैं, अहो कस । कछु समभक्त घातैं ।
 बसुदेवादिक जादव जिते, गोकुल में नदादिक तिते ।
 ये तौ सबै देवता आहि, राजन ! रंचक जिनि पतियाहि ।
 कहि कै गयौ वचन इहि विधि कौ, पर-घर-घालक, बालक विधि कौ ।
 तब ही सो सिसु फेरि मँगायौ, बसुदेव ताहि लये ही आयौ ।
- १८५ डारचौ पटकि न उपजी मया, जे अस नृप, तिन के को दया ।
 देवकी विषै विष्णु अवतरिहै, मेरे बध कौ उद्दिम करिहै ।
 पहिले कालनेम हौ हुतौ, विष्णु सदा कौ बैरी सुतौ ।
 अब कै ऐसैं जतनन जतौ, विष्णुहि गर्भ बीच ही हतौ ।
 तब बसुदेव देवकी आनि, पाइनि सुदिठ सृंखला बानि ।
- १९० राखे निकट, बिकट अस ठौर, जहँ कोउ जान न पावै और ।
 जेई जेई बालक उपजत जात, तेई तेई हतै न बूझै बात ।
 विष्णु जन्म की सका करै, मति इन ही में ह्वै सचरै ।

बंधु-मित्र जादव हे जिते, बल करि बंधन कीने तिते ।
 उग्रसेन अपनी महतारौ, सो बाँध्यौ, दीनौ दुख भारौ ।
 महा बली अरु महा नृसंस, राजा भयौ मधुपुरी कस । १६५
 'नद' जथा मति कै तथा, वरन्यौ प्रथम अध्याइ ।
 जाके रचक सुनत सब, कर्म-कषाय नसाइ ॥

द्वितीय अध्याय

अब सुनि लै द्वितीय अध्याइ, जामैं ब्रह्मादिक सब आइ ।
 गर्भस्तुति करिहैं सिर नाइ, चरन-कमल बैभव दिखराइ ।
 जे है नीच बुरे ही बुरे, ते सब आनि कस पै जुरे ।
 अघ, बक, बकी, प्रलब, अरिष्ट, तृनावर्त्त, खर केसी नष्ट ।
 मागध, जरासिध बल-अघ, तासौ जाहि ससुर सबध । ५
 जादवन कौ दैन दुख लागे, ते तजि देस-विदेसन भागे ।
 कैइक रहे ताही अरगाने, अक्रूरादिक अनसनमाने ।
 देवकि के षट सिंसु जब कंस, हते महा बल , महा नृसंस ।
 सप्तम गर्भ विष्णु कौ धाम, भयौ अनंत जाहि है नाम ।
 देवकि तहाँ अति न परकासी, हर्ष-सोक दोऊ मिलि भासी । १०
 कछु फूली, कछु नाहिन फूली, जैसै प्रात कमल की कली ।
 जदुकुल कौ दुख दिखि भगवान, व्याकुल भये जानमनि जान ।
 बोलि जोगमाया मनहरनी, तासौ प्रभु सब बातैं बरनी ।
 हे भद्रे ! बड़भागिनि महा, भाग महिम तुव कहियै कहा ।

- १५ आहि जगत यह रचना तेरी, वह बिभूति इक न्यारी मेरी ।
जातै तू अब गोकुल जैहै, देखत निरवधि सुख कौ पैहै ।
गोपी-गोपन करि अति मडित, तामै नित्यानंद अखडित ।
राजत गोपराइ तहँ नद, मूरति धरे सु परमानंद ।
- १ ताके घर बसुदेव की घरनी, दुरी रहति रोहिनि बर-बरनी ।
- २० देवकी जठर गर्भ जो आहि, रोहिनी उदर ताहि लै जाहि ।
गर्भ-मरन सका जिनि करै, मेरौ अस न कबहूँ मरै ।
तदनंतर तिहि जठर अनूप, ऐहै हम परिपूरन रूप ।
तू उहि नद गोप के धाम, मुक्ति-गोहिनी जसुमति नाम ।
तू तहँ नाममात्र होइ कै, करि सब काज सबन भोइ कै ।
- २५ ह्वैहै भुवि तेरे बहु नाम, पूरन करिहै सब के काम ।
‘भवा’, ‘भवानी’, ‘मृडा’, ‘मृडानी’, ‘काली’, ‘कात्याइनी’, ‘हिमानी’ ।
ऐसै प्रभु की आग्या पाइ, माया तुरत महीतल आइ ।
रोहिनि विषै देवकी गर्भ, आन्यौ करखि तर्वाह सो अर्भ ।
नगर मै, बगर बगर ह्वै गयो, देवकि गर्भ बिसंसृत भयो ।
- ३० तब ईस्वर सब असन भरे, आनकदुदुभि मन सचरे ।
बसुदेव तिहि छन अतिसै सोहे, भानु समान परत नहि जोहे ।
मन ही करि देवकि मै धरे, न कछु धातु सबंधहि ररे ।
ज्यौ गुरु स्निग्ध सिष्य के हेत, हृदगत वस्तु दया करि देत ।
हरि उर धरि देवकि अति सोही, अपने रूप आप ही मोही ।
- ३५ ऐ पर घर ही घर आभासी, बाहिर कहूँ न तनक परकासी ।
जैसैं घट मै दीपक-जोति, भीतर जगमग जगमग होति ।

अरु ज्यौ बंचक मैं सरस्वती, पर उपकार करत नहि रती ।
 ऐसे जगमगाति ही जहाँ, आयौ कंस पापमति तहाँ ।
 कहत कि मेरौ हंता जोई, अब कै निश्चै आयौ सोई ।
 जातै पाछे हुती न ऐसी, राजति तेजरासि सी बैसी । ४०
 को उद्दिम करियै इहि काल, सुसा, गुविनी, बहुरचौ बाल ।
 याकौ बध न श्रेय कौ करै, आयु, कीर्ति, संपति सब हरै ।
 अरु ह्याँ सब कोउ धृग धृग करै, मरे महा रौरव में परै ।
 इहि परकार बिचारहि आइ, फिरि गयौ घर पै, कछु न बसाइ ।
 निसि दिन जनम-प्रतीच्छा करै, थर-थर डरै, नीद नहि परै । ४५
 बैठत-उठत, चलत, चकि रहै, मति इत ही तैं उठि मोहि गहै ।
 अंबर भारि सेज पर सोवै, भोजन करत सीथ टकटोवै ।
 बैर-भाव जिय अति बढि गयौ, सब जग जाहि बिजुनमै भयौ ।
 तदनंतर सकर, अज, सारद, अवर अमर वर, मुनि वर नारद ।
 दरसन हित आये अरबरे, अति मुद भरे, अचभे भरे । ५०
 जाके उदर मध्य जग सबै, सो देवकी जठर मैं अबै ।
 केई रवि से केई ससि से गये, आगे दिन दीया से भये ।
 देवकि जठर भलमलत ऐसे, रतन-मँजूषा नव नग जैसे ।
 करि दडवत महा मुद भरे, इकहि बेर सब पाइनि परे ।
 पुनि पुनि उठि चरनन लटपटे, क्रीटन के जु कोटि कटपटे । ५५
 बनी जु मुकट रतन की जोति, जनु श्री हरि की आरति होति ।
 गदगद कंठ, प्रेम-रस भरे, अंजुलि जोरि स्तुति अनुसरे ।

कहत कि अहो सत्य-संकल्प, सब विधि सत्य, नित्य, बड़ कल्प ।
तुमहि प्रपन्न भये हम सबै, रच्छा करहु हमारी अबै ।

पूर्व पक्ष

- ६०, जौ कहहु कि तुम ही सब लाइक, जगनाइक अरु सब फलदाइक ।
क्यौ बोलत लिलात से बैन, तहँ तुम सुनहु कमल-दल-नैन ।
तुम परमेस्वर सब के नाथ, विस्व समस्त तिहारे हाथ ।
छिनक मै करौ, भरौ, संहरौ, ऊर्ननाभि लौ फिरि विस्तरौ ।
तुम तै हम सब उपजत ऐसे, अग्नि तै विस्फुलिंग गन जैसे ।
६५ ये अद्भुत अवतार जु लेत, विस्वहि प्रतिपालन के हेत ।
जौ दिन दिन दिनमनि न उवाइ, तौ सब अध-धुध ह्वै जाइ ।
अरु अपने भक्तन के हेत, दुर्लभ मुक्ति सुलभ करि देत ।
तव पदपंकज-नौका करि कै, पार परे भवसागर तरि कै ।

पूर्व पक्ष

- जौ तुम कहौ वह नाउ सुठार, मुक्त भये लै गये सु पार ।
७० वार रहे तिन की गति कैसे, तहाँ कहत ब्रह्मादिक ऐसे ।
पदपंकज के सन्निधि मात्र, तब ही भये मुक्ति के पात्र ।
तिन कौ भवसागर भयो ऐसो, गो-वच्छ-पद कौ पानी जैसे ।
सो पदपंकज सुदर नाउ, इत ही राखि गये भरि भाउ ।
जैसे इतर तराह भव-सिंधु, परम सुहृद वे सब के बंधु ।
७५ जे विमुक्त, मानी, मद-भरे, तुव पद-कमल निरादर करे ।
ते ऊँचे चढ़ि कै खरहरे, धमकि धमकि नरकन में परे ।

जिन करि चरन-कमल आदरे, ते कबहुँ न उखटि कै परे ।
 जग मै जे बिघनन के राइ, तिन के सीसन धरि धरि पाइ ।
 बिचरत निरभै भगत तिहारे, तुम से प्रभु जिन के रखवारे ।
 ते वै तुम्हरे चरन-सरोज, या अवनी पर परिहै खोज । ८०
 ठौर ठौर तिन कौ देखिहै, जीवन-जनम सफल लेखिहै ।
 तब देवकि आस्वासित करी, तुम सी को है भागन भरी ।
 जाकी कूख बिषै भगवान, जो साच्छात पुरान पुमान ।
 आयौ रच्छक जदुबंस कौ, धुसक असुर बंस कंस कौ ।
 पुनि बंदन करि भरे अनंद, चले घरन बृदारक-बृद । ८५
 गर्भस्तुति हरि अर्भ की, सुनै जु द्वितीय अध्याइ ।
 सो न परै फिरि गर्भ-मल, नर निर्मल ह्वै जाइ ॥

तृतीय अध्याय

सुनि तृतीय अध्याइ अब, सुदर परम अनूप ।
 प्रेम भरे जहँ प्रगटिहै, हरि परिपूरन रूप ॥
 तात-मात सौ बात बनैहै, पुनि ब्रजचंद नंद के जैहै ।
 पहिले उपज्यौ सुदर काल, सब गुन भरचौ, जु परम रसाल ।
 अति सोहन रोहिनी नछत्र, जाके सब ग्रह ह्वै गये मित्र । ५
 ठाँ ठाँ मंगल पूरित मही, बहुत नदी दूध-घृत बही ।
 सब के मन प्रसन्न भये ऐसै, निधन महा धन पाये जैसै ।
 भादौ सलिल सुच्छ अस भये, जैसै मुनि-मन निर्मल नये ।

- सरन मध्य सरसीरुह फूले, तिन पर लपट अलिकुल भूले ।
 १० । दिसा प्रसन्न सु को छवि गनौ, दिसि दिसि चंद उगहिगे मनौ ।
 कुसुमित बनराजी अति राजी, ऐसी नहिन बसंत बिराजी ।
 बुझे अगिनि आपुहि वरि उठे, हँसि हँसि मिले, हुते जे रुठे ।
 मंद सुगंध पवन अस बहै, जिहि सुबास त्रिभुवन चकि रहै ।
 मंद मंद अंबुद गन गजे, धर्म के जनु कि दमामे बजे ।
 १५ तैसिय बजत देव-दुदुभी, दुर्जन मन कंटक जिमि चुभी ।
 हरषे मुनि बर अमर पुरंदर, बरषे सुमन सु सुंदर सुंदर ।
 नितंति देवनटी छवि-जटी, लटकै जनु कि छटन की छटी ।
 सुंदर अर्द्ध रैन जव गई, अति सिगार-मई छवि-छई ।
 तब देवकि तैं प्रगटे ऐसै, पूरब तैं पूरन ससि जेसै ।
 २० पूर्व जठर मधि नहि कछु चंद, बादमात्र अस देवकि-नद ।
 अद्भुत सिसु कछु परत न कह्यौ, आनकदुदुभि चहि चकि रह्यौ ।
 माथे मनिमय मुकट सुदेस, सचिकन सुंदर घुँघरे केस ।
 कुंडल-मंडित गड सलोल, मंद हँसनि श्री करत कलोल ।
 कंचन-माल, मुक्त की माल, भिलमिलात छवि छती बिसाल ।
 २५ सुंदर कंठ सु कौस्तुभ लसै, निकर-बिभाकर दुति कौ हँसै ।
 गंध लुब्ध जे अद्भुत भृंग, ते आये बनमाली संग ।
 छवि बावरी साँवरी बाहु, मिटि गयौ हेरत हिय कौ दाहु ।
 कटि किकिनि, चरननि बर नूपुर, हौ बलि बलि कीनौ तिन ऊपर ।
 बसुदेव देखि सु मन मन गुने, ऐसौ बालक होत न सुने ।
 ३० पुनि कीनौ श्रुति-सार-विचार, मेरे घर ईस्वर अवतार ।

कह्यौ हुतौ सु भयौ यह अबै, पूर्न मनोरथ मेरे सबै ।
 बढ्यौ जु आनंद-मिधु सुहायौ, ताही मैं वसुदेव ग्रन्हायौ ।
 दस सहस्र गैया रँग भीनी, मन ही करि संकल्पित कीनी ।
 सुद्ध बुद्धि, वत्सल रस भरे, अजुलि जोरि स्तुति अनुसरे ।
 कही कि हो प्रभु । मैं तुम जाने, प्रकृति तैं परे जु पुरुष बखाने । ३५

पूर्व पक्ष

जौ कहहु कि याकौ कहा लह्यौ, पुरुष तौ प्रकृति परे हौ कह्यौ ।
 तहँ तुम मुनहु कमल-दल-नैन, जहाँ न पहुँचै श्रुति के बैन ।
 मुनि मन जिहि समाधि मधि हेरे, सो साच्छात दृगन-पथ मेरे ।
 प्रभु जु आनि मेरे अवतरे, परम तरुन करुना करि भरे ।
 नृप-दल करि बढि असुर बिकारी, कीनी भूमि भार करि भारी । ४०
 तिनिहि निदरिहौ भू-भर हरिहौ, सतन की रखवारी करिहौ ।
 ऐ परि सावधान इहि बीच, निपटहि बुरो कस यह नीच ।
 तुम्हरे जनमहि मुनि कै अबै, ऐहै आयुध लीने सबै ।
 तदनतर देवकि अवहेरे, महापुरुष लच्छन सुत केरे ।
 मंद मद मधुरे मुसकाइ, कीनी स्तुति थोरियै बनाइ । ४५
 ब्रह्म निरीह जोति अविकार, सत्तामात्र जगत-आधार ।
 अरु अध्यातम-दीप जु कोई, बुध्यादिक परकासक सोई ।
 सो साच्छात बस्तु तुम आहि, भै-सका ह्याँ कहियै काहि ।
 अरु जब लोक चराचर जितौ, लीन होत माया मैं तितौ ।
 तब तुम ही तहँ रहत अकेले, छेमधाम निज रस मैं भेले । ५०

- अरु यह मृत्युरूप जो ब्याल, संग फिरत नित महा कराल ।
 जो कोउ सकल लोक फिरि आवै, यातै अभै न कित हूँ पावै ।
 कौनहुँ भागि-जोग करि कोई, तुव पद-पकज प्राप्त होई ।
 तब भले मीच नीच फिरि जाइ, चरन-सरन गये कछु न वसाइ ।
- ५५ प्रभु यह तुम्हरौ अद्भुत रूप, ध्यान जोग्य, निपट ही अनूप ।
 अरु प्रभु मो तै जनम तिहारौ, जिनि जानै यह कस हत्यारौ ।
 रूप अलौकिक उपसंहरौ, हे सुदर वर ! नर वषु धरौ ।

पूर्व पक्ष

- जौ कहहु कि मो सौ सुत पाई, पैहौ जग मै बडी बडाई ।
 तब तुम सुनहु कमल-दल-नैन, या अनूप रूप सौ बनै न ।
- ६० जाके जठर मध्य जग जितौ, जथा विकास रहत है तितौ ।
 सो मम गर्भ-भूत जो सुनिहै, हँसिहै मोहि, असंभव मनिहै ।
 तब बोले श्री हरि मुसकात, जौ तुम या कंस तै डरात ।
 तौ मोहि उहि गोकुल नद के, लै राखौ आनदकद के ।
 इतनी कहि कै मोहनलाल, देखत भये तनक से बाल ।
- ६५ देवकि दौरि कंठ लपटाये, प्रान तै अधिक पियारे पाये ।
 बसुदेव कहै विलंब न लाइ, दै मोहि सुत रिपु जैहै आइ ।
 लै लटि रही कंठ लपटाइ, अति सुदर सुत दियौ न जाइ ।
 पुनि कंस तै महा डर डरी, पिछले पूतन की सुधि करी ।
 लीनौ तनक पयोधर प्याइ, फूल सौ जिनि मग मै कुम्हिलाइ ।
- ७० पुनि पुनि बदन-चंद्रमा चूमि, दीनौ सुत पै अति दुख घूमि ।

लयौ लपेटि सु पट बर बाल, बसुदेव चले नुरत तिहि काल ।
 आपुहि उघरे कुटिल किवार, भोर भये ज्यौ भजत अँध्यार ।
 पौरनि परे पहरुवा ऐसै, अति मादक मद पीये जैसै ।
 घुरि आये घन करि अँधियारी, जान्यौ परै न ज्यौ रवि बारौ ।
 फुही फूल से परत सुदेस, ते सहि सक्यो न सेवक सेस । ७५
 प्रेम-मगन सु गगन में आइ, लयो फनन कौ छत्र बनाइ ।
 बसुदेव सुत-मुख के उजियारे, चन्चौ जाइ आनंद भरि भारे ।
 जम-अनुजा की ढिँग जौ जाइ, बाट न घाट, रही जल छाड़ि ।
 उठहि जु लहरि सुधि न कछु परै, चढ़ी गगन सौ बातें करै ।
 दृष्टि परि गये मोहन जब ही, मधि तै इत-उत ह्वै गई तब ही । ८०
 दीनौ प्रभु कौ मारग ऐसै, सीतापति कौ सागर जैसै ।
 इत सोचति देवकि महतारी, ह्वैहै मेरौ ललन दुखारी ।
 भरि भादौ की रैन अँध्यारी, लहलहाति बिजुरी बजमारी ।
 बहुरचौ बीच कलिंदी कारी, भरि रही नीर भयानक भारी ।
 चंद सौ बदन दुरचौ नहि रहिहै, दैया कोऊ द्वारि तै लहिहै । ८५
 डोलत बहुत कंस के दूत, दैव कुसर सौ जैहै पूत ।
 यौ बिललाइ देवकी माइ, कहति कि हो हरि तुमहा सहाइ ।
 निरख्यौ जदपि पूत-परभाउ, तदपि प्रेम कौ यहै सुभाउ ।
 बसुदेव जब गोकुल में गये, देखे सब निद्रा-बस भये ।
 सुत जसुमति की ढिँग पौढ़ाइ, सुता परी तहँ तै इक पाइ । ९०
 लै आये फिरि ताही बाट, तैसैई जुरि गये कुटिल कपाट ।
 बैठे बहुरि पहिरि पग बेरी, ज्यौ कोउ गाड़ि धरै धन ढेरी ।

जो कोउ जोतिमय ब्रह्ममय, रसमय सब ही भाइ ।
सो प्रगटित निज रूप करि, इहि तिसरे अध्याइ ॥

चतुर्थ अध्याय

अब चतुर्थ अध्याइ सुनि, परम अर्थ कौ दैन ।

संस परी जहँ कस-जिय, चड चडिका वैन ॥

बालक धुनि सुनि परी जु रौर, उठे पहरवा ठौरहि ठौर ।

धाये गये कस के ऐन, अठयौ गर्भ महा भय दैन ।

५ सुनेतहि उठ्यौ तलपते कस, कहत कि आयौ काल नृसस ।

कर करवार, सु बगरे वार, न कछु सँभार, महा विकरार ।

उखटत परत, सु बिहबल भयो, डरत डरत सूती-गृह गयो ।

बोलि उठी देवकि छविमई, भैया न डरि भनैजी भई ।

याहि न मारि देखि दिसि मेरी, हौ अनुजा मनुजाधिप तेरी ।

१० डारे हैं तै हति बहुतेरे, पावक की उपमा सुत मेरे ।

इह इक भो कौ माँगी दीजै, बलि बलि, अति अनीत नहि कीजै ।

नीचन के को सुहृद सुभाउ, तामै यह नीचन को राउ ।

चपरि छती तै लई छडाइ, पकरि पाइ ऊँचे उचकाइ ।

सिल पर पटकन कौ भयो जबै, कर तै निकसि गई सो तवै ।

१५ जाइ गगन मै देवी भई, महा तेज छाजति छविछई ।

राजति राजिवदल से नैना, बोली बिहँसि कस सौ वैन ।

रे रे मंद ! न करि जिय गारो, उपज्यौ है तुव मारनहारौ ।

ताके बचन सुनत ही कस, बिस्मय भयौ, परचौ जिय सस ।
 कहत कि देबी बानी महा, भूठ परी सो कारन कहा ।
 देवकि बसुदेव दीने छोरि, बिनती करत कस कर जोरि । २०
 अहो भगिनि ! अहो भगिनीभर्ता ! मो सम नहि न पाप कौ कर्ता ।
 राच्छस ज्यौ अपने सुत खाइ, सो मै कीनी नीच सुभाइ ।
 ज्यौ ब्रह्महा जीवत ही मरचौ, ऐसी हौ हूँ विधना करचौ ।
 नर तौ जनौ अनृत ही पगे, अमरौ अनृत वकन पुनि लगे ।
 जिहि बिस्वास सुसा के तात, सोनक ज्यौ मै कीनी घात । २५
 जिनि सोचहु उन के अनुराग, जातै तुम समभन बड भाग ।
 निज प्रारब्ध कर्म करि बोरे, रहत न सदा जत इक ठौरे ।
 तातै सोक तजहु दुखमई, कर्म-विषस जु भई सो भई ।
 छिमा करहु मेरौ अपराध, जातै दीनबधु तुम साध ।
 ऐसै कहि लोचन जल भरचौ, दौरि सुसा के पाइनि परचौ । ३०
 सात भयौ देवकि कौ रोष, बसुदेव बहु पुनि कीनौ तोष ।
 आग्या पाइ जाइ घर कस, कन्या-वचन सुनि परी सस ।
 रजनी गये भयौ परभात, मत्रिन सौ वरनी सब बात ।
 सुनि नृप-वचन असुर भहराने, अमरन पर निपट ही रिसाने ।
 कहन लगे जो ऐसै आहि, महाराज तौ डरौ न ताहि । ३५
 दस दस दिन के बालक जिते, हम सब मारि डारिहै तिते ।
 को उद्दिम करिहै सब देव, जानत है हम उन के भेव ।
 अभय ठौर तौ बलान करें, भीर परे तै थर थर डरें ।
 सुरपति कवन अल्प बल जाहि, ब्रह्मा बपुरी तपसी आहि ।

- ४० संभु न कछू, तियन तें बुरौ, रहत इलाबृत बन में दुरौ ।
 बिष्णु कहुँ इकंत है परचौ, हे राजन तेरे डर डरचौ ।
 ऐ परि रिपु अलप न जानियै, मर्म दुखद बहुतै मानियै ।
 कितक होत उह कंटक जैसै, चरन मध्य कसकत है कैसै ।
 अरु ज्यौ अंग रोग अकुरै, तब ही जौ न जतन अनुसरै ।
- ४५^३ तौ बड़ि जाइ न कछू बसाइ, तातें कीजै तुरत उपाइ ।
 प्रथमहि उत्तम मति इह करौ, धरि धरि रूप धरनि संचरौ ।
 गाइन मारौ मखन बिगारौ, रिषिजन पकरि भछन करि डारौ ।
 बिष्णु के बध कौ इहै उपाइ, हतियै विप्र, बेद, अरु गाइ ।
 मंत्रिन मिलि जब यह मत ठान्यौ, दुर्मति कंस महा हित मान्यौ ।
- ५० संतन कौ बिद्वेस जु आहि, मृत्युमात्र जिनि जानहु ताहि ।
 आयु, कीर्ति, सपति सब हरै, अवर बहुत अनरथ कौ करै ।
 आग्या पाइ चले सब सठ वै, ज्यौ कोउ बृकन अजन प्रति पठवै ।
 बुरौ हौन कौ हौइ जब, तब उपजत ये भाइ ।
 बेद-बिप्र निदा करै, कह्यौ चतुर्थ अध्याइ ॥

पंचम अध्याय

अब पंचम अध्याइ सुनि, जो है माथे भाग ।
 नंदमहोत्सव नवल घन, बरपैगौ अनुराग ॥
 नंद-महर-घर जब सुत जायौ, सुनि कै सवन प्रान सौ पायौ ।
 नंद उदार परम मुद भरे, फूले नैनन राजत खरे ।

यौ सुत-उदै-पयोनिधि पेखि, बढ़ति है रंग-तरंग बिसेखि । ५
 बोले ब्रज के द्विज बडभागी, जिन के हुती यहै लौ लागी ।
 स्वच्छ सुगंध सलिल अन्हवाये, बिप्रन चदन तिलक बनाये ।
 नंद के भूषन दिखि मन भूल्यौ, जनु आनंद महीरुह फूल्यौ ।
 बिधिवत जातकरम करवाइ, लागे दान दैन ब्रजराइ ।
 द्वै लख धेनु सबछ बहु दूधी, प्रथम प्रसूता, सुदर, सूधी । १०
 कंचन सींग मढ़ी सोहनी, कचन की बड़ी दोहनी ।
 बहुरौ तिल अरु रतन मिलाइ, कीने बड़े सैल बनाइ ।
 ऊपर कचन छादन छाइ, दीने ब्रज के द्विजन बुलाइ ।
 अवर बहुत दीनौ ब्रजराज, अपने कुल-मंडन के काज ।
 तिहि छिन नद-सदन की सोभा, नहि कहि परत लगत जिय लोभा । १५
 इत जु बेद-धुनि की छवि बढी, मंगल बेलि सी त्रिभुवन चढ़ी ।
 इत मागध सु बस जस पढ़ै, इत बदीजन गुनगन रढ़ैं ।
 गावत इत जु रागिनी राग, चुये परत जिन के अनुराग ।
 आनंदघन जिमि दुदुभि बजै, जिन सुनि सकल अमंगल भजै ।
 सुनि कै गोप महा मुद भरे, चले महरि-घर रगनि ररे । २०
 पहिरे अवर सुदर सुदर, जे कब हूँ निरखे न पुरंदर ।
 मंगल भेट करन मै लिये, मैने से लरिकन आगे किये ।
 गोपी मुदित, भयौ मन भायौ, महरि जसोदा ढोटा जायौ ।
 प्रफुलित ही सो लागति भली, को है प्रात कमल की कली ।
 कुकुम-रस रंजित मुख लौने, कनक-कमल अस नाहिन हौने । २५
 चली तुरत सजि सहज सिंगार, छतियन उछरत मोतियन हार ।

- श्रवणनि मनि कुडल भलमलै, बेगि चलन कौ जनु कलमलै ।
 चले जु चपल नैन छवि बढे, चंदन मनहुँ मीन हे चढ़े ।
 सुसम कुसम सीसन तै खसे, जनु आनंद भरे कच हँसे ।
- ३० हाथनि थार सु लागत भले, कंजनि जनु कि चद चढ़ि चले ।
 मंगल गीतन गावति गावति, चहुँ दिसि तै आवति, छवि पावति ।
 नंद-अजिर मै लगी सुहाई, जनु ये सब कमला चलि आई ।
 छिरकत सबन हरद अरु दही, तब की छवि कछु परत न कही ।
 सुदर मंदिर भीतर गई, जसुमति अति आदर करि लई ।
- ३५ लै लै अंचल ललित सुहाइ, चूमै सबहिन सिसु के पाइ ।
 पौढ़े ललन जसोमति आगे, भीने पट मै नीके लागे ।
 बदन उधारि उधारि निहारै, देह असीस अपनपौ वारै ।
 हो हरि ! यहलरिका चिरजीजो, बहुत काल हम कौ सुख दीजो ।
 ब्रज की छवि कछु कहत वनै न, जहँ आये श्री पकज-नैन ।
- ४० घर औरै, अंगन कछु और, जगमग जगमग ठौरहि ठौर ।
 नग जु लगे, यौ बने सुहाये, गृहन के जनु कि नैन ह्वै आये ।
 मुक्ता-बदनमाला लसै, जनु आनंद भरे घर हँसै ।
 धाम धाम प्रति धुजन की सोभा, जनु निकसी ब्रज-छवि की गोभा ।
 जितिक हुती ब्रज गो, बछ, बाछी, तेल-हरद करि आछी काछी ।
- ४५ माथे मनिमय पटी बनाई, कचन दाम सबन पहिराई ।
 तब नंद जू गोपगन जिते, बैठारे मनि आंगन तिते ।
 नव अवर सुदर मनिमाला, पहिराये सब जन तिहि काला ।
 पुनि जितिक गोपी जन आई, ते रोहिनीन सबहि पहिराई ।

कचन पट, पदकन के छरा, सुंदर गजमोतिन के हरा ।
 औरौ जन जे कौतुक आये, नद-महर ते सब पहिराये । ५०
 मगत जन परिपूरन भये, दारिद हू के दारिद गये ।
 तब तै ब्रज-छवि अस कछु लसी, रमा रीभि कै तहँई बसी ।
 मास दिवस के मोहनलाल, कछुक भये मुंहचहें रसाल ।
 सुंदर बदन बिलोके नद, छिन छिन पावत परमानंद ।
 रचक द्वार-सभा में जाहि, बहुरचौ नद भवन उठि आहि । ५५
 दिन दिन बढत अंग की काति, निरमल बाल इंदु की भाँति ।
 ऐसै गाभ महा दुख पायौ, कस कौ कर देनौ दिन आयौ ।
 रच्छक राखि घोष में भल, मथुरा नगर नद जू चले ।
 तन आगे, मन पाछे ऐसै, दड के सग पताका जैसै ।
 तुरत जाइ नृप कौ कर दियो, ब्रजपति ब्रज चलिबे कौ भयौ । ६०
 समाचार बसुदेव जु पाये, सखहि मिलन सुनतौ ही आये ।
 निरखि जु उठे नद भरि नेह, ज्यौ प्रानन के आये देह ।
 जैसै मीत-मिलन है कह्यौ, सो बसुदेव नद के लह्यौ ।
 बैठे परम प्रेम-रस पागे, बसुदेव बात कहन अस लागे ।
 अहो भ्रात बड मगल भयौ, विधना तुमरे पूत जु दियौ । ६५
 बडे भये हे करत बिलास, कौनै हुती पूत की आस ।
 अरु हम मिले भयौ मनभायौ, फिरि कै बहुरि जनम सौ पायौ ।
 सब ह्वै आवै अपने ढार, मीत-मिलन दुर्लभ ससार ।
 जो कबहूँ काहूँ सजोग, आनि मिलहि जे प्रीतम लोग ।
 तौ ये नाना कर्म बिचित्र, इकठे रहन न पावै मित्र । ७०

- जैसे नदी तरंगन पाइ, मिलत है आठ-काठ बहि आइ ।
 बहुरि जु कोउ लहरि उठि आवै, पकरि पकरि धौ कितहि बहावै ।
 पुनि पूछत सुत की कुसरात, गदगद कठ, फुरत नहि बात ।
 अहो भ्रात ! वह तात हमारौ, नीकौ है रोहिनी-पियारौ ।
- ७५ तुम करि तोषित-पोषित गात, तुम ही समझत ह्वैहौ तात ।
 जदपि अर्थ धर्म अरु काम, इन करि भरचौ पुरुष कौ धाम ।
 अहो नद ! तदपि न सुख कोई, सुहृदन कौ बियोग जहँ होई ।
 नंद समोधत ताकौ चित्त, सब अदिष्टबस होत है मित्त ।
 जौ तो निपट बिकूल बिधात, केते हते कस तुव तात ।
- ८० कन्या एक जु पाछे भई, सु पुनि अदिष्ट लई, उड़ि गई ।
 है सब उहि अदिष्ट के धोरे, बिछुरे मिलवै, मिले बिछोरे ।
 नद की बानी दैवी जानी, मिलिहै मोहिंसुत, यौ जिय आनी ।
 तब कही अहो बेगि तुम जाहु, पूतहि रचक जिनि पतियाहु ।
 ये दिखि फरकत मेरे गात, ब्रज मै आहि कछू उत्पात ।
- ८५ सुनतहि बचन नद कलमले, कवन पवन ऐसी विधि चले ।
 प्रेम-रपट बिच परी जु आइ, रचक सूधे परत न पाइ ।
 इहि प्रकार पचम अध्याइ, जो कोउ सुनै तनक मन लाइ ।
 दीपमान सो मुक्ति न गहै, और छुद्र सुख की को कहै ।
 जदपि नित्य किसोर हरि, बदत बेद इमि बैन ।
- ९० सबै वैस सुख दैन ब्रज, प्रगटे पंकज-नैन ॥

षष्ठ अध्याय

सुनि लै छठौ अध्याइ अब, अहो मित्र अति चित्र ।

जहों सकल मल कौ हरन, बकी चरित्र पबित्र ॥

सोचत चले नद मग माही वसुदेव बचन मृषा तौ नाही ।
 हो हरि ईस्वर, सरन तुम्हारी, वा सिसु की कीजहु रखवारी ।
 इक तौ सहजहि हुती नृसंस, पुनि चेरी करि प्रेरी कस । ५
 ग्राम, नगर, पुर, पट्टन जिते, मास बीच के बालक तिते ।
 चली पूतना सिसुन सँघारति, केउ पटकति केउ खाइहि डारति ।
 इहि बिधि बिचरति बिचरति बकी, इक दिन ब्रज आई तक तकी ।
 श्री सुक यौ जब कही सुभाइ, राजा सुनत बिकल ह्वै जाइ ।
 ताकौ समाधान सुक करै, हे राजन ! इहि डर जिनि डरै । १०
 नाममात्र जिहि प्रभु कौ जहाँ, ऐसन कौ प्रभाउ नहि तहाँ ।
 सो साच्छात नद कौ धाम, भै-सका कौ इहाँ न काम ।
 अद्भुत वनिता-बेष बनाइ, अँग अँग रूप अनूप चुचाइ ।
 ललित सु भूषन, ललित दुकूल, खसि खसि परत सीस तै फूल ।
 कठ मै हीरा, आनन बीरा, पाइनि बाजत मजु मँजीरा । १५
 लटकि चलत तब को छवि गनौ, परिहै टूटि लटी कटि मनौ ।
 कमल फिरावत नयन डुरावति, मधुर-मधुर मुसकति, छवि पावति ।
 गोप रहे सब जोहे मोहे, जानहि नहिन कछू हम को हे ।
 गोपी चकित चाहि कै ताहि, कहन लगी कि रमा यह आहि ।
 अपने पिय कौ देखति डोलति, यातै नहि काहू सौ बोलति । २०

- लरिकन लहति लहति छबिछई, नंद के सुदर मदिर गई ।
 ग्राछी बनक कनक कौ पलना, पौढे तहाँ तनक से ललना ।
 प्यामल अंग सु को छवि गनौ, मृदुल नीलमनि पुतरी मनौ ।
 बाल भाउ मै दुरि रहे ऐसै, तीछन अग्नि भसम मधि जैसै ।
- २३ आवत तकी बकी जब ऐना, मूँदे नैन कमल-दल-नैना ।
 मेरे हेरत बेस कपट कौ, रहिहै नही पूतना अटकौ ।
 यातै मूँदि रहे दृग नाथ, विस्व चराचर जाके हाथ ।
 मुसकति मुसकति तहँ चलि गई, लालहि लपकि लेत ही भई ।
 देखत कौ तौ छूटनौ बाल, ऐ परि आहि काल कौ काल ।
- ३० सोवत परचौ भुजगम जैसै, रज्जु-बुद्धि कोउ गहत है तैसै ।
 अस कछु रूप-प्रेम करि छई, जसुमति पुनि न निवारति भई ।
 जैसै तीछन अति करवार, ऊपर रतन-जटित परिवार ।
 जसुमति कहति चाहि कै ताहि, हौ जननी, कि जननि यह आहि ।
 आई है जो जुगति बनाइ, तरल गरल दुहुँ थनन लगाइ ।
- ३५ प्यार सौ ललन पियावन लगी, चूमति जाति कपट-रस-पगी ।
 इक कुच मुख, इक कर मै लिये, पियत गोबिदचंद मन दिये ।
 इकलौ विष अपथ्य दुखदाइ, लीने ताके प्राण मिलाइ ।
 पियत भये सुदर नंद-नंद, मुसकत जात मद छवि-कद ।
 अँग अँग विथित भई जब भारी, कहति कि छाँड़ि छाँड़ि हौ वारी ।
- ४० छाँड़त क्यौ, है भूखी बालक, जगपालक, ऐसैई घरघालक ।
 छुटै न सिसु अपनौ सौ पची, कनकसौं जनु कि नीलमनि खची ।
 तब धरि अपनौ रूप चिधारी, भयौ जु नाद भयानक भारी ।

सुगं रसातल, भूतल जेतौ, सब कलमल्यौ, हलमल्यौ तेतौ ।
 दोउ कुच पकरि उचकि वह नारी, लै डारी गोकुल तैं न्यारी ।
 षट कोस के लता-द्रुम जिते चूरन ह्वै गये तिहि-तर तिते । ४५
 जे द्रुम-लता निपट प्रतिकूल, हुते न गोकुल के अनुकूल ।
 ते तिहि तन-तर चूरन करे, उवरे जे ब्रज-हित करि भरे ।
 प्रथमहि ताके नाद जु डरे, ब्रज-जन जहाँ तहाँ गिरि परे ।
 पाछे उठि उठि देखन धाये, देखि रूप अति त्रासहि पाये ।
 मुँह-वाये जु परी बिकरार, तपत ताम्र से बगरे बार । ५०
 हल-दंड से बड़े बड़े दंत, गिरि-कंदर-सम नासा-दंत ।
 अंध कूप से नैन गँभीर, बैठि जु गये प्रान की पीर ।
 उदर भयंकर लागत ऐसौ, बिनु जल महा सरोवर जैसौ ।
 जघन सघन जु भयानक भारे, महानदी के जनु कि किनारे ।
 ताके उर पर सुदर बाल, खेलत अभय, सु नैन बिसाल । ५५
 जे पद रहत भगत-जन हिये, लालति ललित भौंति श्री लिये ।
 मनि-मन जिनिहि पत्यात न रती, ते पद बिलुठत ताकी छती ।
 गोपी परम प्रेम-रस-बोरी, फिरति पूतना तन पर दौरी ।
 ललहि उठाइ छती लपटाइ, लै आई जहँ जसुमति माइ ।
 ब्रजरानी अनेक धन वारति, पुनि पुनि राई लौन उतारति । ६०
 गोमूत्र लै ललहि अन्हवाइ, गोरज, गोमय अंग लगाइ ।
 हरि के द्वादस नामन करि कै, रच्छा करी ब्रज तियन डरि कै ।
 नीकौ भयौ, पयोधर प्यायौ, जननी-जठर जीउ तब आयौ ।
 बदन चूमि जसुमति यौ भाख्यौ, आज पत परमेसुर राख्यौ ।

- ६५ तब लौ नंदादिक ब्रज आये, ताहि निरखि अति बिस्मय पाये ।
 लै लै तीच्छन धार कठार, छेदे ताके अग करार ।
 करखि-कढ़ोरि दूरि लै गये, बहुत काठ दै दाहत भये ।
 अचरिज नहि जु कृष्ण भगवान, ताकौ कियौ पयोधर पान ।
 सिसु-धातिनी, परम पापिनी, संतन की डसनी साँपिनी ।
- ७० बहुरचौ हरि कौ मारन गई, सु तिय मुक्ति की रानी भई ।
 जे जन श्रद्धा करि अनुसरै, मधुर बस्तु लै आगे धरै ।
 तिन की कौन कहि सकै कथा, गोकुल की गो-गोपी जथा ।
 सूँघत सूँघत ब्रजजन जिते, नंद-महर-घर आये तिते ।
 समाचार सुनि बिस्मय पाये, ललहि निरखि दृग जरत जुड़ाये ।
- ७५ नंद परम आनंदहि पाइ, लीनौ तनय कठ लपटाइ ।
 कही कि जहँ गयौ कोउ न आयौ, तहँ तै मै यह ढोटा पायौ ।
 कीनी बहुरि बधाई नंद, दीने बहु धन, गोधन-बृंद ।
 यह जु पूतना-चरित्र विचित्र, छठे अध्याइ सु परम पवित्र ।
 जो इहि हित सौ सुनै-सुनावै, सो गोविंद विषै रति पावै ।
- ८० दानव-कुल भोजन विविधि, कियौ चहत भगवान ।
 प्रान पूतना के मनहुँ, किये प्रथम सोपान ॥
 'नद' न डरि, हिय हेतु करि, उर धरि छठौ अध्याइ ।
 पूत भई जहँ पूतना, प्रभुहि अपेइ पिवाइ ॥

सप्तम अध्याय

अब सप्तम अध्याइ सुनि, सुदर श्रुति कौ सार ।

जामै लाल रसाल कौ, बालचरित-मधुधार ॥

सुनि सप्तम अध्याइ उदार, जामै बालचरित-मधुधार ।
 जिहि रस-सिंधु मगन भयौ राजा, फिरि पूछै सुक अति सुख काजा ।
 हो प्रभु ! हरि कौ बालचरित्र, अति विचित्र अरु परम पबित्र । ५
 जदपि अवर हरि के अवतार, मगरूप सकल श्रुति-सार ।
 पै यह बालचरित-मधुधार, या सम कछु न अवर ससार ।
 पियत तृपति मानत नहि कान, औरौ कहौ जानमनि जान ।
 फुरे जु बालचरित-रस-रग, कहन लगे सुक पुलकित अंग ।
 इक दिन आपुहि करवट लई, जननी निरखि मुदित अति भई । १०
 बोलि सबै गोकुल की बाला, उत्सव किये महा तिहि काला ।
 सकट के अध धरि कचन-पलना, सुतहि सुवाइ नद की ललना ।
 बिदा करन लोगन कहूँ लगी, डोलत सुत-सनेह रँगमगी ।
 रतन मिलै तिल-चावल कीनी, भरि भरि गोद सबन कौ दीनी ।
 पूत उदै के हित ललचाइ, मति कोउ मन मैलौ करि जाइ । १५
 लगी जु भूख ललन जब जगे, मधुर मधुर तब रोवन लगे ।
 पलना ढिँग बालक जब आइ, निरखे हरि बालक के भाइ ।
 कबहूँ किलकि किलकि कल केलत, चरन-अँगूठा मुख मै मेलत ।
 जसुमति रुदन सुनति नहि भई, अति आनंद मगन ह्वै गई ।
 बरहे चरत फिरत ज्यौ गाइ, सब मन रहत बच्छ मै आइ । २०

- तहँ अभिचार असुर इक सटक्यौ, दौरि कै सकट बिकट मै अटक्यौ ।
 ललन कौ दलन जवाहि वह नयौ, तब तहँ अदभुत कौतुक भयौ ।
 तनक जु बाम चरन यौ करचौ, उडि कै जाइ उड़नि मै ररचौ ।
 बड़ौ सकट जब उलटौ परचौ, दिखि सब लोग अचंभे भरचौ ।
- ३५ धाइ गई तहँ जसुमति मैया, कहत कि कहा भयौ यह दैया ।
 तान्तर पूत कसर सौ पायौ, जननी जठर जीउ तब पायौ ।
 नंदादिक तहँ धाये आये, सकट बिलोकि सु बिस्मय पाये ।
 तिन सौ कहन लगे सिसु बात, अहो महर ! यह तेरौ तात ।
 तनक चरन ऐसे करि करचौ, तौ यह सकट उलटि है परचौ ।
- ३० कहत कि कह जानहि ये बारे, उलटत कूट कमल के मारे ? ।
 सबन कही कि नंद बड़भागी, लरिकहि रंचक आँच न लागी ।
 तब तै नंद महर की ललना, पूतहि परचौ पत्याइ न पलना ।
 इक दिन ललन लिये दुलरावति, लाल के बालचरित कछु गावति ।
 तृनावर्त जान्यौ आवतौ, कियौ चहत ताकौ भावतौ ।
- ३५ मात सहित जौ मोहि उडैहै, तौ मेरी मैया दुख पैहै ।
 तातै ललन भयौ अति भारी, चकित भई जसुमति महतारी ।
 थँभ्यौ न सिसु, अपनी सौ करचौ, तब धरनीधर धरनी धरचौ ।
 आयौ बातचक्र रिस भरचौ, धुनि सुनि सब गोकुल थरहरचौ ।
 उड़वत धूरि, धरे काँकरी, सबन के दृगनि परी साँकरी ।
- ४० लै गयौ लरिकहि गगन उड़ाइ, तरफत फिरत जसोमति माइ ।
 मूँदे लोचन, हूँदति डोलति, रे कित गयौ पूत, यौ बोलति ।
 जितहि धरचौ हौ तित नहि पायौ, जसुमति जिय धौ कित बिरमायौ ।

परी धरनि धुकि यौ बिललाइ, ज्यौ मृत बच्छ गाइ डिडियाइ ।
 जसुमति-धुनि सुनि धाई गोपी, आई महा विरह-रस-ओपी ।
 गिरि गई जसुमति ढिँग-ढिँग ऐसी, कंचन-बेलि पवन-बस जैसी । ४५
 त्रिभुवन कौ जु भार हो जितो, श्री हरि उदर धरचो हो तितौ ।
 बदीयै तृनावर्त बल जुडचौ, ऐसै लरिकहि लै नभ उडचौ ।
 थोरिक दूरि गयौ रँगमग्यौ, पुनि अति भार भरचौ डगमग्यौ ।
 कहत कि वह सिमु हाथ न आयौ, यह कोउ गिरिवर जाइ उठायौ ।
 लरिकहि डारन कौ अरवरे, लरिका डरपि घुरि गयौ गरे । ५०
 गर के गहत निचष्टित भयौ, दृगन की बाट निकसि जिउ गयौ ।
 तब वह महा असुर खरहरचौ, ब्रज के बीच सिला पर परचौ ।
 किरच किरच टुटि-फुटि गयो ऐसै, हर सर हत्यो तिपुर रिपु जैमै ।
 ताके उर पर मोहनलाल, खेलत अभै, सु नैन बिसाल ।
 गोपिन धाइ जाइ सिमु लयौ, आनि जसोदा गोद में दयौ । ५५
 सुनि कै सब जन धाये आये, निरखि रूप अति विस्मय पाये ।
 चूमत बदन नंद बड़भागी, पौछन रेनु तनय-तन लागी ।
 कहत कि कवन पुन्य हम कियौ, हरि अरचे कि दान बहु दियौ ।
 काल के मुख में बानक गयौ, तहँ तै बहुरि बिधाता दयौ ।
 पापी अपने पापहि मरै, साधु की रच्छा ईस्वर करै । ६०

दीपक प्रगटचौ नंद-घर, निर्मल जोति अभंग ।

उड़ि उड़ि परन लगे जहाँ, दानव दुष्ट पतंग ॥

तृनावर्त आवन में बाल, भयौ जु अति भारी तिहि काल ।
 जननी के जिय संका रहै, हरि वह भार जनायौ चहै ।

- ६५ इक दिन ललन लिये गोद में, जसुमति मगन महा मोद में ।
 बैठी मधुर पयोधर प्यावति, मुँह अगुरि दै दै मुसकावति ।
 अरुन अधर दँतियन की जोती, जपाकुसुम मधि जनु विवि मोती ।
 ललनहि तनक जँभाई आई, तब जसुमति अति बिस्मय पाई ।
 धर, अंबर, सूरज, ससि, तारे, सर, सरिता, सागर, गिरि भारे ।
- ७० बिस्व चराचर है यह जितौ, सुत-मुख मध्य बिलोक्यौ तितौ ।
 नैन मूँदि रही अति भय भरी, बहुरि बिचार परी, सुधि करी ।
 कहन लगी इह ईस्वर कोई, जाकी चितवनि मै जग होई ।
 बहुरि उदर मधि राखत जोई, मेरे घर इह बालक सोई ।
 ऐसे करि जब जसुमति जाने, तब हरि हँसि कै गर लपटाने ।
- ७५ पुत्र सनेहमई रसमई, माया जननि उपर फिर गई ।
 ईस्वरता कछु नहि दुरी, सब कोउ जानत ताहि ।
 सो प्रभु सुत करि पाइबौ, यह अति दुस्तर आहि ॥

अष्टम अध्याय

- अब अष्टम अध्याइ सुनि मित्र, नामकरन मन-हरन पवित्र ।
 सुत-मुख-मध्य बिस्व जब चह्यौ, सो जसुमति ब्रजपति सौ कह्यौ ।
 ब्रजपति हू के मन भै गयौ, नामकरन जु नाहिनै भयौ ।
 तब ही गर्ग पुरोहित आयौ, नाम करन बसुदेव पठायौ ।
- ५ ताहि निरखि अति हरखे नंद, बरखे तन-मन परमानंद ।
 प्रथम अमी-बचनन करि अरचे, बहुरचौ चंदन-बदन चरचे ।

कही कि तुम परिपूरन नाथ ! रिधि-सिधि-निधि सब तुम्हरे हाथ ।
 कवन वस्तु करि पूजा कीजै, ज्यौ दिनमनि कौ दीपक दीजै ।
 महापुरुष जो चलत ठौर तै, नहि कछु चाहत काहु और तै ।
 कृपन जु गृह-ममता करि बँधे, चलि न सकत दृढ़ फदन फँधे । १०
 केवल तिन कौ करन कल्यान, दिखियत नहिन प्रयोजन आन ।
 ज्योतिसास्त्र जु अतीन्द्रिय ग्यान, ताके तुम ही बीज निदान ।
 पूर्व-जन्म जु सुभासुभ करै, जा करि जतु जगत सचरै ।
 आगे होनहार पुनि जोई, प्रभु तुम सम्यक जानत सोई ।
 नामकरन लरिकन कौ कीजै, कवन सु बिधि मोहि आयसु दीजै । १५
 गर्ग कहत अहो सुनि ब्रजराज ! यातै अवर न उत्तम काज ।
 ऐ परि हौ गुर जदु-बंस कौ, मोहि बडौ डर वा कस कौ ।
 सुनि पावै नीचन कौ राइ, तौ तौ हौइ बडौ अन्याइ ।
 नद कहत तौ ऐसै करौ, गृह-मधि गुप्त ठौर अनुसरौ ।
 तनक स्वस्ति-बाचन करि लीजै, लरिकन कछू नाँउ धरि दीजै । २०
 गर्गहि अरग गये लै नद, अग्निनिहोत्र करि मंदहि मद ।
 प्रथम रोहिनी-सुत के नाम, धरन लग्यौ द्विज सब गुन-धाम ।
 याकौ एक नाम सकर्षन, जन-हर्षन, सब के मन-कर्षन ।
 बहुरचौ राम परम अभिराम, अति बल तै कहिहै बलराम ।
 अब सुनि अपने सुत के नाम, अद्भुत अद्भुत गुन के धाम । २५
 इक श्री कृष्ण नाम अस ह्वैहै, ससि-सम सुधा सवन पर चवैहै ।
 कबहूँ पूर्व-जन्म सुत तेरी, पूत भयौ हे बसुदेव केरौ ।
 तातै बासुदेव इक नाम, पूरन करिहै सब के काम ।

- याके अवर जु नाम अनत, गनन गनत कोउ लहै न अंत ।
 ३० कहत है द्विजवर भरि आनद, बहुत कहा कहियै हो नंद ।
 नाराइन मधि गुन है जिते, तेरे सुत मधि भलकत तिते ।
 छवि, सपति, कीरति रसमई, नाराइन हू तैं अधिकई ।
 सुनि कै नंद परम आनदे, बार बार द्विजवर-पद बदे ।
 जसुमति ताहि बहुत कछु दयो, गरग अरग लै मथुरा गयौ ॥
- ३५ अब सुनि सुंदर बाल-विनोद, देत जु नद-जसोदहि मोद ।
 जानुपानि डोलनि जगमगे, मनिमय आंगन रँगन लगे ।
 सोहे सचिकन कच घुँघरारे, को हे मधुकर मधु-मतवारै ।
 अजन-जुत नैना मनरजन, बलि कीने छवि-हीने खजन ।
 लटकन लटकत ललित सु भाल, बनि रहे रुचिर चखौडा गाल ।
- ४० तनक तनक सी नाक-नथूली, फवि रही नील सु पीत भगूली ।
 जटित बघूली छतियन लसै, द्वै द्वै चद-कलन को हँसै ।
 कटि-तट किकिनि पैजनि पाइनि, चलत घुटुरुनि तिन के चाइनि ।
 निज प्रतिबिंब निरखि चकि रहै, पकरचौ चहै अधिक छवि लहै ।
 लपटि जु रही दही मुख-कजनि, परति न कही महिर मन-रजनि ।
- ४५ विवि केहरि-नख हरि-उर सोहत, ढिँग ढिँग दधि-कन मो मन मोहत ।
 नखत-मडली-मधि दुति जसी, जुरि निकसे द्वै द्वैज के ससी ।
 किलकि किलकि घुटुरुनि की धावनि, डरपि कै जननि निकट फिरि आवनि ।
 मैथन की वह गर-लपटावनि, चूमनि मधुर पयोधर प्यावनि ।
 ठाढ़े हौन लगे रँगमगे, धरत जु धरनि चरन डगमगे ।
- ५० अँगुरि गहाइ सु मदहि मद, ललनहि चलन सिखावत नद ।

भुनुक मुनुक वह पगन की डोलनि, मधुर तै मधुर तोतरी बोलनि ।
 आपुहि ललन चलन अनुरागे, दौरि पौरि लागि आवन लागे ।
 अपने रगन खेलत मोहन, जसुमति डोलति गोहन गोहन ।
 अगन तै, खगन तै, नगन तै डरै, जसुमति भाखति राखति फिरै ।
 दिखि दिखि बालचरित अभिराम, विसरे सबन धाम के काम । ५५
 लै ब्रज-बालक अपनी बयस के, दधि माखन की चोरी चसके ।
 मोहन मत्र सौ घर घर डोरत, दधि-माखन चोरत, चित चोरत ।
 जब घर आवहि मोहनलाल, अतर सहि न सकत ब्रज-बाल ।
 उरहन मिस मिलि नंद-निकेत, आवति मुख-छवि देखन हेत ।
 अहो महिर ! यह तुम्हरौ तात, कहा कहै हम याकी बात । ६०
 असमय देइ बछुखन छोरि, ठाढौ हँसै खरिक की खोरि ।
 चोरि चोरि दधि-माखन खाइ, जो हम देहि तौ देइ बगाइ ।
 धाम कौ काम करचौ ही चाहियै, कब लागि धाम धसे ही रहियै ।
 जब कोउ रचक इत उत जाइ, अरग अरग गृह-अतर आइ ।
 नूरुर, किकिनि लेइ छिपाइ, सखन खवावै आपुन खाइ । ६५
 अस बड़ चोर कहि न कछु आवै, चपरि कै चखन तै मसिहि चुरावै ।
 यह सुनि आनंद भरि नंद-रानी, तिन सौ कहति मुसकि मधु बानी ।
 बलि बलि तौ तुम ऐसे करो, दिन दस भाजन ऊँचे धरौ ।
 जब लागि याकी बुद्धि अयानी, तब लागि तुम ही हौहु सयानी ।
 हो जसु ! जो कोउ ऊँचे धरै, तहँ तुम सुनहु जु जतनन करै । ७०
 तान्तर आनि उलूखल नावै, ऊँखल पर इक सखहि चढ़ावै ।
 ता पर आपुन चढ़ि कै खाइ, चोर लौ इत उत चितवत जाइ ।

- बहुरचौ बुद्धिवंत अति आहि, तैसौई छिद्र बनावै ताहि ।
 मुख तै दधिकन गिरि गिरि परै, चंद तै जनु मुक्ताफल भरै ।
- ७५ घर की जब घर द्वारे आवै, उतरि कै ताके सनमुख धावै ।
 मुख भरि खीर नयन भरि ताके, चपरि जाइ ये चरित है याके ।
 ऊधम अवर सु कहियै काहि, तुम्हरे निकट साधु जनु आहि ।
 भै भरे चखन चूमि नंद-रानी, तिन सौ बहुरि कहत मधु बानी ।
 वारी तौ तुम ऐसे करौ, लै दधि-दूध अंध्यारे धरौ ।
- ८० तहाँ कहति गोपी छवि ओपी, इहिरस जिनहि क्रिया सब लोपी ।
 अहो महरि ! ऐसे हूँ करचौ, लै दधि-दूध अंध्यारे धरचौ ।
 कोटि दिया सम अंग सुहाये, पुनि मनि-भूषन तुमहिं बनाये ।
 जहँ यह जाइ तुम्हारौ बारौ, कवन भवन जिहि रहै अंध्यारौ ।
 बोली अवर एक ब्रज-बाला, हरितन मुसकि सु नयन बिसाला ।
- ८५ अहो ब्रजेस्वरि ! सुनि इक बात, मेरे घर यह तुम्हरौ तात ।
 ढुकत ढुकत इकलौई गयी, तहँ इक अद्भुत कौतुक भयी ।
 मनि-खंभ के निकट मथि दह्यौ, माखन सहित धरचौ हो मह्यौ ।
 लौनौ लेन गयी तहँ जाइ, मनि-खंभ मैं निरखि निज भाँइ ।
 अवर लरिक की संका पाई, तासौ ठाढौ कितौ लिलाई ।
- ९० कहत कि यह माखन सब लीजै, अहो मित्र हठ नाहिन कीजै ।
 नित ही मेरे गोहन रहौ, ऐ पर मैया सौ जिनि कहौ ।
 यह सुनि बिहसि परी नंद-रानी, चूमति बदन बोलि मृदु बानी ।
 धूरि धूसरित निरखि मु गात, पौछति मात कहति यौ बात ।
 बलि बलि कत कौ पर घर जाहु, घर बहुतेरौ माखन खाहु ।

अद्भुत सिसु कछु समझि न परै, सब बिधि सब ही के मन हरै । ६५
 कबहुँक दिखियै माखन चोर, कबहुँ भलकै नवल किसोर ।
 ऐसै सब ब्रज कहूँ मधु प्यावत, मधि मधि ईस्वरता दिखरावत ।
 मधुर वस्तु ज्यौ खात है कोई, बीच अमल रस रुचिकर होई ।
 सिसुन कौ कहि राख्यौ जसु माइ, दिखियहु बलि यह चपल कन्हाइ ।
 माटी खाइ सलिल मै जाइ, बलि बलि मो सौ कहियहु आइ । १००
 इक दिन तनक कहूँ हरि वारे, मुख मेली माखन मो हारे ।
 धाइ गये सिसु जहँ जसु माई, तेरे कान्हर माटी खाई ।
 सुनि सहि सकी न इतनी बात, हित-ईषनी जसोमति मात ।
 धाइ जाइ गहि कै विवि पानि, डाटन लागी आँगन आनि ।
 रे रे चपल-गात, अनियाई, क्यौ तै दुरि कै माटी खाई । १०५
 ये सिसु सबै कहत यह बात, अरु यह तेरौ अग्रज भ्रात ।
 भै भरी आँखियन कहत कन्हैया, मै माटी नहि खाई मैया ।
 ये सब मिथ्याबादी आहि, इन के कहै न तनक पत्याहि ।
 जसुमति कहति कि अग्रज तेरौ, यह तौ भूँठ न बोलत मेरौ ।
 तब हरि कहत कि जौ न पत्याहि, मैया तौ मेरौ मुख चाहि । ११०
 जननी कहति तौ बदन दिखाइ, डरपे कुँवर दियौ मुख बाइ ।
 बदन मध्य जौ जसुमति चहै, सगरौ बिस्व चराचर अहै ।
 प्रथम चह्यौ भूगोलक तहाँ, दीप, समुद्र, सरित, गिरि जहाँ ।
 जोति-चक्र, जल, तेज, समीर, अग्नि, अरक, ससि, तारक भीर ।
 इंद्री अरु इद्रिन के देव, सतगुन, रजगुन, तमगुन भेव । ११५
 काल, कर्म, सुभाउ अरु जत, बुद्धि, चित्त, मन मूरतिवन्त ।

- पुनि अपन पै सहित ब्रज देखि, जसुमति चकित भई सु बिसेखि ।
तहँ पुनि सुतहि लिये कर साँटी, डाटति ज्यौ न भखन करै माटी ।
तब जसुमति अति सभ्रम भरी, इत उत चहि बिचार अनुसरी ।
- १२० कहन लगी कि सुपन नहि होई, जागति हौ कछु नाहिन सोई ।
अरु नहि हरि ईस्वर की माया, परती तौ सबहिन पर छाया ।
जनु यह सिसु दर्पन सम करचौ, जग-प्रतिबिब जासु मधि परचौ ।
पुनि प्रतिबिब बिब मै कैसे, देखति हौ या सिसु मै तैसे ।
बहुरि कहति दिखियत यह जितौ, जाकी माया करि सब सुतौ ।
- १२५ ऐसे जब निश्चय करि जाने, तब हरि हँसि कै उर लपटाने ।
अपनी प्रेममई दिढ मया, जननी पर डारी करि दया ।
सुनि कै नृपति महा मुद भरचौ, पूछन सुकहि प्रेम रँग ढरचौ ।
कवन कर्म कीनौ अस नद, पायौ परम उदय कौ कंद ।
महा भाग जसुमति कौ कियौ, ताकौ मधुर पयोधर पियौ ।
- १३० अरु ये अद्भुत बालचरित्र, हियौ हरत जग करत पवित्र ।
गावत कवि बर रगन भरे, बिबुध सुधारस नीरस करे ।
ते सुख तिन के कानन परे, जिन के हित हरि इत अवतरे ।
श्री सुक कही कि हे नृप सत्तम ! सब तै प्रेम भगति रति उत्तम ।
निरवधि बत्सल रस जो आहि, निगमहु अगम कहत है जाहि ।
- १३५ सो बत्सल रस ब्रज है नद के, घर घर प्रति आनद कंद के ।
नदज परमानद है कोई, ताकी मूरति ब्रज मै सोई ।
ऐसे समाधान सुक कियौ, रस करि भरि राख्यौ नृप हियौ ।
कही कि बालचरित कछु और, बरनन करौ रसिक-सिरमौर ।

डरे जु जननी डाट तै, साँट निरखि पुनि हाथ ।

मुख मै विस्व दिखाइ कै, वचे नाथ इहि साथ ॥

१४०

‘नद’ न डरि भव-ब्याल तै, बालचरित-मधु पाइ ।

श्रवन-पुटन करि पान करि, इहि अष्टमौ अध्याइ ॥

नवम अध्याय

अब सुनि मित्र नवम अध्याइ, जामै अद्भुत अद्भुत भाइ ।

जोगीजन मन दूढत जाकौ, बाँधैगी हठि जसुमति ताकौ ।

इक दिन भोरहि उठि नँदरानी, आपुहि मजु मथानी आनी ।

थोरौई दूध पुन के हित ही, राखति जसु जमाइ नित नित ही ।

और जु नदमहर घर दह्यौ, कितक आहि कछु परत न कह्यौ । ५

प्रेरी तहाँ अनेक जु दासी, मयन करै सबै कमला सी ।

ठाँ ठाँ मधुर मथानी वजै, जनु नव आनंद-अबुद गजै ।

मथत जु आप जहाँ नँदरानी सोभा नहि कछु परत बखानी ।

सुदर गौर बरन तन सोहै, ओटे कचन कौ रँग को है ।

मृदुल उजल गगाजल पहिरै, उठति जु तन तै छवि की लहरै । १०

पृथु कटि कल किकिनि की बाजनि, बिलुलित बर कवरी की राजनि ।

नेत की करखनि, वदन की हरखनि, तैसिय सिर तै सुमन सु बरखनि ।

आनन पर श्रमकन अस बनी, कनक-कमल जनु ओस की कनी ।

किधौ चद मधि प्रगटे मोती, आये जानि आपनौ गोती ।

लाल के बालचरित कछु गावति, भाग-भरी सब राग रिभावति । १५

- सोवत सुत तन पुनि पुनि देखति, मुसकति जाति जनमफल लेखति ।
 लगी जु भूख कुँवर बर जगे, मीड़त नैन अलस-रस पगे ।
 अरग अरग जननी ढिँग जाइ, नेत गह्यौ अति हेत बढ़ाइ ।
 जसुमति कहति बोलि मधु बानी, बलि बलि मोहन छाँड़ि मथानी ।
- २०। तनक तजहु तुरत मथि लेऊँ, अपने ललन कौ लौनौ दैऊँ ।
 नेत न तजत, ललन हठ ठानी, लै बैठी तहँ जसुमति रानी ।
 मधुर पयोधर प्यावन लगी, कहि न परति जु प्रेम-रस पगी ।
 चापि कै चूमति चारु कपोलनि, बोलत ललित तोतरी बोलनि ।
 पूत कौ प्यारौ पियनौ पयौ, अधिक आँच तै उफनत भयौ ।
- २५ यातै सुत कौ धरि कै धरनी, धाइ गई तहँ नंद की घरनी ।
 कोइक कबि कहै तृष्णा बौरी, हरि परिहरि जु दूध कौ दौरी ।
 ते कछु प्रेम-मरम नहि जाने, जिहि विधि श्री सुकदेव बखाने ।
 या करि ब्रह्मानंद जु हरवौ, भजनानद दिखायौ गरवौ ।
 पय को पयमीतहि जु मिलाई, पूत पै बहुरि गई जसु माई ।
- ३० अतृपत सुत अति छुभित जु भयौ, भाजन भाँजि भवन दुरि गयौ ।
 सुत कौ करम निरखि नंदरानी, मुसकी जनम सफलता मानी ।
 बहुरि कहति अस लड़कि न कीजै, लरिकहि तनक कछू सिख दीजै ।
 अरग अरग गई गृह मै ऐसै, नूपुर धुनि सुनि भजै न जैसै ।
 साँट लिये जौ जसुमति जाइ, चढचौ उलूखल माखन खाइ ।
- ३५ जननिहि निरखि भीत की नाई, उतरि भग्यौ तिहुँ लोक कौ साँई ।
 जसुमति मोहन गोहन लगी, तिहि छिन अद्भुत छवि जगमगी ।
 जसु पै तैसै जाइ न जाइ, श्रोनी-भर अरु कोमल पाइ ।

खसत जु सिर तै सुमन सुदेस, जनु चरनन पर रीभे केस ।
 आगे फल की बरपा करै, तिन पर ब्रजरानी पग धरै ।
 जोगीजन-मन जहाँ न जाही, इत सब बेद परे बिललाही । ४०
 ताहि जसोमति पकरति भई, रहपट एक वदन पर दई ।
 पानि पकरि जब आँगन आने, जिन तै डर डरपै सु डराने ।
 डर तै नैन सजल ह्वै आये, जनु अरविद अलिद हलाये ।
 परत दृगन तै जलकन जोती, डारत ससि जनु मजुल मोती ।
 मीजत चख, मसि प्रसरित ऐसै, निर्मल बिधु कलकन जैसै । ४५
 भै भरे सुतहि निरखि नँदनारी, दीनी लकुट हाथ तै डारी ।
 कहत कि रचक बाँधौ याहि, जैसै सिख लागे लरिकाहि ।
 मृदुल पाट की नोई लई, लाल के पेट लपेटति भई ।
 ऊखल सौ जब बनै न गाँठि, तासौ अवर लई तब साँठि ।
 सो पुनि परिपूरन नहि भई, तब इक बडी जेवरी लई । ५०
 उहै न तनक उदर फिरि आई, तब जसुमति अति बिस्मय पाई ।
 तिहि छिन गोप-बधू धिरि आई, हँसति परस्पर लगति सुहाई ।
 भै भरे लाल के लोइन लसै, दिखि दिखि गोप-बधू सब हसै ।
 हँसि हँसि कहति, सु लगति सुहाई, ये न हौहि बलि बस्तु पराई ।
 धाम की दाम-दाँवरी जिती, ब्रजतिय लै लै आवति तिती । ५५
 जसुमति अथि दैन जब चहै, द्वै अगुल तब ऊनी रहै ।
 आदि अत कछु पैयै जाकौ, बधन अवसि पूछियै ताकौ ।
 आदि अत जो कोऊ न पावै, तनक जिवरिया कित फिरि आवै ।
 निपट श्रमित जननी कहूँ जानी, निरवधि बत्सल रस पहिचानी ।

- ६० जद्यपि अस ईस्वर जगदीस, जाके बस बिधि, बिष्णु, गिरीस ।
ताहि जसोमति बाँधति भई, रसना प्रेममई, दिढ, नई ।
भक्तबस्यता निगम जु गाई, सो श्री कृष्ण प्रगट दिखराई ।
प्रभु तैं जो प्रसाद जसु पायौ, सो काहू सपने न दिखायौ ।
बिधि सौ पूत जगत उजियारौ, आत्मा सिव सब ही तैं प्यारौ ।
- ६५ निकटहि रहति जदपि श्री ललना, कब बाँधे, कब भूलये पलना ।
हो नृप ! ये जु जसोदा-नदन, नित्य अनूप रूप जगबंदन ।
भक्तिवत कहैं सुखद है जैसे, तन अभिमानी कौ नहि तैसे ।
बहुत जुगति जौ जीवत लहियै, सो मुनि तन अभिमानी कहियै ।
ग्यानी पुनि यह मुखहि न जानै, नीरस निराकार परवानै ।
- ७० गत-अभिमान न यह सुख लहै, देहादिक कहुं माया कहै ।
पायौ जु कछु नंद की घरनी, कापै परति मु महिमा वरनी ।
बंधन सहि न सकति तहँ गोपी, कहति जसोमति सौ रस-ओपी ।
अहो महरि ! अब बधन छोरौ, सुदर सुत पर भयौ न थोरौ ।
डर तैं मुख पियरी परि गई, ललित कपोलन पर छवि छई ।
- ७५ ज्यौ दरपन परसत मुख-पौन, परिहरि महरि, परी हठ कौन ।
जसुमति हठी, कहति तिन आगे, नेक रहन देहु ज्यौ सिख लागे ।
ऐसै कहि जसु गृह मै गई, इहाँ अवर डक अद्भुत भई ।
दिष्टि परे अर्जुन द्रुम दुवै, श्रापे हुते मुनि नारद जु वै ।
रंगत रंगत तहँ चलि गये, लरिका मोहन गोहन भये ।
- ८० ऊखल तनक तिरीछौ करि कै, डारि दिये तरु तिन मै बरि कै ।

भक्ति बिना श्री भागवत, कहहि सुनहि जे 'नंद' ।
 दरबी ज्यौ विंजनन मै, स्वाद न जानै मंद ॥
 'नंद' नवम अध्याइ यह, बरन्यौ कापै जाइ ।
 चातक चंचु-पुटी लटी, सब घन कितहि समाइ ॥

दशम अध्याय

अब सुनि दशम को दशम अध्याइ, सुत कुबेर के गहि कै पाइ ।
 स्तुति करि हरि पै आग्या पैहै, भक्ति-पात्र ह्वै निज घर जैहै ।
 सुक मुनि सौ पुनि राजा कहै, नारद परम भागवत रहै ।
 तिन करि कवन कर्म अस करचौ, जा करि जिनहि क्रोध संचरचौ ।
 बोले बिहँसि व्यास के तात, हो नृप सत्तम । सुनि यह बात । ५
 सुत कुबेर के अति अभिराम, नलकूबर, मनिग्रीव सु नाम ।
 गंगा मधि ललनागन लिये, विहरत हुते वारुनी पिये ।
 तहँ ह्वै नारद निकसे आइ, बीना कर आपने सुभाइ ।
 तिहि दिखि तिय सब लज्जित भई, चटपट अपने पट गहि गई ।
 ये दोउ नगन मगन अस भये, मद बाढे, ठाढे रहि गये । १०
 कहन लगे मुनि तिन तन चाहि, जग मै अवर बहुत मद आहि ।
 ऐ परि यह श्री-मद है जैसौ, बड अनरथ कर अवर न ऐसौ ।
 मति-भ्रंसक, सब धर्म-विधुसक, निर्दय महा विरथ पसु-हिंसक ।
 नस्वर देह सबै कोउ जानै, ता कहुँ अजर अमर करि मानै ।
 रच्यौ पाँचभौतिक कौ देह, अंत समै कृमि बिष्टा खेह । १५

- जा कहूँ कहत कि यह तन मेरौ, तामें बहुरि बहुत अरभेरौ ।
 मा कहै मेरौ, पितु कहै मेरौ, मोल लयौ सु कहै मो चेरौ ।
 अन्न कौ दाता कहै कि मेरौ, स्वान कहै न अवर किहि केरौ ।
 ऐसै साधारन इह देह, तासौ करि कै परम सनेह ।
- २० भूत हौइ आचरत न डरै, धमकि धमकि नरकन मैं परै ।
 श्री-मद करि जु अंध ह्वै जाइ, दारिद-अंजन परम उपाइ ।
 तन दुर्बल, मन निर्बल रहै, अपनी उपमा करि सब चहै ।
 कंटक चरन चुभ्यौ होइ जाके, और कौ दुख हिय कसकै ताके ।
 जाके कंटक चुभ्यौ न होइ, का जानै पर पीरहि सोइ ।
- २५ पुनि मुनि बोले करुना भरे, क्यौ तुम रहि गये द्रुम से खरे ।
 तब अति डरे दौरि पग परे, परम दयाल दया अनुसरे ।
 मथुरा-मडल गोकुल जहाँ, अर्जुन तरु तुम उपजहु तहाँ ।
 नंद के नदन बालक ह्वैहै, बंधे उलूखल तुम कौ छत्रैहै ।
 मो प्रसाद तै तुम घर ऐहौ, दुर्लभ वस्तु सुलभ ही पैहौ ।
- ३० ते दोऊ अर्जुन द्रुम भये, बढत बढत अंबर लौ गये ।
 नारद-वचन सुमिरि हरि आइ, छिनक मैं गिरि से दिये गिराइ ।
 परत जु चंड सब्द भयौ ऐसी, घर पर बज्रपात होइ जैसौ ।
 निकसे उभय पुरुष दोउ बीर, पहिरे अद्भुत भूषन चीर ।
 जैसै दारु मध्य तै आगि, निर्मल जोति उठति है जागि ।
- ३५ नंद-सुवन के पाइनि परे, अजुलि जोरि स्तुति अनुसरे ।
 कहन लगे हरि तिन तन चाहि, तुम तौ कोउ देवता आहि ।
 इमि इहि गोकुल-गोप-दुलारे क्यौ हो पकरत पाइ हमारे ।

तब बोले अलका भौन के, हो प्रभु । तुम बालक कौन के ।
 परम पुरुष सब ही के कारन, प्रतिपारन, तारन, संधारन ।
 व्यक्त-अव्यक्त जु बिस्व अनूप, वेद बदत प्रभु तुम्हरी रूप । ४०
 तुम सब भूतन कौ विस्तार, देह, प्राण, इंद्री, अहंकार ।
 काल तुम्हारी लीला श्रीधर, तुम व्यापी, तुम अव्यय ईश्वर ।
 तुम ही प्रकृति, पुरुष, महत्त्व, धर, अवर, आडवर, सत्व ।
 तुम ही जीवन, तुम ही जीय, सब ठाँ तुम, कोउ अवर न बीय ।

पूर्व पक्ष

घट-पट-ग्यान विसेखै सब ही, हमरौ ग्यान हौइ किन अब ही । ४५
 दुर्लभ ब्रह्म सुलभ ही बनै, तहाँ कहत कुबेर के तनै ।
 इद्रिन करि तुम जात न गहे, प्रगट आहि पै परत न चहे ।
 जैसँ दिष्टि कुभ कहूँ देखै, कुभ तौ नाहिन दिष्टि कौ पेखै ।
 कुभ के दिष्टि हौइ जब कब ही, सो तुम दिष्टिहि देखै तब ही ।
 तातें तुम कहूँ बंदन करै, जानि न परहु परे तैं परै । ५०
 इहि विधि स्तुति करि हरि देव की, प्रार्थित पद-पंकज-सेव की ।
 हे करुनानिधि करुना कीजै, अपनी भाउ-भगति-रति दीजै ।
 बानी तुमरे गुन गन गनै, श्रवन परम पावन जस सुनै ।
 ये करि अवर कर्म जिनि करै, प्रभु की परिचर्या अनुसरै ।
 मन-अलि चरन-कमल-रस रसौ, चित्र-कमल-जग भूलि न बसौ । ५५
 हो जगदीस । जसोदा-नदन, सीस रहौ नित तुव-पद-बदन ।
 तुमरी मूरति भक्त तुम्हारे, नित ही निरखहु नैन हमारे ।

- तब बोले हरि करुणाधाम, पूरन हौहि तुम्हारे काम ।
 नारद प्रीतम भक्त हमारौ, तुम पर कियौ, अनुग्रह भारौ ।
 ६० मो भक्तन कौ यहै सुभाउ, जैसे उदित होत दिनराउ ।
 सहजहि निबिड तिमिर कौ हरै, अवर बहुत मगल बिस्तरै ।
 पुनि बोले हरि सब गुन-सीव, हे नलकूबर ! हे मनिग्रीव ! ।
 अब तुम गवन भवन कौ करौ, मो माया डर तै जिनि डरौ ।
 आग्या भई रह्यौ नहि जाइ, पुनि पुनि पकरे सुदर पाइ ।
 ६५ बार बार परिकर्मा देहि, मोहन वदन बिलोकै लेहि ।
 अधिकारी पै रह्यौ न जाइ, चले ईस कहूँ सीस नवाइ ।
 उत्तर दिसि नभ ह्वै उडि चले, भक्ति-रस भरे सु लागत भले ।
 अग्नि के जनु निधूम ह्वै ऊक, किधौ विभाकर विवि के टूक ।
 आपु तनक बधन बँधे, तासौ कछु न बसाइ ।
 ७० दिढ़ बधन संसार तै, गुह्यक दिये छुड़ाइ ॥
 'नद' जथामति कथित यह, दशम-दशम अध्याइ ।
 सुनै जु श्रुति-रघ्न कोऊ, बधन सब मिटि जाइ ॥

एकादश अध्याय

अब सुनि ग्यारह अध्याइ की कथा, सुदर सुक मुनि वरनी जथा ।
 गोकुल तजि बृन्दावन जैहै, वत्सासुर अरु बकहि बधैहै ।
 सुनि द्रुम सबद सबै ब्रज डरचौ, कहत कि आनि बज्र जनु परचौ ।
 नन्दादिक सब धाये आये, द्रुमन देखि अति बिस्मय पाये ।

पतन कौ कारन लगे विचारन, प्रबल पवन नहि, नहि बड़ बारन । ५
 कारन कवन जु ये तरु परे, दिखि सब लोग अचभे भरे ।
 तिन सौ कहन लगे सिसु बात, अहो महारि यह तुम्हरौ तात ।
 आपुन इन के अतर परचौ, ऊखल तनक तिरीछौ करचौ ।
 दये उग्वारि दोऊ द्रुम भारे, ये हम सिगरे देखनहारे ।
 निकसे उभय पुरुष दुति भरे, या ढोटा के पाइनि परे । १०
 ऐमैं जब उन लरिकन कह्यौ, किन्हूँ गह्यौ, किन्हूँ नहि गह्यौ ।
 तिन बिच हरि बैठे छवि-ऐना, डरपे मृग-सिसु के से नैना ।
 अति बत्सल रस भरि ब्रजराज, द्रुमन मध्य तैं लिये उठाइ ।
 बंधन छोरि छती लपटाइ, पौछन सुदर अग सुहाइ ।
 जसुमति परि ब्रजराज रिसाइ, ऐमैं सिसु कोउ बाँधति माइ । १५
 पुनि विहरन लागे ब्रज महियाँ, दैन लगे सुख अपनन कहियाँ ।
 कहूँ ब्रज नवल बधू नंदलालहि, पकरि नचावाहि नैन बिसालहि ।
 जे जे बिकट मान उपजावाहि, ते ते सहज नाचि दिखरावाहि ।
 रीझि रीझि ब्रज की बर वाला, वाराहि भूपन कचन-माला ।
 चुवन करहि बलैया लेहि, बहुरि नचावाहि माखन देहि । २०
 कबहुँक बहुरि टहल अनुसरै, ब्रज की बहू कहै सो करै ।
 कोउ कहै अहो अहो मोहनलाल ! मुहि गुहि दै यह फूल की माल ।
 कोउ कहै लाल लाउ दोहनी, कोउ कहै मोहि गहाउ सोहनी ।
 कोउ कहै बलि वे पाँवरि लावौ, बलि बलि मोहि पिढ़ी पकरावौ ।
 अब लावौ मुख चुवन करै, इहि बिधि ब्रज तिय सुख बिस्तारै । २५
 सिव कौ सर्वस, श्रुति कौ हियौ, सो ब्रजतियन खिलौना कियौ ।

- कब हूँ बिहरत जमुना तीर, धूरी धूसर मुभग सरीर ।
 तिन कौ लेन गई जसु पात, ठाढी कहति मनोहर वात ।
 अरे पूत पूतना-निपातन, तो सौ कहि न सकत इक बातन ।
- ३० निसि दिन रहत धूरि में सनी, पूर्व जन्म कौ सूकर मनौ ।
 भोर के आये दोऊ भैया, कीनौ नहि न कलेऊ दैया ।
 भूखौ आहि, बलि गई मैया, घर चलिहै मेरी भलौ कन्हैया ।
 अरु दिखि बलि ये सँग के वारे, मैयन कैसी भाँति सिँगारे ।
 तुमहुँ अन्हाइ तनक कछु खाइ, बलि बलि बहुरि खेलियहु आइ ।
- ३५ बैठे महर थार पर जाइ, मो सौ कह्यौ कन्हैयाहि लाइ ।
 तुम बिन तात तनक नहि खात, बलि बलि चलि मेरे साँवर गात ।
 न चलाहि खेल मगन अति भये, बाँह पकरि तब जसुमति लये ।
 मग मै कहति जाति जसु माइ, सो राजा जु प्रथम घर जाइ ।
 महर के सग तनक कछु खाइ, चले पलाइ, गहे जसु माइ ।
- ४० उबटन उबटि अग अन्हवाइ, पठये मनि भूषनन बनाइ ।
 हरि गुन रतनन माँझ खचि, मनि - मानिक जु सुछद ।
 बिषय-काँच करि कचन बिच, पोइ विगारि न 'नद' ॥
 इहि परकार महावन महियाँ, दै सुख नद-जसोमति कहियाँ ।
 अब चाहत बृदावन गयी, मजु कुज बिहरन मन भयी ।
- ४५ अतरजामी अपनौ धर्म, ता करि प्रेरे सब के मर्म ।
 इक दिन गोप-सभा करि बैसे, अमर नगर में अमरन ऐसे ।
 नंद-सुवन के रस रँगमगे, ब्रज के हितहि विचारन लगे ।
 इत उत्पात जगे है जैमै, देखे-सुने न कित हूँ ऐसे ।

इन लरिकन की रच्छा करौ, ह्याँ तैं बेगि अनत अनुसरो ।
 तहँ उपनद नाम इक कोई, ग्यान-वृद्ध, वय-वृद्ध है सोई । ५०
 कहन लग्यौ कि कुसर है परी, इत तैं चलहु अर्वाह इहि घरी ।
 आई प्रथम बकी घर-घालक, काल के मुख तैं उबरचौ बालक ।
 अरु वह सकट बिकट भर भरचौ, या सिसु के ऊपर नहि परचौ ।
 पुनि वह बात-चक्र ह्वै आई, लै गयो लरिकहि गगन उडाई ।
 बहुरचौ आनि सिला पर नाख्यौ, तब यह सिसु परमेसुर राख्यौ । ५५
 जे द्रुम नभ सौ बातें करे, ते तरु अकस्मात भुवि परे ।
 जौ जगदीस सहाइ न होई, तिन तर आयौ बचै न कोई ।
 चाहत हौ जौ ब्रज कौ भलौ, तौ तुम ह्याँ ते अब ही चलौ ।
 सुदर वृदावन इक नाम, सब गुन-धाम, परम अभिराम ।
 जामै गिरि गोवर्द्धन आहि, सब रितु सतत सेवत जाहि । ६०
 गोपी-गोप गाइ-बछ लाइक, सुखदाइक, मुभकरन, सुभाइक ।
 एकैं बुद्धि सबै जन मुठे, मुनतहि 'साधु साधु' कहि उठे ।
 अपने सकट तुरत ही जोरे, बड़े मंदल कदल घोरे ।
 गोधन वृद धरि लये आगे, धरे सरासन नीके लागे ।
 कचन सकटहि चढि चढि गोपी, चली जु नंदसुवन-रस-ओपी । ६५
 कठनि पदिक जगमगत जोती, लटकै ललित सु बेसर-मोती ।
 केसरि आड ललाटन लसी, चद मै चद-कला-दुति जसी ।
 चचल दृग अजन छवि बढे, ससिन मै जनु नव खजन चढे ।
 लाल के बालचरित जु पुनीत, लये है बनाइ बनाइ सु गीत ।
 ठाँ ठाँ गोपी गान जु करै, सीतल कठ सब कौ हिय हरै । ७०

- गज-सकट बैठी जमु मोहै, उपमा कौ त्रिय त्रिभुवन को है ।
 मुरपनि-रवनी रमा की चेरी, सो वह चेरी जसुमति केरी ।
 गोद में सुन, अनि सोहत ऐसी, चंद जननि चदहि लिये जैसी ।
 सुन-गुन गोपी गावति जहा, दै रही कान जसोमति तहाँ ।
- ७५ । इहि विधि श्री वृंदावन आइ, निरखि अधिक आनदहि पाइ ।
 सकट को वान बनायौ ऐसी, सुंदर अर्द्धचंद होइ जैसी ।
 वन वृंदावन गोधन गिरिवर, जमुना-मुलिन मनोहर तरवर ।
 रस के पुज, कुज नव गहवर, अमृत समान भरे जल सरवर ।
 जदपि अलोकिक मुख के धाम, श्री बलराम, कुंवर धनस्याम ।
- ८० । रीझे तदपि देखि छवि वन की, उत्तम प्रीति लागि गई मन की ।
 औरै सुक, सारिक, पिक, मोर, औरै अबुज, औरै भीर ।
 रतन-सिखर-गिरि गोधन-सांभा, निकसी मनहुँ नई छवि गोभा ।
 तिन बिच सुंदर रासस्थली, मनि-कचन-मय लागत भली ।
 गिरि तै भरत जु निर्भर सोहै, निर्जर नगर अमृत-रस को है ।
- ८५ । औरै त्रिगुन पवन जहँ वहै, मुंह उचाइ हर सूघत रहै ।
 कहन लगे वृंदावन जैसी, वह हमरौ बैकुंठ न ऐसी ।
 बाल-बैस सब रस जगमगे, बालक संग रग रंगमगे ।
 बल समेत सिमु सब अभिराम, कचन-भूपन, कचन-दाम ।
 तिन मधि मधिनाइक जु नद को, वरपत अमी कोटि चंद कौ ।
- ९० । ब्रज-समीप लगे बच्छ चरावन, सीखत वेनु बजावन, गावन ।
 अति गति चलत सु अति छवि पावनि नूपुर-रव, किकिनी बजावनि ।
 बदि बदि होडनि, डेलनि मेलनि, कहँ परस्पर बोलनि, खेलनि ।

कहूँ कृत्तिम गो-वृषभ बनावत, तैसैहि नादत, तिनहि लरावत ।
 इक दिन कान्ह कुँवर मनभावन, जमुन कच्छ गये बच्छ चरावन ।
 तहँ इक असुर बच्छ ह्वै आइ, कछ के बछरन मै मिलि जाइ । ६५
 नष्ट दुष्ट-बुद्धि धरि आयौ, सो श्री कृष्ण तर्वाह लखि पायौ ।
 चिदानंद-मय अपने बच्छ, यह प्राकृत अरु अधम असुच्छ ।
 नैन-सैन करि बलहि जनाइ, अरग अरग ताकी ढिँग जाइ ।
 पुच्छ सहित लै पिछले पाइ, दियौ फिराइ फिराइ बगाइ ।
 महाकाइ ऊपर ही मरचौ, बहुत कपित्थन लै धर परचौ । १०
 'भले भले' कहि बालक हरषे, सुर हरषे, नव फूलन वरषे ।

(इति वत्सासुर लीला)

पुनि इक दिन बल अरु बलवीर, सखन सहित गये सरवर तीर ।
 पहिले पानी बछरन दियो, ता पाछे आपन पय पियो ।
 ता ढिँग असुर एक वड वाम, बकी अनुज वक ताकौ नाम ।
 निपट नृसस कस कौ हियौ, जिहि डर अमरन मानत जियौ । १०
 सो तिन तै तहँ पहिले आइ, वैठ्यौ बक कौ भेष बनाइ ।
 कहन लगे बक होत न ऐमौ, गिरि तै गिरचौ शृंग होइ जैमौ ।
 ऐसे ठाढे करत विचार, इत उत चितवत नंदकुमार ।
 महा अकाइ असुर धर धाइ, गह्यौ तनक सौ मोहन आइ ।
 जब बक ग्रस्यौ कुँवर नंदलाल, बल समेत सब ब्रज के बाल । ११
 भये विचेतन ते तन ऐमै, प्राण बिना इंद्रीगन जैमै ।
 बक कौ तालु-मूल जब जरचौ, तब इहि बीच विचारहि परचौ ।
 मै अपने कर काज बिगारचौ, गहि कै प्रथम तही नहि मारचौ ।

- अबकै मारि डारि भखि जाऊँ, ता पाछे ये सिगरे खाऊँ ।
 ११५ डारचौ उगलि सुबल वह बालक, जगपालक ऐसैई घरघालक ।
 डारि कै बहुरि असन कौ नयौ, तब तहाँ अद्भुत कौतुक भयौ ।
 रबकि कै रचक बदन पसारचौ, पकरि कै चचु फारि ही डारचौ ।
 फटत पटेगहि लागति वार, अस कछु कीनौ नदकुमार ।
 जय जय धुनि अवर मै भई, वरपत फूल मूल मिटि गई ।
 १२० घिरि गये सखा प्रान से पाये, हँसि हलधर हू कठ लगाये ।
 बछरन लै छवि सौ घर आये, समाचार सब सखन मुनाये ।
 सुनि कै गोपी गोप समेत, धाइ आइ गये नद-निकेत ।
 ज्यौ कोउ मरि परलोकहि जाइ, अपनन बहुरि मिलत है आइ ।
 तैसे कान्ह कुंवर तन चहै, प्रेम भरे यौ बातें कहै ।
 १२५ तृषित दृगन मुख निरखत ऐसे, अमृतहि पाइ पियत कोउ जैसै ।
 कहत कि दिखहु मृत्यु अति दारुन, आवत सिसु कहूँ मारन कारन ।
 तेई फिगि मरि जात है ऐसै, पावक परि पतगगन जैसै ।
 पूर्ब जन्म पुन्य कियौ कोई, राखत है इहि लरिकहि सोई ।
 तिन सौ नद कहत तब लगे, गर्ग-वचन हिय मै जगमगे ।
 १३० गर्ग अर्ग दै मो सौ कह्यौ, मै तब सुत कौ लच्छन लह्यौ ।
 नाराइन मधि गुन हं जिते, तेरे सुत मधि झलकत तिते ।
 सुनि कै सब आनदन भरे, नद महरि के पाइनि परे ।
 गोकुल गोपी गोप जितेक, कृष्णचरित-रस मगन तितेक ।
 कहत परस्पर करि नित नये, भव-बेदन जानत नहि भये ।

इहि परकार कुमार बयस के, करत बिहार, उदार सु रस के । १३५

कोउ होइ मेष, कोऊ होइ पालक, आपुन चोर हौहि हरि बालक ।

एकादश अध्याइ यह, अगदराज की धार ।

पान करौ नर चित्त दै, मिटै रोग ससार ॥

द्वादश अध्याय

अब सुनि लै द्वादसौ अध्याइ, महा सर्प-बपु धरि अघ आइ ।

गिलिहै बछ-बालक वह नीच, हतिहै हरि तिहि बडि गल बीच ।

इक दिन वन भोजन मन आनि, सोये सुदर सारंगपानि ।

बेनु बजाइ जगाये ग्वाल, सुनत उठे सब ताही काल ।

जैसे कमल अमोदहि पाइ, ठाँ ठाँ उठत मधुप अकुलाइ । ५

वन भोजन जु कान्ह मन आनी, बेनु बजावन ही मैं जानी ।

सुदर बिजन सुदर छीके, कनक लकुटियन लटकत नीके ।

अपने बछरन लै लै आये, कान्ह के बछरन आनि मिलाये ।

नद-सुवन सौ मिलि कै चले, लागत सबै मैन से भले ।

तिन मधि मोहन अति सुखदाइक, नग जराइ मधि ज्यौ मधि नाइक । १०

छीकन ते बिजनन चुरावत, ते तो इत कछु और बनावत ।

हँसि हँसि कहत कि देखि कन्हैया, कहा दियौ इहि याकी मैया ।

खेलत खेलत खेल सुहाये, सुदर श्री वृदावन आये ।

और खेल खेलत छवि पावत, महुवरि बेनु बजावत-गावत ।

बगन खिजावत, खगन खिजावत, केई खग की छाया गहि धावत । १५

- केई मधुमत्त मधुप सँग गावत, केई मिलि बाल कोकिल कुहुकावत ।
 केई मदमत्त मयूर जु नचै, तैमैहि नचै, तनक नहि बचै ।
 केई बनचर के सनमुख जाइ, आवत तेसैहि ताहि खिजाइ ।
 केई फल-फूल-माल गुहि लावत, मोहनलाल के उरसि बनावत ।
- २० । लाल के गुज-माल अति सोहै, लाल-माल तिन आगे को है ।
 बृदावन-कुमुमन की कली, गजमोतिन तै लागति भली ।
 केऊ अपनी प्रतिध्वनि सो अरै, गारि देहि बहुरचौ हँसि परै ।
 देखत बृदावन घन सोभा, जब हरि दूरि जात रस लोभा ।
 तब ये ग्वाल-बाल मिलि आछे, अंतर सहि न सकत परि पाछे ।
- २५ । धावत कहत अमी जनु वरसै, तेई राजा जु प्रथम ही परसै ।
 अब मुक तिन को भाग सराहत, कमल-नयन महिमा अवगाहत ।
 जो कछु ब्रह्म ब्रह्म सुख आहि, विदुषन को परकासत ताहि ।
 भक्तन ह के हिय अति सरसै, तिन के नाथ नये सुख वरसै ।
 मायाश्रित सबधो जिते, नर-दारक करि समभक्त तिते ।
- ३० । देत सबन सुख अपनी ठौर, इन सभ पुन्य-पुज नहि और ।
 जाके पद-रज-हित तप करि कै, बहुत काल जोगी दुख भरि कै ।
 प्रेरित चपल चित्त कहूँ भूरि, सो वह धूरि तदपि हू दूरि ।
 सो साच्छात दृगन-पथ चहियै, कवन भाग्य ब्रजजन को कहियै ।
 तदनंतर अधनामा दुष्ट, आयौ सुख दिवि सक्यौ न नष्ट ।
- ३५ । बक अरु बकी दुहुन तै छोटो, ऐ परि यह उन तै गुन मोटौ ।
 जाके डर सुर थर थर डरै, जदपि अमृत पान हू करै ।
 तदपि कहै जब लो अघ जीवै, तब लगि व्यर्थ अमी को पीवै ।

किवा बालकेलि-मुख चहै, अमर-नगर में मिलि सब कहै ।
 कहा भयो जो अमृतहि पियौ, हरि-रसविन कछु गनत न जियौ ।
 निपट नृसस कस पुनि प्रेरचौ, गोपवस-अवनसहि नेरचौ । ४०
 हरि तन चितै कहत काकोदर, याके उदर दांड मेरे सोदर ।
 तातै भगिनि-भिया की ठौर, पठऊँ इहि अरु ये सब और ।
 जो मैं इते तिलोदक करे, ब्रज माँझ के सहज ही मरे ।
 प्रात गये जौ बहुत दाम के, देह रहे तो कौन काम के ।
 इहि विधि अघ विचार पर परिकै, महा बडौ अजगर-वपु धरि कै । ४५
 इक जोजन विस्तार विस्तरचौ, आनि नीच मग बीचहि परचौ ।
 अघ कौ अधर धरा पर धरै, उरध अधर जलधर मैं करै ।
 बालक चके चाहि कै ताहि, कहन लगे कि कहा यह आहि ।
 कोउ कहै कछु वृदावन सोभा, ता पर भैया अजगर ओभा ।
 है तौ यह पर्वत की दरी, अजगर-आनन-आभा धरी । ५०
 शृग जु मनौ बने अहि-दत, निविड वदन सु तिमिर कौ अत ।
 मधि कौ मग जनु रसना आहि, लपकति भिया कहत हौ ताहि ।
 कोउ कहै गगन में घन उनयौ, रविकर परसि अरुन ह्वै गयौ ।
 तरहर ताकी छाया परी, तिन यह धरनि अरुन है करी ।
 कर्कस पवन गुहा तैं ऐसी, प्रावत अजगर-मुख तैं जैसी । ५५
 दव जु लगी कछु लगति न रोचन, तातै राते जनु अहि-लोचन ।
 कोउ कहै रे तुम कहत हौ कहा, यह तौ केवल अजगर महा ।
 हमहि सवन ग्रसिबे के काज, मग मैं आनि परचौ सजि साज ।
 कोउ कहै जौ है अजगर महा, तो यह हमरौ करिहै कहा ।

- ६० यौ कहि नद-सुवन-मुख चाहि, देखे याहि कहाँ धौ आहि ।
 सुदर बदन निरखि मुद भरे, दै दै करतारी तहँ बरे ।
 अलबेले ईस्वर नंद-नदन, बालक नृप से सब जग-बदन ।
 जब सब अजगर-मुख सचरे, तब हरि ह्याँ बिचार पर परे ।
 यह तौ सत्य ही अजगर महा, बरजे नहिन कियौ हम कहा ।
- ६५ प्रभु पछितात, अनमने भये, अपने कर अजगर-मुख दये ।
 अब ह्याँ कवन जतन अनुसरौ, इहि मारौ, अपनन उद्धरौ ।
 आइ गई ईस्वरना ऐमै, बालक राज के रच्छक जैसै ।
 ब्रजपति-सुवन तनक मुसकाइ, पैठे ताके आनन जाइ ।
 अबर माँझ अमरगन जिते, देखत हे घन-ओटन तिते ।
- ७० हाहाकार परे, अति डरे, कहत कि अब हम सिगरे मरे ।
 अजगर तुड तनक जब नयौ, तिहि छिन अद्भुत कौतुक भयौ ।
 नैसुक सिमु मुख-द्वारे खरौ, रुकि गयौ ताकौ सिगरौ गरौ ।
 भयौ तिरोध प्रान घट घुटचौ, ब्रह्मरध तब ताकौ फुटचौ ।
 निकसि ज्योति अबर मै गई, दामिनि सी फिरि ठाढी भई ।
- ७५ जब लगि नद-सुवन गोविंद, बछरा अरु ब्रज-बालक-बृंद ।
 अमृत-दृष्टि करि सीचि जिवाइ, लै आये बाहिर इहि भाइ ।
 तब लौ रही गगन मै जोति, सब दिसि जगमग जगमग होति ।
 उलका ज्यौ तहँ तै उलटानी, आनंद भरि हरि माझ समानी ।
 तदनंतर सुर-मुनि सब हरषे, जै जै करि पुहुपन सब बरषे ।
- ८० रटन लगे गधर्ब जितेक, नटन लगी अपछरा अनेक ।
 कोलाहल सुनि निज लोक मै, आयौ ब्रह्मा ब्रज ओक मै ।

दिखि महिमा जसुमति-तात की, मुधि-बुधि गई कमल-जात की ।
 सो वह अजगर परम पवित्र, सूक्यौ बृदावन मधि मित्र ।
 अति गह्वर तहँ ब्रज के बाल, डुका-डुकी खेले बहु काल ।
 यह कौमार बयस कौ कर्म, पायौ नहि किन हूँ कछु मर्म । ८५
 छठी बरस जब सब निरबह्यौ, तब उन सबन आनि ब्रज कह्यौ ।
 आजु जु एक नद के लाल, मारचौ ब्याल सु केवल काल ।
 हम सब ताके मुख मधि गये, आये बहुरि जन्म धरि नये ।
 ताके तन तैं उठी जु जोति, नखत तैं टूटि ज्यौ ज्वाला होति ।
 जाइ गगन मैं थिर हूँ रही, हम देखी अरु सबहिन चही । ९०
 कान्हहि निरखि बहुरि उलटानी, आनि कै इन ही माँझ समानी ।
 ऐसै जब उन लरिकन कह्यौ, सुनि सब लोग अचभे रह्यौ ।
 अहो मित्र सुनि चित्र न कीजै, हरि की महिमा मैं मन दीजै ।
 इन की जो कोउ प्रतिमा करै, एक बार बल करि हिय धरै ।
 प्रल्हादादिक की गति जोई, सु पुरुष सहजहि पावै सोई । ९५
 सो साच्छात ग्रघासुर हिये, आये अपने भक्तन लिये ।
 सूत कहत है हो भृगुनदन, सुनि हरि सुचरित दुरित-निकदन ।
 पुनि पुनि मुनि के गहि कै पाइ, पूछत यहै परीच्छित राइ ।
 हो सर्वग्य व्यास के तात !, यह कौमार बयस की बात ।
 पौगंडमय चरित सब कहे, अब लौ ये सिमु कहँ है रहे । १००
 यह कछु हरि की माया आहि, हो प्रभु ! नीके बरनहु ताहि ।
 हम सम धन्य न इहि ससार, जातै कृष्णकथामृत-धार ।
 निगम सार ताकौ पुनि सार, पियत है हम तिहि बारंबार ।

- बहुरि तुम्हारे मुख सु कमल तै, मधुर तै मधुर, अमल अमल तै ।
 १०५ सूत कहत जब यौ नृप कह्यौ, श्री सुक नैन मूँदि तव रह्यौ ।
 फुरि आये जु चरित सब हिये, ज्यौ कोउ अति मादक-मद प्रिये ।
 बड़ि जु गयो उर अति आनद, घूमत ज्यो मदमत्त गयद ।
 बड़ी बेर जागे अनुरागे, राजा प्रति सुख वरपन लागे ।
 'नंद' हिये धरि नेह भरि, यह द्वादसी अध्याइ ।
 ११० अघ से मल निर्मल जहाँ, कृष्ण-पद-परस पाइ ॥
 यह द्वादस अध्याइ जो, सुनै तनक चित लाइ ।
 अघ न रहै अघ ज्यौ सुनत, 'नंद' अनघ ह्वै जाइ ॥

त्रयोदश अध्याय

- अब सुनि लै तेरहौ अध्याइ, हरिहै विधि बछ-बालक आइ ।
 श्री हरि तैसेई अवर बनाइ, खेलिहै एक वरप इहि भाइ ।
 भले प्रश्न कीनी नृप सत्तम, हे बडभाग । भागवत उत्तम ।
 जातै कृष्ण-कथा रसमई सुनत हौ छिन ही छिन करि नई ।
 ५ जिन के उपज्यौ हरि-रस-भाउ, हे नृप । तिन को यहै सुभाउ ।
 रति सौ कृष्ण-कथा अनुसरै, छिन छिन प्रति नूतन सी करै ।
 ज्यौ लपट पर बनिता बात, सुनत सुनत कबहूँ न अघात ।
 अब सुनि सावधान ह्वै कथा, बरनन करौ आहि यह जथा ।
 जदपि गोप्य रहै मो हिये, कहौ तदपि तव हित के लिये ।
 १० सिष्य सनेहवंत जो रहै, तिन सौ गुरु गुपती पुनि कहै ।

अघ-मुख तं जिवाइ बछ्च-वाल, लै गये जमुन-पुलिन नँदलाल ।
 भोजन कियौ चहत तिहि काल, करत स्तुति पुलिन की गोपाल ।
 कहत कि भिया भलौ यह ठौर, ऐसी नहिन पाइहौ और ।
 सीतल मृदुल बालुका स्वच्छ, इत ये हरे हरे तृन कच्छ ।
 इत ये सुदर सरसिज फूले, तरवर फूल फूलि जल भूले । १५
 खगन की धुनि-प्रतिधुनि हिय हरै, मद सुगंध पवन अनुसरै ।
 सब दिसि तैं ये परिमल लपटै, आवति सहज सुखन की दपटै ।
 भूख लगी है भोजन करै, इत ये बच्छ कच्छ मै चरै ।
 मंडल करि बैठे ब्रजवाल, मध्य बने तहँ मोहनलाल ।
 सोहत सब तैं सन्मुख ऐसै, कमल के बीच करनिका जैसे । २०
 चहुँ दिसि वाल मडली बैसी, नखत विसाखा होति है जैसी ।
 तिन मधि स्याम सुभग सोहत यौ, राका-निसि राकेस लसै ज्यौ ।
 पुनि सुनि मित्र अवर उपाइ इक, अज हूँ ध्यान धरत ब्रह्मादिक ।
 जनु चहुँ दिसि मुक्ता-मनि रची, मधि गुपाल मरकत मनि खची ।
 रविजा कर मद्रिका दिखाई, यह ताकौ जगमगत जराई । २५
 ऐसै मुक राजा प्रति कही, नृप सुनि कै कमनीय सु गही ।
 भोजन करत कुँवर साँवरे, छवि दिखि अमर भये वावरे ।
 भाजन विविधि गुवालन बने, फल दल सिल बलकल अति घने ।
 अपने व्यजन तिन मै धरे, चखत चखावत अति मुद भरे ।
 तिन के मध्य बने नँद-नद, उड़-मंडल जस पुरन चद । ३०
 पट अरु जठर बीच तौ बेनु, काख बेत, कच लपटे रेनु ।
 दधि-ओदन कौ कवल सु किये, छवि सौ बाम हस्त हरि लिये ।

- अंगुरिन मधि मधि धरि सधान, जिनिहि निरखि बिधि भूल्यो ग्यान ।
 लै लै व्यजन चखनि चखावनि, हसनि, हसावनि, पुनि डहकावनि ।
- ३५ केवल बालकेलि अस करै, ईस्वर तनक न जाने परै ।
 बछरा जब वन घन अनुसरे, दिखि सब ग्वाल-बाल भय भरे ।
 तिन सौ कहत कमल-दल-लोचन, अद्भुत सिसु भय के भय मोचन ।
 अहो मित्र, तुम भोजन करौ, अपने मन तनकौ जिनि डरौ ।
 बछरन हम लै ऐहै अबै, बैठे रहौ लहौ सुख सबै ।
- ४० ऐसै कहि वन गहवर कुज, तम करि भरी दरी तहँ पुज ।
 ढूँढत बच्छ बिस्व के नाथ, भोजन कवल लिये ही हाथ ।
 ऐसै माँझ कुबुधि बिधि आयौ, अघ तै अधिक असह अनभायौ ।
 कैसे ये ईस्वर इमि कहै, तिन की महिमा चितयौ चहै ।
 कच्छ तै बच्छ लिये सब आइ, जब लगि हरि वै देखन जाइ ।
- ४५ तब लगि इत तै लै गयौ बाल, अकिलेई रहि गये मोहनलाल ।
 दुहुवन वन घन ढूँढन लगे, डोलत प्रेम-पगे, रँगमगे ।
 पुनि हँसि परे कछू रिस भरे, इते काम इन बिधना करे ।
 जौ अब हम इत चुप कै रहै, तौ इन की जननी कहा कहै ।
 अरु जौ उन ही कौ अब आनै, तौ बिधि मो महिमा कहा जानै ।
- ५० हँसन लगे हरि सुदर स्याम, कही कि ये सब बिधि के काम ।
 हमरी महिमा देखन आयौ, होहु सबै अब याकौ भायौ ।
 जितक हुते बछ-बाछी-बाल, आपु ही भये कुँवर नँदलाल ।
 वैसेई कबर, अबर, हार, वैसेई सहज अहार बिहार ।
 वैसेई नाम, दाम गुन नीके, वैसेई शृंग, बेनु, दल छीके ।

वैसियै हसनि, चहनि पुनि बोलनि, वैसियै लटकनि, मटकनि, डोलनि । ५५
 नूपुर, ककन, किकिनि माल, सबै भये ईस्वर नंदलाल ।
 बेद जु विदित बिस्व यह जिते, सबै विष्णुमय भासत तिते ।
 जो यह बानी निगमन गाई, सो प्रभु मूर्तिवंत दिखराई ।
 गंगाजल ज्यौ हिमकन पाइ, ठाँ ठाँ सहज जाइ ठहराइ ।
 आपुहि आप घेरि बछ-बाल, लै आये ब्रज मोहनलाल । ६०
 बेनु की धुनि सुनि गोपी धाई, अपने कठनि लै लपटाई ।
 धूरि भारि पुनि पुनि मुख चूमनि, नहि कहि परै प्रेम की घूमनि ।
 उबटन उबटि सलिल अन्हवाये, मनभाये भोजन करवाये ।
 उपज्यौ प्रेम तिन बिषै ऐसौ, पाछे नंदमुवन सौ जैसौ ।
 अब सुनि लै गाइन को पेम, बिसरत जिहिदिखि मुनि मन नेम । ६५
 खरिक निकट जब बछरा बोलै, सुनतहि गोधनबृद कलोलै ।
 हूँकि हूँकि आतुर गति आवनि, इत तै इन बछरन की धावनि ।
 चुषनि, चुषावनि, चाटनि, चूँवनि, बार बार हित की वह हूँसनि ।
 आपुहि बछरा, आपुहि बाल, बिहरत ब्रज बन मोहनलाल ।
 एकाकी जस खेलत कोई, खेलत ताहि कछु न सुख होई । ७०
 ऐसै वरस दिवस निरबह्यौ, सकर्षन हू नाहिन लह्यौ ।
 इक दिन गिरि गोधन पर गाइ, चरति ही चढी आपने चाइ ।
 ब्रज-समीप बछरन अवहेरि, चली जु ग्वाल सके नहि फेरि ।
 स्वच्छ पुच्छ ऊँची करि लई, मानहुँ दुरत चँवर छत्रिछई ।
 अति गति पग डारनि, हुकारनि, सीचति धरनि दूध की धारनि । ७५
 बखरे बछरन पै चलि आई, मिली आइ, कछु नहि कहि जाई ।

- पाछे गोप जु धाये आये, छोभ भरे अति श्रम करि पाये ।
 मुतन निरखि तब सब सुधि गई, उपजी प्रीति नई, रसमई ।
 ना दिन बल के भयौ सँदेह, सिसुन बिषै दिखि ब्रज की नेह ।
- ८० कहत कि पाछे हुतौ न ऐसौ, निरबधि नेह अबहि है जैसौ ।
 अरु मेरे हूँ उपजत तैसौ, कान्हू कमल-लोचन सौ जैसौ ।
 ये ब्रजवालक वे तौ नाही, पाछे हुते जु या ब्रज माही ।
 अब तो नाम, दाम, दल अवर, बेनु, बिषान, बेत, बल कंवर ।
 ककन, किकिनि, भूषन जिते, मोहि श्री कृष्ण अभासत तिते ।
- ८५ जब हँसि हलधर हरि तन चह्यौ, हरि तब सब हलधर सौ कह्यौ ।
 मकर्षण हूँ नहि सुधि परै, बिधि बावरौ जु पचि पचि मरै ।
 वर्ष दिवस बीते विधि आयौ, निरखि विनोद सु बिस्मय पायौ ।
 वैसैई बच्छ स्वच्छ ब्रजवाल, जमन-कच्छ खेलत नंदलाल ।
 तिनहि निरखि उत धायौ गयो, वैसैई दिखि अति विस्मय भयौ ।
- ९० नैसैई उत के तैसैई इत के, कहत कि सत्य आहि धौ कित के ।
 पुनि जो फिरि आवै इहि ठौर, ह्वै रही कछू और की और ।
 बालक-बच्छ इहाँ है जिते, बेनु, बिषान, बेत दल तिते ।
 मुक्तावलि, गुजावलि जु ही, नूपुर, किकिनि, ककन सुही ।
 अवर, कवर, सवर जिते, निरखे चारु चतुर्भुज तिते ।
- ९५ घन-तन, पीतबसन, बनमाल, अरुन कमल-दल-नैन बिसाल ।
 कुडल-मडित गंड सुदेस, मनिमय मुकट सु घँघर केस ।
 कबु-कठ कौस्तुभ मनि धरे, आयुध सख-चक्र कर करे ।
 छबि उलसी तुलसी की माल, बनि रही पदपर्जत बिसाल ।

बदन वदन मुसकनि छवि लसी, चदन मध्य चद्रिका जसी ।
 भिन्न भिन्न ब्रह्माड विराजै, तिन मवि इक इक मूरति भ्राजै । १००
 ब्रह्महि आदि चराचर जिते, मूरति धरे उपासत तिते ।
 अनिमा, महिमादिक सिधि जिती, महदादिक विभूति है तिती ।
 काल-करम-गुन अवर न अत, सेवन है तहँ मूरतिवत ।
 सुधि गई विधिहि अचेतन भयौ, हस को अस पकरि रहि गयौ ।
 तिहि छिन ताहि फगो छवि ऐसी, चतुर्मुखी कोउ पुतरी जैसी । १०५
 सरस्वति पति विचार इमि करै, कहा आहि यह सुधि नहि परै ।
 तव श्री हरि निज हिये विचारि, अज पर अजा जवनिका डारि ।
 कही कि ये अभिमानी लोग, मो महिमा नहि चाहन जोग ।
 तव श्री हरि वह माया जिनी, अतरध्यान करी तहँ तिती ।
 बड़ी बेर विधि सुधि भई ऐनै, मरि कै बहुरि उठत कोउ जैसै । ११०
 दृग उधारि जो विधना चहै, तो वह श्री वृदावन अहै ।
 जाभै सर सुदर, तरु सुदर, जे कबहुँ निरखे न पुरदर ।
 अरु हरि-मृग जहँ इक सँग चरै, क्षतपिपास नैक न सचरै ।
 मुद भरि श्री हरि कौ नित चहै, काके काम-क्रोध-भय रहै ।
 तहँ निरखे ब्रजराजकुमार, अद्वै ब्रह्म अनत अपार । ११५
 बहुरि अगाध बोध श्रुति बोलै, सो बछ-वालक हूडत डोलै ।
 परचौ धरनि चरनन पर जाइ, सब मुकटन करि परसत पाइ ।
 ज्यौ ज्यौ वह महिमा उर फुरै, उठि उठि पद-पकज सो घुरै ।
 श्री हरि कछु न कहत रिस भोये, हमरे खेल आनि इन खोये ।
 उठ्यौसु हरि-महिमा करि बोरचौ, वृदावन की रज में खोरचौ । १२०

हरे हरे उठि हरि तन चहै, टपकि टपकि नैनन जल बहै ।
 थर थर कपत सकल सरीर, कमल लिये ठाढे बलबीर ।
 नमित बदन दृग भरि रहे पानी, गदगद कंठ फुरै नहि बानी ।
 सापराध बिधि निपटहि डरचौ, अजुलि जोरि स्तुति अनुसरचौ ।

१२५ बच्छ-हरन, बिधि-बुधि-हरन, सुनै जु इहि अध्याइ ।
 'नंद' सकल मंगल करै, जग दंगल मिटि जाइ ॥

चतुर्दश अध्याय

अब सुनि लै चउदहौ अध्याइ, ब्रह्मस्तुति जहँ अद्भुत भाइ ।
 अति अगाध महिमा अवगाहि, पुनि पुनि रूप अनूपम चाहि ।
 अवर न कछू फुरै अरबरै, बिधि नंदनदन-बंदन करै ।
 अहो ईड्य ! नव घन तन स्याम, तडि दिव पीत बसन अभिराम ।
 ५ मोर-पच्छ-छवि छाजत भाल, नैन बिसाल, सु उर बनमाल ।
 रस-पुजा गुजा अवतस, कवल, विपान, बेत्र वर बस ।
 मृदु पद बृंदा बिपिन बिहार, नमो नमो ब्रजराज कुमार ।
 हो प्रभु यह तुम्हरौ अवतार, सुलभहि प्रगट सकल श्रुतिसार ।
 मो पर परम अनुग्रह करचौ, किधौ भक्तन की इच्छा धरचौ ।
 १० याकी महिमा नहि कहि परै, मो से जौ अनेक पचि मरै ।
 जो साच्छात वस्तु इक आहि, अवतारी अवलबत ताहि ।
 सो तुम जाने परत कौन पै, ससि है जात न गह्यौ बौन पै ।

पूर्व पक्ष

जौ कहहु कि हम अस दुर्गेय, पायौ परे न जाकी भेय ।
 तौ पै इतर दुस्तर ससार, कैसे तरिहै, परिहै पार ।
 तहाँ कहत विधि माथ नवाइ, सुनहु नाथ निज प्राप्ति उपाइ । १५
 ग्यान बिषै प्रयास परिहरै, तुम्हरी कथा बिषै मन धरै ।
 जैसे सुदर सत तुम्हारे, कथा-अमृत के बरषनहारे ।
 तिन पै सुनै, श्रवन रस भरै, मन-वच-कर्म बदन पुनि करै ।
 बैठे ठौर कथा-रस पीवै, जे इहि भाँति जगत मै जीवै ।
 अहो अजित ! तिन करि तुम जीते, ग्यानी डोलत भटकत रीते । २०
 अब विधि कहत ग्यान है जोई, भक्ति बिना सोउ सिद्ध न होई ।
 तुम्हरी भगति अमीरस-सरवर, मोच्छादिक जाके वस निर्भर ।
 तिहि तजि जे केवल बोध कौ, करत कलेस चित्त सोध कौ ।
 तिन कहँ छिन ही छिन श्रम बढ़ै, और कछु न तनक कर चढ़ै ।
 जैसे कनबिहीन लै धान, धमकि धमकि कूटत अग्यान । २५
 फल तहँ विरथ यहै दुख भरै, खाँटक हाथनि फोटक परै ।
 अब विधि सदाचार-विधि लिये, करत प्रमान भक्ति दूढ हिये ।
 हो प्रभु ! पाछे बहुतक भोगी, तजि तजि भोग भये भल जोगी ।
 दिढ अष्टांग जोग अनुसरै, ग्यान हेतु बहुतै तप करै ।
 अति श्रम जानि तहो तै फिरै, तुम कहँ कर्म समर्पन करै । ३०
 तिन करि सुद्ध भयौ मन मर्म, तब कीने प्रभु तुम्हरे कर्म ।
 कथा श्रवन करि पाई भक्ति, जाके सग फिरत सब मुक्ति ।
 ता करि आत्मतत्त्व कौ पाइ, बैठे सहज परमगति पाइ(जाइ?) ।

- अब विधि कहत कि निर्गुन ग्यान, निहि समान दुर्घट नहि आन ।
 ३५ लछ्मिमी जदपि नित्य उर रहै, सो पुनि तनक कवहुँ नहि लहै ।
 जाके रूप न रेख, न क्रिया, तिहि लालच अबलबै हिया ।
 तदपि केई तजि नजि सब कृत्ति, निर्मल करत चित्त की वृत्ति ।
 सहजहि सून्य समाधि लगाइ, लेत है तामै तुम कौ पाइ ।
 पै यह सगुन सरूप तुम्हारो, ह्या मन खोयी जात हमारौ ।
 ४० ये अद्भुत अवतार जु लेत, विस्वहि प्रतिपालन के हेत ।
 नाम, रूप, गुन, कर्म अनत, गनत गनत कोउ लहै न अत ।
 धरनी के परमान जितेक, हिमवान, अरु उड गगन तितेक ।
 कालहि पाइ निपुन जन कोइ, तिनहिं गनै, अस समरथ होइ ।
 ऐ परि सगुन रूप गुन जिते, काहू पै कहि परत न तिते ।
 ४५ ताते तव भगतिहि अनुसरै, तुम्हरी कृपा मनायो करै ।
 कव मो पर नंदनदन ढरिहै, मधुर कटाच्छ चितै रस भरिहै ।
 निज प्रारब्ध कर्म-फल खाइ, प्रनासक्त, नैक न ललचाइ ।
 अरु अति तप-कलेस नहि करै, श्रवन-कीर्तन-रस सचरै ।
 इहि विधि जियै सुभागहि पावै, मर्या कहा कोउ भगरन आवै ।
 ५० अपराधी विधि थरथर डरै, निज अपराध निवेदन करै ।
 देखहु नाथ दुर्जनता मेरी, महिमा चह्यो चह्यौ प्रभु केरी ।
 अग्निनि तै विस्फुलिंग ज्यौ जगै, अग्निनिहि विभव दिखावन लगै ।
 पटविजना ज्यौ पख डुलाइ, लयो चहत रवि-मडल छाइ ।
 और सुनहु प्रभु उपमा आछी, गरुडहि आंखि दिखावै माछी ।
 ५५ अब कहत कि मेरौ अपराधु, छपा करहु, हौ निपट असाधु ।

रज गुन तें उपज्यौ अग्यानी, तुम तें भिन्न ईस अभिमानी ।
 मायामद उनमद ह्वै गयौ, सूझै न कछू, अंध तम छग्रौ ।
 यातें अनुकपाही करौ, भृत्य जानि कछु जोय न धरौ ।
 चारचौ फुटी जु जन जानियौ, ताकौ नाथ न बुरौ मानियौ ।

पूर्व पक्ष

जौ कहहु कि क्यौ इतौ लिलाहि, तुम हूँ तौ इक ईसुर आहि । ६०
 तहाँ कहत विधि जोरे हाथ, वातें समुझि कहो ब्रजनाथ ।
 कित हौ कित महिमा नाथ की, कहत हौ चीटी हथी साथ की ।
 प्रकृति, महद, हकार, अकास, बायु, बारि, वसुमती, हुतास ।
 सप्तावरन जु यह इक भौन, तुम ही कहौ तहाँ हौ कौन ।
 सप्त वितस्ति काइ कौ करचौ, रहत बहुत कहाँ धौ परचौ । ६५
 ऐसी कोटि कोटि ब्रह्मांड, तुमरी एक रोम के खड ।
 उपजत भ्रमत फिरत नहि चैन, जैसै जालरध्र त्रिसरैन ।
 निपटहि तुच्छ, न काहू लाइक, कृपा करौ, न लरौ ब्रजनाइक ।
 हो प्रभु जैसै जननी-गर्भ, रहत है निपट अबुध वह अर्भ ।
 कूखि विषै कर-चरनन ताने, तौ कहा मात बुरौ है मानै । ७०
 तैसै हौ तव कूखि के माही, करत कलोल कछू सुधि नाही ।
 अब कहत कि हौ तुम्हरी चेरौ, तुम तें प्रगट जनम यह मेरौ ।
 जब सब लोग चराचर जितौ, प्रलय-उदधि मधि मज्जत तितौ ।
 तब हौ तुम्हरी नाभि-कमल तै, निकस्यौ नहि इहि उदर अमल तै ।
 'कमलज कमलज' मेरौ नाम, मृषा आहि जानै सब ग्राम । ७५

पूर्व पक्ष

- जौ कहहु कि वे तौ हम नाही, सो वह नाराइन जल माही ।
 हमरौ ब्रज-बृंदावन धाम, तही जाहु ह्यां नहि कछु काम ।
 क्यौ आयौ हमरे ब्रज इहाँ, कहत है बिधि तब बातहि तहाँ ।
 तुम नहि नहि नाराइन स्वामी, अखिल लोक के अंतर्जामी ।
 ८० नार कहावत जीव जितेक, बहुरि नार ये नीर तितेक ।
 तिन मै नहिन अयन रावरौ, हो प्रभु मोहि करत बावरौ ।
 नीरहि मै नाराइन जोई, हो प्रभु तुम्हरी मूरति सोई ।

पूर्व पक्ष

- जौ कहहु कि हम यौ करि पाये, अपरिछिन्न नित निगमन गाये ।
 तुम परिछिन्न कहत हौ धात, तहाँ कहत बिधि इहि बिधि बात ।
 ८५ जब हौ कमल-नाल ह्वै गयौ, मन के बेग वरप सत भयौ ।
 जौ तुम जल करि आवृत होते, रहते दुरे कितक लौ मो ते ।
 पुनि जब तुमहि दया करि कह्यौ, तप तप सो मै दृढ करि गह्यौ ।
 तब रचक तुम हिय मै आइ, बहुरचौ गये चटपटी लाइ ।
 ये तुम्हरी माया की गुरभै, सब जन अरभै, नाहिन सुरभै ।
 ९० अरु अब ही याही अवतार, हो ईस्वर ब्रजराजकुमार ।
 जननी कौ माया दिखराई, चकित भई अति बिस्मय पाई ।
 बिस्व चराचर है यह जितौ, बाहिर प्रगट देखियै तितौ ।
 सो तुम जठर मध्य दिखरायौ, तहँ इक कौतुक और बतायौ ।
 तामै तुम देखे इहि भाइ, साँट लिये डोटति जसु माइ ।

बिब मध्य प्रतिबिब तौ होइ, जाकौ कहै-चहै सब कोइ । ६५
 प्रतिबिब मै बिब दिखरावै, माया बिन यह क्यौ बनि आवै ।
 जातै थर थर कंपत हियौ, अजहूँ सुधि न कहा है कियौ ।
 प्रथमहि मै तुम देखे एक, बहुरचौ बालक-बच्छ जितेक ।
 बेनु, बिषान, बेत्र दल जिते, ह्वै रहे चारु चतुर्भुज तिते ।
 पुनि इक इक ब्रह्माड के नाइक, मेवत मो समेत सब लाइक । १००
 पुनि अति एक एक छवि बाढ़े, देखे मै मनमोहन ठाढे ।
 तव महिमा कौतुक जौ आहि, को समरथ जानै जो ताहि ।
 हो प्रभु तव-पद-कमल सुदेस, ताके रस प्रसाद कौ लेस ।
 कबहूँ काहू पै दुरि आवै, तब भल महिमा तत्वहि पावै ।
 ऐसै अस्तुति बहु बिधि कीनी, निर्गुन-सगुन रूप रँग भीनी । १०५
 पुनि प्रार्थत सब सुरन कौ रानौ, भक्ति-बिभौ जु देखि ललचानौ ।
 अहो नाथ ! मो कहूँ यौ करौ, जौ तरुना करुना रस ढरौ ।
 इहि जनम मै, और जनम मै, नर जनम मै, तृजग जनम मै ।
 तुमरे भक्तन मै कछु ह्वै कै, सोऊ चरन-सरोजन छवै कै ।
 भव बिधि भक्तानद जु पग्यौ, ब्रज कौ भाग सराहन लग्यौ । १०९
 हो प्रभु धन्य धन्य ये गोपी, धनि ये धेनु परम रस ओपी ।
 बालक ह्वै, बछ ह्वै प्रभु जिन के, पीवत भये पयोधर तिन के ।
 बहुरचौ तनक स्तन-पय पाइ, बार बार तुम रहत अघाइ ।
 कब के जग्य-भाग हो खात, तहँ तुम तनकौ नहिन अघात ।
 इह ब्रजजन की भाग बड़ाई, हो प्रभु, मो पै नहि कहि जाई । ११५
 जा प्रभु के आनंद कौ लेस, बर्तत अज, सिव, सेस, महेस ।

- सो तुम निरवधि परमानंद, जिन के मित्र परम सुख-कंद ।
 पुनि परिपूरि रहे जहँ-तहाँ, जाहु तौ तब जब हौहु न उहाँ ।
 जगत बियापी ब्रह्म जु आहि, प्रभु की प्रभा कहत कबि ताहि ।
- १२० त तै बहुरि अनत कहुँ जात न, यातै नंदसुवन जु सनातन ।
 इन की भाग महिम तौ रहौ, हमरे भूरि भाग तन चहौ ।
 जद्यपि इन की इद्री जित्ती, हम करि नाहिन कीनी तित्ती ।
 तदपि तनक अभिमान के साथ, हम सब कृत्य कृत्य भये नाथ ।
 नेत्रादिक इन्द्रियगन जिते, हमरे पानपात्र प्रभु तिते ।
- १२५ तुम्हरे सुदर सुदर अग, छिन छिन उठति जु अमृत तरंग ।
 तिन करि पुनि पुनि पियत जथारथ, सूर्जादिक सब भये कृतारथ ।
 बहुरचौ इक इक इन्द्रिय केरे, धन्य भये हम से बहुतेरे ।
 जिन की सब इन्द्रिय रस पगी, सब ही विधि ते तुम ही लगी ।
 तिन के भाग की महिमा जौन, हो प्रभु ताहि कहि सकै कौन ।
- १३० तातै यह माँगत प्रभु पहियाँ, कै ब्रज कै बृदावन महियाँ ।
 औषधि, बीरुध, तृन, द्रुम, बेली, जहँ इन ब्रजवासिन की केली ।
 तहँ को मोहि कछू अस करौ, इन की पद-रज मो पै परौ ।

पूर्व पक्ष

- जौ कहौ सत्य लोक क्यौ तज्यौ, मर्त्य लोक काहे तै भज्यौ ।
 तहाँ कहत विधि इहि विधि बैन, हे श्री कृष्ण कमल-दल-नैन ।
- १३५ जा प्रभु की पद-पकज-धूरि, ढूँढत निगम सु अजहँ दूरि ।
 सो तुम जिन के जीवननाथ, जैसै दीन मीन के पाथ ।

इन के भक्ति लहलहत ऐसी, देखी सुनी न कितहूँ तैसी ।
 मोहि तौ सोच परची है महा, हो प्रभु इन कौ दैहौ कहा ।
 बडी बडाई मुक्ति तुम्हारे, जाकौ चारचौ वेद पुकारे ।
 इन के बेप मात्र पूतना, महा पापिनी, जगत धूतना । १४०
 बहुरचो प्रभु कौ मारन कारन, आई थन लगाइ गर दारुन ।
 सो वह वकी सकल कुल लै कै, बैठी जाइ तनक विष दै कै ।
 जिन के गेह देह धन धाम, लागे सकल रावरे काम ।
 दैहौ कहा महा अरभेरौ, मोह्यौ जात इहाँ मन मेरौ ।
 हौ जानौ नित रिगी रहौंगे, टक टक इन के बदन चहौंगे । १४५

पूर्व पक्ष

जो कहहु कि ये तो सब रागी, मुन, वित, मित्र, विषै-रस पागी ।
 मोहि कोउ बीतराग भल पावै, तहं विधि भक्ति-विभौ दिखरावै ।
 हे सुदर वर नदकिसोर, रागादिक तबई लगि चोर ।
 तबई लगि बंधन आगार, देह, गेह अरु नेह विथार ।
 तबई लगि दिढ जजर जेरी, मोह-लोह की पाइनि बेरी । १४०
 तब लौ मननि बासना छ्ये, जव लगि तुम्हरे नाहिन भये ।
 जो कोउ कहै प्रभु-बैभव जितौ, हम सम्यक जानत है तितौ ।
 जानहु ते जानहु जो जग चर, मो तै तौ मन, वचन अगोचर ।
 अब मो कौ अपनौ करि जानौ, मो कृत कछु अपराध न मानौ ।
 हमरी ग्यान बीज बल जितौ, प्रभु तुम सम्यक जानहु तितौ । १४५
 इतनी माँगत अहो अनत, बंदन करौ कल्प परजंत ।

- बार बार परिकर्मा दै कै, सुदर बदन बिलोकन कै कै ।
 चल्थौ नाथ कौ माथ नवाइ, अधिकारी पै रह्यौ न जाइ ।
 जब बिरचि गमने निज धाम, तब घनस्याम परम अभिराम ।
- १६० कच्छ तै बच्छ लिये ही आये, तिही पुलिन सिसु बैठे पाये ।
 बीत्थौ जदपि बरप इक काल, बिछुरे सुदर मोहनलाल ।
 तदिप अर्द्ध छिन मानत भये, अद्भुत प्रभु की माया छये ।
 कवन कवन माया नहि भूले, जगत-हिंडोरे बड़े भूले ।
 ये कछु माया करि नहि मोहे, प्रभु की इच्छा करि अति सोहे ।
- १६५ मोहे से तब कहत है बाल, बेगि ही आये मोहनलाल ।
 एकौ कवल न पावन पायौ, भैया तो बिन जाइ न खायौ ।
 तै हूँ तौ हम बिन नहि खायौ, हाथ कवल वैसे ही आयौ ।
 आवहु बैठहु भोजन करे, इत ये बच्छ कच्छ मै चरे ।
 जब ऐसे बोले ब्रजबाल, विहँसन लागे नद के लाल ।
- १७० मडल करि बैठे पुनि आछे, जैसे बान बन्यौ हो पाछे ।
 अति रुचि सौ मिलि भोजन करचौ, इहि विधि वा विधि कौ मद हरचौ ।
 सीथ जु परै दही-रस भरे, सदन जाइ विधि लालच खरे ।
 काक न भयौ फिरचो इनरातौ, चुनि चुनि सुदर सीथन खातौ ।

(इति बच्छहरण लीला)

- चले घरन अजगर दरस ते, हिय सरसते, मुखन बरसते ।
- १७५ गातनि धात के चित्र बनाये, सीसनि मोर के चद सुहाये ।
 बेनु संगदल ललित बजावत, नव नव गीत पुनीतन गावत ।
 पंकज फेरत, बछरन घेरत, लै लै तिन के नाम निबेरत ।

गोपी दृगन के उत्सव रूप, ब्रज आये नंद-नंद अनूप ।
 वीत्यौ एक वरष जिहि काल, ब्रज मैं कहत भये ब्रजबाल ।
 आज एक नद जू के लाल, मारची ब्याल महा विकराल । १८०
 यह जो चरित मोहनलाल कौ, बन भोजन, मर्दन ब्याल कौ ।
 अरु बिधि स्तुति जो सुनै-सुनावै, सो नर सब पुरुषारथ पावै ।
 चित दै सुनै जो चतुर कोउ, चतुरदसौ अध्याइ ।
 गुनत चतुरदस भुवन तै, परै परम गति जाइ ॥

पंचदश अध्याय

अब सुनि लै पद्महौ अध्याइ, चलिहै कान्ह चरावन गाइ ।
 बन की स्तुति कछु श्रीमुख करिहै, धेनुक हति ब्रज सुख बिस्तरिहै ।
 मंडित वय पौगड सुदेस, छिन छिन ससि लौ बढत सु बेस ।
 खेलत ललित खेल ब्रज महियाँ, चलत चहन लागे परछहियाँ ।
 गोपालन समत जब जाने, द्विज बर बोलि नंद जू आने । ५
 भल मुहूर्त लै दान दिवाइ, पठये कान्ह चरावन गाइ ।
 जसु लगी मगल गीत गवावन, नंद चले बन लौ अवरावन ।
 सखा साथ, बल भैया साथ, राजत रुचिर मगली माथ ।
 बीच अछन सु कवन छबि गनौ, मोती जमे चद मधि मनौ ।
 आगे करि दये गोधन-बृंद, बदन चूमि ब्रज बगदे नद । १०
 गाइन की छबि नहि कहि परै, रूप अनूप सब के हिय हरै ।
 कंचन भूषन सब के गरै, घनन घनन घटागन करै ।

- उज्जल बरन सु को है हस, कामधेनु सब जिन कौ अस ।
 दरपन सम तन अति दुति देत, जिन मधि हरि भाँई भुकि लेत ।
- १५ बृदावन छबि कहत वनै न, भूलि रहै जहँ हरि के नैन ।
 जामै सतत बसत बसत, प्रफुलित नाना कुसुम अनत ।
 कटक द्रुम एकौ नहि जहाँ, चिदाभास भासत सब तहाँ ।
 चलत जु नहि लीलारस-रले, मति हरि आवै इत ही चले ।
 सुदर तरु सुरतरु तहँ को है, जे मनमोहन के मन मोहै ।
- २० अरुन अरुन नव पल्लव पात, जनु हरि के अनुराग चुचात ।
 रटत विहंगम रगन भरे, बात कहत जनु द्रुम रस ढरे ।
 कोकिल कूजति इमि छबि पावति, जनु मधु-बधू सुमंगल गावति ।
 कुसुम धूरि धूँधरी सु कुज, गुजत मजु घोष अलि-पुज ।
 सुदर सर निर्मल जल ऐसै, संत जनन के मानस जैसै ।
- २५ तिन मधि अमल कमल अस लसे, जनु आनद भरे सर हँसे ।
 जल पर परी पराग जु सोहै, अबीर भरे नव दर्पन को है ।
 जहँ लगि बृदावन की भूमि, औरहि विधि रही जमुना भूमि ।
 परमाधार सु रस जो आहि, बहति रहति निसि-बासर ताहि ।
 जित दिखियै तित सुख की रैनी, कनक करारे रतनन सेनी ।
- ३० मंजुल बृदावन की गुजा, कृष्ण नाम मुख सुख की पुजा ।
 तिनहि बिलोकि लटू ह्वै गये, तुरतहि तोरि हार गुहि लये ।
 निरखे द्रुम जु फूल-फल नये, मधुकर निकर महा छबि छये ।
 नये जु फल-फूलन के भार, लगि लगि रही धरनि द्रुम-डार ।
 बार बार हरि तिन तन चहै, बल भैया सौ बातें कहै ।

देखहु हो ये द्रुम या बन के, सब सुख करने, हरने मन के । ३५
 सिखा निकरि परसत तुव पाइ, जानत हौ कछु इन कौ भाइ ।
 कहत कि हो ईस्वर जगनाइक, हौ तौ तुम सबहिन सुखदाइक ।
 ऐ परि हम पर बहुतै ढरे, जातै या बन के द्रुम करे ।
 अरु देखहु या बन के भृंग, बोलत डोलत तुम्हरे सग ।
 जनु ये मुनिगन अलि ह्वै आये, जदपि गुप्त तदपि लखि पाये । ४०
 धनि यह धर जा पर पग धरौ, धनि ये कुज जहाँ सचरौ ।
 धनि े सर-सरिता जहँ खोरत, धनि ये कुमुम जिनिह कर तोरत ।
 इहि बिधि विहरत वृंदावन मै, छिन छिन अतिरति उपजत मन मै ।
 कहूँ कहूँ हसन मिलि सु कलोलत, वैसे ही डोलत, वैसे ही बोलत ।
 कहूँ मत्त निरतत दिखि मोर, तैसे ही निरतत नदकिसोर । ४५
 कहूँ मदाध मधुप जहँ गावत, तिन संग मिलि गावत छबि पावत ।
 कबहूँ दूरि जाइ जब गाइ, ललित कदवन पर चढ़ि जाइ ।
 आनंदघन सम सुदर टेरनि, इत उत वह हेरनि, पट-फेरनि ।
 हे गगे, हे हे गोदावरि, हे जमुने, हे भावरि, चावरि ।
 हे मजरि, हे कुजरि, सीयरि, हे हे धौरी, धूमरि, पीयरि । ५०
 कबहूँ मल्लजुद्ध मिलि खेलत, मद गज ज्यौ ठेलत, पग पेलत ।
 श्रमित होत आवत तरु तरे, किसलय सयन, सु पेसल करे ।
 पौढत सखा सघन सिर नाइ, कोई बड़भाग पलोटत पाइ ।
 कोई कोमल पद लै कर मीजत, कोई लै कुसम बीजना बीजत ।
 कोई अति मधुर मधुर सुर गावत, साँवरे कुंवरहि नीद अनावत । ५५
 कबहूँ बल भैया के पाइ, आपुन हरि दावत भरि भाइ ।

- विहरत इहि परकार बिहार, ज्यौ गाइन सँग ग्वार गँवार ।
 जा कहँ मुनि मन करत बिचार, निगम अगम पावत नहि पार ।
 लछ्छिमी ललना ललित सु पाइ, लालति ज्यौ निधनी धन पाइ ।
 ६० बडी बेर आवत सिव मन मै, सो प्रभु यौ बिहरत या बन मै ।

(इति वनविहार लीला)

- खेलत खेलत खेल सुहाये, गोधन लै गिरि गोधन आये ।
 सखा एक श्रीदामा नाम, बोल्यौ जाइ सकल गुनधाम ।
 अहो अतुल बल श्री बलराम, अहो दुष्ट-निदरन घनस्याम ।
 इत तै निकट ताल बन महा, मिष्ट मिष्ट फल कहियै कहा ।
 ६५ यह दिखि उन कौ परिमल आवत, चपरचौ हमरे चितहि चुरावत ।
 भारी भूख लगी है चलौ, भैया बहुत मानिहै भलौ ।
 ऐ परि तहँ इक धेनुक नाम, बड़ौ बाम ताकौ बिश्राम ।
 जाके डर नर जात न कोई, तछिन भछिन करि डारै सोई ।
 सुनतहि चले सु लागत भने, ऐसे दुष्ट कितै दलमले ।
 ७० आगे भये बिहँसि बलराम, पाछे करि लये मोहन स्याम ।
 धसे बिसाल ताल बन जाइ, मत्त गयद ज्यौ कानन आइ ।
 दिये जु ताल सनाल हलाइ, भूखे ग्वाल लिये सब खाइ ।
 सुनि कै आयौ धेनुक धाइ, धर डगमगत धरत यौ पाइ ।
 गर्दभ सब्द करत इहि भाइ, सुर डरपे कि लिये हम आइ ।
 ७५ अति बल सौ बल की ढिँग गयौ, पछिले चरन चलावत भयौ ।
 ते पग तबहि पकरि है लये, पकरत प्रान निकसि ही गये ।
 फेरि फेरि ऐसे गहि डारचौ, ऊँचे हुतौ सु ता करि झारचौ ।

औरौ खर आये रिस भीने, तेऊ सबै डेल से कीने ।
 परे जु ताल बिसाल सु ऐसे, प्रबल पवन के मारे जैसे ।
 परे बिसाल ताल इमि मही, बिच बिच गर्दभ परत न कही । ८०
 ज्यौ रबि अस्त होत आडंबर, कारे पियरे बादर अबर ।
 छिनक मै मारि डारि सब चले, कहत है ग्वाल भले जू भले ।
 ब्रज कहँ आवत अति छबि पावत, बालक-बृंद सु कीरति गावत ।
 ऊपर सुर सुमन सु बरषावत, मुदित भये दुदुभी बजावत ।
 मद मद गति गाइन पाछे, चलत ललन छबि पावत आछे । ८५
 गोरज छुरित कुटिल कच बने, जनु मधुकर पराग रस सने ।
 मजुल मोरमुकट की लटकनि, कंचन कुडल गडनि भलकनि ।
 उर बनमाल, सु नैन बिसाल, बाजत मोहन बेनु रसाल ।
 सुनि कै गोपबधू सब निकसी, मुद्रित कमल-कली जनु बिकसी ।
 हरि-मुख-कमल भरचौ रस-रग, गोपी-लोचन लपट भृंग । ९०
 पुनि पुनि करि कै पान अधाने, दृगन के बासर बिरह सिराने ।
 तब कछु नैनन पूजा कीनी, लज्जा सहित हँसनि रँग-भीनी ।
 ता पाछे बर कुटिल कटाछे, चली जु प्रेम रंगीली आछे ।
 यह तिन की पूजा अभिराम, लै आये घर मोहन स्याम ।
 जसुमति द्वार आरतौ कियौ, पौछि कै बदन सदन मै लियौ । ९५
 उबटन उबटि फुलेल लगाइ, स्वच्छ सुगंध सलिल अन्हवाइ ।
 सुभग सुस्वाद सु बिजन आनि, जननी ज्यौंये अपने पानि ।
 रितु रितु के भोजन अनुकूल, रितु रितु के बर फूल दुकूल ।
 भोजन करि तब खरिकनि जाइ, फिरि घर गवने गाइ दुहाइ ।

- १०० दुग्ध-फैन सम सेज बनाइ, पौढे तहाँ कुँवर वर जाइ ।
 'नद' नीद नँद-नद की, कही जु इहि अघ्याइ ।
 गुनातीत कौ सोइबौ, सब भगतन कौ भाइ ॥
 (इति धेनुकमर्दन लीला)

- पुनि इक दिन बिन ही बलराम, सखन सहित बन गवने स्याम ।
 पसु अरु पसुप तृषित अति भये, चले चले कालीदह गये ।
 १०५ बनमाली आवत हे पाछे, वन छबि देखत देखत आछे ।
 तब लगि ग्वाल-बाल अरु गाइ, महा गरल जल पीयौ जाइ ।
 जौ पाछे आवाहि नँदलाल, मरे परे सब गोधन-ग्वाल ।
 अमृत-दृष्टि करि सीचि जिवाये, उठे सबै अति बिस्मय पाये ।
 कहन लगे कि मरे हम सबै, इहि नँदलाल जिवाये अबै ।
 ११० तब बनमाली सब गुनसाली, काढ़ि दियौ तिहि दह तै काली ।

षोडश अध्याय

- अब सुनि लै षोडसौ अध्याइ, कीनी प्रश्न परीच्छित राइ ।
 हो प्रभु वह दह महा अगाध, तरल गरल करि भरचौ असाध ।
 कमल तै अति कोमल बनमाली, तहँ तै कैसे काढ्यौ काली ।
 तहँ पुनि बहुत जुगन कौ कह्यौ, सर्प अजलचर क्यौ जल रह्यौ ।
 ५ गोप बेष श्रीकृष्ण चरित्र, अति बिचित्र अरु परम पबित्र ।
 निरवधि मधु की धारा आहि, सु को जु तृपतै पीयत ताहि ।
 हरिलीला-रससिधु हिलोले, मंद मुसकि तब श्री सुक बोले ।

जमुनहि मिल्यौ निकट ही महा, अति अगाध हृद कहियै कहा ।
 विष की आगि लागि जल जरै, उडते खग जहँ गिरि गिरि परै ।
 पवन रासि उठि मुठि जल लहरै, तिन तै विष की फुही जु फहरै । १०
 इक जोजन के थिर चर जत, जरि जरि मरि मरि गये अनत ।
 जो बृंदावन जोग्य न हुते, ते सब विष-जल-ज्वाला हुते ।
 ताही ढिंग इक मृदुल कदब, सो छवै सक्यौ न विष कौ अब ।
 या पर कृष्ण-चरन परसिहै, इहि चढ़ि या दुष्टहि करसिहै ।
 भावी जा कदब की ऐसै, विष-जल परसि सकै तिहि कैसै । १५
 ऐसै ही भावी भक्त जु आहि, कालादिक छवै सकत न ताहि ।
 कान्ह कह्यौ कि हमारी जमुना, क्यौ पूछियै विष भरी अमुना ।
 सरितहि सुद्ध करन कलमले, छवि सौ उहि कदब ढिंग चले ।
 किकिनि सौ कटि पटहि लपेटि, कुटिल अलक मुकट मै समेटि ।
 चट दै जिहि कदंब पर चढे, छाजत ता छिन अति छवि बढे । २०
 जिहि जल छुवत जात जन जरे, तिहि जल कुँवर कूदि ही परे ।
 बर बारन ज्यौ जल मै धसरै, मत सत धनु चहुँ दिसि पय पसरै ।
 अति ऊधम सुनि काली डरचौ, बज्र परचौ कि गरुर बल करचौ ।
 अरग अरग आयौ रिस भरचौ, कोमल कुँवर दिष्टि-पथ परचौ ।
 नूतन घन तन सुदर स्याम, तडि दिव पीतबसन अभिराम । २५
 घन इव, तडि दिव उपमा ऐसै, साखा बिन ससि सुभै न जैसै ।
 बिहरत बिभु अपने रस-रंग, ईस्वरता कछु नाहिन संग ।
 ताकौ कह जानै यह नीच, लोचन भरे महा तम कीच ।
 अरुन कमल से कोमल पाइ, डसत भयौ दुरात्मा आइ ।

- ३० लपटि गयौ पुनि सिंगरे गात, रोष भरे दृग अनल चुचात ।
 ऐसे जब निरखे ब्रजवाल, गाइ, बृषभ, बछ, बाछी, बाल ।
 मुरझि परे ठाँ ठाँ सब ऐसे, सुदर तरु विन मूलहि जैसे ।
 ब्रज मै हौन लगे उतपात, असुभ सूचने फरके गात ।
 भूमिकंप नभ ते उडि गिरे, अवर असगुन निरखि थरहरे ।
- ३५ कहत कि आज राम विन स्याम, बन जु गये कछु बिगरचौ काम ।
 अति कलमले बिरह दलमले, बाल-विरध सब कानन चले ।
 तिन सौ कछु न कहत बलदेव, जानत हरि भैया कौ भेव ।
 चरन-सरोज-खोज ही लगे, जिन मै सुभ लच्छन जगमगे ।
 अरि, दर, मीन, कमल जब जहाँ, अकुस, कुलिस, धुजा छबि तहाँ ।
- ४० जा रज कहँ सिव, अज नित बछत, अनुदिन सनक, सनदन इछत ।
 तिहि सिर धारत अतिसय आरत, कृष्ण कृष्ण गोविंद पुकारत ।
 क्रम क्रम करि जमुना अनुसरे, निरखे ग्वाल-वाल, पसु परे ।
 दह मै दिष्टि परे बनमाली, लगटि रह्यौ तन कारौ काली ।
 जौ बलभद्र बीच नहि परै, तौ सब जन जल-ज्वाला जरै ।
- ४५ तिन मै गोपबधू भरि नेह, दृगन मै प्राण रहे तजि देह ।
 जसुमति उमगि उमगि दह परै, छन छन संकर्षन भुज धरै ।
 ब्रज अनन्य गति दिखि बनमाली, गहि डारचौ तव कारौ काली ।
 ठाढौ भयौ भयानक भारौ, इक सत फन, बरियारौ कारौ ।
 फन फन द्वै द्वै जीभ कराल, लपलप करै निपट बिकराल ।
- ५० डारत बार बार फुकार, छुटत जु गरल अनल की भार ।
 द्वै सत लोचन राते ऐसे, माड़े पकने भाँड़े जैसे ।

तिन तै अग्नि की चिनगी परै, ठाढे इहाँ तीर के जरै ।
 ऐसै काली सौ बनमाली, खेलन लगे सकल गुनसाली ।
 बाम भाग दिये तिहि उर मेलत, जैसै गरुड़ सर्प सौ खेलत ।
 बुझि गयौ ओज उरग कौ ऐसै, नाग दवन के देखत जैसै । ५५
 पुनि ताके फन पर चढि गये, सकल कला गुरु नितंत भये ।
 सोहैं नंद-सुवन तहँ ऐसै, सेस उपर नाराइन जैसै ।
 तिहि छिन ब्रज गधर्व जितेक, लै लै ताल मृदंग अनेक ।
 सुघर सुघर जे सुर लोक के, सिव लोक के बिष्णु ओक के ।
 अद्भुत नर्तक नहि कछु बचे, सर्प फनन पर ताडव नचे । ६०
 फनन तै निकसि निकसि मनि परै, पगन मै भलमल भलमल करै ।
 तैसिय हरि-नख-मनि की जोति, सब दिसि जगमग जगमग होति ।
 जोई जोई फन अहि उन्नत करै, तहँ तहँ मान कान्ह कौ परै ।
 पगन की कूटनि दुखित जु भयौ, सर्प कौ दर्प सबै गिरि गयौ ।
 कहत कि यह बल नहिन मनुज कौ, निरवधि ईस्वर बल जु अनुज कौ । ६५
 सापराध अहि निपटहि डरचौ, मन करि चरन सरन अनुसरचौ ।
 दुखित देखि ताकी सब तिया, आई थर थर कपत हिया ।
 छुट्टे लरिकन आगे किये, जैसै दया फुरै हरि हिये ।
 नैनन तै जलकन यौ परै, कमलन तै जनु मुक्ता भरै ।
 विगलित कच सु बदन छवि बढे, अहि सिमुजनु कि ससिन पर चढे । ७०
 कछु मुद भरी कछू भय भरी, करि दडवत स्तुती अनुसरी ।
 अहो नाथ अनुचित नहि करचौ, अहि कहूँ दड न्याय ही धरचौ ।
 दुष्ट-दमन तुम्हरौ अवतार, हो ईस्वर ब्रजराज-कुमार ।

- जो दिखियत यह बिस्व पसारौ, सो सब क्रीडा-भार तुम्हारौ ।
 ७५ अहि कहूँ तुम जु दड नहि धरचौ, या पर परम अनुग्रह करचौ ।
 अहो प्रभु तुम तै जिती वड़ाई, इन पाइन सौ किनहुँ न पाई ।
 एक अड कौ भार सु कितौ, गरवत सेस धरे सिर तितौ ।
 अमित अडमय बपु रस भरचौ, सो इन धरचौ बहुत ही करचौ ।
 सुनतहि वचन दया रस भरे, तातै तुरत उतरि ही परे ।
 ८० हरे हरे उठि बोल्यौ काली, हो अद्भुत ईस्वर बनमाली ।
 तुम ही हम इहि विधि के करे, गरल भरे अति तामस भरे ।
 तब नहि सोचे इह विधि बानत, अब हो नाथ बुरौ क्यों मानत ।
 तब बोले ब्रजराज कुमार, यह बन हमरौ नित्य बिहार ।
 अब तू रमनक दीपहि जाहि, वा गरुड तै नैक न डराहि ।
 ८५ मो पद चिह्नन चिह्नित भयौ, करि आनद, सबै भय गयौ ।
 काली मर्दन लाल की, लीला सुनै जु कोइ ।
 महा ब्याल कलिकाल तै, तिहि न तनक भय होइ ॥

सप्तदश अध्याय

- अब सुनि लै सत्रहौ अध्याइ, सर्पहि रमनक दीप पठाइ ।
 उठिहै निसि बन वन्हि अचान, पानी लौ हरि करिहै पान ।
 नृप सुनि करि पुनि पूछै ऐसे, हो प्रभु ! मो सौ कहि यह कैसै ।
 रमनक दीप अहिन कौ धाम, क्यों छाँडचौ इन काली बाम ।
 ५ गरुर कौ कहा कियौ अनभायौ, जातै यह इहि दह मै आयौ ।

श्री सुक कही अहिन के ठौर, परी रहति नित खगपति दौर ।
 थोरे खाइ, बहुत हति जाइ, तब सर्पन मिलि कियौ उपाइ ।
 आवहु मास मास बलि दीजै, इहि विधि भले कैऊ दिन जीजै ।
 तब पर्वनि पर्वनि तरु तरे, अपनी अपनी बलि लै धरे ।
 यह अति विष-बीरज-मद भरचौ, गरुड तै रचक नाहिन डरचौ । १०
 अपनी भाग, अवर कौ भाग, खाइ जाइ यह काली नाग ।
 सुनि कै कुपित भयौ द्विजराज, कद्रू-मुतहि हतन के काज ।
 महा बेग धरि रिस भरि धायौ, बल-आलय उरगालय आयौ ।
 इत यह बली बालि भिहरानौ, मधु-रिपु-आसन अति समुहानौ ।
 इक सत फनन फुफात सु तातौ, द्वै सत लोचन अनल चुचातौ । १५
 अति बल गरुड नखायुध जाके, दूजौ मधुसूदन बल ताके ।
 बाम पच्छ नव कचनमई, रहपट एक जु ताकौ दई ।
 तहँ तै भज्यौ सु विह्वल भयौ, धाइ आइ इहि दह दुरि गयौ ।
 इहाँ गरुर की कछु न बसानी, फिरि गयौ सौभरि सका मानौ ।
 सुनि कै प्रश्न करी नृप ऐसे, हो प्रभु । सौभरि सका कैसे । २०
 तब राजा सौ श्री सुक कहै, सौभरि कौ तहँ आश्रम रहै ।
 एक समै इहि दह मै आइ, खगपति कीनौ बहुत उपाइ ।
 तहँ के मीनन कहुँ दुख दीनौ, तिन कौ राउ पकरि है लीनौ ।
 जलचर दुखित देखि कै खरे, बोले रिषि अति करुना भरे ।
 अब कै जौ ह्याँ खगपति आवै, प्राण सहित तौ जान न पावै । २५
 अकिलौ काली जानत आहि, और न लेलिह जानत ताहि ।
 सो वह काली, हरि बनमाली, काढि दियौ करि कीर्ति बिसाली ।

- सुत-कलित्र लै भरि अनुराग, रमनक गयौ नाग बड़भाग ।
तब नँद-नंदन दह तै निकसे, मुसकत नवल कमल से बिकसे ।
- ३० अहिपति निज कर पूजे स्याम, अद्भुत पट, अद्भुत मनि-दाम ।
बन्यौ जु बदन सु को छवि गनौ, दीनी ओप चंद मधि मनौ ।
धाइ घुरि गई जसुमति मैया, इत हँसि दौरि घुरचौ बल भैया ।
गोपी, गोप, गाइ, बछ जिते, घुरि गये सुदर अंगनि तिते ।
चलत सबन के नैनन नीर, जनु निकसी जल ह्वै उर पीर ।
- ३५ आये ब्रज के द्विज अनुरागे, नद सौ कहन सबै यौ लागे ।
जा कहूँ ऐसौ बिषधर खाइ, सो सुत बहुरि मिलै तोहिं आइ ।
तातै दान देहु ब्रजराज, अपनौ कुल मडन के काज ।
जु कछु जन्म-उत्सव मै कीनौ, ब्रजपति तातै दूनौ दीनी ।
दानन देत परि गई साँझ, रहि गये ताही कानन माँझ ।
- ४० सब दिन अति कलेस करि भरे, सोवत हुते महा निसि परे ।
तहँ अभिचार मत्र करि प्रेरचौ, उठचौ अगिनि, तिहि सब ब्रज घेरचौ ।
दुष्ट पवन लगि उठति जु लपटै, दूरि दूरि लगि अति भर भपटै ।
जगे जु लोग कुलाहल परचौ, कहत कि अब कै सब ब्रज जरचौ ।
पौढ़े हुते साँवरे जहाँ, सब जन धाये आये तहाँ ।
- ४५ अहो कृष्ण, श्री कृष्ण पियारे, जरत है सबै दवानल जारे ।
हमहि कछु तौ डर न मरन कौ, नहि सहि परत बियोग चरन कौ ।
सुनत जगे, अति नीके लगे, आलस पगे, उठे रँगमगे ।
करन नैन मीजत छवि पावत, रुठे कमल, मनु कमल मनावत ।
एक सकति कहूँ आग्या दई, कब धौ अगिनि पान करि गई ।

जे द्रुमलता दवानल जरे, अमी-दृष्टि करि तैसेई करे । ५०
 भोर भये अपने ब्रज आये, मिटे अमगल, मंगल गाये ।
 अगिनि पान हरि जान कौ, गान जु करिहै कोइ ।
 महा झार संसार-भर, बहुरि न परिहै सोइ ॥

अष्टादश अध्याय

अब सुनि अष्टादसौ अध्याइ, सुनत सहज सब ताप नसाइ ।
 जामै कृष्ण केलि अभिराम, हतिहै असुर प्रलबहि राम ।
 श्री सुक कहत है हो नृप सत्तम, अवर एक लीला सुनि उत्तम ।
 गोप-वेष करि अद्भुत सोहत, राम-कृष्ण सब के मन मोहत ।
 ग्रीष्म रितु आपने सुभाइक, प्रगट्यौ जगत सबन दुखदाइक । ५
 अति निदाघ तहँ कछु सुधि नाही, दादुर दुरे फनी-फन-छाँही ।
 सो बृंदावन मधि जब आयौ, सरस बसत समान सुहायौ ।
 ठाँ ठाँ गिरि तै निर्भर भरै, ते वै सलिल सिलन पर परै ।
 तिन तै बहति जु सरिता गहिरी, दूरि दूरि लौ परसति लहरी ।
 बहुरि अनेक अगाध सु सरवर, रस भूमरे, घूमरे तरवर । १०
 तिन के तर तून-वीरुध जिते, हरित हरित रँग भरित मु तिते ।
 तरनि किरन जिन नैक न परसै, छिन छिन मै छवि तिन मै सरसै ।
 कुसुमित बनराजी अति राजी, जैसी नहिंन बसंत बिराजी ।
 ठौर ठौर सर सरसिज फूले, डोलत लपट अलिकुल भूले ।
 कमल पवन, अरु चदन पौन, मिलि जु बहत, सुख कहियै कौन । १५

- बोलत सुक, जनु सुक मुनि पढै, सरमुति सम कल कोकिल रढै ।
 मधुर मधुर सुर बोलत मोर, नद-सुवन के मन के चोर ।
 इहि बिधि बृंदावन छवि पावत, तहँ मनमोहन धेनु चरावत ।
 बल समेत, ब्रजवाल समेत, श्रीनिकेत सवहिन सुख देत ।
- २० कहुँ अवधि बदि मेलत डेलन, कहुँ परस्पर खेलत बेलन ।
 कहुँ अँग छुवनि, कहुँ दृग बधनि, कहुँ चढि जात द्रुमन के कधनि ।
 कहुँ रचत भूषन बनमाल, लै लै फल-दल-फूल, प्रवाल ।
 कबहुँ निरत मोहनलाल, ताल बजावत, गावत ग्वाल ।
 कबहुँ बर हिडोल बनावत, भूलत मिलि, गावत छवि पावत ।
- २५ कबहुँ राज सिंघासन ठानत, छत्र, चँवर फूलन के बानन ।
 राजा ह्वै रजई दिखरावत, ग्वाल-वाल दुदुभी बजावत ।
 लौकिक लरिकन की सी नाँई, खेलत खेल जगत के साँई ।
 असुर प्रलब गोप के बानक, आनि मिल्यौ तिन माँझ अचानक ।
 नंद-सुवन तब ही पहिचान्यौ, दुष्ट न दुरै दई कौ हान्यौ ।
- ३० ताकौ हतन हिये मै आन्यौ, तब हरि और खेल इक ठान्यौ ।
 कहत कि मुनहु भिया ही हीरी, अवर खेल खेलहु बटि बीरी ।
 द्वै द्वै ह्वै ह्वै आवहु ऐसै, बल अरु अबल जानि कै जैसैं ।
 जो हारै सो लेइ चढाइ, बट भडीर तीर लै जाइ ।
 भले भले कहि किलके हँसे, ललित कटिन भट दै पट कसे ।
- ३५ नाइक भये स्याम बलराम, आवन लागे धरि धरि नाम ।
 कोउ लेउ चद, कोउ लेउ सूर, कोउ खजूर, कोउ लेहु बबूर ।
 परलंबादि ग्वालगन जिते, नंदकिसोर ओर गन तिते ।

श्रीदामा बृषभादिक ग्वाल, बल दिसि गये बजावत गाल ।
 जमुना पुलिन ललित चौगान, खेलन लगे जान-मनि जान ।
 लै गये मारि टोल बल प्यारे, कमल-नयन दिसि के सब हारे । ४०
 तिन पर चढ़ि चढ़ि बल ओर के, चले चपल अपनी जोर के ।
 श्रीदामा हरि पर चढ़ि चले, को ठाकुर जो खेल मै रले ।
 बल प्रलव पर सोहत ऐसै, सो उपमा अब कहियत कैसै ।
 बट भडीर तीर लागि चढ़े, लै गये बालकैलि रस बढे ।
 कान्ह कुँवर की दृष्टि बचाइ, असुर अवधि तै आगे जाइ । ४५
 अपने रूपहि आश्रित भयो, तब ही अवर लो चढ़ि गयो ।
 ता छिन भयो भयानक भारो, पहिरे कचन-भूपन कारौ ।
 ता पर सकर्पन अति सोहे, ब्रजबालक बिलोकि सब मोहे ।
 जो होइ कारी भारी घटा, बिच बिच चमकै-दमकै छटा ।
 ऊपर सरद चद होइ जैसै, सोहै रोहिनि-नदन तैसै । ५०
 विकट बदन अरु बड़े दत, बिकट भृकुटि दृग अग्नि वमत ।
 तपत ताम्र से सिररुह लसे, तब दिखि हलधर रचक त्रसे ।
 पुनि सुधि आइ तनक मुसकाइ, दियौ जु मुठिका मूँड बनाइ ।
 किरच किरच ह्वै गयो लिलार, मुख तै चली रुधिर की धार ।
 धरचौ प्रलव न कछु सभारचौ, गिरिजस गिरत वज्र कौ मारचौ । ५५
 पाँउ पसारि असुर जब परचौ, निरखि रूप तब सब ब्रज डरचौ ।
 घुरि घुरि मिले ग्वालगन ऐसै, मरि गयो कोउ फिरि आवत जैसै ।
 अमर निकर बर अतिसय हरषे, बल पर सुमन सु सुदर बरषे ।
 फूलन पर ह्वै ब्रज कौ आवत, बालक-बृंद सु कीरति गावत ।

- ६० ब्रज में दिन दूल्हा नंद-नंद, छिन छिन दुतिया कौ सौ चंद ।
 अष्टादस अध्याइ इह, सुनै तनक मन लाइ ।
 ताके पाप प्रलंब जिमि, सब मरि, गरि, सरि जाइ ॥
 अष्टादस अध्याइ कौ, फल न कछू कहि 'नंद' ।
 अपने ही हिय रहन दै, चरित सहित ब्रजचंद ॥

एकोनविंश अध्याय

- अब उनइसवौ सुनि अध्याइ, स्याम-राम मुजा बन जाइ ।
 गोप-गाइ-गन गहबर डर तै, लैहै राखि दवानल भर तै ।
 बृंदावन सब छवि कौ धाम, सखन समेत स्याम बलराम ।
 बिहरत अति आसक्त जु भये, गोधन निकसि बनातर गये ।
- ५ मुजारन्य नाम हे जहाँ, अति गहबर सुधि परत न तहाँ ।
 पसु-सुभाउ तै लुवधे लोभा, चलि गये चरत चरत बन गोभा ।
 आगे कुज पुज अति भीर, नहि न नीर परसै न समीर ।
 मारग नहि जु उलटि इत परै, गोधन-बृंद सु क्रदन करै ।
 खेल छाँडि जौ इत उत चहै, गोधन कहूँ निकट नहि लहै ।
- १० बालक बिकल भये सब ऐसै, धन गये होत कृपन जन जैसै ।
 उच्च द्रुमन पर चढि चढि हेरत, धौरी, धूमरि, पीयरि टेरेत ।
 टेरे सुनहि जब हौहि सु नियरी, दूरि गई वे काजरि पियरी ।
 तब जुरि खोज खोजि ही चले, जहँ जहँ तून खुर-दंतन दले ।
 आगे अति गहबर दिखि चके, धसि न सके तित ही सब थके ।

तब हरि इक कदंब पर चढ़े, छाजत तिहि छिन अति छवि बढे । १५

जनु सब कृत कौ फल रस-पग्यौ, हि कदंब एकै यह लग्यौ ।
चचल दृगन की इत उत हेरनि, मधुर मधुर टेरनि, पट फेरनि ।
मुकट की भलकनि, कुडल भलकनि, कछु कछु राजति गोरज अलकनि ।
लै लै नामन गाइन टेरे, यह छवि सदा बसहु मन मेरे ।
बगदी उत तै चाइन चाइन, हरि-मुख तै सुनि अपने नाइन । २०

प्रेम सहित आवनि, हुंकारनि, सींचत धरनि दूध की धारनि ।
आनि जु भई धेनु इकठौरी, धौरी धौरी, अति छवि बौरी ।
सब के कठनि कचन-माला, सोहत सुदर नयन बिसाला ।
घनन घनन घटागन गजै, अमरराज-गज की छवि लजै ।

हरि सनमुख आवति उमहि, उज्जल गोधन-नार । २५

समुदहि मनहुँ मिलन चली, गग भई सतधार ॥

ऐसैहि माहि दवानल लग्यौ, वृष-रबि-रस्मि परसि जगमग्यौ ।
प्रबल पवन लागि अति भर भपटै, लतन सौ लपटि द्रुमन सौ लपटै ।
जरि जरि ताल तमाल जु लटके, पटके बाँस, काँस-तृन चटके ।
डरे गोप-गोधनगन सबै, आये नद-सुवन ढिँंग तबै । ३०
ज्यौ कोउ काल ब्याल तै डरै, भजि हरि-चरन-सरन अनुसरै ।
कहन लगे कि अहो बलराम, हो श्रीकृष्ण कृष्ण घनस्याम ।
राखि लेहु हम बधु तुम्हारे, जरत है सबै दवानल जारे ।
तब हँसि बोले मोहनलाल, मूँदहु नैन धेनु, बछ, बाल ।
जब सब के दृग मुद्रित भये, तब हरि अग्नि पान करि गये । ३५
दृग उधारि जो चहहि अभीर, ठाढे बट भाडीर के तीर ।

- कहन लगे अति विस्मय पाये, कित हम हुते, कितै अब आये ।
 यह जु नद कौ नदन आहि, भिया मनुज जिनि जानहु याहि ।
 देवन मै जु देव बड कोई, हम जानहि कि आहि यह सोई ।
 ४० आगे धरि लै गोधनवृद, चले सदन ब्रज कदन-निकंद ।
 मधुर मधुर धुनि बेनु बजावत, बालकवृद सु कीरति गावत ।
 शोपीजन कौ परमानद, भयौ निरखि बृजपति कौ चंद ।
 जिन कहूँ जा बिन इक छिन ऐसै, बीतत कोटि कोटि जुग जैसै ।
 श्रीदामादि सखा जिते, जीतत खेलहि लागि ।
 ४५ ऐसी ठौर न सुधि परै, पियौ जात क्यौ आगि ॥
 सुनै जु कोऊ हरि-चरित, उनबिसत अध्याइ ।
 पाप न परसै नद तिहि, पदमिनि-दल-जल न्याइ ॥

विंश अध्याय

- अब सुनि लै बीसौ अध्याइ, बर्नित जहँ द्वै रितु के भाइ ।
 इक बरषा अरु सरद सुठार, बिहरत जहँ ब्रजराज-कुमार ।
 प्रथमहि प्रावृट प्रगटित तहाँ, सब जतुन कौ उद्भव जहाँ ।
 छुभित जु गगन पवन संचरै, रवि अरु ससि कहूँ मंडल परै ।
 ५ नील बरन नीरद उनये, गरजि गरजि नभ छादित भये ।
 जैसे सगुन ब्रह्म यह जीय, सत, रज, तम करि आवृत कीय ।
 अष्ट मास धर कौ जल जितौ, रस्मिन करि रवि पीयत तितौ ।
 चारि मास पुनि निर्भर भरै, सब दुख हरै, सुखन बिस्तरै ।

जैसे नृप अपनी कर लैइ, समय पाइ पुनि परजहि दैइ ।
 तड़ित-दृगन करि मेघ महत, देखे ताप तपे सब जंत । १०
 प्रेरे पवन सु जीवन बरषै, सबन के दुख करषै, मन हरषै ।
 जैसे करुन पुरुष पर हेत, अपने प्यारे प्रानन देत ।
 ग्रीष्म-ताप करि कृश हुती धरनी, सरस भई, सोहति बर बरनी ।
 ज्यौ सकाम कोउ फल कौ पाइ, भोगन भुगति पुष्टि ह्वै जाइ ।
 साँझ समै पटविजना चमकै, धन करि छपे नखतगन दमकै । १५
 ज्यौ कलि बिषै पाप पाखंड, नहिंन निगम के धरम प्रचंड ।
 धन-गरजनि सुनि मुदित जु भेक, बोले धरनि अनेक अनेक ।
 ज्यौ गुरु आग्या सुनि चटसार, चटा पढि उठत एक हि बार ।
 पाछे सुकी हुती जे सरिता, उत्पथ चली बहुत जल भरिता ।
 अजितेद्रिय नर ज्यौ इतराइ, देह, गेह, धन, संपति पाइ । २०
 बुढी लुढी जु हरित भई धरनी, उछलीध्र छवि फबि हियहरनी ।
 जनु कोउ भूपति उतरचौ आइ, छत्र तनाइ, बिछौन बिछाइ ।
 निपजे छेत्र कागुनी धान, तिर्नाह निरखि हरखे जु किसान ।
 धनी लोग उपतापहि जाही, दैवाधीन सु जानत नाही ।
 जल के, थल के बासी जिते, जल-सोभा करि सोभित तिते । २५
 जैसे हरि-सेवा करि कोई, रुचिर रूप अति राजत सोई ।
 सरित-संग करि छुभित जु सिधु, उमगि ऊरमी, ह्वै गयौ अंधु ।
 ज्यौ अपक्व जोगी चित धाइ, बिषयन पाइ अष्ट ह्वै जाइ ।
 गिरिगन पर जलधर बर बरसै, ऐ परि गिरि कछु बिथान परसै ।
 परसे पै निरसै नहिं ऐसै, कष्टन पाइ कृष्णजन जैसे । ३०

- मारग ठौर ठौर तून छये, पंथ चलत पथिकन भ्रम भये ।
 ज्यौ अभ्यास बिन बिप्र सु बेद, समझि न परै अरथ-पद-भेद ।
 मेघन बिषै अलप जल परै, तडि भई अलप नेह परिहरै ।
 ज्यौ लंपट जुवती जग माही, निधन भये पुरुषहि तजि जाही ।
- ३५ घन घुमडनि मधि चाप सुरेस, बिन गुन सोभित भयौ सुदेस ।
 प्रगट प्रपच जगत मै जैसै, निर्गुन पुरुष बिराजत तैसै ।
 गगन मै सघन घनन करि छयौ, तहँ उडराज बिराजत भयौ ।
 लपटि, अहता ममता जैसै, जग मै जीव न सोहत तैसै ।
 सुनि कै सुदर घन हर घोर, भरि आनंद बन कुहकै मोर ।
- ४० जैसै ग्रहन बिषै दुख पाइ, रहत है ग्रही बैरागहि आइ ।
 तिन के जाहि संत जन जैसै, दुख हरने, सुख करने तैसै ।
 सरन के तट, तहँ कंटक कीच, चक्रवाक बसे तिन ही बीच ।
 ज्यौ कुचील घरनि मै गँवार, बसत है विवस उदर ब्यवहार ।
 इद्र के वरपत जल भरि भारी, टूटि फूटि गई सब मिँडवारी ।
- ४५ ज्यौ कलि बिषै दत रस स्वाद, लोपहि भई बेद मरजाद ।
 पके आँव, जामुन अरु दाख, मधुर खजूर सु लाखन लाख ।
 तहँ मनमोहन धेनु चरावत, बल बालक समेत छवि पावत ।
 सीसनि सुदर छतना दि, कचन लकुट करन मै लिये ।
 सोभित सिरनि कसूँभी खोरी, लाल निचोइ मनहुँ रँग बोरी ।
- ५० मुरली मधुर मलार सु गावत, उघरे अबुद फिरि घिरि आवत ।
 भीजि बसन सुदर तन लपटनि, दृगनवत कहँ अति सुख दपटनि ।
 जब हरि धेनु बुलावत बन मै, फूलि नही समात तन-मन मै ।

चलि न सकत ऐनन के भार, आवत श्रवत दूध की धार ।
 ठाँ ठाँ द्रुमन श्रये मधु नये, निरखि बनौकस प्रमुदित भये ।
 गिरि तै गिरत जु जल की धार, तिन तै उठत नाद भकार । २५
 बल समेत, ब्रजबाल समेत, निरखत डोलत रमानिकेत ।
 पवन सहित जब बरसत मेह, परसत सीत सु कोमल देह ।
 तब कदर कदव के मूलनि, दुरत है जाइ कलिदी कूलनि ।
 कबहूँ स्वच्छ सलिल तट जाइ, सिलन के थार, कचोर बनाइ ।
 दधि-ओदन, बिजन बिस्तरै, पैठि परस्पर भोजन करै । ६०
 अवर अनेक बिहार उदार, करत विपिन ब्रजराज-कुमार ।

शरद वर्णन

सरद समै मनभायौ कानन, स्वच्छ सलिल अरु अनिल सुहावन ।
 पानी पाहुने से चलि बसै, सरनि मै सरसिज छबि सौ लसै ।
 ज्यौ जोगीजन-मन वहि परै, बहुरि जोग बल निर्मल करै ।
 गगन के घन जलमल भुव पक, जतन की सकीरन संक । ६५
 सरद हरित भयौ सहजहि ऐसै, कृष्ण-भक्ति-आश्रय दुख जैसै ।
 अपनौ सरवस दै करि मेह, राजत भये सु उज्जल देह ।
 सुत-वित-इच्छा परिहरि जैसै, सोहत मुनि गतकल्मष तैसै ।
 गिरिबर निर्मल जल की धार, कहूँ श्रवत, कहूँ नहि निज डार ।
 जैसै ग्यान-अमृत कहूँ ग्यानी, देहि न देहि, दया रस बानी । ७०
 अलप जलन मै जलचर रहे, छीन होत जल नाहिन लहे ।
 ज्यौ नर मूढ छिनहि छिन माही, छीजत आयु सु जानत नाही ।

- तुच्छ सलिल के पुनि ये मीन, सरद ताप तपि भये जु दीन ।
 कृपन, दरिद्र कुटुबी जैसे, अजितेन्द्रिय दुख भरत है तैसे ।
- ७५ सनै सनै थल-पंक मिटाई, बीरुध-तृनन की गई कचाई ।
 ज्यौ मुनि धीर सरीरन बिषै, तजत अहंता ममता इषै ।
 सुदर सरदागम जब भयौ, निश्चल जल समुद्र ह्वै गयौ ।
 आतम बिषै एक चित जैसे, त्यक्त-क्रिया-मुनि राजत तैसे ।
 क्यारिन बिषै किसानन वारि, ठाँ ठाँ रोके सुदिढ़ सुधारि ।
- ८० ज्यौ इंद्रिन करि श्रवत है ग्यान, रोकि लेत जोगीजन जान ।
 सरद अर्क दिन तपति जु दई, उड़प उदित ह्वै सब हरि लई ।
 ज्यौ देहाभिमान कौ ग्यान, ब्रज-जुवती-दुख कौ भगवान ।
 बिन घन गगन सु सोभित तहाँ, उदित अमल नाराइन जहाँ ।
 जैसे सुद्ध चित्त अति सरसै, सब्द ब्रह्म के अरथहि दरसै ।
- ८५ ससि अखड मडल जु गगन मै, राजत भयौ नछत्र-गनन मै ।
 ज्यौ जदुकुल करि अवनौ ऐन, राजत कृष्ण कमल-दल-नैन ।
 गो, मृग, खग, जुवती रसमई, सरद समै गुहुपवती भई ।
 तिन के संग फिरत पति ऐसे, कृष्ण क्रियन-पाछे फल जैसे ।
 रबि के उगत कमल-कुल लसै, कुमुदन हसै, सकुचि मन त्रसै ।
- ९० नृप-प्रताप ज्यौ निर्भय साधु, दुरत भोर भये चोर असाधु ।
 सुनै जु उपमा सरद बर, यह बीसौ अध्याइ ।
 सरद समै के नीर जिमि, मन निर्मल ह्वै जाइ ॥
 'नंद' देहरी दीप जिमि, करि बीसौ अध्याइ ।
 नेह-तेल भरि कंठ धरि, दुहुँ दिसि कौ तम जाइ ॥

एकविंश अध्याय

अब सुनि इकईसौ अध्याइ, सरद समै वृंदावन जाइ ।
 वेनु बजैहै मोहनलाल, तिहि सुनि सुदर ब्रज की बाल ।
 वरनन करिहै परम पुनीत, अहो मीत । सुनि गोपी-गीत ।
 सरद स्वच्छ जल-कमल जितेक, प्रफुलित भये अनेक अनेक ।
 तिन की वास वायु लै गयौ, ता करि सब वन बासित भयौ । ५
 तिहि वन अच्युत मोहनलाल, गवने बल-बालक-गोपाल ।
 औरौ सुसम कुसमगन फूले, मधुकर मत्त फिरत जहँ भूले ।
 तरवर, सरवर के खग जिते, मुद भरि करत कुलाहल तिते ।
 तहँ गिरि गोधन मुछ छवि छये, नित वरसत, सरसत सुख नये ।
 जहँ नंद-नदन चारत धेनु, मधुर मधुर मुर बजवत वेनु । १०
 सो वह वेनु-गीत सु रसाल, सुनत भई ब्रज मै ब्रजवाल ।
 बढ़चौ जु तन-मन प्रेम अनग, मनु उत ही है हरि के सग ।
 वरनत भई सखिन प्रति ऐसै, परतछ कान्ह कुंवर वर जैसै ।
 हे सखि ! दिखि नटवर बपु धरै, कर्ननि कँवल कर्निका करै ।
 धरै मुकट चटकीलौ माथ, फेरत कमल दाहिने हाथ । १५
 राजत उर बैजती माल, चलत जु मत्त द्विरद की चाल ।
 अधर-सुधा मुरली के रंघनि, निकसति मिलि मुरसप्त सुगधनि ।
 ता करि सब वन धूनित कियौ, काहू माँझ रह्यौ नहि हियौ ।
 निज पद अकित, नित कमनीय, बृंदारन्य परम रमनीय ।
 तहाँ प्रवेस करत छवि पावत, गोपबृंद कल कीरति गावत । २०

मोहन-मंत्र सु मुरली राग, सुनि कै ब्रजतिय भरि अनुराग ।
बरनन करत भई मिलि ऐसे, हरि परिरभन देत है जैसे ।

गोपी कहति है

हे सखि ! नैनन कौ फल यहै, सुदर प्रियतम-दरसन चाहै ।
तिन कहूँ फल पिय-दरसन परै, छिन छिन बदन बिलोकन करै ।
२५ यातै अवर नहिन कछु परै, निसि-बासर अवलोकन करै ।
सो फल सखिन सहित बन घन में, बल समेत डोलत गोगन में ।
मधुर मधुर धुनि बेनु बजावत, अनेक राग-रागिनि उपजावत ।
तानन के संग स्निग्ध कटाछे, चलत जु मंद हँसनि के पाछे ।
जिन करि वह सुदर मुख चह्यौ, नैनन कौ फल तिन ही लह्यौ ।

अन्याहु

३० हे सखि ! अवर एक छवि लहौ, प्रिय घनस्याम-राम तन चाहौ ।
नूत प्रवाल पुटुप वर गुच्छ, मत्त मयूर चद्रिका स्वच्छ ।
छवि-पुजा गुजा बलि पहिरै, तिन में उठति जु छवि की लहरै ।
कमल-दलन की काछनि काछे, धातु विचित्र चित्र तन आछे ।
चटकीलौ पट कटि-तट लसै, नील-पीत दामिनि कहूँ हँसै ।
३५ सखन मध्य दिखि राजत कैसे, रंगभूमि बिच नटवर जैसे ।

अन्याहु

हे सखि ! यह जु बेनु रँग भीनौ, इन धौ कवन पुन्य है कीनौ ।
अधर-सुधा सरबस जु हमारौ, ताकौ निधरक पीवनहारौ ।
अरु दिखि जिन के जल करि पुष्ट, ते सरिता लखियत अति तुष्ट ।

तिन मधि नहि विकसे जलजात, जनु अनग भरि पुलकित गात ।
 अरु दिखि या वन के द्रुम जिते, मधु-धारा धर वरसत तिते । ४०
 कहत कि धनि धनि हमरौ बंस, जामै उपज्यौ यह बर बस ।
 मधुन श्रवत अति हर्ष जु भरे, दृगन तै जनु आनँद-जल ढरे ।
 ज्यौ कुल बृद्ध अपने कुल महियाँ, निरखि निरखि हरि सेवक कहियाँ ।
 अति प्रमोद भरि, दृग भरि नीर, सीचत जैसे सकल सरीर ।

अन्याहु

हे सखि ! वृंदावन भुवि कीरति, स्वर्ग तै अधिक भई मुनि ईरति । ४५
 जसुमतिमुत-पदपकज करि कै, पाइहै छवि सपति हिय भरि कै ।
 अरु दिखि नँद-नदन पर काति, परसत नील मेघ की भाँति ।
 ता कहुँ आगम घन मानि कै, मुरली-धुनि गर्जनि जानि कै ।
 निरत मत्त मोर छवि छये, अवर बिहगम चित्र से भये ।
 अनत नहिन सुनियत यह बात, यातैं भुवि कीरति विख्यात । ५०

अन्याहु

हेसखि ! दिखि इहिवनकी हरिनी, जदपि मूढमति इन की बरनी ।
 बेनु-नाद सुनि अति सचु पावति, पतिन सहित चलि हरि पै आवति ।
 सुदर नंद-कुंवर बर बेष, निरखत लगत न नैन निमेष ।
 प्रेम सहित अवलोकनि दूजै, आदर सहित हरिहि जनु पूजै ।
 हमरे पति जु गोप अति मंद, जब इत ह्वै निकसत नँद-नद । ५५
 तब जौ हम अवलोकन करै, सहि नहि परै, अवर जिय धरै ।

अन्याहु

हे सखि ! अवर चित्र इक चहौ, गगन में सुर-बनिता किन लहौ ।
 बैठी जदपि बिमानन महियाँ, अपने पतिन सौ दै गरबहियाँ ।
 दृष्टि परे साँवरे अनूप, निपटहि बनिता उत्सव रूप ।
 ६० पुनि सुनि बेनु-गीत-गति नई, कल नहि परत बिकल ह्वै गई ।
 लगे जु सर सुमार मार के, खसत जु कुसम कवरि भार के ।
 धीरज धरे हियै पुनि हरै, नीबी-बधन खसि खसि परै ।

अन्याहु

हे सखि ! देव-बधुन की रहौ, तुम इन गाइन तन किन चहौ ।
 हरि मुख तै जु श्रवत है बाल, बेनु-गीत-पीयूष रसाल ।
 ६५ श्रवन उठाइ पिवत है ऐसै, नैक कहूँ छरि जाइ न जैसै ।
 अरु देखहु बछ-बछियन ओर, सुनि कै बेनु-गीत चितचोर ।
 पियत थनन मुख भरि रह्यौ छीर, चित्र सी रहि गई गैयन तीर ।
 गाइ-बृषभ बछ-वाछी जिती, हरि तन इकटक चितवत तिती ।
 दृगन के मग लै मोहन कहियाँ, धरि कै अप अपने हिय महियाँ ।
 ७० पुनि पुनि तहँ परिरंभन करै, अति सुख आनंद-अंमुवा ढरै ।

अन्याहु

हे सखि ! बन बिहग किन हेरौ, सुनत जु बेनु-गीत पिय करौ ।
 बैठे रुचिर द्रुमन की डारै, इकटक मोहन बदन निहारै ।
 छुवत न फल, न बदत कछु बात, अति सुख उमगत, घूमत जात ।
 निपट चटपटी सौ मुख चहै, फल प्रवाल अतर नहि सहै ।

मुनि पुनि कर्म फलन तजि जैसे, अप अपनी श्रुति-साषा बैसै । ७५
कमल-नयन अवलोकन करै, फलन के अंतर नाह सहि परै ।
तैसेई इह बन खगगन जिते, मुनि हौन के जोग है तिते ।

अन्याहु

हे सखि ! चेतन जन की रहौ, ये जु अचेतन ते किन चहौ ।
बेनु-गीत सुनि सरिता जिती, उमगि मनोभव बिथकित तिती ।
बीच जु भ्रमत भँवर अभिराम, मारत मनहि मसूसे काम । ८०
लै लै अमल कमल उपहार, लहरि भुजन करि ढारहि ढार ।
पकरे चहत स्याम के पाइ, जैसे काम-बिथा मिटि जाइ ।

अन्याहु

बन मै बल अरु सुंदर स्याम, पसु चारत, परसत दिखि घाम ।
निरखहु सजनि मेह कौ नेह, छत्र करि लियौ अपनौ देह ।
छोह किये डोलत दिन सग, फुही फूल बरपत बहु रंग । ८५
कनक-दड जिमि दामिनि बनी, छाजति छवि कछु परत न गनी ।
सखा भयौ घन घनस्याम कौ, नातौ मानि एक नाम कौ ।
जग-आरति हरने, रस-सने, दोऊ आनि एक से बने ।

अन्याहु

हे सखि ! मेह-नेह की रहौ, भील-भामिनी तन किन चहौ ।
प्रमुदित इत जु फिरति है सखी, मै इक इनके मन की लखी । ९०
प्रिया-उरज कुकुम-रस-पगे, ते कुकुम हरि पिय-पद लगे ।
पदन तै बन-तृन भूषित भये, ते तृन इन तीयन लखि पये ।

- तिहि कुकुम दिखि बढ़ि गयौ काम, बिकल भई भीलन की भाम ।
 सो कुंकुम मुख-कुचन लगावति, ता करि मनमथ-बिथा सिरावति ।
 ६५ यातै धनि भीलन की तिया, हसनि कछू तरफरत है हिया ।

अन्याहु

- देखौ सखी गोवर्धन कहियाँ, परम श्रेष्ठ हरि-दासन महियाँ ।
 राम-कृष्ण-पद परसन करि कै, रह्यौ जु अति आनंदहि भरि कै ।
 नव नव तून अंकुर छबि छये, रोम रोम जनु उत्थित भये ।
 गोप-बृंद गोविंद समेत, आदर सहित सबन सुख देत ।
 १०० सीतल जल सुदर, तून सुदर, सीतल अति पबित्र गिरि-कदर ।
 कंद-मूल-फल, धात बिचित्र, अवर अनेक अनेक पबित्र ।
 तिन करि सेवत सब सुखदाइक, धन्य धन्य गोधन गिरि नाइक ।

अन्याहु

- हे सखि गिरि गोधन की रहौ, सुदर नद-कुँवर तन चहौ ।
 अद्भुत गोपबेष बर करै, सेली कंध सु मुनिमन हरै ।
 १०५ ठाढ़े गाइ गहन के काज, किये फिरत ग्वालन कौ साज ।
 तैसिय रूप-माधुरी सरसै, रग-रली-मुरली मधु बरसै ।
 ता करि हरे सबन के हिये, चर कीने थिर, थिर चर किये ।
 अहो मित्र ! इहि विधि ब्रजगोपी, परम पबित्र कृष्ण-रस-ओपी ।
 बैठि परस्पर बरनत भई, प्रेम-विवस तनमय ह्वै गई ।
 ११० ता करि बढचौ जु प्रेम अनग, रम्यौ चहति हरि प्रीतम संग ।
 तब कात्यायनि अर्चन करचौ, पायौ परम उदय रस भरचौ ।

‘नंद’ इकीस अध्याइ यह, ऐसे सुनि चित चाहि ।

प्रिया-वचन जिमि पीय के, सुनिबौई फल आहि ॥

द्वाविंश अध्याय

विवि बिसत अध्याइ सुनि मित्र, वस्त्रहरन मनहरन पबित्र ।
 नंद गोप ब्रज की दारिका, अद्भुत अद्भुत सुकुमारिका ।
 जदपि समस्त बिबाहित आहि, नद-सुवन के रूपहि चाहि ।
 बिबस भई पति परिहरि परिहरि, करत भई ब्रत हिय हरि धरि धरि ।
 हिम रितु प्रथम मास अभिराम, देवी कात्यायनी जु नाम । ५
 तिहि पूजन जमुना-तट जाहि, तहाँ न्हाइ हविषा कछु खाहि ।

ब्रत कौ पूर्व भाग कहत हैं

उठै बडे खन चाइन चाइन, बोलत छवि सौ मधुरी भाइन ।

कछुक आगमोक्त भक्त तिन के नाम कहत हैं

प्रेमकला, विमला, रतिकला, कामकला, नवला चचला ।
 चद्रकला, चद्रावलि, चदनि, जग-बदनि वृषभान की नदनि ।
 कामलता, ललिता, रतिबेलि, रूपलता, चंपकलता एलि । १०
 अवर अनेक नहिन कहि परै, चचल नैन मैन-मन हरै ।
 सब दिसि तै आवति छबि पावति, नूतन मगल गीतन गावति ।
 अमुना बिधि जमुना-तट आवति, अतिसै करि मन मोद बढावति ।
 करि संकल्प सलिल मै जाइ, मौन धरे बिधि सहित अन्हाइ ।
 बहुरि कालिंदी कूलन सरै, बारू की बर प्रतिमा करै । १५

- दिव्य आभरन, दिव्य दुकूल, चदन, बंदन, तंदुल, फूल ।
 प्रीति सहित तिहि अर्चन करै, पुनि पुनि ताके पाइनि परै ।
 अये गवरि ! इस्वरि सब लाइक, महामाइ बरदाइ सुभाइक ।
 देवि दया करि ऐसे ढरौ, नद-सुवन हमरौ पति करौ ।
- २० बोली बचन देवि रस भारे, पूर्न मनोरथ हौहु तुम्हारे ।
 कात्यायनि तै यौ वर पाइ, बहुरि धसी जमुना-जल आइ ।
 बुड़किन बिहरति अतिछवि भेलति, जनु नव घन गन दामिनि खेलति ।
 तदनंतर सुदर नंद-नंदन, चित की पाइ, आइ जग-बंदन ।
 नीर तीर तै चीर चुराइ, चढे गोविंद कदबनि जाइ ।
- २५ लज्जित ह्वै धसि गई जल गहरै, उठत जु तामै दुति की लहरै ।
 बदन बदन छवि दिखि कै भूली, कनक-कमल कलिदि जनु फूली ।
 चपल दृगंचल पिय-मन-रजन, कमल कमल जनु जुग जुग खजन ।
 लटन तै चुवति जु जलकन जोती, जनु ससि छिदि छिदि डारत मोती ।
 तब बोले हरि तिन तन चिते, हे अबला अब आवहु इतै ।
- ३० आनि कै अपने अवर गहौ, कत कौ भीत, सीत तन सहौ ।
 सत्य कहत कछु करत न खेला, आवहु चलि न बिलव की बेला ।
 पाछे हू मै अनृत न कबै, बोल्यौ है ये जानत सबै ।
 चितै परस्पर तब सब हँसी, वड्डी अँखियन अति छवि लसी ।
 रूप-उदधि भरि भरि रस आछे, मीन चलत जिमि मीन के पाछे ।
- ३५ सीतल सलिल कठ परजत, तहँ ठाढ़ी थर थर बेपत ।
 तिन मधि मुग्ध बैस की बाला, ऐड़ सौ कहति भई तिहि काला ।
 अहो अहो कान्ह, अनीति न करौ, बलि बलि कछु दई तै डरौ ।

नंद-महरि के पूत रावरे, जानि बूझि जिनि हौहु बावरे ।
 देहु बसन, बरि गई अस हँसी, मरति है सीत सलिल मै धसी ।
 पुनि तिन मै जे प्रौढा आहि, ते बोली हँसि हरि तन चाहि । ४०
 हे सुदर बर ! करहु न हाँसी, हम तौ सबै तुम्हारी दासी ।
 जो तुम कहहु, सोइ हम करिहै, देहु बसन, बिन काजहि मरिहै ।
 जौ न देखौ रस भाइ सौ, कहिहं जाइ नंदराइ सौ ।
 तब बोले ब्रजराज दुलारे, मै समझे सकल्प तिहारे ।
 इत आवहु, रंचक न लजाहु, व्रत कौ फल लै लै घर जाहु । ४५
 नद-सुवन कौ मन हो जैसै, निकसी सब रस-बिकसी तैसै ।
 परम प्रेम के फदन परी, नद के नदन खेल की करी ।
 पुनि बोले ब्रजराज दुलारे, पूर्न मनोरथ हौहु तुम्हारे ।
 पै आत्यंतिक नाहिन ह्वैहै, मन-अभिलाष पाइ पुनि जैहै ।
 मेरे बिषय जु मति अनुसरै, सु मति न बहुरि बिषय सचरै । ५०
 भुजित धान जगत मै जैसै, बीज के काम न आवहि तैसै ।
 ऐ परि जौ मो इच्छा होई, भूज्यौ बीज निपजि परै सोई ।
 आगामिनी जामिनी ऐहै, तिन मै तुमहि बहुत सुख दैहै ।
 इहि बिधि बरहि पाइ छवि छई, कैसै हूँ कैसै ब्रज गई ।
 बसन पये, पै मन नहि पये, मन मनमोहन गोहन गये । ५५

ब्रजतिय कौ दै अपनपौ, कृष्ण कमल-दल-नैन ।

जगपतिनी अपनी करन, चले अनुग्रह दैन ॥

तिन के पति जु भक्ति-रति-हीन, कर्मन बिषय निपट लवलीन ।

तिन तन दृष्टि दिये मुसकात, बन के द्रुमन सराहत जात ।

- ६० सखन सौ कहत कुँवर नंदलाल, अहो भोज, अहो ओज रसाल ।
 अहो सुवल, अर्जुन, अहो अस, अहो श्रीदामा, बंस अवतंस ।
 देखहु ये कैसें द्रुम बने, छत्र से तने, सबै गुन सने ।
 जिन के तरहर सियरे सियरे, फल पियरे पियरे अरु नियरे ।
 दल करि फल करि, फूलन करि कै, बलकल करि, अरु मूलन करिकै ।
- ६५ पर काज ही सबै कछु जिन कौ, धनि है जग मै जीवन तिन कौ ।
 बात-बरष अपने-तन सहै, काहू सौ कछु दुख नहि कहै ।
 बैठत आनि छाँह हम सरसे, घाम मै सुदर सीतल घर से ।
 ऐसै कहत कहत छवि छये, बल समेत जमुना-तट गये ।
 पहिले जल गाइन कौ दियौ, ता पाछे आपुन पय पियौ ।
- ७० विवि बिसत अध्याइ यह, सुनै जु हित चित लाइ ।
 धनु देखे खग-अवलि जिमि, पापावलि उडि जाइ ॥

त्रयोविंश अध्याय

- अब सुनि त्रयविसत अध्याइ, द्विज अरु द्विजपतिनिन के भाइ ।
 ठाढे हुते जमुन के तीर, बल अरु सुदर बर बलबीर ।
 श्रीदामादि ग्वालगन जिते, आरत भये छुधा करि तिते ।
 बस्त्रहरन हित हरि के सग, देखन गोपवधुन के रग ।
- ५ भोर भये खन उठि उठि धाये, भोजन कछू लेत नहि आये ।
 यातै भूखे है ब्रजबाल, आये तहँ जहँ मोहनलाल ।
 अहो बलराम अतुल बलधाम, हो घनस्याम, परम अभिराम ।

भूख लगी भिया उद्यम करौ, प्राण प्रहारनि पापिनि हरौ ।
 जगपतिनीन अनुग्रह दैन, बोले तब हरि करुना-ऐन ।
 इत ये जाग्यक जग्यहि करै, स्वर्ग-काम-हित पचि पचि मरै । १०
 तिन पै जाहु, न तनक डराहु, अरु जाचंग्या तै न लजाहु ।
 लीजहु जाइ हमारौ नाम, बल अरु, बल भैया घनस्याम ।
 ये ठाढ़े दोऊ तरु तरै, तुम सौ कछु प्रार्थना करै ।
 जो न देहि, वे रिस भरि जाहि, लाज तौ हमहि, तुमहि तौ नाहि ।
 गये जग्य जहँ थर थर डरतै, बहुत भौति दडौतन करतै । १५
 अजुलि जोरि डरात डरात, कहन लगे विप्रन सौ बात ।
 हो भूदेव । सुनहु इत हम पै, राम-कृष्ण करि पठये तुम पै ।
 भोर के आये गोधन सग, खेलत खेलत अपने रग ।
 घर तै कछु भोजन नहि लाये, भूखे है, अब तुम पै आये ।
 श्रद्धा होइ तौ ओदन दीजै, धर्मविरुद्ध करम कत कीजै । २०
 कहँ यह हरि ईश्वर कौ जचिबौ, कहँ वह द्विजन कौ मद करि मचिबौ ।
 सुनत न सुनै, भरे अभिमान, जनु इन द्विजन के नैन न कान ।
 पुनि जब भौह अमेठन लागे, तब ये ग्वाल-बाल डरि भागे ।
 जिन कर्मन करि अधिक कलेस, फल अति तुच्छ मिटै न अँदेस ।
 तिन मधि मूढ धरि रहे आस, छुयो न अमृत पाइ अनयास । २५
 ह्वै निरास बालक उठि आये, समाचार हरि प्रभुहि सुनाये ।
 नद-कुँवर तब हर हर हँसे, हँसत जु रदन बदन मै लसे ।
 अस कछु जगमग जगमग होइ, मानिक ओपि धरे जनु पोइ ।
 सखन सौ बहुरि कहत रस-सने, रे भैया न होहु अनमने ।

- ३० अरथी त्वैं बैरागहि आवैं, सो अरथी अरथी न कहावैं ।
जाचक त्वैं जग मैं अस कौन, जचत अनादर भयी न जौन ।
ऐसैं लोक-रीति दिखराइ, पुनि बोले प्रभु मृदु मुसकाइ ।
अहो मित्र इन की तिय जिती, हम कौ नीके जानत तिती ।
देहमात्र वे बसत गेह मैं, सदा मगन अद्भुत सनेह मैं ।
- ३५ तिन पै जाहु, लजाहु न भिया, समझोगे तब तिन के हिया ।
गुभग-सुगंध, स्वच्छ वर-व्यजन, दधि-ओदन मोहन मन-रजन ।
हैं जात, बिलंब न लैहैं, अपने करन लिये ही ऐहैं ।
गपतिनीन के गृह है जहाँ, सकुचत सकुचत गवने तहाँ ।
राजति कंचन पीढनि बैठी, सोहति सुदर भौह अमेठी ।
- ४० हिरे अद्भुत मनिमय भूषन, अद्भुत बसन नहिन कछु दूषन ।
इहडहे वदन निरखि सिसु भूले, कंचन-जलज अंगन जनु फूले ।
द्विजपतिनिन के पाइन परे, बातैं कहत महा मुद भरे ।
हे द्विजपतिनि ! कान्ह मनमोहन, आये इतहि गाइ-गन-गोहन ।
छुधित आहि कछु भोजन दीजै, सखन सहित अघाइ सो कीजै ।
- ४५ जिन के दरसन हित अरबरती, पतिन सौ बिनती करती अरती ।
जुग जुग भरि निसि-बासर भरती, नैनन नीद नैक नहि परती ।
ते अच्युत ब्रजराज दुलारे, निकटहि पाये प्रानपियारे ।
चारि प्रकार बिचित्र सुव्यंजन, भक्ष्य, भोज्य, चुस, लिह, मनरंजन ।
लै चली कचन भाजन भरि भरि, सुत-पति तिन सौ अरिअरि लरिलरि ।
- ५० रोकि रहे सुत-पति अपनौ सौ, मानत भई ताहि सपनौ सौ ।
जैसैं उमगत सावन-सरिता, कौन पै रुकहि प्रेम-रस-भरिता ।

जमुना निकट सुभग इक बाग, सब असोक तरु अति बड़भाग ।
 इक तरु तरे कुँवर घनस्याम, ठाढ़े कोटि काम अभिराम ।
 पीतबसन वनमाल रसाल, मोरचंद छबि छाजत भाल ।
 सखा अंस बाई भुज दिये, केलि-कमल दच्छिन कर किये । ५५
 अद्भुतगुनगन मुनि हिय धरि धरि, रही हुती उत्कंठा भरि भरि ।
 सो साच्छात प्रगट रस भरे, अति रोचन लोचन-पथ परे ।
 दृग-रंध्रन करि अतर लये, तहँ प्रभु कौ परिरभन दये ।
 सुखित भई तिहि छिन सब ऐसे, तुरिय अवस्था पाइ मुनि जैसे ।
 तब बोले हरि हे बडभागि ! नीके आई भरि अनुराग । ६०
 प्रतिबंधक जे हुते तिहारे, ते तुम तिन से लघु करि डारे ।
 मो दरसन हित इत अनुसरी, उचित करी, अनुचित नहि करी ।
 जे जन निपुन जथारथ बेदी, स्वारथ अरु परमारथ भेदी ।
 ते मो बिपै भक्ति-रति करै, फल न कछु रचक चित धरै ।
 हम सब ही के आत्मा आहि, तत्वबेत्ता लेत है चाहि । ६५
 प्रान, बुद्धि, मन, इंद्रि, देह, पुत्र, कलित्र, मित्र, धन, गेह ।
 जाके अध्यास तैं अचेत, प्रिय लागत अपनपै समेत ।
 सो तुम करि हम पाये सबै, धनि धनि धन्य भई तुम अबै ।
 अब तुम देवि जजन प्रति जाहु, द्विज-जग्यन कौ करहु निबाहु ।
 तुम करि सन्न समापति करिहै, अवर न कछु तनक मन धरिहै । ७०
 कहन लगी तब सब द्विज तिया, मुनि यह बात बहकि गयौ हिया ।
 हे सुदर बर सरसिज-नैन, जिनि बोलहु अस करकस बैन ।
 अपनी प्रतिग्या तन किन चहौ, बेद-पुरानन में ज्यौ कहौ ।

- मन-क्रम-बचन जु चेरौ मेरौ, सो भव-भवन न करिहै फेरौ ।
 ७५ हम पद-पंकज प्रापति भई, सहजहि सब उपाधि मिटि गई ।
 पद अवसिष्ट जु परम रसाल, डारहुगे तुम तुलसी-माल ।
 सो नित अलक रलक मै धरिहै, सरन परी पद-अर्चन करिहै ।
 अहो अरिदम, नद के दारक ! काम, लोभ, मद, मोह बिदारक ।
 अब तौ पति, सुत, बाधव जिते, हमहि तौ तनक छुवाहि नहि तिते ।
 ८० तातैं अवर गति न हरि हमरी, दास्य देहु, दासी भई तुम्हरी ।
 तब बोले ब्रजराज के नदन, जग-बंदन, जग-फद-निकदन ।
 पति, सुत, मित्र, सुहृदजन जिते, नहिन असूया करिहै तिते ।
 लोक तौ सबै हमारे किये, रोकि रहे हम सब के हिये ।
 अरु देखहु ये देव जितेक, हमरी आग्या मध्य तितेक ।
 ८५ बुरौ जु मानैं सो वह कौन, सर्वबियापी हम जिमि पौन ।
 प्रेम बृद्धि जौ कीनौ चहौ, तौ तुम मो तैं न्यारी रहौ ।
 बिरह मै चित्त समाधि लाइहौ, तुरतहि तव मो कहूँ पाइहौ ।
 ऐसे जब हित सौ हरि बरनी, घर आई तब सब द्विज घरनी ।
 किनहूँ नहिन असूया कीनी, सुत-पति सबन भुजन भरि लीनी ।
 ९० तिन मै इक जु हुती पति गही, जान न पाई, बहुत पचि रही ।
 तब नैद-सुवन सुने हे जैसै, अपने हिय मै धरि कै तैसै ।
 तजत भई तिहि तन कहूँ ऐसै, जीरन पट कोउ डारत जैसै ।
 रे पिय जहाँ ममत है तेरौ, यह लै अब का करिहै मेरौ ।
 दिव्य देह धरि कै उहि घरी, सबन तै आगे सो अनुसरी ।
 ९५ तिन सायुज्य परम गति पाई, उन के संग फिरि न घर आई ।

जगपतिनिन जे व्यंजन आने, जाहि कै गोप-गोविंद अघाने ।

द्विज जु कहावत जे अति बडे, तियन की गतिहि देखि सब गड़े ।

‘नद’ जु गोविंद भक्ति बिन, बडौ कहावत कोइ ।

बुझै जु दीपक ज्यौ बडौ, कहियत वह गति सोइ ॥

तियन की गतिहि निरखि द्विज जिते, पश्चाताप करत भये तिते । १००

जो प्रभु निगम अगम करि गाये, जैवन मिस ते हम पै आये ।

धिग धिग हम, धिग धिग ये क्रिया, धिग धिग बिप्र जन्म धिग जिया ।

धिग बहुग्यता, धिग सब इषै, बिमुख जु कृष्ण अधोक्षज बिषै ।

यह प्रभु की माया मोहनी, जोगीजन-मन की खोहनी ।

जा करि हम द्विज ह्वै भद भरे, गुरु कहाइ सठ भठ मै परे । १०५

जिन के न कछु सोच आचार, गुरुकुल सेव न तत्त्व विचार ।

नहि जप, नहि तप, नहि सुभक्रिया, कर्कस, कुटिल, जटिल नित हिया ।

तिन के भई भक्ति-रति जैसी, देखी-सुनी न कित हूँ ऐसी ।

सम्यक द्विज कर्मन करि भरे, ते हम हैं भूख मारत परे ।

हम करि जदपि सुन्यौ अयतार, जदुकुल बिषै हरन भू-भार । ११०

पुनि आये इत करना-कंद, जाचन पूरन परमानंद ।

ओदन कहा चाहियै तिन के, कमला पाइ पलोत्त जिन के ।

सुभिरि सुभिरि ग्वालन की बात, करन मीजि सब द्विज पछितात ।

पुनि कहै हम हूँ उत्तम भये, मन के सब ससय मिटि गये ।

जिन की ऐसी तिय बड़भागि, तन-मन-भरी कृष्ण-अनुराग । ११५

जिहि अनुराग हमारे हिये, चपरि कै कमल-नैन मै किये ।

त्रयविंशत अध्याइ यह, सुनि नीके सुख-कंद ।
जप, तप, व्रत, संयम न कछु, कृष्ण-भक्ति बिन 'नंद' ॥

चतुर्विंश अध्याय

- चतुर्विंश अध्याइ अनूप, सुनि हो मित्र ! परम सुख रूप ।
जामै गिरि गोवर्धन पूजा, अति पुनीत अस गीत न दूजा ।
द्विजन कौ क्रिया गर्ब सब हरचौ, चाहत इद्रहि निर्मद करचौ ।
इंद्र कौ जग्य करन जब लगे, गोपी-गोप महा मुद पगे ।
- ५ पूछत हरि अजान से भये, मंद मुसकि सु नंद ढिँग गये ।
कहहु तात यह बात है कहा, भवन भवन आनंद है महा ।
कवन सु फल, काके उपदेस, कवन देवता सेस-सुरेस ।
मो मन अति अभिलाष है कहौ, लरिका जानि चाइ जिनि रहौ ।
यह करनी तुम सास्त्र तै पाई, ऐ किधौ परंपरा चलि आई ।
- १० कैधौ लोकरूढ़ है तात, मो सौ कहौ कहा यह बात ।
नंद जु कहत मेघगन जिते, मघवा के बसवर्त्ती तिते ।
अपनौ जीवन जग मै बरषै, दुख करषै, सब जंतुन हरषै ।
यातै यह जु पुरदर आहि, जजत है जग्यन करि नर ताहि ।
हम हूँ सब यह तिहि उद्देस, करत है ज्यौ रस देइ सुरेस ।
- १५ ता करि अर्थ, धर्म अरु काम, पावहि सबै पुरुष विश्राम ।
परंपरा चलि आयौ धर्म, अहो तात नहि अब कौ कर्म ।
जो नर याकौ नाहिन करें, लोभ-द्वेष-भय तै परिहरैं ।

सो नर नहि पावै कल्याण, कहत है बेद पुरान सुजान ।
 महानद, उपनद, सुनद, निजानंद अरु बाबा नंद ।
 ऐसे करि जब सबहिन कह्यौ, सब के ईस्वर नाहिन गह्यौ । २०
 सुरपति अति श्रीमद करि छयौ, महा गर्ब पर्वत चढ़ि गयौ ।
 तहँ तै ता कहँ डारचौ चहै, करम की गति लिये बातै कहै ।
 ऐ परि नहि प्रमान ये नित ही, सुरपति मान-भंग के हित ही ।
 इद्रहि रिस दिवाइ दंद सौ, बोले मंद मुसकि नंद सौ ।
 अहो तात यह देव न कोई, करम की गति जु होइ सो होई । २५
 कर्महि करि उपजत ये जत, कर्महि करि पुनि सब कौ अंत ।
 कुसल-छेम, सुख-दुख, भै-अभै, होत है ये कर्मन करि सबै ।
 रज गुन करि उपजत है मेह, बरपत सब ठाँ नहि सदेह ।
 ऊसर पर, पर्वत पर परै, ते सबै कहाँ जग्य है करै ।
 हमरे नहि पुर-पट्टन ग्राम, वन, गिरि, नदी, निकट विश्राम । ३०
 जहँ सुख तहँ हम बसहि निसंक, करिहै कहा पुरदर रक ।
 एक करहु जग्यन कौ जिती, करि ते सुभ सामग्री तिती ।
 और कछू जिय मै जिनि आनौ, मेरौ कह्यौ सत्य करि मानौ ।
 सुनतहि मोहन मुख की बानी, भले भले कहि सबहिन मानी ।
 कुल-मडन सपूत सुख-दैना, सब के जीवन, सब के नैना । ३५
 रचहु विविधि परकार सु व्यजन, सुभग, सुगंध, स्वच्छ, मनरंजन ।
 पुवा, सुहारी, मोदक भारी, गूभा, रस-मूभा, दधि न्यारी ।
 मिश्री मिश्रित पायस करौ, बर संजाव भाव बिस्तरौ ।
 मुद्गा दाली, घृत की ब्याली, रस के कंदर सुदर साली ।

- ४० जैसें नंद-सुवन उच्चरचौ, प्रीति सहित तैसें ही करचौ ।
 पूजन चले गोप गिरि गोधन, आगे करि लिये अपने गोधन ।
 कंचन-सकटनि चढि चढि गोपी, चली जु तिनहुँ सबै बिधि लोपी ।
 सुदर नंद-कुँवर गुन गावति, भाग भरी सब राग रिभावति ।
 हरि धरि गिरि कौ सुदर रूप, बैठे बिकसि सु निकसि अनूप ।
- ४५ गिरि के द्वै द्वै रूप बताये, इक जड़, इक चैतन्य सुहाये ।
 गोबरधन की मूरति दुसरी, श्री गोविंदचंद हित कुसरी ।
 दिखि कै गोप महा मुद भरे, नमो नमो कहि पाइनि परे ।
 तिन के संग रग हरि करे, अपने पाइनि आप ही परे ।
 जेतिक भोजन ब्रज तै आयौ, गिरि रूपी हरि सिंगरौ खायौ ।
- ५० भई प्रतीति, भरे मुद भारी, देहि प्रदच्छिन नर अरु नारी ।
 फिरत जु छवि वाढ़ी तिहि काल, गिरि गरे जनु मनि-कचन-माल ।
 कहन लगे देखौ तुम्हरे काजा, प्रगट भयौ यह गिरिन कौ राजा ।
 मेघरूप ह्वै बरषा बरषे, कालरूप ह्वै यह आकरषे ।
 बिछी, ब्याल, वृक, केहरि जिते, याके डर छुत्रै सकत न तिते ।
- ५५ ऐसें करि पुनि पाइनि परे, घर आये अति आनंद भरे ।

चतुर्बिस अध्याइ यह, जु कोउ चतुर सुनिहै जु ।

जे दिन बीते अनसुने, तिन कौ सिर धुनिहै जु ॥

पंचविंश अध्याय

अब सुनि पचविस अध्याइ, पचाविस निर्मल ह्वै जाइ ।
 सुनि कै इद्र भरचौ रिस भारी, लाग्यौ देन सवन कौ गारी ।
 धन-मद-अध नद कौ बेटा, सो भयौ हमरे मख कौ मेटा ।
 ताके बल करि मो सौ घाती, रहिहै गोप कहौ किहि भांती ।
 ज्यौ कोउ उरन पूछि कर धारै, तरचो चहै सठ सिधु अपारै । ५
 भूठ की जो कोउ नाउ बनावै, मूढ तहाँ लै कुटव चढ़ावै ।
 ऐसै गोपन कृष्ण भरोसे, महा वेर कीनौ है मो से ।
 अब देखौ कैसी सिखलाऊँ, गोकुल गाँवहि खोदि बहाऊँ ।
 बोले मेघन के गन सोइ, जिन के जल जग परलै होइ ।
 परमात्म पर पीर के नाइक, कृष्ण कमल-लोचन मुखदाइक । १०
 ढाहन कहत कि तिन की कुटी, इद्र मूढ की चारचौ फुटी ।
 'नंद' कहत श्रीमद सब ऐसै, सुनै न सुत कुवेर के जैसै ।
 उमगे घन-गन रिस भरि भारे, ताते, राते, पियरे कारे ।
 तडतड़ाहि तड़ि वज्र से परै, घरहराहि घन ऊधम करै ।
 चली अपरबल वात अघात, उडे जात कहि बनति न वात । १५
 परन लगी नान्ही बूंदवारी, मोटे थांभन हू तैं भारी ।
 तब ब्रजजन जित तित तैं धाये, सुदर नद-कुँवर पै आये ।
 धौरी धौरी धेनु जु दौरी, बड्डी बूंदन के दुख बोरी ।
 नमित सु ग्रीव, पुच्छ उच किये, छबिली छतिन तर बछरन लिये ।
 गोपिन पै कहि बनत न वात, थर थर कपत कोमल गात । २०

- हो श्रीकृष्ण कृष्ण, जगनाइक । असुभहरन, सुभकरन सुभाइक ।
 गोकुल के तौ तुम ही नाथ, जैसे मीन दीन के पाथ ।
 कुपित भयौ सुरपति मतवारौ, हमरौ अवर कवन रखवारौ ।
 बोले हरि बिलोकि तिन माही, कत भय करत, इहाँ भय नाही ।
- २५ मुसकत मुसकत स्याम सुहाये, छबि सौ चलि गिरि गोधन आये ।
 भट दै उचकि लियौ गिरि ऐसे, साँप बैठना कौ सिसु जैसे ।
 गोपी-गोप, गाइ-बछ जिते, अपने सुख रहे तिहि तर तिते ।
 बाम हस्त पर गिरि अब बन्यौ, फूल कौ जनु कि छत्र है तन्यौ ।
 ललित त्रिभगी अँग किये ठाढे, मुरली अधर धरे छवि बाढे ।
- ३० गिरि-मूल तै जु गिरि की धात, गिरि गिरि परी साँवरे गात ।
 अरुन, पीत, सित अग सुहाये, फागु खेलि जनु अब ही आये ।
 मित्र कहत अचरिज मो हिये, ठाढे हरि त्रिभग तन किये ।
 दुहुँ कर बेनु वजावत नाथ, सखा-मडली राजत साथ ।
 'नंद' कहत अचरिज जिनि मानि, गिग्वरधर अचरिज की खानि ।
- ३५ बाम हस्त लाघवता ऐसी, तरल अलात-चक्र-गति जैसी ।
 कृष्ण-कल्पतरु से जहँ बनै, सब सुख वरसत, वर रस सनै ।
 तब इक उपमा मो मन भई, कही कहति, किधौ उपजी नई ।
 परबत पर तरु होत है घने, तरु पर परबत होत न सुने ।
 जलद जु वरपन लागे पानी, कह कहियै, कछ् अकथ कहानी ।
- ४० महा प्रलै कौ जल है जितौ, गोबरधन पर वरस्यौ तितौ ।
 ता पर नग-खग अरु तरु बेली, तिन पर फुही न परति अकेली ।
 इंद्रहु अपने बज्र चलाये, पातन लगि तेऊ नाह आये ।

सात दिवस अद्भुत भर ठान्यौ, ब्रजवासिन तनकौ नहि जान्यौ ।
 सुदर बदन बिलोकन आगै, भूख प्यास उर कौ नहि लागै ।
 निकसे तब जब गिरिधर भाख्यो, गोबरधन फिरि तहँई राख्यौ । ४५
 प्रेम-भरी बनिता जुरि आई, वाराहि अभरन लेति बलाई ।
 चूमति बदन जसोमति मैया, इत घुरि रह्यौ बडौ बल भैया ।
 नंद परम आनदहि पाइ, पूतहि रह्यौ छती लपटाइ ।
 मुनिवर, सुरवर, सिधवर जिते, बरपत कुसुम भरे मुद तिते ।
 दुदुभि-धुनि, दुर-धुनि हिय हरै, जै जै धुनि पुनि मुनिवर करै । ५०
 गावत गुन गंधर्व सु गाइन, नृतत अपछरा चाइन चाइन ।
 तिन मधि यह अमरन कौ रानौ, हौ रानौ पै निपट खिसानौ ।
 हरि दिसि तकि, अपनी दिसि तकै, सुरन मै बदन दिखाइ न सकै ।
 करन मीडि पछितात है ऐमै, सुरापान करि द्विजवर जैसै ।
 तदनंतर गोपी अरु गोप, ओपे परम ओप की ओप । ५५
 लोकन लै निज लोकन चले, रगन रले, लगत अति भले ।
 तिन मै गोप-बधू सुख बरसै, नूतन गीतन मरमन परसै ।
 तिन आगे हरि अरु बलराम, आवत कर जोरे छवि-धाम ।
 कछुक कहत सब के जिय हरते, पुहुपन पर पद-पंकज धरते ।
 खेल सौ खेलि कै इहि परकार, ब्रज आये ब्रजराज-कुमार । ६०

बल अनुजहि जु मनुज किये, जानै जग मै कोइ ।

अहो 'नंद' इहि इद्र जिमि, दई बिगारै सोइ ॥

पचबिस अध्याइ यह, यौ हिय मै धरि राखि ।

रसिक भक्त बिन आन सौ, 'नंद' न कबहूँ भाखि ॥

षड्विंश अध्याय

- अब सुनि षड्विंसत अध्याइ, नंद गरग के बचन सुनाइ ।
 समाधान गोपन कौ करिहै, बाल-चरित-मधु पुनि बिस्तरिहै ।
 अद्भुत कर्म कुँवर कान्ह के, निरखि गोप अति सब चकमके ।
 बिस्मय भये, महा छबि छये, मिलि कै नंद महर ढिंग गये ।
- ५ अहो नंद यह तुम्हरौ तात, यामे सब अचरज की बात ।
 क्यौ बूझियै जनम हम माही, हम गँवार या लाइक नाही ।
 कहँ यह सात बरस कौ बारौ, कहँ वह गिरि गोबरधन भारौ ।
 कर करि उचकि लियौ वह ऐसै, मद गजराज कमल कौ जैसै ।
 अरु जब प्रथम बैस बर बारी, आँख्यौ नाहिन हुती उधारी ।
- १० आई जब जु बकी तक तकी, देति भई बिष, नहि कछु सकी ।
 पय सौ ताके प्रात मिलाइ, जैसै काल ऐन लै जाइ ।
 पुनि वह सकट बिकट भर भरचौ, तामै आनि असुर इक अरचौ ।
 तनक चरन ऐसै करि करचौ, तब वह सकट उलटि ही परचौ ।
 पुनि जब एक बरष कौ भयौ, तृनावर्त्त उडि लै नभ परचौ ।
- १५ कैसै कठ घोटि कै मारचौ, बहुरचौ आनि सिला पर डारचौ ।
 अरु जब चोरी माखन खात, पकरे बाँधे जसुमति मात ।
 जमलार्जुन मधि आइ सुभाइ, कैसै गिरि से दिये गिराइ ।
 अरु वह बत्सरूप ह्वै आइ, कैसै पकरे पिछले पाइ ।
 दियौ फिराइ, उपर ही मरचौ, कितक कपित्थ साथ लै परचौ ।
- २० बकी अनुज बक बछरन चारत, आयौ सबन सँघारत मारत ।

करकर चौच बिदारचौ कैसे, चीरत कोउ पटेरहि जैसे ।
 धेनुक खर अति बल कलमल्यौ, बलदाऊ कैसे दलमल्यौ ।
 ताके बधु डेल से करे, ऊँचे फल तिनहूँ करि भरे ।
 गोप बेष करि असुर प्रलब, कैसे गयौ न लग्यौ बिलब ।
 पसु अरु पसुप दवानल माही, चकित भये जित-कित ह्वै जाही । २५
 कैसे राखि आपने लये, अग्निनिहि तछन भछन करि गये ।
 अरु वह काली गरल बिसाली, ताके फन पर चढि बनमाली ।
 ताडव नृत्य नचे सो कैसे, देखे-सुने न कितहूँ ऐसे ।
 जमुना कैसे निर्मल भई, मानौ बहुरि नई करि छई ।
 अहो नद ! ब्रजजन है जिते, नर-नारी पसु-पछी तिते । ३०
 तेरे सुत सौ सब की प्रीति, कोउ सुभाइ कछु ऐसिय रीति ।
 संका उपजत इहि तन चाहि, जैसे सब कौ बेत्ता आहि ।
 कत यह सात बरस कौ सबै, फूल सौ उचकि लियौ गिरि तबै ।
 यातै सका उपजत महा, कहौ नद सो कारन कहा ।
 तिन के समाधान ब्रजराइ, कहे गरग के बचन सुनाइ । ३५
 नामकरन मधि लच्छन लहे, अरग-अरग दै मो सौ कहे ।
 याके चरित परत नहि बरने, हिय-हरने जग-मंगल-करने ।
 उज्जल अरुन और इक रीत, अब श्री कृष्ण सु परम पुनीत ।
 पूरब जन्म कहूँ सुत तेरौ, पूत भयौ है बसुदेव केरौ ।
 तातै बासुदेव इक नाम, पूरन करिहै सब के काम । ४०
 और बहुत तव सुत के नाम, सब गुन-धाम परम अभिराम ।
 रूप अनंत, गुन-कर्म अनंत, गनत गनत कोउ लहै न अत ।

- अरु यह बहुत श्रेय कौ करिहै, तुम्हरी सबै आपदा हरिहै ।
 जो यासौ करिहै अनुराग, तिन सम अवर नहि न बड़भाग ।
 ४५ अति परिभव करि सिधिनि कैसै, हरि अनुसरि नर सुर भयौ जैसै ।
 नाराइन मधि गुन है जिते, तेरे सुत मै भलकत तिते ।
 श्री, कीरति, संपति रसमई, नाराइन हू तैं अधिकई ।
 यातैं याके करमन माही, रचक बिस्मै करियै नाही ।
 सुनि ये वचन नद के नये, गोप सबै गत-बिस्मय भये ।
 ५० षडबिसत अध्याइ यह, षडबिसत जु अनूप ।
 सो गिरिधर प्रभु नद के, दसये आश्रय रूप ॥

सप्तविंश अध्याय

- अब सुनि सप्तबिस अध्याइ, जामै इंद्र मंद लजि जाइ ।
 बिनती करि, परि हरि के पाइ, जैहै घर अपराध छिमाइ ।
 अद्भुत कर्म कान्ह जब करचौ, छत्राकार महा गिरि धरचौ ।
 ऐसैं अरि तैं लयौ ब्रज राखि, बोले सुर मुनि जै जै भाखि ।
 ५ तब वह सुररानौ बिलखानौ, आयौ कितहूँ तैं बिररानौ ।
 लोकन मुख दिखाइ नहि सकैं, नददुलारेहि न्यारे हित कै ।
 तनक कहूँ एकातहि पाइ, धाइ आइ हरि लै रह्यौ पाइ ।
 रवि सम मुकुट चरन पर लुठै, पुनि पुनि पगनि घुरै नहि उठै ।
 देख्यौ-सुन्यौ प्रभाउ प्रभू कौ, गिरि गयौ गर्ब जु लोक तिहू कौ ।
 १० क्रम क्रम उठचौ सु थर थर डरै, अंजुलि जोरि स्तुती अनुसरै ।

हो प्रभु सुद्ध तत्त्वमय रूप, एक रूप पुनि नित्य अनूप ।
 रज गुन, तम गुन, ये सब डरै, तुम कहूँ दूरि परे तै परै ।
 हम रज गुन, तम गुन करि भरे, अध दुर्गध गर्व-मद-भरे ।
 कहूँ तुम निज आनंद-रस-भरे, कित हम लोह, मोह, मद-भरे ।
 दुष्ट-दमन तुम्हरौ अवतार, हे अद्भुत ब्रजराज-कुमार । १५
 परम धरम रच्छा जु करत हौ, हम से खलन कौ दड धरत हौ ।

पूर्व पक्ष

जौ कहौ सक्तिवान अस कौन, तुम कौ दड धरि सकै जौन ।
 तुम तौ त्रिभुवन-कारन, पालक, हम ब्रजजन गोपालक बालक ।
 तहाँ कहत हैंसि सुरपति बैन, हो श्रीकृष्ण कमल-दल-नैन ।
 जगत-जनक, गुरु-गुरु, तुम स्वामी, सब जतुन के अतरजामी । २०
 तुम ही महा दुरासद काल, धारे दड प्रचड कराल ।
 तुम तौ उचित दड कौ धरयो मो से उन्मद कौ मद हरयो ।
 जौ कहौ तुम्हरो हम कहा कियौ, ब्रज अपनौ राखि है लियौ ।
 तहाँ कहत सुरपति हो नाथ, तुम्हरे तनक खेल के साथ ।
 मो सन कौ जु महा अभिमान, मर्दन होत जानि-मनि जान । २५
 नहि जान्यौ तुम्हरो परभाव, मत्त भयो सुरराव कहाव ।
 मद बुद्धि हौ निपट असाध, छमा करहु मेरौ अपराध ।
 अब प्रभु मो पै ऐसे डरौ, ऐसी असत मति बहुरि न करौ ।
 श्रीमद करि जु अध ह्वै गयौ, मनु अजन रजन तुम दयौ ।
 तुम ईस्वर गुरु आतम अपने, और सबै रजनी के सपने । ३०

- ऐसै अस्तुति सरसिज-नैन की, कीनी इंद्र अभय-पद-दैन की ।
 तब बोले हरि ढरि इहि भाइ, मधुर बचन, मधुरे मुसकाइ ।
 अहो अमर बर हो बड़भाग, मै मेट्यौ जु रावरौ जाग ।
 ह्वै गयौ हुतौ निपट मतवारौ, श्रीमद-मान-पान करि भारौ ।
- ३५ भूलि गये हे हम तुम ऐसै, पुनरपि काज न ह्वैहै जैसै ।
 गर्ब करौ जिनि भूलि कोउ, गृह-जन-धन कौ पाइ ।
 'नंद' इंद्र तै को बडौ, दीनौ धूरि मिलाइ ॥
- तदनतर सुरभी इत आइ, वदे नद-सुवन के पाइ ।
 जग मै कामधेनु है जिती, आई ताके गोहन तिती ।
- ४० स्तुती करति है, नैन भरति है, पुनि पुनि प्रभु के पाइ परति है ।
 हो श्री कृष्ण अमित परभाव, बलि कीनौ इहि सरल सुभाव ।
 इंद्रहि मद तौ तुम ही करे, अजहूँ मत्त न डर उर धरे ।
 हती हुती हरि बिन हत्यारे, राखी सुदर कान्हर वारे ।
 बावरौ हुतौ रहौ यह मद, बलि बलि तुम कहूँ करिहै इद ।
- ४५ गाइ-विप्र देवता जितेक, तुव पद-पंकज परत तितेक ।
 अब तै हमरी रच्छा करहु, ऐसै इद्र बिना ही सरहु ।
 अभिषेक कौ करन जगमगी, डोलति सुरभि प्रेम रँगमगी ।
 अपने पै कंचन-घट भरै, सुभग सुगंध सरस सौ अरै ।
 गगन गंग कौ जल नवरंग, आये कर करि अमर ते अंग ।
- ५० कचन-आसन पर ब्रज-चंद, बैठारे जब सब सुख-कद ।
 तिहि छिन गन गधर्व जितेक, बिद्याधर चारन जु तितेक ।
 लगे जु प्रेम बिमल जस गावन, जिन के सुनत हौइ जग पावन ।

नचत अप्सरा अति मुद भरी, जनु नग-जरी छटन की छरी ।
 अमर नगर तै बरपत फूल, सब के हिये समात न मूल ।
 हौन लगे अभिषेक जु महा, तिहि छिन की छबि कहियै कहा । ५५
 कुटिल अलक तै चुवत जलकनी, बदन की दुति पुनि परति न गनी ।
 जनु अबुज-रस अलि अनियारे, मुख भरि भरि डारत मतवारे ।
 धरचौ गोविद नाम अभिराम, पूरन भये सवन के काम ।
 जब ही इद्र भये गोविद, ठाँ ठाँ उमगे परमानंद ।
 बूड़ि गई, कछु परति न बरनी, छाई रहति दूध करि धरनी । ६०
 सरितन की छबि जात न कही, उमगि उमगि सब रस भरि वही ।
 जंतु सबै अति हर्षित भये, सहज प्रसन्न दुरमति मिटि गये ।
 फूले फूल रहत द्रुम जिते, मधुर मधुर मधु बरपत तिते ।
 अन्न अनेक भाँति ही नये, उपजत भये बिना ही बये ।
 नगन मध्य नग हुते जितेक, लै लै ऊपर बैठे तितेक । ६५
 समुद पुनि उत्तम मोती जिते, कढ़ि कढ़ि बाहिर डारत तिते ।
 मद सुगंध पवन नित सरसै, करकस ह्वै कहूँ तनकन परसै ।
 स्वर्ग तै सुदर सुदर फूल, वरण्यौ करत सदा अनुकूल ।
 इद्र-गोविदहि दै अभिषेक, सुर, मुनिगन, गधबं जितेक ।
 आग्या पाइ चले निज ओक, सुखित भये तब ही सब लोक । ७०

सप्तबिस अध्याइ यह, इद्र भये गोविद ।

‘नद’ नैक इहि गाइ धौ, को है कलि-मल मद ।

अष्टविंश अध्याय

- अब सुनि अष्टबिस अध्याइ, पैहौ जहाँ निरोध के भाइ ।
 सुरपति उनमद कौ मद हरचौ, अब चाहत बरुनहि बस करचौ ।
 रमानंद मूरति जो नंद, अरु घर मै सुत सब सुख-कद ।
 सो एकादसि व्रत आचरै, हरि इच्छा बिन क्यौ अनुसरै ।
- ५ एक समै द्वादसि दिखि थोरी, उठे नद कछु मति भई भोरी ।
 सास्त्र के बल तै अति कलमले, अरुनोदय तै पहिले चले ।
 जाइ जमुन निर्मल जल धसे, तहँ अन्हात नद कछु लसे ।
 उज्जल अग सु को छवि गनौ, खोरत इंदु कलिदि मै मनौ ।
 जप-तप कछू करन नहि पये, बरुन के लोक पकरि लै गये ।
- १० ब्रजराज के सग जन जिते, कूकत भये जमुन-तट तिते ।
 सुनत उठे मनमोहन लाल, आलस-रस भरे नैन बिसाल ।
 पितु के हित आतुर गति भये, कसनालय बरुनालय गये ।
 बरुन निरखि जु उठ्यौ अकुलाइ, पगन मै लोट-पोट ह्वै जाइ ।
 पाछे प्रभु-पूजा अनुसरचौ, डोलत बरुन परम रँग भरचौ ।
- १५ उत्तम उत्तम रिधि-निधि जिती, आनि धरी हरि चरननि तिती ।
 दुर्लभ दरस दिखि बढ़चौ जु हेतु, अरप्यौ सब अपनपौ समेत ।
 पुनि पुनि माथ नाथ-पग धरै, अंजुलि जोरि अस्तुति कछु करै ।
 हो प्रभु ! यह जु देह मै धरचौ, अरु सब अरथ परापति करचौ ।
 तव पद-पंकज दरसे-परसे, कौन पुन्य धौ मेरे सरसे ।
- २० अरु संसार असार अपार, सहजहि भयौ जु ताके पार ।

तुम अपने परमात्म स्वामी, ब्रह्मरूप सब अंतरजामी ।
 लोक सृष्टि सिरजत यह माया, तुम तै दूरि मलमई काया ।
 हे सरवग्य, अग्य जन मेरे, जाने नहिं धर्म प्रभु केरे ।
 तुम्हरे पितहि जु इत लै आये, कछु भाये, कछु मोहि न भाये ।
 पुनि पुनि धरत पगन पर सीस. अति प्रसन्न कीने जगदीस । २५
 छबिली भाँति अपने घर आये, ब्रज मै घर घर मंगल गाये ।
 नंद जु जब बरुनालय गयौ, निरखि बिभूति चकृत अति भयौ ।
 पुनि जब सुत के पाइनि परचौ, तब ब्रजराज अचंभे भरचौ ।
 कहन लग्यौ हिय मै यह बात, ईस्वर है यह मेरौ तात ।
 स्वच्छ मुक्ति जो ब्रह्म है कोई, हम कौ सहजहि दैहै सोई । ३०
 ऐसे जब बिस्मय करि लसे, तब गोविंदचंद्र मृदु हँसे ।
 भक्त मनोरथ पूरन करने जैसे बेद-पुरानन बरने ।
 जिहि गति प्रेरे जोगीजन-मन, जात है क्रम क्रम करि तप कै पन ।
 संसारी-जन तहँ को गने, काम-कर्म जु अबिद्या सने ।
 तिहि गति बैठे सब ब्रज लोइ, पूरन तरुन, किरनमय होइ । ३५
 प्रथमहि ब्रह्म बिषै अनुसरे, इहि न ब्रह्म घर ता मधि अरे ।
 देह सहित ब्रह्म देखन गये, तहँ के सुख ते सब अनभये ।
 तातै पुनि बैकुण्ठ सिधारे, तहँ के सुख नीके अवधारे ।
 मूर्तिवंत जहँ चारौ बेद, बरनत प्रभु के नाना भेद ।
 अरु कौतुक जे कान्ह ब्रज करे, गिरिबर-धरन अवर रँग भरे । ४०
 ते सब गान करत श्रुति जहाँ, नंदादिक सुनि चकि रहे तहाँ ।
 परी चटपटी सब के मन मै, कब देखै इहि बृंदावन में ।

- मधुर मूर्ति बिन जब अकुलाने, तब फिरि बहुरचौ ब्रज ही आने ।
 मित्र कहत कि ब्रह्म मै जाड, पुनि अकुठ बैकुठहि पाइ ।
 ४५ बहुरि जु लोकन मै फिरि आवै, यह सदेह मोहि भरमावै ।
 'नद' कहत कछु जिनि करि चित्र, जिन के मनमोहन से मित्र ।
 नंद-सुवन दिनमनि सम रूप, ब्रह्म-बियापी जाकी धूप ।
 बैकुठ मधि सुख हैं जिते, सब बृंदावन ठाँ ठाँ तिते ।
 अष्टाविसत अध्याइ की, लीला सब सुख-कद ।
 ५० मुक्ति न मन-मानी जहाँ, फिरि आये ब्रजचंद ॥

एकोनत्रिंश अध्याय

- उनतीसौ अध्याइ सुनि मित्र, जामें रास उपक्रम चित्र ।
 ब्रह्मादिकन जीति कदर्प, वाढ्यौ हुतौ वाके अति दर्प ।
 कियौ चहत अब ताकौ खडन, जय जय गोपी-मंडल-मडन ।
 आगामिनी जामिनी जु ही, ब्रजभामिनीन सौ जे कही ।
 ५ ते आई जब परम सुहाई, नद-सुवन दिखि अति मनभाई ।
 प्रफुलित सरद मल्लिका जहाँ, अवर अनेक कुसुम छबि तहाँ ।
 जब ही नंद-नदन मन भयौ, तब ही उड़प उदय है लयौ ।
 अरुन बरन तहँ सोभित ऐसौ, प्राची दिसि तिय कौ मुख जैसौ ।
 दीरघ काल मिल्यौ है पीय, तिन मनु कुकुम रजित कीय ।
 १० लसत अखडल मंडल जाकौ, ऐ किधौ है इह बदन रमा कौ ।
 उभक्त कौतुक अपने रवन कौ, अधिकारन जनु इतहि अवन कौ ।

कोमल किरन अरुनिमा नई, कुजनि कुजनि प्रसरित भई ।
हरिपिय-हिय-अनुराग जु भरचौ, सोई जनु निकसि बाहिरै परचौ ।

स्याम रग सिगार कौ, अरुन रग अनुराग ।

पीत रग है प्रेम कौ, अंढै कोउ बड़भाग ॥ १५

तब लीनी कर-कजनि मुरली, खर्जादिक जु सप्त सुर जुरली ।
सोइ जोग-माया गुन-भरी, लीला-हित हरि आश्रित करी ।
सिव मोहिनी जु वह मोहिनी, वा तै मुरली सरस सोहिनी ।
वहुरचौ अधर-सुधासव रली, मधुर मधुर गति ब्रज कहूँ चली ।
सुनी सवन पै तेई आई, जे हरि मुरली माँझ बुलाई । २०

प्रीतम-सूचक सब सुढारक, सुनतहि इतर राग विस्मारक ।
दुहत चली जु दह्यौ तजि चली, सिद्ध बस्तु तेऊ दलमली ।
या करि अर्थ, धर्म अरु काम, परिहरि चलति भई सब वाम ।
मात-तात-भ्रातन करि वरजी, पतिन अनेक भौति कै तरजी ।
तदपि न रही सबै पचि रहे, जिन के मन मनमोहन गहे । २५

प्रेम-बिबस जु बिकल ब्रज-बहूँ, भूपन-बसन कहूँ के कहूँ ।
धरे हुते जे परम सुहाये, जहाँ के तहाँ आप ही आये ।
मन-बच-क्रम जु हरिहि अनुसरै, कवन बिघन जु बिघन कौ करै ।
श्रवननि मनि-कुडल भलमले, बेगि चलन कहूँ जनु कलमले ।
कुतल सकित बने जु नैन, मैन के मनहि देत नहि चैन । ३०

एक जु तिय घर मै धिरि गई, बिबस भई, निकसन नहि पई ।
देखे-सुने हुते हरि जैमै, ध्यान धरे हिरदै मै तैसै ।
तजि तजि तिहि छिन गुनमय देह, जाइ मिली करि परम सनेह ।

- जहपि जार-बुद्धि अनुसरी, परमानंद-कंद-रस भरी ।
 ३५ मित्र कहत यौ बनत है कैसे, मो मन मैं आवत नहि तैसे ।
 'नंद' कहत यह जिय जनि धरौ, अमृत-पान कोउ कैसे करौ ।
 बहुरि कहत यह गुनमय देह, पाप-पुन्य, प्रारब्ध के गेह ।
 भुगते बिन न घाटि है जाही, कब भुगतै यह मो मन माही ।
 दुसह विरह जु कमल-नैन कौ, अनेक भाँति के दुख दैन कौ ।
 ४० सो दुख आनि परचौ जब इन मैं, कोटि नरक-दुख भुगये छिन मैं ।
 ता करि पापन कौ फल जितौ, जरि बरि मरि सरि गयौ है तितौ ।
 पुनि रचक धरि हिय मैं ध्यान, कीने परिरभन, रस-पान ।
 कोटि सुरग सुख छिनक मैं लिये, मगल सकल बिदा करि दिये ।
 तब यह प्रश्न परीच्छित करी, हो प्रभु ! मो मन सका परी ।
 ४५ नंदकिसोरहि सुदर जानि, भजति भई न ब्रह्म पहिचानि ।
 गुन प्रवाह ऊपर भयौ कैसे, यह हौ नाहिन समभक्त तैसे ।
 श्री सुक कही कि हम तौ पाछे, कहि आये नृप तो सौ आछे ।
 दुष्टन कौ नृप, नृप सिमुपाल, निदत ही वीत्यौ सब काल ।
 पूछ्यौ-गन्यौ न ताकौ हियौ, लै बैकुण्ठ पारषद कियौ ।
 ५० ये 'हरि-प्रिया परम रस ओपी, जिनहुँ सबै बिधि इहि बिधि लोपी ।
 आवृत ब्रह्म जियन मैं मानि, कृष्ण अनावृत ब्रह्म है जानि ।
 नरन के श्रेय करन हित तेही, दिखियत आत्मा परम सनेही ।
 कौनहि भाँति कोउ अनुसरौ, काम-क्रोध-भय सौ हृद करौ ।
 हे नृप ! ह्यौ कछु चित्र न मानि, ते सब हरिहि मिलेई जानि ।
 ५५ नूपुर-धुनि जब श्रवननि परी, सब अंग श्रवन भये उहि घरी ।

दिष्टि परी जब तब सब अग, दृगन में भरे, रहे रस-रग ।
 कुजन तै निकसत मुख लसै, चहुँ दिसि उदित चंदगन जैसे ।
 आसपास ठाढी भई आई, ता छिन की छबि नहि कहि जाइ ।
 इकहि बैस, समकथ सुदेस, ऊपर वनै जु वदन बिसेस ।
 कचन कोटि काम जनु करयो, चद कौ बूँद कँगूरनि धरयो । ६०
 छबि सौ चितये सबन की ओर, बोले नागर नंदकिसोर ।
 प्रथमहि बचन धर्म नेम कौ, कहन लगे जु परम प्रेम कौ ।
 हे बडभाग भले ही आई, क्यौ आई कछु सभ्रम पाई ।
 ब्रज मै कुसर-खेम तौ आहि, कारन कवन कहहु किन ताहि ।
 तब सब मद परस्पर हँसी, लाज-लपेटी अँखिया लसी । ६५
 या छबि की कछु उपमा नही, लसौ-बसौ नित जहँ की तही ।
 पुनि बोले दिखि तिन की ओर, यह सजनी यह रजनी घोर ।
 तियन की नहि न निकसनी बेर, बेग जाहु घर होति अवेर ।
 मात, तात, पति भ्रात तुम्हारे, ढूँढत ह्वै बधु पियारे ।
 चटपटी परी होइहै सब ही, कहिहै कित गई इत ही अब ही । ७०
 तब कछु प्रनय-कोप-रस-पगी, छूँतत ह्वै इत-उत चितवन लगी ।
 तब बोले तिन सौ मनमोहन, हौ जानौ आई वन जोहन ।
 देखहु वन कुसमित छबि छयौ, राका ससि करि रजित भयौ ।
 अरु इत यह कालिद-नदिनी, बहति सरस आनद-कदिनी ।
 इत यह ललित लतन की फूलनि, फूलि फूलि जमुना जल भूलनि । ७५
 देख्यौ वन, अब गृह अनुसरौ, हे सति पतिन की सेवा करौ ।
 अरु जौ वन देखन नहि आई, मो हित करि आई मोहि भाई ।

- जुगति करी, न करी अनरीति, मो सौ सबै करत है प्रीति ।
 ऐसे बहुतै बिप्रिय बैन, कहे जु प्रीतम पकज-नैन ।
- ८० भग्न-मनोरथ चिता परी, रहि गई जनु कि चित्र है करी ।
 दृगन तै अजन जूत जलधार, धसी सु तन पर इहि आकार ।
 कनक बरन जनु ढार सुढार, दीने सूत विरह सुत धार ।
 भरत उसास हुतासन रहे, मुरभन अधर-बिब मधु भरे ।
 चरननि धरनि लिखनि इमि गनौ, अबनि तै मारग माँगति मनौ ।
- ८५ सुनि कै प्रिय के अप्रिय बैन, ज्यौ कोउ इतर कहै दुख दैन ।
 जल गँभीर नैनन की कोर, पौछि कै छबिले पटन के छोर ।
 गदगद गरन कहति भई ऐमै, काँपाजुत सुर पिकगन जैसै ।
 अहो अहो सुदर वर ब्रजनाइक, कूर वचन नाहि तुम्हरी लाइक ।
 जिनि बोलहु बलि अति दुख दैन, तुम तरुना करुना-रस-ऐन ।
- ९० सब परिहृगि हरि चरननि आई, बलि अब भजौ तजौ निठुगई ।
 जैसै आदि पुरुष वह कोई, मुमुखन भजत मुग्यौ हम सोई ।
 अरु जु अपति पति सुहृद सुश्रूषन, निधन कौ धरम कछौ जु अदूषन ।
 हे ब्रजभूषन नाहि अब डपै, सो सब होत तुम्हारे बिपै ।
 तुम अपने आत्मा नित नित के, सुत-पति अति दुखदाइक कित के ।
- ९५ करम-धरम कौ फल जुग जुग ही, निगम कहत जिहि मो तो तुही ।
 फल फिरि बहुरि मिखावै धर्म, च्याये रहौ, दहौ जिनि मर्म ।
 अरु जे सास्त्र निपुन जन जिते, चरन-कमल-रज बाँछत तिते ।
 रमा रमनि के चाहियतु कहा, तुम करि दियौ उरस्थल महा ।
 जाकी चितवन हित सुर सब के, ब्रह्मादिक तप करत है कब के ।

तिन तन कबहूँ नैक न चहै, चित तौ तुव पद-पंकज रहै । १००
 अरु यह तुलसी लसी रस भरी, अतु दिन रहति पगन पर परी ।
 यातै तुम्हरे चरन मेड़है, सुख देइहै कछु न लेइहै ।
 अरु जो कहत कि जाहु ब्रज माही, जाहि कहाँ अरु कह लै जाही ।
 चित तौ तुमहि चोरि है लियो, चरन न चलै कहा धौ कियौ ।
 हियौ नही अब हाथ हमारे, करिहै कहा ब्रज जाइ तिहारे । १०५
 हो पिय ! यह कल गीत तिहारौ, महा अनिल के वान अनिवारौ ।
 अधर-अमृत करि काहे न सीचत, मुमकि मुसकि बलि क्यौ दृग मीचत ।
 जौ न सीचिहौ पिय ब्रजनाथ, तौ इह बिरह अगिनि के साथ ।
 धरि धरि ध्यानहि जरि बरि अबै, ह्वैहै आनि कै दासी सबै ।
 जौ कहौ क्यौ भई दासी हमारी, तजि तजि गृह ठकुराइत भारी । ११०
 तहाँ कहत अहो पिय मनमोहन, आवत तुम जव गोगन गोहन ।
 बदन-कमल परि घूँघर केस, देखि कै गोरज छुभित मुबेस ।
 तैसैई मनि-कुडल छवि बड़े, दुहुँ दिसि जात मीन से चढे ।
 मृदुल मुकुर से लोल कपोल, मद हसनि मिलि करत कलोल ।
 अरु अधरन मधि मधु भलमली, दिखि दिखि उपजत हिय कलमली । ११५
 अरु यह छबिली छतो साँवरी, भुज रावरी रूप वावरी ।
 इन करि सुधि बुधि गई हमारी, यातै भई पिय दासी तुम्हारी ।
 जौ कहौ उपपति-रस नहि स्वच्छ, सब कोउ निदत अरु अति तुच्छ ।
 तहाँ कहति है ब्रजभामिनी, लहलहाति जनु नवु दामिनी ।
 तुम्हरी यह कलगी तजि पीय, त्रिभुवन माँझ कवन अस तीय । १२०
 सुनतहि आरज-पथ नहि तजै, सुदर नद-सुवन नहि भजै ।

- सुनि खग-मृग जु रहै कौर तै, जमुना चलि न सकति ठौर तै ।
 पुरुषहु चले जु है दृढ हिया, हो पिय कवन आहि ये तिया ।
 जैसे आदि पुरुष सुर लोक, दूरि करत है तियन कौ सोक ।
 १२५ तैसे ब्रजजन दुख के हरता, तुम कीने पिय जो कोउ करता ।
 रंचक कर-पकज सिर धरौ, जरत है तन-मन सीतल करौ ।
 ऐसे बिरह विकल कल बैन, सुनि कै तरुना कहुना ऐन ।
 जोगीस्वरन के ईस्वर स्याम, बहुरचौ जदपि आत्माराम ।
 रमत भये तिन सौ रस वातै, केवल एक प्रेम के नातै ।
- १३० ग्यान तुलित, विग्यान पुनि, तुलित तुलित जम-नेम ।
 सबै बस्तु जग मै तुलित, अतुलित एकै प्रेम ॥
 ऐमै प्रभु बस होत जिहि, सुनहु प्रेम की बात ।
 तप करि प्रेरे मुनिन के, मन जहँ लगि नहि जात ॥
 बिहरत विपिन बिहार उदार, ब्रजरमनी ब्रजराज-कुमार ।
- १३५ पियहि पाइ तिय के मुख लमै, सरद मै सरसिज होत न असे ।
 बीरी खात, दिये गरवाँही, डोलत फूली कुजन माँही ।
 तिन मधि बने कुँवर नँद-नद, बडे उडन सौ ज्यौ घन चद ।
 बिलुलित उर बैजती माल, लटकत चलत सु मद गज चाल ।
 इहि परकार कुँवर रस भरे, छवि सौ जमुन पुलिन अनुसरे ।
- १४० कोमल उज्जल बालुका जहाँ, मलय समीर धीर नित तहाँ ।
 सु कर तरंगत करि कै जमुना, रच्यौ रुचिर जहँ और की गमुना ।
 सीतल मंद सुगंध वयारि, पखा करति बनिता वपु धारि ।
 भृंगन सहित भृंगन की घरनी, बीन सी बजति महा सुखकरनी ।

कमल अमोद, कुमुद आमोद, सब परिमल जहँ देत बिनोद ।
 तहाँ बैठि भुज भुज गरमेलनि, परिरंभन, चुदन, कल केलनि । १४५
 कच-लट गहि बदनन की चूमनि, नख नाराचन घायल घूमनि ।
 कुचन की परसनि, नीबी करसनि, सुखन की बरसनि मन की सरसनि ।
 ताही के सरन मैं जब हृत्यौ, दुखित भयौ घूमत जिमि मृत्यौ ।
 भस्म करहि जिनि इह डर डरचौ, तब उठि प्रभु के पाइनि परचौ ।
 कोटि अनग अग के भौन, इक अनंग जीतिबौ सु कौन । १५०
 सिव से जीतत कैसेहुँ कैसे, दृढ बैराग्य जोग बल तैसे ।
 ऐसे विस्व-विमोहन कामहि, को जीतहि बिन मोहन स्यामहि ।
 अपने रस बस देखि साँवरे, ह्वै गये तियन के मन बावरे ।
 कहति भई भरि हिय अभिमान, हम सम तिय न तिहूँ पुर आन ।
 यहै मान बढि सैल समान, ओट परि गये पिय भगवान । १५५

सुनै जो कोउ मन-क्रम-वचन, उनतीसौ अध्याइ ।

ध्वसनि कलि-मल-बंस कहूँ, 'नद' न अवर उपाइ ॥

पदावली

बधाई

बधाई माई आज बधाई ।

आज बधाई सब ब्रज छाई, ब्रज की नारि सबें जुरि आई ।
सुंदर नंद महर जू के मंदिर, प्रगटचौ है पूत सकल सुख कदर ।
होत ही ढोटा ब्रज की सोभा, देखि सखी कछु और ही ओभा ।

५ मालिन सी जहँ लछिमी डोलै, बंदनमाला बाँधति लोलै ।
बगर बुहारति फिरति अष्टसिधि, कोरन सथिया चीतति नवनिधि ।
गृह गृह तै गोपी गमनी जव, गली रँगिलिन भीर भई तब ।
बीथी प्रेम-नदी छवि पावै, नंद-सुवन-सागर कौ धावै ।
हाथनि कंचन-थार रहे लसि, कमलनि चढ़ि आये मानौ ससि ।

१० मंगल कलस जगमगे नग के, भागे सकल अमंगल जग के ।
फूले ग्वाल मनौ रन जीते, भये सबन के मन के चीते ।
कामधेनु तै नैक न हीनी, द्वै लख गाइ द्विजन कौ दीनी ।
नंदराइ तहँ अति रस भीने, पर्वत सात रतन के दीने ।
नंदराइ गृह माँगन आये, ते बहुरचौ माँगन न कहाये ।

१५ घर के ठाकुर के सुत जायौ, 'नंददास' तहँ सब सुख पायौ ।
जुरि चली है बधाये नंद महर घर, चंचल ब्रज की बाला ।
कंचन-थार, हार चंचल, छवि कहि न परत तिहि काला ॥

डहडहे मुख, कुकुम-रँग-रजित, राजत रस के ऐना ।
 कजन पर खेलत मानौ खजन, अजनजुत बने नैना ॥
 दमकत कठ पदिक मनि कुडल, नवल प्रेम-रँग बोरी । २०
 आतुर गति, मानौ चद उदय भयौ, धावति तृपित चकोरी ॥
 खसि खसि परत सुमन सीसन तै, उपमा कौन बखानौ ।
 चरन-चलन पर रीझि चिकुर बर, बरषत फूलन मानौ ॥
 गावति गीत, पुनीत करति जग, जसुमति-मंदिर आई ।
 बदन बिलोकि, बलैया लै लै, देत असीस सुहाई ॥ २५
 ता पाछे गन गोप ओप सौ, आये अतिसय सोहै ।
 परमानंद-कद रस भीने, निकर पुरदर को है ॥
 मंगल कलस निकट दीपावलि, ठाँ ठाँ दिखि मन भूल्यौ ।
 मानौ आगम नंद-सुवन के, सुवन फूल ब्रज फूल्यौ ॥
 आनंद-धन ज्यौ गाजत, राजत, वाजत दुदुभि भेरी । ३०
 राग-रागिनी गावत हरषत, बरषत सुख की ढेरी ॥
 परम धाम, जगधाम, स्याम अभिराम श्री गोकुल आये ।
 मिटि गये द्वंद 'नददासन' के भये मनोरथ भाये ॥

श्री गोपाल लाल गोकुल चले, हौ बलि बलि तिहि काल ।
 मोद भरे बसुदेव गोद लै, अखिल लोक प्रतिपाल ॥ ३५
 तरनि तेज जैसै तम फूटत, खुलि गये कुटिल कपाट ।
 महा बेग बल छाँड़ि आपनौ, दीनी श्री जमुना बाट ॥
 भोर भये 'कुमुदिन ज्यौ मूँदत, कसादिक भये मोहे ।
 संत जनन के मन अबुज बनि, फूल डहडहे सोहे ॥

४० बार बार फुही फूल सी बरषत, अबुद अबर छायाँ ।
 अपनौ निज बपु जानि सेस तहँ, बूंद बचावन आयौ ॥
 परम धाम, जगधाम, स्याम अभिराम श्री गोकुल आये ।
 'नंददास' आनंद भयौ ब्रज हर्षित मंगल गाये ॥

माई आज गोकुल गाम, कैसौ रह्यौ फूल कै ।
 ४५ गृह फूले दीसै, जैसै संपति समूल कै ॥
 फूली फूली घटा आई, घरहर घूमि कै ।
 फूली फूली वर्षा होति, भर लायौ भूमि कै ॥
 फूलौ फूलौ पुत्र देखि, लियौ उर लूमि कै ।
 फूली है जसोदा माइ, ढोटा मुख चूमि कै ॥
 ५० देवता अगिनि फूले, घृत-खाँड हंमि कै ।
 फूल्यौ दीसै दधिकॉदौ, ऊपर सो भूमि कै ॥
 मालिन वाँधै बंदनमाल, घर घर डोलि कै ।
 पाटबर पहिराइ (राइ?), अधिकै अमोल कै ॥
 फूले है भँडार सब, द्वारे दिये खोलि कै ।
 ५५ नंद दान देत फूले, 'नंददास' बोलि कै ॥

श्री बृषभान नृपति के आँगन, बाजत आज बधाई ।
 कीरति जू रानी हुलसानी, सुता सुलच्छन जाई ॥
 सक्ति सब दासी है जाकी, याहू तै अधिक सुहाई ।
 निरवधि नेह, अवधि रसमूरति, प्रगटी सब सुखदाई ॥
 ६० ब्रह्मादिक, सनकादिक, नारद, आनंद उर न समाई ।
 'नंददास' प्रभु पलना पौढ़े, किलकत कुँवर कन्हाई ॥

बालकृष्ण

चिरैया चुहचुहानी, सुनि चकई की बानी,
 कहति जसोदा रानी, जागौ मेरे लाला ।
 रवि की किरन जानी, कुमुदिनी सकुचानी,
 कमलन विकसानी, दधि मथै वाला ॥ ६५
 सुबल श्रीदामा, तोक उज्जल वसन पहिरे,
 द्वारे ठाढे हेरत है बाल गोपाला ।
 'नददास' वलिहारी, उठि बैठौ गिरिधारी,
 सब कोउ देख्यौ चाहे लोचन बिसाला ॥

आज सिँगार स्यामसुंदर कौ देखे ही बनि आवै । ७०
 स्याम पाग अरु स्वेत चोलना छूटे बदन सुहावै ॥
 मोतिन माल हार उर ऊपर, कर मुरली जु बजावै ।
 'नददास' प्रभु रसिक कुंवर कौ लै उछग हलरावै ॥

बाल गोपाल ललन कौ, मोद भरी जसुमति हुलरावति ।
 मुख चूमति, देखति सुंदर तन, आनंद भरि भरि गावति ॥ ७५
 कबहुँक पलना मेलि भुलावति, कबहुँक अस्तन पान करावति ।
 'नददास' प्रभु गिरिधर कौ रानी निरखि निरखि सुख पावति ॥

अहो तो सौ नंद-लाडिले भगरूँगी ।
 मेरे सग की दूरि जाति है, मटुकी पटकि डगरूँगी ।
 भोर ही ठाढी, कत करी मो कौ, तुम्है जानि कछु कानि न करूँगी । ८०
 तुम्हारे संग सखान के देखत, अबही लाड उतारि धरूँगी ।

सूधे दान लेहु किन मो पै, ओर कहा कछु पाइ परूंगी ।
 'नंददास' प्रभु कछु न रहैगी, जब बातन उघरूंगी ।

बन तै आवत गावत गौरी ।

८५ हाथ लकट गैयन के पाछे ढोटा जसुमति कौ री ॥
 मुरली अधर धरे नँद-नदन, मानौ लगी ठगोरी ।
 याही तै कुलकानि हरी है, ओढे पीत पिछौरी ॥
 अटन चढी ब्रजवधू निहारति, रूप निरखि भई बौरी ।
 'नंददास' जिन हरि मुख निगख्यौ तिन कौ भाग बडौ री ॥

हनूमान्

९० जब कूद्यौ हनुमान उदधि जानकी सुधि लेन कौ ।
 देखन कौ दसमाथ, अपने नाथ कौ सुख देन कौ ॥
 जा गिरि पर चढि कुलॉच लीनी उचकैयाँ ।
 सो गिरि दस जोजन धसि गयौ है धरनी महियाँ ॥
 धरनी धसि गई पताल, भार परे जाग्यौ ।

९५ सेसहु कौ सीस जाड, कमठ पीठ लाग्यौ ॥
 अरुन बदन तेज सदन, बडौ पीन गात है ।
 उत्तर तै दच्छिन मानौ मेह उड्यौ जात है ॥
 जा प्रभु कौ नाम लेत, भव-जल तरि जात है ।
 सत जोजन सिधु कूद्यौ, तौ केतिक यह बात है ॥

१०० रामचद्र-पद-प्रताप, जगत मै जस जाकौ ।
 'नंददास' सुर-नर-मुनि कौतुक भूले ताकौ ॥

रास

देखो देखौ री नागर नट, निर्तत कालिदी तट,

गोपिन के मध्य राजै मुकट लटक ।

काछिनी किकिनी कटि, पीतावर की चटक,

कुडल किरन रवि-रथ की अटक ।

१०५

ततथेई ताताथेई सब्द सकल उघट,

उरप तिरप गति परै पग की पटक ।

रास मै राधे राधे, मुरली मै एक रट,

‘नददास’ गावै तहँ निपट निकट(?) ।

बृदावन बसी बट, कुज जमुना के तट,

११०

रास मै रसिक प्यारौ खेल रच्यौ बन मै ।

राधा-भावौ कर जोरे, रवि-ससि होत भोरे,

मडल मै निर्तत दोऊ सरस सघन मै ।

मधुर मृदग बाजे, मुरली की धुनि गाजे,

सुधि न रही री कछु सुर मुनि जन मै ।

११५

‘नददास’ प्रभु प्यारो, रूप उजियारौ कृष्ण,

कीडा देखि थकित सब जन मन मै ॥

निर्तत कुजन की परछाही ।

नद नद बृषभान नदिनी श्री बृदावन माही ॥

गावति गीत बजावति हस्तक, याही तै कुंवर सराही ।

१२०

‘नददाम’ सहचरी भाग विन, औरन इह सुख नाही ॥

दीपमालिका

गाइ खिलावत सोभा भारी ।

गोरज रजित बदन-कमल पर, अलक भलक धुधुरारी ॥

नख-सिख अग सुभग बहु भूषन, पहिरत सदा दिवारी ।

१२५ खेलि रही है खरिक सभा पर, नग रगन उजियारी ॥

श्रमकन राजै भाल-गड-भुज, या छवि पर बलिहारी ।

श्रवत हेरि चचल अचल सब चढती है अटन अटारी ॥

भीर बहुत अति अहिर बृद की, मडहन पर ब्रजनारी ।

सैनन मैं समभावत सगरी, धनि धनि निरखनहारी ॥

१३० रहे खिलाइ धूमरी, धौरी, धगुरनि, काजर कारी ।

‘नंददास’ प्रभु चले सदन जब एक बार हुकारी ॥

दीपदान दै हटरी बैठे नद ववा के साथ ।

नाना विधि की मेवा मँगाई, बाँटत अपने हाथ ॥

विविध सिंगार पहिरि पट-भूषन और चदन दिये माथ ।

१३५ ‘नंददास’ प्रभु सगरिन आगे, गिरि गोवर्धन नाथ ॥

हटरी बैठे श्री ब्रजनाथ ।

अपने सग सखा सब लीने, बाँटत मेवा हाथ ॥

भाँति भाँति पकवान मिठाई, विधि सौ धरे बनाइ ।

चलौ सखी देखन कौ जैयै, सुख मोभा अधिकाइ ॥

१४० आरति करति देति न्यौछावर मन आनंद बढाइ ।

‘नंददास’ कुसुमन मुर वरपत, जै जै सब्द कराइ ॥

गोवर्द्धन-धारण

अब नैक हमहि देहु कान्ह गिरिवर ।

तुम्है लिये बडी बार भई है, दूखि चलयौ ह्वै कोमल कर ॥

मति डिग परै, दबै सब ब्रजजन, भयौ है हाथ पर अति भर ।

तब कैसे यह वदन देखि है, तातै जोय मैं बडौ यहै डर ॥

१४५

जानि सखन कौ हेत मनोहर, दियौ नवाड नैक अपनी कर ।

‘नंददास’ प्रभु भुजा लटकि गई, तब हँसे नागर नगधर वर ॥

भूला

हिँडोरे माई भूलत गिरिधर लाल ।

सँग राजत बृषभान नदिनी, अँग अँग रूप रसाल ॥

मोरमुकट मकराकृत कुडल, उर मुक्ता वनमाल ।

१५०

रमकि रमकि भूलत पिय प्यारी, सुख बरसत तिहि काल ॥

हँसत परस्पर इत-उत चितवत, चंचल नैन विसाल ।

‘नंददास’ प्रभु की छवि निरखत, बिबस भई ब्रजबाल ॥

भूलत मोहन रग भरे, गोपबधू चहुँ ओर ।

जमुना पुलिन सुहावनी, बृदावन सुभ ठोर ॥

१५५

राधा जू करै किलकारी, ज्यौ गरजत घनघोर ।

ता पाछे सब गोप-सुदरी, मिलि जु करति है सोर ॥

तैसेई रटत पपैया, चातक, बोलत दादुर मोर ।

‘नंददास’ आनंद भरे निरखत, जै जै जुगलकिसोर ॥

- १६० रग भरी भूलति स्याम सग राधिका प्यारी ।
 मधुरे सुर गावति उपजावे, आछी आछी तानन मनुहारी ॥
 कबहुँक मद मंद मुसकात मनोहर, कबहुँक रीझि देत कर तारी ।
 निरखि निरखि या मुख ऊपर तहाँ 'नंददास' बलिहारी ॥

- १६५ डोल भूलत है गिरिधरन भुलावत वाला ।
 निरखि निरखि फूलत ललितादिक राधा वर नंदलाला ॥
 चोवा-चदन छिरकत भामिनि उडत अवीर-गुलाला ।
 कमल-नयन कौ पान खवावत पहिरावत मनिमाला ॥
 बाजत ताल मृदग अधौटी बिच बिच कूजत बेनु रसाला ।
 'नंददास' जुवती जन गावति रिझवति श्री गोपाला ॥

होली

- १७० अरी चलि वेगि छवीली हरि सँग खेलन जाइ ।
 निकसे है मोहन साँवरे री, फाग खेलन ब्रज साँझ ।
 घुमड्यौ है अवीर गुलाल गगन मै, मानौ फूली साँझ ॥
 बाजत ताल, मृदग, मुरज, डफ, कहि न परति कछु बात ।
 रँग रँग भीने ग्वाल बाल सब, मानौ मदन वरात ॥
- १७५ उत तैं सब सुदरि जु रि आई, करि करि अपनो ठाट ।
 खेलति नहि कोउ कान्ह कुँवर सो चाहति तेरी बाट ॥
 बिन राजा दल कौन काज कौ, उठि छाडियै ऐड ।
 उमग्यो निधि लौ नवल नद कौ, रोकत रावरी मैड ॥
 उठि बिहसी बृषभान कुँवरि वर, कर पिचकारी लेत ।
- १८० सहि न सकत कोउ महामुभट वर, सुनत समर सकेत ॥

आई रूप अगाधा राधा, छवि बरनी नहि जाइ ।
 नवल किसोर अमल चदै मानौ मिली है चद्रिका आइ ॥
 खेल मच्यौ ब्रज बीथिनि बीथिनि, वरपत परम अनद ।
 दमकत भाल गुलाल भरे, मानौ चदन भुरकौ चद ॥
 ओर रग पिचकारिन भरि भरि, छिरकत हरि तन तीय । १८५
 कुटिल कटाच्छ प्रेम रँग भरि भरि, भरति पीय कौ हीय ॥
 दुरि दुरि भरनि, वचावनि छवि सौ, बाढ्यौ रग अपार ।
 मैन मुनी सी बोलति डोलति, पग नूपुर भनकार ॥
 सिव सनकादिक नारद सारद बोलत जै जै जै ।
 'नददास' अपने ठाकुर की जीवै बलैया लै ॥ १८६

हो हो हो हो होरी बोलै, नद-कुँवर ब्रज बीथिन डोलै ।
 नवल रंगीली सखा सँग लीने, राजत अँग अँग सब रँग भीने ।
 रंगीली भाँति रंगीली निकस्यौ जहाँ, चोवा-चदन कीच मचै तहाँ ।
 ताल, मृदग मुरज, डफ बाजे, ढोल टनक नव धन ज्यौ गाजै ।
 मुनि ब्रज-बधू आनंद अति वाढी, निकसि निकसि सब पौरिन ठाढी । १८७
 अँजुरी अबीर छूटत छवि पावै, पकज मनो पराग उड़ावै ।
 पिचकारिन रँग उछटत भारी, उडि गुलाल रँगें अटा-अटारी ।
 जब लगि लाल तकत पिचकारी, तब लगि भामिनि भाँति भरी ।
 जो कोउ नवल बधू भरि भागै, रंगीली लाल ताके गोहन लागै ।
 तिनहि धाइ धाइ भरत छबीली, जैसै जाहि वनै तैसै रग रंगीली । २००
 जाइ परत ललना-मंडल जब, घेरि लेत, कर तारी देत तब ।

अँग भरि भुज भरि हिये भरि लालै, छाँडति छबिली नहि मदन गोपालै ।
कहत न वनै, बढचौ रँग भारी, 'नंददास' तहँ बलि बलि हारी ।

- कान्हर खेलियै हो बाढचौ श्री गोकुल मै अनुराग ।
२०५ जान्यो नही बहुरि कब ऐहै परम भावति फाग ॥
वाजत ताल, मृदग, भाँभ डफ, सहनाई अरु ढोल ।
तुम हूँ खेलौ सखा सग लै, करहुँ आपनी ओल ॥
उत तै सबै सखी जुरि आई, प्रबल मदन के जोर ।
खेल मच्च्यौ है नद जू की पौरी, प्यारी राधा नदकिसोर ॥
२१० नव वृषभान नदिनी आई, लीनी सखी वृलाई ।
ऐसो मती करी मेरी सजनी मोहन पकरौ जाई ॥
मुरली लेहु स्याम के कर तै, मृगमद बदन लगाई ।
हलधर की पिचकारी छीनौ, कान्हर देहु बनाई ॥
चोवा, चदन, मृगमद, केसरि, भोरिन भरहु अबीर ।
२१५ लये अरगजा छिरकत डोलत, ब्रज जुवतिन के बीर ॥
हलधर की पिचकारी छूटे, कोऊ न बाँधै धीर ।
ब्रज बीथिन मै खेलत डोलत, सखा वने सब लाल ॥
गोपी-गवाल करत कौतूहल, गावन गीत रसाल ।
खेलत खेल सब आनंद बाढचौ, रीभे मदनगोपाल ।
२२० 'नंददास' सँग लागी डोलत, छवि निरखत ब्रजवाल ॥
हो हो होरी खेलै नद कौ नवरगी लाला ।
अबीर भरि भरि भोरी, हाथन पिचकारी
रंगन बोरी, तैसिय रंगीली ब्रज की वाला ॥

प्रति धरे अनग, गावत तान-तरग,
 ताल मृदग मिलि बजावे बीन-बेनु रसाला । २२५
 'नददास' प्रभु-प्यारी के खेलत रग रह्यौ,
 छवि वाढी, छूटी है अलक, टूटी है माला ॥

ए री सखी निकसे मोहनलाल, खेलन ब्रज मै फाग री ।
 उमड्यौ है अवीर गुलाल, मानौ उतयौ अनुराग री ॥
 मोभित मदनगोपाल, कटि बाँधे पट मोहनौ । २३०
 काछिनि काछे लाल, लाल निचोय रंगी मनौ ॥
 मोरमुकुट छवि देत, बक दृगन हँसि देखनौ ।
 सव ही कौ हियौ हरि लेत, ऐन मैत मानौ पेखनौ ॥
 घट आवज सुर बीन, अनाघात गति गाजही ।

ताल, मृदग, उपग, रुज, मुरज, डफ बाजही ॥ २३५
 घिरि आई ब्रजनारि, मृगनयनी, गजगामिनी ।
 छेके है मदनगोपाल, घन घेर्यौ मानौ दामिनी ॥
 छिरिकत पिय नँदनद, तिय पट-ओट बचावही ।
 मानौ घन पून्यौ चद, दुरे निकसि पनि आवही ॥
 बने है तियन के अग, छिरिकि छोट छवि छैल की । २४०

मानौ फूनी रँग रग, ललित लता जनु प्रेम को ॥
 बढ्यौ है परस्पर रग, उमगि उमगि रस भरन मै ।
 निरगि भई मति पग, पीतावर फहरनि मै ॥
 जय गहि रगन भरे, मोहन मूरति साँवरे ।
 हरै हरै हरि हँसि परे, मुनि-मन त्वै गये बावरे ॥ २४५

भई सरस्वति मति बोर, और खेल कहें लौ कहें ।
रस भरे साँवल-गौर, 'नंददास' के हिय रहें ॥

आज बनि-उनि फाग खेलन निकस्यौ नंददुलारी ।
फर्यौ हैं ललित भाल लाल के जटित लाल टिपारी ॥
२५० बडरे बक बिसाल, नयन छवि भरे इतराही ।
बन्यौ है मजुल मोरमुकट, चलत देखत परछाही ॥
उन बनी ब्रज नव किसोरी, गोरी रूप भोरी ।
वोरी प्रेम रग मै, मानौ एक ही डार की तोरी ॥
ब्रज की बाल लिये गुलाल, मोहनलाल छाये ।

२५५ मानौ नीलघन के ऊपर, अरुन अबुद आपे ॥
ताही धूँधरि मध्य मत्त भ्रमर भ्रमत ऐमै ।
बनी है छवि बिसाल, प्रेम जाल गोलक जैसै ॥
बन्यौ है जल-जत्र-खेल, छुटत रग की धारै ।
जानौ धनुधर सग्न लखत, धार सुधारि मारै ॥

२६० और कहाँ लगि कहियै, खेल परम रस की मूली ।
गावत सुक, सारद, नारद, सभु समाधि भूली ॥
जिहि जिहि हरिचरित अमृत सिधु सौ रति मानी ।
'नंददास' ताहि मुक्ति लीन कौ सौ पानी ॥

रक्षा

राखी नंदलाल कर सोहे ।

२६५ पचरँग पाट के फुँदना राजन, देखत मनमथ मोहे ॥

आभूपन हीरा के पहिरे लाल पाट के पोहे ।
'नददास' वारत तन-मन-धन गिरिधर श्रोमुख जोहे ॥

नाम-महिमा

कृष्ण-नाम जब ते श्रवन सुन्यो री आलो,
भूली रो भवन हौ तौ बावरी भई री ।
भरि भरि यावै नैन, चित ह न परै चैन, २७०
तन की दगा कछु औरै भई री ॥
जेनिक नेम-धर्म-व्रत कीने री मै बहु विधि,
ग्रंग ग्रंग भई मै तौ श्रवनमई री ।
'नददास' जाके श्रवन सुने ऐसी गति,
माधुरी मूरति कैधौ कैमी दई री ॥ २७५

गुरु

प्रात समै श्री बल्लभ सुत कौ उठतहि रसना लीजै नाम ।
आनंदकारी, मंगलकारी, अमुभहरन, जन पूरन काम ॥
इह लोक परलोक के बधु, को कहि सकै तिहारे गुन-ग्राम ।
'नददास' प्रभु रसिकसिरोमनि, राज करौ गोकुल सुवधाम ॥
प्रात समै श्री बल्लभ-सुत के बदन-कमल कौ दगसन कीजै । २८०
तीनि लोक बदित पुरुषोत्तम, उपमा कौ पटतर कौ दीजै ॥
श्रीबल्लभ-कुल उदित चद्रमा, यह छवि नैन-चकोरन पीजै ।
'नददास' श्रीबल्लभसुत पर तन-मन-धन न्योछावर कीजै ॥

जयति रुक्मिणीनाथ, पद्मावतिपति, विप्र-कुल-छत्र, आनंदकारी ।
 २८५ दीप-वल्लभ-वस, जगत निस्तम करन, कोटि उडराज सम तापहारी ॥
 जयति भक्ति-पति, पतित-पावन-करन, कामीजन-कामना पूर्णकारी ।
 मुक्ति-काशीय-जन, भक्ति-दाइक-पभू, सकल सारम गुनगनन भारी ॥
 जयति सकल तीरथ फलै, नाम मुमिरन मात्र, वास ब्रज नित्य गोकुल बिहारी ।
 'नंददासन' नाथ पिता गिरिधर आदि, प्रगट अवतार गिरिराज धारी ॥

२९० श्री गोकुल जुग जुग राज करौ ।
 यह सुख भजन प्रताप तैं कबहूँ छिन इत उत न टरौ ॥
 वावन रूप दिखाइ महाप्रभु, पतितन पाप हरौ ।
 बिस्व विदित दीनी गति प्रेतन, क्यों न जगत उद्धरौ ॥
 श्रीवल्लभ-कुल-कमल इही वर जस-मकरंद भरौ ।
 २९५ 'नंददास' प्रभु षट गुन संपन श्री बिट्टलेस वरौ ॥

प्रकटित सकल सृष्टि आधार, श्रीमदवल्लभ राजकुमार ।
 धेय सदा पद-अंबुज-सार, अगनित गुन महिमा जु अपार ॥
 धर्मादिक द्वारे प्रतिहार, पुष्टि भक्ति कौ अंगीकार ।
 श्री बिट्टल गिरिधर अवतार, 'नंददास' कीनी बलिहार ॥

परिशिष्ट

१ संदिग्ध तथा असंपादित सामग्री

(क) 'मानमंजरी नाममाला' के संदिग्ध दोहे

‘अ’ प्रति से उद्धृत

नाम रूप गुण भेद के सो प्रगटित सब ठौर ।

ता बिन तत्व जु आन कछु कहै सो अति बड बौर ॥१॥

अनः वीन

गुप्त निरोहित अंतरित गूढ दुरूह निलीय ।

लोकाजन में लुकि सखी देखी इह विधि नीय ॥२॥

अरुन

अरुन श्रोत आरक्त पुनि लोहित राते गात ।

तुव आगम आनद ते जनु अनुराग चुचात ॥३॥

इंद्र

सहस्राक्ष ब्रह्मश्रवा आखडल सुरपत्त ।

मुनासीर लेखर्षभरु सतमन्पुर दिविपत्त ॥४॥

मुवाभा सूदन वृषा जृभभेदि हरि होइ ।

बलाराति हरिवाहनो मेघवाहनो सोइ ॥५॥

उर

वत्स वक्ष उर पीय के निरपि आपनी भाँय ।

मान गह्यो निज जीय मे आन तिया के भाँय ॥६॥

कचन

जातरूप कलधौत पुनि चामीकर तपनीय ।

रुक्म रुद्र रोदन कनक महा रजत रमनीय ॥७॥

काम

काम अनन्यज मकरधुज विस्व विमोहन नाँउ ।
पति सौ रति जिमि रूठि रहि इमि देखत बलि जाँउ ॥८॥

कुद

माध्वी कुदलता ललित पगनि परति चहु भाँति ।
जाकी कलियन मे कछू तुव दसनन की काँति ॥९॥

गनिका,

दासी दार निलज्जिका खला पुश्चली होइ ।
रूपाजीवा कामकी पुन्यजोषिता सोइ ॥१०॥
वारवधू जग बल्लभा कहत सभली जाहि ।
मुह सभार किन बोलिये ह्याँ कोउ गनिका नाहि ॥११॥

चद्रमा

कुमुदबधु श्रीबधु बिधु रोहिनिधव सुर पेय ।
उडगनपति द्विजराज हरि ग्लौ मृगाक आत्रेय ॥१२॥

जन्म

भव उद्भव उद्गम जनम जन उत्तपति है भाम ।
जन्म सफल जानै तवाह भजिये सुदर स्याम ॥१३॥

धन

द्रविन द्रव्य वसु वित्त बल राय अर्थ सुख-ओक ।
धन जेतो वृजनद के तेतो नहि तिहु लोक ॥१४॥

धनुष

धनु कोदड इष्वास पुनि कार्मुक रिपु सताप ।
चाप विना नहि पनच कछु पनच विना नहि चाप ॥१५॥

धाम

सदन सदन आगार गृह गेह वेस्म सकेत ।
अयन धिस्न पुनि आसपद आलय निलय निकेत ॥१६॥

मदिर मडप आयतन वसति निकाय अस्थान ।
भवन भूप वृषभान के गई सहचरी जान ॥१७॥

पतिव्रता

साध्वी सती मनस्विनी सुचरित्रा सुचि हीय ।
पतिव्रता तुव नाम लै होत जगत मे तीय ॥१८॥

पान

ताम्बूल अहिबेलिदल द्विज मुख मडन पान ।
नहिन खाति अनखाति अति भर जो रही मन मान ॥१९॥

मनोहर

मजुल मजु मनोज्ञ मधु मधुर चारु सुकुमार ।
ललित उदार सुनद को सब वृज को आधार ॥२०॥

महादेव

उग्र कपर्दी भूतपति पसुपति मृड ईसान ।
नीलकण्ठ सितकण्ठ सिव मृत्युञ्जय कल्याण ॥२१॥

मेघ

धाराधर जलधर जलद जगजीवन जीमूत ।
मुदिर बलाहक तडितपति कामुक धूम-सपूत ॥२२॥
नीरद छीरद अब्रुवह वारिद जलमुक नाँउ ।
घन बिछुरी बिजुरी मनौ इमि देखत बलि जाँउ ॥२३॥

रस

सारध मधु पुनि पुष्प-रस कुसुम-सार मकरद ।
रस के जानन हार जन सुनि पैहै सुख कद ॥२४॥

रोमावली

राजी अवली आललति रोम पाँति इहि भाइ ।
मानहु उत ते भलमलत बेनी नीकी भाइ ॥२५॥

लघुभ्राता

अनुज अबर्ज सनाभि पुनि बिष्ट कनिस्ट कनीय ।
लघु सोदर की का सकुचि सगा स्याम को तीय ॥२६॥

समूह

समुदय व्यूह समूह घन प्रकर निकर निकुरव ।
पूर पुग ब्रज पटल चय सचय निचय कदव ॥२७॥
विसरत ग्राह सदोह उघ जूथ द्रात गन जात ।
चक्र अनत समाज बहु तोम जाम सघात ॥२८॥
कदल जाल कलाप कुल कूट अनेक मुबुंद ।
बहुत कही मै बात पै भई तवे की बुद ॥२९॥

सीघ्र

ग्रासु तरस सहसा भटित तुरित तूर्न द्रुत होइ ।
द्विप्र सु सत्वर तुच्छ लघु गज्ञा रंभा मोड़ ॥३०॥
बाज वेग जब रभस रभ अवलंबित उत्ताल ।
चपल चली वातुर अली प्रातुर लखि नंदलाल ॥३१॥

सुदर

सौम्य वामधर मुग्ध पुनि मुष्ट अपीच प्रसस्त ।
सुदर नदकिसोर पर बलि बलि विस्व समस्त ॥३२॥

सूर्य

चित्रभानु बृहभानु रवि विवस्वान दुतिवान ।
असुमान हरिभान हरि जगतचच्छ भगवान ॥३३॥

नीचे

निम्न नीच तर कुम्भ अध अवच अजस की पान ।
नीचे नैन न डार बलि नैक कह्यौ तौ मान ॥३४॥

(ख) 'रासपंचाध्यायी' के संदिग्ध छंद

‘ग’ प्रति से उद्धृत

(पंक्ति ७२ के बाद)

जिन सोरभ ते मत्त मुदित अलि धाये आवत ।
सुक सारिका रत्नमयो गोविन्द गुन गावत ॥१॥

(पंक्ति ७८ के बाद)

श्री वृंदावन की छवि अमित वरनी बुधि अनुसार ।
अव सुंदर नागर नवल वरनु नद क्वार ॥२॥

(पंक्ति १७२ के बाद)

अहा तिय कहा जीय जानि कानि तजि कानन डगरी ।
अर्धे गरी सर्वरी कहु न उर डरी न सगरी ॥३॥
अनुचित धरमाचरन निगम नित निदत करी अति ।
निज पीय तजि चित वृत आन पति रति जु करन मनि ॥४॥

‘घ’ प्रति से उद्धृत

(पंक्ति ४६६ के बाद)

मिलि जु भई एक धुनि अद्भुत तिह मुनि मुनि मां है ।
मुर नर गन गवर्ष कछु न जानै हम को है ॥५॥

(पंक्ति ४७२ के बाद)

ललना अद्भुत राग लैत लागत सोभा अस ।
सुभग अटा पर छटा छत्रीली थिरक रहत जस ॥६॥

(पंक्ति ४८६ के बाद)

कोउ तिन हू तै अधिक जु गावत सुर अति नाई ।
सुघर सिरमनि पिय के सग सग अति छवि पाई ॥७॥

(पंक्ति ५०४ के बाद)

अद्भुत रस रह्यो रास देखि कछु कहत न आवै ।
ज्यौ मुक लै रस कौ चसकौ मन ही मन भावै ॥८॥

(पंक्ति ५३२ के बाद)

अन अधिकारी जितै तितै तहाँ मुनि मुरभाये ।
अद्भुत रास विलास रीसि नहि देखन पाये ॥९॥

(पंक्ति ५४२ के बाद)

जहा काहू की गमना तहा जमुना सुप दैनी ।
जगमगात तट घाट महा मनि जटित नसैनी ॥१०॥

(पंक्ति ५६४ के बाद)

तिन मै कितक अग्यातयोवना छवि पावत तव ।
रोमावलि सी बाल जानि पौछै डारति जब ॥११॥
तहँ अद्भुत कल केलि बनी छवि गनी न परई ।
तिहि चित धरि चितत रचि पचि तिनि कलिमल हरई ॥१२॥

(पंक्ति ५८६ के बाद)

परै न समझि महेस सेस पै गुरु गनेश पै ।
चकित सरस्वति भई जु रति मति कहा सुरेस पै ॥१३॥

‘ड’ प्रति से उद्धृत

(पंक्ति ४६ के बाद)

बन है आन अनेक अमित फल फूलन माही ।
जुगल चंद मुख कद रवन ब्रज इह मुख नाही ॥१४॥

(पंक्ति १०८ के बाद)

बिदति रजनि मुनि अहो तपति अति प्रभा अपारा ।
तव ग्रीष्म पीडित हिम सब हरति बिकारा ॥१५॥

उत के उत जे नारि धारि हमरी जिय आसा ।
हम सब कियो प्रका (स ?) रास हरि संग बिलासा ॥१६॥
निरखि रजनि कमनीय जु निरबचनीय निकाई ।
रीझि सामरे रसिक राम खेलन मनु आई ॥१७॥

(पंक्ति १६४ के बाद)

जिनकी वृधि श्री कृष्ण विपै सो शक मुनि वरनी ।
अवधि प्रेम आवेस मोहनी कौ बस करनी ॥१८॥

(पंक्ति १६८ के बाद)

मानहु मनसिज कोटि पुरट रस भरचौ सुहायो ।
बदन कागरे चद लाल गोपिन बिच आयो ॥१९॥
मोहन मूरति एक भरी सी प्रेम लगाई ।
जानि पूछ कै धर्म कथा सामरे चलाई ॥२०॥

(पंक्ति १७४ के बाद)

कुशल छेम ब्रज रवन गवन मभ्रम सी पाई ।
कारन कौन जु भौन तजि कैसे तुम आई ॥२१॥

(पंक्ति १७६ के बाद)

पुनि बोले तिहि ओर चाहि गोबिंद रसाला ।
हो सजनी रजनी मझा नहि निकसन काला ॥२२॥
अब ग्रह जावौ मन भायौ पैहै दुख सब प्यारे ।
मात तात सुत बध कत ढूढतु जु तुम्हारे ॥२३॥
परी होइहै चटपटी अटपटी सब के मन मै ।
कहा गई अब ही सब हुती सदन मै ॥२४॥
बचन व्यग सुनि श्री गुनि पुनि मन मै छुभित भई सब ।
प्रणय को के (?) पि रस वोप पगी चितवनि जु लगी तब ॥२५॥

पुनि बोले श्री नंदलाल तिनि सनमुख सौहन ।
 जौऽआई मन भाई भलै वशी धुनि गौहन ॥२६॥
 दिखि बन सोभा लोभा कुशमित छवि छाई ।
 छिटक रही चादनी भली फूलनि कर भाई ॥२७॥
 अरु इह इत बहै जम्ना सब सुखदाई ।
 पुलिन मनोहर त्रिविधि वात बहै ताप नसाई ॥२८॥
 देखी बन सोभा सबै अब निज निज ग्रह जायौ ।
 अहो सती निज पतिन की सेवा मै चित लावौ ॥२९॥
 बधिर गुग कपटी लंपट आदिक जौ पति होई ।
 तौउ तिय नहि तजै भजै बडभागिन सोई ॥३०॥
 अरु जौ बन देखन नहि आई मो परसन हित आई ।
 तौ तुम नीकी अति करी अनुचित नहि काई ॥३१॥

(पंक्ति २०८ के बाद)

इही हेत हम देत सदा कमलज है गारी ।
 पलकात्तर विच परत मरत हम कुज बिहारी ॥३२॥

(पंक्ति २१६ के बाद)

अब तुम मधुर अघर अमृत कह धौ कवहि प्याऊगे ।
 बहुत पुण्य ह्वै मित्र परत जौ हमहि ज्याऊगे ॥३३॥
 पुनि कानन भयभीत कोटि जुग बीतत है छिन ।
 अहो निसा इहि भाति हमै जानै को तुम बिन ॥३४॥
 पारधी हू तै कठिन महा जसुधा नंदन पिय ।
 बेन बजाय बुलाय अगी सी मोहि लैइ तिय ॥३५॥
 मातु पिता पति बधु सिधु तरि तुम ढिग आई ।
 जानि बूझ अधरात गहर बन मै बगराई ॥३६॥

(पंक्ति २३८ के बाद)

इतहि कुद केवरा केतकी गध बध हित ।
राय बेलि इत अरल बेलि मृग मदका बेलि हित ॥३७॥

(पंक्ति ३०६ के बाद)

कोऊ श्रीदामा ह्वै बाम चढति कान्हर के काधै ।
कोऊ जसुमति ह्वै ललित लाल ऊखल सौ बाधै ॥३८॥

(पंक्ति ३१२ के बाद)

जमलार्जुन भजन फनी फन गजन सब कौ ।
कोऊ कहै मूदौ लौचन हौ मोचौ दावानल कौ ॥३९॥
जदपि परम सुखधाम स्याम सुदर लीला रस ।
तदपि तिनहि अवलोकनि विन अकुलाय अस ॥४०॥
ज्यौ चदन औ चद तप्त कौ सीतल करही ।
बिरही जन जे लोग तिनहि लगि अग्नि वितरही ॥४१॥

(पंक्ति ३२२ के बाद)

पुनि जगमग खोज मनोज के चोज बढावनि ।
कहन लगी रस पगी जगी छवि अति मन भामिनि ॥४२॥
एक भयो रज गरत परत नही अकथ कहानी ।
तब डक सखी लखी जिय की सो बोली मृदु बानी ॥४३॥
निरखि सुवन वर ऊच मूच पिय मन मै ठानी ॥
तिय पिय कंध चढाय सु छवि नही परत वखानी ॥४४॥
भयो भार ते बाम कध लयो रस मलहकती ।
तातै नीचौ परचौ अवनि उतरी ढलकंती ॥४५॥

यह विधि अति आनंद पाय मन ही मन फूली ।
तहा सखी सौ अनुराग भाग बड कहि अनुकूली ॥४६॥

(पंक्ति ३५४ के बाद)

केहे गोरी भोरी पिय मुख चद चकोरी ।
पिय बहु भाति निहोरी रस रास मै भकभोरी ॥४७॥
लज्जित रही नही कही सब सखियनि बातै ।
पिय की प्रेम उरभि रह्यौ मुरभचौ नही तातै ॥४८॥

(पंक्ति ३७२ के बाद)

तुम सौ कोऊ न भयौ न कोऊ आगै त्वैहै ।
अब त्वै असौ न कोऊ सुलभ हम सी नहि पैहै ॥४९॥

(पंक्ति ३९० के बाद)

गति विलास मृदु हास प्रेम बाछित तुमरौ पिय ।
मारत मननि मसूसै रूसै निकसत है जिय ॥५०॥
अज हूँ कछु नहि बिगरचौ वचक रचक आवहु ।
जो मुरली कौ भूठौ अघरामृत हमहि पियावहु ॥५१॥

(पंक्ति ४१४ के बाद)

कृष्ण भौह के भग काल आदिक थरहरही ।
गोपिन रिस भरि भौह तै मोहन आपुन डरही ॥५२॥

(पंक्ति ४४२ के बाद)

कौटिक रसना हौहि तुम्हारे रस जस ही गावै ।
हे बडभागिन अनुरागनि तऊ कोऊ पार नि पावै ॥५३॥

(पंक्ति ४९६ के बाद)

बरसति मंजुल अंजुल सुर तिय ऊ ल सी नी ।
निंदति अमृति पान ध्यान दंपति उर आनी ॥५४॥

दुदभि सरस बजामै गामै ताननि लामै ।
 गोपन की गति जति अति रति करत ऊ भ्रमावै ॥५५॥
 जगमग जगमग करत रगवगी मडल सोभा ।
 कोऊ थकित रस छकित लाल मुप निरपत लोभा ॥५६॥
 सनमुप निरपत लाल लाडली प्रेम बढामै ।
 कवि छवि उपमा दैन उरभि मुरझनि नहि पामै ॥५७॥

(पक्ति ५१२ के बाद)

सुघर राग रागनी मडल ढिग गुन गन गावत ।
 अपने अपने गुन गनहि सब प्रघट दिखावत ॥५८॥

(छंद १२ के बाद^१)

कोई आपन तै धसी लसी पिय अति रति मानी ।
 कोऊ पट गहि कटि गहि छवि सू पानी मै आनी ॥५९॥

(पक्ति ५७६ के बाद)

इह लीला गोपाल लाल की परम वास विधि ।
 शिव मुक सारद नारद तिन कीन महा निधि ॥६०॥

(पक्ति ५९४ के बाद)

यह वृदावन रग महल गिरधर प्यारी कौ ।
 पचाध्याई रास रजनि अति उजियारी कौ ॥६१॥
 जिन के हिय बसै दपति सपति जपति सोई ।
 सब संसार असार छार करि डारै सोई ॥६२॥

‘छ’ प्रति से उद्धृत

(पंक्ति २८ के बाद)

राजत अंग विभूति अनेक विवेक प्रकासक ।
नख सिख रूप अनूप सकल जनु अघ के नासक ॥६३॥

(पंक्ति १८० के बाद)

कुल तिय को यह धरम, सुतिन मिलि आगम गावै ।
आरति सो निज पतिहि सेय, पति लोकहि पावै ॥६४॥

(पंक्ति २०० के बाद)

बिस्व विमोहँन रूप सुघर, यह पिया तिहारों ।
धरमन हूँ को धरम, मिलन ब्रजराज दुलारों ॥६५॥

(पंक्ति २४० के बाद)

जुही चमेली चारु कुद नव पल्लव वेली ।
सुक पिक मोर चकोर कोकिला करि रही केली ॥६६॥

(पंक्ति २८८ के बाद)

अहो चम्पक अहो कुसुम तिहारी छवि है न्यारी ।
नेक बतावहु जहाँ हिय हरि कुजबिहारी ॥६७॥

(पंक्ति २९० के बाद)

अहो बस ! वर बस, कहं देखे हे हरि ! तुम ।
गोप बस, अवतस, बिना सब दीन हीन हम ॥६८॥

(पंक्ति २९४ के बाद)

हे जमुना सब जानि पूछि तुम हठहि गहति हो ।
जो जल जग उद्धार, ताहि तुम प्रगट करत हो ॥६९॥

(छंद ३६ के बाद^१)

छिन बैठत छिन उठत लोटते तिहि रज माही ।
थोरे जल ज्यौ मीन दीन आतुर अकुलाही ॥७०॥
सन्तत भय ते अभय करन कर-कमल तिहारे ।
कह घट जैहै नाथ तनक सिर छुवत हमारे ॥७१॥
स्रवन मात्र मंगलदायक अस और न होई ।
मोहन मुख निरखे बिन और सहाय न कोई ॥७२॥

(पंक्ति ४४६ के बाद)

एक एक ही देह मधुर मूरति रग भीने ।
कोटि जूथ ब्रज जुवति मनोरथ पूरन कीने ॥७३॥

(पंक्ति ५४० के बाद)

सब विटपन सँग लता लिपटि फूली भूली जल ।
कूँजन सारस हस बास विगलित अबुज दल ॥७४॥

(पंक्ति ५६० के बाद)

नैन हीन जो नायक ताको नव नागरि जस ।
मंद हसन सु कटाक्ष लसनि कहा वह जाने रस ॥७५॥

‘ज’ प्रति से उद्धृत

(पंक्ति ४० के बाद)

श्री सुक रूप अनूप हो, क्यो वरने कवि नन्द ।
अब बृन्दावन वरनिहौ जहँ बृन्दावन चन्द ॥७६॥

^१ दे. पृष्ठ ३५२

(पंक्ति १८४ के बाद)

सो हँसि हँसि ऐसे कह्यो, सुन्दर सब को राउ ।
हमरो परस तुमै भयौ, अपने घर को जाउ ॥७७॥

(पंक्ति २०४ के बाद)

अरु तुमरे कर कमल महा दूती यह मुरली ।
राखे सब के धर्म प्रेम अधरन रस जुरली ॥७८॥

(पंक्ति २७० के बाद)

कुञ्ज कुञ्ज दूढत फिरी, खोजत दीनदयाल ।
प्राणनाथ पाये नहीं विकल भयी ब्रज बाल ॥७९॥

(पंक्ति ३३६ के बाद)

पिया संग एकात रस, बिलसत राधा नारि ।
कध चढन हरि सो कह्यो, या ते तजी मुरारि^१ ॥८०॥

(पंक्ति ४३६ के बाद)

जे भजते को भजै आपने स्वार्थ के हित ।
जैसे पसू परस्पर चाटत मुख मानत चित ॥८१॥
जे अनभजते भजे वहै धर्मी सुख कारी ।
जैसे मात पिता जु करे सुत की रखवारी ॥८२॥
जे दोउन को तजै तिन्है ज्ञानी जानो तिय ।
आत्म काम अथवा गुरुद्रोही अकृतज्ञ हिय ॥८३॥

^१ पंक्ति ३३६ के बाद 'सिद्धांतपंचाध्यायी' का रोला ८६ देकर 'ज ने इस दोहे को दिया है।

(ग) पदावली

‘क’ प्रति से प्राप्त पद

वर्षोत्सव

(१)

भादों की अष्टमी आधी रात्र मे कान्ह भयो सव के मन भायो ।
जोरि बटोरि घरघो धन सोरी मे सोरी जसोदा जु लुटायो ॥
मोद सो गोद लिये हुलरावत प्रान पियारे को प्रान सो पायो ।
रोहनी मे भयो मोहनी मूरति नददास लखि हियो सिरायो ॥१॥

(२)

पुत्र भयो हे आज श्री ब्रजराज के ।
प्रथम यथामति वरन ही हो पुष्टि मारग रस रूप ।
भूतल प्रगट भये आय के हो श्री गोकुल के भूप ॥
श्री ब्रजराज को दूर गये दुख भाज ॥ श्री ब्रजराज के ॥
ब्रजवासी सब सुनतही हो आवत चहुँ दिश धाय ।
ले कावर दधि दूध की हो तन की सुधि विसराय ॥ श्री ॥
जिन छाड दिये घर काज ॥ श्री ॥
हरद दूध दधि अक्षत कुमकुम देत परस्पर सीच ।
भीर भई नंद द्वार मे हो, आगन माची कीच ॥ श्री ॥
तिन तजी लोक की लाज ॥ श्री ॥
नंद भूप कर नचावही हो देह दशा गये भूल ।
मंगल स्नान करावही मन पुत्र जन्म की फूल ॥
सुत सबहिन के शीरताज ॥ श्री ॥

गर्ग परासर बोल के हो जात कर्म कर नद ।
श्रुति पुरान गुन गावही हो प्रगटे आनंद कंद ॥
करत वेद धुनि गाज ॥ श्री ॥

चदन भवन लिपावही हो धरत साथिये चीति ।
मोतिन चोक पुरावही हो करी वेद विधि रीत ॥
कलश लिये सब साज ॥ श्री ॥

दुदुभी देव बजावही हो चहुँ दिश घुरे निशान ।
बोहो विध बाजे बाजही हो करत सप्त सुर गान ॥
गावत सहज समाज ॥ श्री ॥

देत असीस सबे ब्रजनारी जसुमति कुख सिंगाय ।
मगल साज सिंगार सुभग तन मेर धरत ले आय ॥
चरन नूपुर धुनि राज ॥ श्री ॥

जाचक जन मनिमाल पेहेराइ बिप्रन दीनी गाय ।
सोना मोती हीरा पन्ना दीये भडार लुटाय ॥
देत दान ब्रजराज ॥ श्री ॥

श्री बृषभान आदि गोपन को वोहोत करचौ सनमान ।
प्रकटचो नंददास को ठाकुर देत अभय पद दान ॥ श्री ॥२॥

(३)

प्रगटचो आनंद कद गोकुल गोपाल भयो
आइ निधि नद के गृह अखिल भवन की ॥
सजल जलद स्याम बरन सोभित अति
चरन कमल उपमा को नाहिन कोउ देउं कवन की ॥
छिरकत दधि हरद बाल फूले फिरत ग्वाल
सबे ले चली सब दूध दह्यो भवन भवन की ॥

नददास बदी जस द्वार रह्यो ठाडो गावे महिमा
कछु उग्र रचितर माखन की ॥३॥

(४)

ए री सखी प्रकटे कृष्ण मुरारि,
ब्रज घर घर आनद भयो दधिकादो आगन नद के ।
ए री सखी बाजत ताल मृदग ओर बाजे सब साजि के ।
भवन भीर ब्रजनारि पूत भयो ब्रजराज के ॥
घोष घोष ते वाम बसनन सजि सजि के गई ।
रोहिनी महा बड भागि आदर दे भीतर लई ॥
बिछुवन के भनकार गलिन गलिन प्रति ह्वै रहे ।
हाथन कचन थार उर पर श्रमकन च्वै रहे ॥
ग्वाल गोपिका जात रावरो सगरो भरि रह्यो ।
फूले अग न मात सबन को भागि उघरि रह्यो ॥
जहा ब्रजरानी आप सेन कीयो डोटा भये ।
तहा कुतूहल होत मिलि जुवती जूथन गये ॥
निरखि कमल मुख चारु आनंद मय मूरति भई ।
लये अंचल पट छोर मन भाई असीसे दई ॥
'राय चोक मे घेरि छिरकत दधि हरदी मेलि ।
पकरि पकरि के ग्वाल बोल लेत भुज भुजन पेलि ॥
कावरि मथना माट अगनित गिने नही जात हे ।
धरे भरे सब ठोर कहा लो सदन समात हे ॥
होत परस्पर मार माखन के गेदुक करे ।
एक एक कू ताकि वदन अग लेपत खरे ॥
ऊपर ते दधि दूध शीश सीसन गागरि ढरे ।
घोटुन लो भई कीच रपटि रपटि सगरे परे ॥

ब्रज गोपिन के चीर भीज लगे अंग अंग सो ।
 गावत हे जुरि भुड अपने अपने रग सो ॥
 हो हो बोले ग्वाल हेरी दे दे गावही ।
 जोरि जोरि सब बाह बाबा नद नचावही ॥
 नंदराय बड भाग नाचत मे देखत बने ।
 फिरत मंडलाकार अंग अंग सुख मे सने ॥
 चिबुक केश सब स्वेत उर पर सगरे छे रहे ।
 रग कुमकुमा रग दधि दूधन उरभे रहे ॥
 भाल विशाल रसाल फेटा शीस सुहावनो ।
 थोदि थलक ओर चाल नाचे मृदग मिलावनो ॥
 गहि गहि के भुज मूल रहे गोप सुख मानि के ।
 रपटि परे जिन नंद सावधान यह जानि के ॥
 आगन उदधि आनंद पक चढ्यो कटि लो भयो ।
 दई पनारी खुलाइ सरिता ज्यो वीथनि गयो ॥
 भानु सुता मे जाइ मिल्यो रग आनद मे ।
 कलिद नंदिनी आप सुख लूटत यह फद मे ॥
 यह ओसर सब साधि घोष नृपति जू न्हाइयो ।
 जो वरसोदी खात ते सब विप्र बुलाइयो ॥
 पूजा पितर कराय दान करत बहु भाय सो ।
 घर के मागध सूत भगरत हे ब्रजराय सो ॥
 भेटत सगरी रारि मन धन देत अघाइ के ।
 करत बहुत सनमान भूषन पट पहराय के ॥
 विधि सो गाइ सिगारि दई द्विजन के ठाठ सो ।
 जो मांगो सो देहुं कहत नंद विप्र भाट सो ॥

अभरत अबर छाया सहस्र पाच दश आइयो ।
 हसि हसि रोहिणी आप ब्रज तरुनी पहराइयो ॥
 घर घर घुरत निसान कही न जात कछूये जिय की ।
 मंगलमय ब्रजदेश फिरत दुहाई गाज की ॥
 ब्रज दशा को रूप कहा कहू सखी या समे ।
 निरखि निरखि नंददास नृत्य करत हे ता समे ॥४॥

(५)

बधाई री बाजत आज सुहाई श्री गोकुलराज के धाम ।
 रानी जसुमति ढोटा जायो हे मोहन सुंदर स्याम ॥
 सुनि सब गोप घोष के वासी चले वर वसन बनाय ।
 तापुर की मंगल ब्रज वीथनि भीर न निकस्यो जाय ॥
 आई सब गोप वधू मिलि साथन हाथन कंचन थार ।
 कमल वदन सब बनी कमला सी भलकत कुडल हार ॥
 नाचत ग्वाल करत कुतूहल दधि घृत खोरे गात ।
 देत मगाय वसन पट भूषण फूले अग न समात ॥
 जो जाके मन हुती कामना सो पूजाई नदराय ।
 नंददास को दई कृपा करि अपने ललन की बलाय ॥५॥

(६)

श्री ब्रजराज के आगन बाजत रंग बधाइ,
 श्रवन सुनत सब गोपिका आतुर देखन आई ॥
 बंद भादो आठे दिना अर्धनीशा बुधवारी,
 कौलव कर्ण रोहीणी जन्मे हे नंद कुमार ॥
 गोप ओप सो राजत आये हे तीही काल,
 नाचत करत कोलाहल वारत मुक्ता माल ॥

बाजत दुदभी भेरी पटह नीशान सोहाय,
 दधी हरदी मील छिरकत आनंद मगल गाय ॥
 ध्वजा पताका तोरन द्वारे द्वारे बंधाय,
 कनक कलश शुभ मगल भुवन भुवन धराय ॥
 जाचक जुरी मिल आवत शब्द उच्चार,
 पुष्प वृष्टि सुरपति करे बोले जयजयकार ॥
 देत अशीश सबे मिलि मन मे मोद अपार,
 जसोमती सुत पर तन मन नंददास बलहार ॥६॥

(७)

नद को लाल व्रज पालने भूले ।
 कुटिल अलकावली तिलक गोरोचना चरण अगुष्ठ मुख किलकि फूले ।
 नेन अजन रेख भेख अभिराम सुठि कठ केहरि किकिनी कटि मूले ।
 नददासनि नाथ नद नदन कुवरि निरखि नागरि देह गेह भूले ॥७॥

(८)

सुंदर श्याम पालने भूले ।
 जसुमति माय निकट अति बेठी निरखि निरखि मन फूले ।
 भुभुना लेके बजावत रुचि सो लाल ही के अनुकूले ॥
 बदन चारु पर छूटी अलक रही देखी मिटत उर सुले ।
 अबुज पर मानहु अलि छोना धिरि आये बहु टुले ॥
 दसन दोउ उधरत जब हरि के कहा कहु सम तूले ।
 नददास घन मे ज्यो दामिनी चमकी डुरत कछु खूले ॥८॥

(९)

रग भिनि ढाढनि अति रुचि सो चारु मगलरा गावे हो ।
 लाल जन्म सुनी नाचत आइ भाभ मृदग बजावे हो ॥

उघटत मुख सगीत ललित गति देसी करी दीखरावे हो ।
चिरजीवो जसोदा तेरो सुत यो कही मोद बढावे हो ॥
सुनि सुनि रीझि रीझि ब्रजपति अति आनद उर न समावे हो ।
अपने लाल पर करि न्योछावर ढाढनि को पहेरावे हो ॥
देत असिस चली मंदिर ब्रजरानी नेग चुकावे हो ।
बारबार विलोकी ललन मुख नददास मन भावे हो ॥६॥

(१०)

कृष्ण जन्म सुनि अपने पति सो ढाढिन यो बोली जु ।
जाउ जाउ तुम नंद नृपति के दान कोठरी खोली जु ॥
तुमको मिलेगो वागो बीडा ओर दक्षणा भरि भोरी ।
हमकौ लैयो नख शिप गहनो जेहरि सहित एक जोरी ॥
लैयो कत जुगति सो लैयो हम चढिबे को डोली ।
छोटी सी भेस सुवन सीगन की टहल करन को गोली ॥
साज सहित एक घुडिला लैयो गैया दुध अतोली ।
सुंदर सो एक हस्ती लैयो हस्तिन सग अमोली ॥
सिज्या सहित एक टुलिया लैयो ओर पानन की ढोरी ।
बीरी करि करि मोहि खवावै लैयो संग तमोली ॥
जन्म जन्म काही नहीं जाच्यो फिरि नहीं माडो भोली ।
नददास नदराय कां ढाढी भयो अजाचिक ढोली ॥१०॥

(११)

माधो जु तनक सो वदन सदन शोभा को तनक भृकुटी पर तनक दिठोना ।
तनक लट्ठरी सोहे मुनिन के मन मोहे मानो कमल ढिग बेटे अलि छोना ॥
तनक सी रज लागी निरखत बड भागी कठ कठुला सोहे नख वधना ।
नददास प्रभ्यशोदा के आगन खेले जाको जस गाय गाय मुनि भये मगना ॥११॥

(१२)

निरजन अजन दिये सोहे नंद के आगन माई ।

सब के नेन प्रान प्रकासिकता के ढिग रच्यो चबोडा छाजे छबिन कही जाई ॥

निगम अगम जाको बोले सो अलवल कल कछू कहत बनाई ।

नंददास जाकी माया जगत भूल्यो सो भूल्यो अपनी परछाई ॥१२॥

(१३)

मो भोरी को मन भोरयो हे मन भावन विन ही गुन मन दोरयो हे ।

जुरि जुरि आय ब्रज की अथाइ चितवत ही चीत चोरयो हे ॥

आये चतुर मोही भोरावन ओरन देख अकोरयो हे ।

नंददाम प्रभु की चतुराई इत जोरयो इत तोरयो हे ॥१३॥

(१४)

छोटी सो कन्हैया एक मुरली मधुर छोटी ।

छोटे छोटे ग्वाल वाल छोटी पाग सिर की ॥

छोटे से कुडल कान मुनिन के छूटे ध्यान

छूटे पट छूटी लट छूटी अलकन की ॥

छोटी सी लकुट हाथ छोटे वच्छ लिये साथ

छोटे से बने री कान्ह गोपी देखन आई घर घर की ॥

नंददास प्रभु छोटे भेद भाव मोटे मोटे

खायो हे माखन शोभा देखो ये वदन की ॥१४॥

(१५)

छगन मगन बारे कन्हैया नेकु उरे धो आउ रे लाला ।

वन मे खेलन जात लाल व्हे रहे सब मलीन गात

अपने लाल की लेहुं वलाय रे लाला ॥

संग के लरिका सब बनि ठनि आये यो कहेंगे केसी हे तेरी माय रे लाला ॥
यशोदा गहत धाय बैया मोहन करत न्हैया न्हैया
नंददास वलि जाय रे लाला ॥१५॥

(१६)

एसो को है जो छुवे मेरी मटुकी अछूती दहेडी जमी ।
बिन मागे दियो न जाय मागे ते गारी खाइ केतेई करो उपाय
डराये डरत नहि मेरे ते गोरस की कहा धो कमी ॥
ओर को दह्यो छिलछिलो लागत मे ओट जमायो भर के तमी ।
नंददास प्रभु वडेई खवैया मेरे तो गोरस मे बहुत अमी ॥१६॥

(१७)

लाल तुम परे हमारे ख्याल, स्याम लाल दान ही दान भइ नकवानी ।
जब हम यहि व्योपार छाडी देहे दूध दही को तब ह्वे हे काहे के दानी ॥
तिहारी चितवनी सुनी हो लाडीले नीके हम पहीचानी ।
नंददास प्रभु ऐसे तुम व्योसेयो जेसी हम व्योसानी ॥१७॥

(१८)

कहो जू दान लेहो केसे हम तो देव गोवर्द्धन पूजन आई ।
कोउ दह्यो कोऊ मह्यो माखन जोरि जोरि आछो अछूतो लाई ॥
तुम्हे पहले केसे दीजे कान्हर जू तुम तो सबे फवी करत मन भाई ।
नंददास प्रभु तुमही परमेश्वर भये अब कछू नई ये चाल चलाई ॥१८॥

(१९)

काहे न आय आप देखो रानी जु अपने सुत के कर्म ।
भवन मे भाजन एक न रह्यो कहे ते हसि परी को को जाने वाको मर्म ॥

दिन दिन कछु कानि न राखत काहु की हानि कहो जु बसिबे को कोन धर्म ।
नददास प्रभु मैया के आगे साधु होय बेटे चोर को कहे न मर्म ॥१९॥

(२०)

गिरिधर रोकत पनघट घाट ।

जमुना जल जो भरि नीकसे डारि काकरी फोरत माट ॥
नख सिख ते सब अग भीजत तब कहेत बचन के साट ।
नददास प्रभु भले पठे हो यह विधि को आवे या वाट ॥२०॥

(२१)

एसे केसे कहीयतु ब्रज बधुवन सोइ ते आये धो पिछोडी ।
बरवट रोकत मो को करिहो कहा रिसाय कोहे बाबा की लोडी ॥
दिन दिन को पेडोरी माइ नही जानत कछु वातरी ओडी ।
नददास प्रभु वे त्रिय ओर जोन चाय सब तुम कीनी कनोडी ॥२१॥

(२२)

दान देउ ठहेरो इक ठैया ।

श्रमजल बिदु परत मुख पर ते बेठो आय कदम की छैया ॥
कुचकलशन को ढाक धरे क्यो चाखन देउ पलोटो पैया ।
यह रस तुम को नाही मिलेगो छाडो लाल हमारी बैया ॥
बहुत अवार भई घर जैहो मो को आज लडेगी मैया ।
माडो ओक प्याउ दधि मीठो बेग करो आवत बल भैया ॥
प्यारी दधि प्यावत करि हित सो श्याम सुदर पीवत न अघैयां ।
सुनो स्वाद कछु कहत न आवत नददास आनंद न समैया ॥२२॥

(२३)

कपि चलयो सीय सुधि को पुनि पायन तन लटक के ।
 रिपु को कटक विकट ताको चौथौ अंस पटक के ॥
 रथ सों रथ भटन सो भट चटपटी सी चटक के ।
 जारि के गढ लंक विकट रावण मुकुट भटक के ॥
 किलेक छेल तंदुल से छरे ले ले मूशल मटक के ।
 गिरि सो गज गेद सी गहि डायों भूमि भटक के ॥
 सुरपुर आनद उमग उर सो आट अटक के ।
 नददास वहुयों नट ज्यो उलट काछो समुद्र सटक के ॥२३॥

(२४)

यह विधि पार पोहोच्यो पवन पूत दूत श्री रघुनाथ को ।
 छूट्यो जनो धनुष ते सर परम सुभट हाथ को ॥
 थर थर जहा करत मीच एसी राजधानी ।
 पेठन तिहि लक बक कपि न बंका मानी ॥
 पुर मंदिर गिरि कदर सुदर मणिराई ।
 रावण रणवास ढूढ्यो कहु न सीय पाइ ॥
 तब कह्यो यह जेतिक नगरी सगरी उचक लीजे ।
 उहाई ले जाय रामहि जानकी ढूढ दीजे ॥
 केधा दशकध अथ इहाई ले मारो ।
 केधो रघुवीर आगे बाध रिपुहि डारो ॥
 यह बिधि बल अपनो कपि सोचत जिय माह ।
 नंददास प्रभु की मोहि एसी आज्ञा नाही ॥२४॥

(२५)

राजत रंग भिनी भामिनी सावरे प्रीतम संग ।
 निरतत चचल गति कही न परत दुति
 लहलहान सीखी नव घन जहा दामिनी ॥
 जुवति मडल मे मध्य रूप गुन की अवधि
 ताते पावे संगीत की स्वामिनी ।
 राग रगनी की रानी ततथेइ की कल बानी
 कछुक सीखी कोकिला की कामिनी ।
 नंददास रीझे तहा अपने पोवार्यो
 जहा रवन रमा अभिरामनी ॥२५॥

(२६)

चटकीलो पट लपटानो कटि, बसीवट जमुना के त्रट ठाडो नागर नट ।
 मुकुट लटक ओर कुडल चटक भ्रकुटी विकट तामे अटक्यो री मेरो मन ॥
 चरण लपेटे आछे कनक लकुट चटकीली बनमाल ॥
 कर टेके द्रुम डाल टेडे ठाडे नंदलाल छव छाई घटपट ॥
 नंददास प्रभु प्यारी बिन देखे गोपी ग्वाल टारी न टरत याते
 निपट निकट आवे सोधे की लपट ॥२६॥

(२७)

आय क्यो न देखो लाल अपनी प्यारी की छवि
 चादनी मे पोडे याते चदहु रह्यो लजाय ।
 मंडप पहोप माल नीलाबर अंबर
 नासिका को देख उडुगन सकुचाय ॥

प्राये हे निकट लाल रीझ रहे ललचाय
 वार वार देख देख मुसकी लेत वलाय ।
 नंददास प्रभु पिय अधरन वीरी लाय
 रसिक विहारिन प्यारी चोक परी मुसकाय ॥२७॥

(२८)

केलि करे प्यारी पिय पोढे लख चादन मे
 नेह मो लग गये जोवन के जोस के ।
 अंगिया दरक गड मानो प्रात देखवे को
 चाँच काढि चक्रवाक काम तर रोस मे ॥
 आरस सो मोरी बाँह दोउ कुच गहे
 पिय रति के खीलोना मानो ढापि दीये ओस मे ।
 रूप के सरोवर मे नददास देख अली
 चकइ के छोना बेठे कचन के कोस मे ॥२८॥

(२९)

रेन रीझी हो प्यारे हरि को रास देख
 याही ते अधिक बढ गई गेन ।
 चल न सकत हरि रूप विमोही रही
 एकटक आछे नक्षत्र नयन ॥
 छवि सो छूटत मानो बिच बिच तारे हीरा के
 आभूषण पर वार डारो जग एन ।
 चदा हू थकित भयो देख के लालच
 रह्यो हूँ देख के परम चैन ॥

जो लो इच्छा भई तोलो नाचे हे गोपी गोपाल
 अद्भुत गति मोपे कही न परत वेन ।
 नददास प्रभु को विलास रास देखवे कु
 मन्मथ हू को मन मथ्योरी मेन ॥२९॥

(३०)

खेलत रास रमिक रस नागर ।
 मडित नव नागरी निकर वर रूप को आगर ॥
 विकसत वन वनिता राजत जानो शरद अमल ।
 राका सुभग सरोवर मानो फूले हे कमल ॥
 नवल किशोर सुदर सावल अग कचन तन ब्रज वाला ।
 मानो कचन मणि मरकत मणि वृंदावन पहेरी माला ॥
 या छवि की उपमा कहिवे को एसो कवि कोन पढयो हे ।
 नददास प्रभु को कौतुक लख काम को काम बढयो हे ॥३०॥

(३१)

बड़े खिरक मे धूमरि खेलत ।
 मोहन लाल खिलावत रंग भर गगन गरज घटा ध्वनि पेलत ॥
 उसर जात ब्रजराज लाडिले धेनु डाढ जव मेलत ।
 नददास प्रभु मुदित नदरानी ही ही रस सागर मे भेलत ॥३१॥

(३२)

कान्ह कुवर के कर पल्लव पर मानो गोवर्द्धन नृत्य करे ।
 ज्यो ज्यो तान उठत मुरली की त्यो त्यो लालन अधर धरे ॥
 मेघ मृदगी मृदग बजावत दामिनि दमक मानो दीप जरे ।
 ग्वाल ताल दे नीके गावत गायन के संग सुर जो भरे ॥

देत असीस सकल गोपीजन वरखा को जल अमित भरे ।
अति अद्भुत अवसर गिरिधर को नददास के दुख हरे ॥३२॥

(३३)

गजे गिरिगज आज गाय गोग जाके तर
नेक सी वानिक बने धरे भेग नटवर ।
लियो हे उठाय ब्रजगज के कुवर कर
अरग थरग राग्यो मुरली की फूक पर ॥
बगसे प्रलय के पानी न जात काहू पे बखाली
बज्र हू ते अति भारी टूटत हे तर तर ।
तापर के खग मृग चालक चकोर मोर
बूद न काहू के लागि भयो हे कोतुक भर ॥
प्रभु जु की प्रभुताई इंद्रहु की जडताई
मुनि हगे हेर हेर हगि हमे हर हर ।
नददास प्रभु गिरिधारी जू की हामो खेल
उदर को गर्व गयो भये हे दूर घर ॥३३॥

(३४)

केसे केसे गाय चराइ गिरिधर ।
गोरज मुखते भार जसोदा लेत बलैया फेर कर ॥
कहा रहे तुम घाम छाह मध्य घन बग्यो बल समेत सुदर वर ॥
नददास प्रभु कहत जननी सो हम न डरे देखी बादर ॥३४॥

(३५)

सजनी आनद उर न समाऊ ।
बरसाने वृषभान लगन लिखी पठई हे नद गाऊ ॥

धौरी धूमरी धेनू विविध रंग शोभित ठाऊ ठाऊं ।
 भूषण मणि गण पार नाहिने सो धन देख लुभाऊ ॥
 नंददास लाल गिरधर की दुलहनि पर बल जाऊ ॥३५॥

(३६)

अरी चल दूलहे देखन जाय ।
 सुदर श्याम माधुरी मूरति अँखिया निरख सिराय ॥
 जुरि आई ब्रजनारि नवेली मोहन दिसि मुसिक्याय ।
 मोर बन्यो सिर कानन कुडल मरुवटि मुखहि सुहाय ॥
 पहेरे जरकसी पट आभूषण, अग अग मन अरुभाय ।
 तेसीये बनी बरात छबीली जगमग रग चुचाय ॥
 गोप सभा सरवर मे फूले कमल परम भूषटाय ।
 नंददास गोपिन के दृग अलि लपटन को अकुलाय ॥३६॥

(३७)

दूलह गिरिधर लाल छबीलो दुलहिन राधा गोरी जू ।
 जिन देखत मन मे जिय लाजत एसी बनी है यह जोरी ॥
 रत्नजटि को बन्यो सेहरो उर मोतिन की माला ।
 देखत वदन श्याम सुदर को मोहि रही ब्रज बाला ॥
 मदनमोहन राजत घोरा पर और बराती सगा ।
 बाजत ढोल दमामा चहू दिश ताल मृदंग उपगा ॥
 जाय जुरे वृषभान की पौरी उत ते सब मिल आए ।
 टीको करी आरती उतारी मडप मे पधराए ॥
 पढत वेद चहू दिश विप्र जन भये सबन मन भाये ।
 हथलेवा करि हरि राधासो मंगल चार पढाये ॥

व्याह भयो मोहन को जबही यशोमति देत वधाई ।
चिरजीयो भूतल यह जोरी नंददास बलि जाई ॥३७॥

(३८)

लाल बने रंग भीने गिरिधर लाल बने रंग भीने ॥ ध्रु० ॥
पिय के पाग केशरी सोहे । देखत रति पति को मन मोहे ॥
तापर येक चंद्रिका धारी । प्यारी जू अपने हाथ संवारी ॥
पिय के अरुण नयन मन भाये । प्यारी बहु विधि लाड लड़ाये ॥
पिय की पीक कपोल विराजे । अधरन अजन रेखा छाजे ॥
पिय के उरसी मगरजी माला । बोलत शिथिल बचन नद लाला ॥
छवि पर नंददास बलहारी । अग अग राचे कुज विहारी ॥३८॥

(३९)

लाडिली न माने लाल आप पाउ धारो ।
जैसे हठ तजे प्यारी सो यतन विचारो ॥
बाते तो बनाय कही जेती मति मेरी ।
एकहु न माने लाल ऐसी त्रिय तेरी ॥
अपनी चोप के काजे सखी भेख कीनो ।
भूषन बसन साज बीना कर लीनो ॥
उतने आवत देख चक्रत निहारी ।
कोन गाम बसत हो रूप की उजारी ॥
गाम तो हे नंदगाम तहा की हो प्यारी ।
नाम तो हे श्यामा सखी तेरे हितकारी ॥
कर सो कर जोरे श्यामा निकट बैठाइ री ।
सप्त सुरन साज मिल सुलप बजाइ री ॥

रीझ के मोती माल उर पहरावे ।
 एसोइ हमारो पिय सामरो वजावे ॥
 जोइ चाहे प्यारी सोइ माग लीजे ।
 रसे मनमोहन सो मान नही कीजे ॥
 मुख सो मुख जोर श्याम दरपन दिखावे ।
 निरखि छबीली छबी प्रति बिब दुरावे ॥
 छिद्र तो उघर आयो हरि पीठ दीनी ।
 नंददास प्रभु प्यारो आको भर लीनी ॥३६॥

(४०)

श्री विट्ठल मंगल रूप निधान ।
 कोटि अमृत सम हँस मृदु बोलन सब के जीवन प्रान ॥
 करुणा सिंधु उदार कल्पतरु देत अभय पद दान ।
 गरण आये की लाज चहू दिश वाजे प्रकट निशान ।
 तुमारे चरण कमल के मकरद मन मधूकर लपटान ।
 नंददास प्रभु द्वारे रटत हे रुचत नाहि कछु आन ॥४०॥

(४१)

भजो श्री वल्लभ सुत के चरण ।
 नंद कुमार भजन सुखदायक पतितन पावन करण ॥
 दूरि किये कलि कपट वेद विधि मत प्रचंड विस्तरण ।
 अति प्रताप महिमा समाज यश शोक ताप भय अघहरण ॥
 पुष्टि मर्यादा भजन रस सेवा निज जन पोषण भरण ।
 नंददास प्रभु प्रकट रूप धर श्री विट्ठलेश गिरिवर धरण ॥४१॥

(४२)

भोर भये भोगी रस विलस भयो ठाडो ।

जागे जामिनी जगाय भाभिनि अग अंग समाय

स्वास शिथिलनी डर देत आलिंगन गाढो ।

धुमत रस मत्त गमन सुवेहु न डग परत वचन

पगन छिनु छिनु चित बोप मोजन मोजन मानो वाढो ॥

अति रस भरे रसिक राय शोभा बरनी न जाय

बलि बलि बिहारी नददास प्रेम रग काढो ॥४२॥

(४३)

कान्ह अटा चढ चग उडावत मे अपने आगनहू ते हेर्यो ।

लोचन चार भये नदनदन काम कटाच्छ कियो भटु मेरो ॥

किधो रही समझाय सखी री अटक न मानत यह मन मेरो ।

नंददास प्रभु कव धो मिलेगे खीचत दोर किधो मन मेरो ॥४३॥

(४४)

फूलन को मुकुट बन्यो फूलन को पिछोरा

तन शोभित अति प्यारो वर फूलन को शृंगार ।

कंठ फूल बागो फेटा फूल फूल गादी गेदुवा

फूल हँस बैठे है श्यामा श्याम शोभा को नही पार ॥

फूलन को आभूषण बसन विराजत

फूलन के फोदा फूल उरहार ।

नंददास प्रभु फुल निरखत सुधि भूले ।

शुकदेव नारद शारद रटन वारंवार ॥४४॥

(४५)

फुलन के मेहेल बने फुलन बितान तने
 फुलन के छाजे भरखा फूलन के किवार हे ।
 फुलन की गादी गुथी तकिया फुलन के
 बैठे श्यामा श्याम शोभित अपार हे ॥
 फूलन के वसन आभूषण विराजे
 फुलन के फोदा फुल उरहार हे ।
 नददास प्रभु फुले निरखत सुधि बुधि भूले
 शुकदेव नारद शारद रटत वारवार हे ॥४५॥

(४६)

फुलनसो बेनी गृही फुलन की अंगिया
 फुलन की सारी मानो फुली फुलवारी ।
 फुलन की दुलरी हमेल हार
 फुलन की चोली चार ओर गजरारी ॥
 फुलन के तरौता कुडल फुलन की किकिणी सरस सँवारी ।
 फूल महल मे फुली सी राधा प्यारी फुले नंददास जाय बलहारी ॥४६॥

(४७)

छबीली राधे पूज लेनी गन गोर ।
 ललिता बिसाखा सब मिलि नीकसी आइ वृषभान की पोर ॥
 सधन कुज गहवर वन नीको मिल्यो नंद किशोर ।
 नददास प्रभु आये अचानक घेर लीयो चहुं ओर ॥४७॥

(४८)

लक्ष्मण घर बाजत आज बवाई ।

पूरण ब्रह्म प्रकट पुरुषोत्तम श्री वल्लभ सुखदाई ॥

नाचत तरुण वृद्ध और बालक उर आनंद न समाई ।

जय जय यश वदीजन बोलत विप्रन बेद पढाई ॥

हरद दूब अक्षत दधि कुकुम आगन कीच मचाई ।

बदन माला मालिन बाधत मोतिन चौकु पुराई ॥

फूले द्विज वरदान देत हे पट भूषण पहराई ।

मिट गये द्वंद नददास के मन वाछित फल पाई ॥४८॥

(४९)

चंदन भवन मध करत व्याह परोस धरी हे कचन थारी ।

हस हस जात देत मोहन कर बहु बिजन जसुमति महतारी ॥

चंदन अंग अंग लेप कीए तन लागत हे सुखकारी ।

नददास चरन रज सेवक तन मन डारत वारी ॥४९॥

(५०)

अक्षय तृतीया अक्षय सुख निधि पिय को पीव चढावे चदन ।

तब ही प्रीया सिंगारी नारी अरगजा घोरि सुघर नद नदन ॥

ले दरपन निरखे जु परस्पर रीझ रीझ रही जो वदन ।

नददास प्रभु पिय रस भीजे जुवतिन सुख विरह दुख कदन ॥५०॥

(५१)

चंदन पहर नाव हरि बैठे सग वृषभान दुलारी हो ।

यमुना पुलीन शोभित तहा खेलत लाल विहारी हो ॥

त्रिविध पवन बहत सुखदायक सितल मद सुगंध हो ।
 कमल प्रकाश कुसुम बहु फुले जहा राजन नद नदा हो ॥
 अक्षय तृतीया अक्षय लीला सग राधिका प्यारी हो ।
 करत विहार सब सखी सो नददास बलहारी हो ॥५१॥

(५२)

बल वामन हो जग पावन करण ।
 कही न परत शोभा नील मणिन की सी गोभा गगन गयो जब सुंदर चरण ॥
 वन्यो हे भेद अति उतते गंगा की धार धमी हे धरनि उज्ज्वल वरण ।
 इतते पद की जोति मानो कालिंदी की धार चढ़ी हे प्रमत्तपुर पाप हरण ॥
 रहे हे चक्रत चाहि सुर नर मुनिवर दुह दिश नेह ग्रान किये वरण ।
 नददास जाके चरित्र दुरित दवन रचक श्रवण मिटे जन्म मरण ॥५२॥

(५३)

देखो माई नद नदन रथ ही विराजे ।
 सग सोहे वृषभान नंदनी देखत मन्मथ लाजे ॥
 ब्रज जन सब मिल रथ खेचत हे शोभा अदभुत छावे ।
 सीतल भोगधर करत आरती नददास गुण गावे ॥५३॥

(५४)

बेठी अटा मानो चद छटा सी सोच करत दृग वारन बोरे ।
 जाय कहो कोउ मेरे भैया सो इते भूपति काहेन जोरे ॥
 नंद नंदन ब्रज चद विराजे ते देखे ते ते गोरे ।
 नंददास प्रभु सजलताई सीतलताई हार काम न आवत ओरे ॥५४॥

(५५)

घुमड रहे बादर सगरी निशा के अहो महेरि लाले दीजे जगाय ।
वर्षा रितु कहु वरसे अचानक बालक जाय डराय ॥
चिरैयन के चुह चहात जसोदा कर अपुनो निरवरि घर काज ।
दधि मथन बेठि लावो दुध दही घोस वटत ब्रजराज ॥
बछरा छोर बलभद्र जगाउं दुहि दुहि लावत हे सब गाय ।
नंददास लाल जगाय तिहि छिन लीनो अक जसोदा माय ॥५५॥

(५६)

आगन उजारे बैठ करोहो कलेउ लाल भवन अधेरो हे रे दोउ भैया ।
घुमड़ी घन घटा आइ चहु दिश ते छाइ हसत खडे खडे दोउ घैया ॥
माखन मिथ्री ओर ओटचो पय प्यावत मथ मथ दुधकी धैया ।
एसो सुख देख नंददास प्रभु की पुन पुन लेत वलैया ॥५६॥

(५७)

जहा तहा बोलत मोर सुहाये ।
श्रवण रमण भवन वृंदावन घोर घोर घन आये ॥
नेन्ही नेन्ही बूदन वरपन लाग्यो ब्रज मडल मे छाये ।
नंददास प्रभु सग सखा लिये कुजत मुरलि बजाये ॥५७॥

(५८)

नीकसी ठाडी भई री चढ नवल धवल महेल रगीली आली मनमाझ ।
तेसी उनये तेसीये बूदन तेसीये कुसुभी सारी तेसीये फुली हे साज ॥
कोउ प्रबीन सो बीन बजावत कोउ स्वर भीने भनकावत भाझ ।
नंददास लटकत पिय प्यारी छब्री रची विरंची मानो निपुणता भई बाँझ ॥५८॥

(५६)

नयो नेह नयो मेह नई भूमि हरियारी नवल दूल्हो प्यारो नवल दुलहैया ।
 नवल चातक मोर कोकिल करत रोर नवल युगल भोर नवल उलैया ॥
 नवल कसुभी सारी पेहेरे श्रीराधा प्यारी ओढनी के अग सग सरस सुलैया ।
 नददास बलहारी छवि पर वारि डारी नवल ही पाग वनी नवल कुलहैया ॥५६॥

(६०)

आगम गहेर गहेर गरज सुन औचक बाल सलोनी ।
 प्यारी के अक मे दुर रही ऐसे जेमे केहरि कंदर मदिर ध्वनि सुन
 मृगी अक मृग छोनी ॥
 नेक न धीरज धरे हीयो थरथर करे सोचत मन ही मन जेसे मुख मोनी ।
 नददास प्रभु बेग चलो क्यो न भई जो कहा आगे होनी ॥६०॥

(६१)

आयो आगम नरेश देश देश मे आनद भयो
 मन्मथ अपनी सहाय कु बुलायो ।
 मोरन की टेर सुन कोकिला कुलाहल
 तेसोई दादुर हिलमिल सुर गायो ॥
 चढ्यो घन मत्त हाथी पवन महावत साथी
 अकुश वकुश दे दे चपला चलायो ।
 दामिनी ध्वजा पताका फरहरात सोभा बाढी
 गरज गरज धो धो दमामा बजायो ॥
 आगे आगे धाय धाय वादर वर्षत आय
 व्यारन की बहुकन ठोर ठोर छिरकायो ।

हरी हरी भूमि पर बूदन की शोभा बाढी
 वरण रग बिछोना बिछायो ॥
 बाधेहे विरही चोर कीनीहे जतन रोर
 सजोगी साधन सो मिल अति सचुपायो ।
 नददास प्रभु नदनद को आज्ञाकारी
 अति सुखकारी ब्रजवासी मन भायो ॥६१॥

(६२)

रग मेहेल रग राग तहा बेठे दूल्हे लाल तू चल चतुर रगीली राधे ।
 अति विचित्र कियो साज तो सो रग रहेगो आज
 तेसेई दादुर मोर पपैया फूले फूल द्रुम वाग ॥
 नव सत अग साजे पेहेर कमुभी सारी
 ता पर रीझ लाल बीच बीच सोधे दाग ।
 दूती के वचन सुन उठ चलि पिय पे
 यह छवि निरख गाये नंददास वड भाग ॥६२॥

(६३)

अपने हाथ पातन को छतना कोउ ढाप डला पर दीजे हो ।
 सुन बलराम श्याम जित चली हो तित आगे ह्वे लीजे हो ॥
 पवन झकोर बुदे लागी टपकन अब अवार क्यो कीजे हो ।
 नंददास प्रभु फिर न स्वाद कछु जो व्यजन रस भीजे हो ॥६३॥

(६४)

श्याम चल कुजन मे आये दोर ।
 ऊँचे चढि टेस्त ग्वालन को आवो सबे मेरि ओर ॥

गायन टेर दइ बलदाउन चोकि चमकि आइ डक ठोर ।
नददास प्रभु भोजन करबे को बेठी सखा मडली जोर ॥६४॥

(६५)

आई जु श्याम घटा घन घोर
चहु दिश ते वरखत आवत वडी वड़ी बुदन ।
बोही प्रकार बीजन पठये नाना विध सवार
बेठे हो फेलाय के से लागे हो अब दांना पातर गुदन ॥
प्रबल प्रकाश आकाश भये आय मील्यो
चमचमात बीज लगत डरपावन उडगन ।
नददास प्रभु संकेत पत वडवान दीये
लाल डला भाजन भर आतुर के लागे मुदन ॥६५॥

(६६)

चहु दीश टपकन लागी बुदे ।
बहो छारन बिजन भीजेगे द्वार पिछोर मुदे ॥
भोजन करत शीश धर छतना याही सुख हित गुदे ।
वहे सुचेत नददास प्रभु कोन कीच अब खुदे ॥६६॥

(६७)

मोहन जेमत छाक ग्वाल मडली माह ।
लुमभुम रही देखी राधा सब कदव की छाह ॥
व्यजन देत निहारे कर कर कोउ लेत कोउ करत जुनाह ।
नंददास आस जुठन की फुले अंग न समाह ॥६७॥

(६८)

भोजन भयो लाल नीकी बिधि सो सदन कुज की माह ।
गरज गरज घन बरस्यो प्रबल अति कछु हम जान्यो नाह ॥
का अचवन अब देखो ब्रज शोभा कदव खड बन माह ।
नददास प्रभु तुम चिरजीयो हम नित्य जुठन खाह ॥६८॥

(६९)

दूल्हे दुलहिन सुरग हिडोरे भूले प्रथम समागम अहो गठ जोरे ।
चरण खंभ भुज करिमयार डाडी चारू कमलकर रमक हुलसे दोउ ओरे ॥
सुभग सेज पटुली सुख बाढ्यो मरुवा बेलन प्राची ओरे ।
नददास प्रभु रस बरखत जहा नवघन दामिनि के अनुहोरे ॥६९॥

(७०)

भुलत प्रीतम सग जान न परत दीन जामीनी ।
गोपी सब चहुं ओर भुलावत थोरे थोरे रस बरखत मानो घन दामीनी ॥
नवल मच्यो नेहेरा सोहत शिश सेहेरा कसोटी बसन
प्रीतम सग कनक कामीनी ।
सब हरत पिय प्यारी जहा नददास वारो तहा
गरब गोपाल सग श्यामा गजगामीनी ॥७०॥

(७१)

भुलावत पचरंग डोरी ब्रज वधु ।
नंद नदन मुख अवलोकित त्रिय संग राधिका गोरी ॥
गुलाबी सारी कंचुकी उपर गुलाबी सीगर कीसोरी ।
गुलाबी लाल उपरना लाल अंग चमकत दामिनी ओर ॥

गुलाबी भुम छाया रहो रंगना बरखत बुदन थोरी ।
नंददास नंद नंदन सग क्रीडत गोपी जन लखी कोरी ॥७१॥

(७२)

गुलाबी कुजन छवि छाई भुलत दोउ ।
गुलाबी फूल वीकसित द्रुम गुलाबी लता उरभाई ॥
गुलाबी बसन उपरना पाघ अरु केकी पीछ सुहाई ।
गुलाबी माल उर पर लहिरति गुलाबी वदन भुक आई ॥
गुलाबी अरुन मुख दरपन नीहारत परस्पर मुसकाई ।
नंददास जुवती सब वारत तन मन धनि सरसाई ॥७२॥

(७३)

हिडोरे भूलत बंसी वाला ।
मधुवन सघन कदंब की डारे भुलत भुक्त गोपाला ॥
कचन खंभ सुभग चहुं डाडी पटली परम रसाला ।
श्वेत बिछोना विछायो तापर बैठे मदन गोपाला ॥
भुलन को आई ब्रज बनिता बोलत बचन रसाला ।
नंददास नंदनंदन मुरली सुन मग्न होत ब्रज वाला ॥७३॥

(७४)

भूलत राधा मोहन कालिंदी के कूल ।
सघन लता सुहावनी चहुं दिश फुले फुल ॥
सखी जुरी चहुं दिश ते कमल नयन की ओर ।
बोलत बचन अमृत मय नंददास चित चोर ॥७४॥

(७५)

माई आज तो हिंडोरे भूले छैया कदम की ।

गोपी सब ठाडी मानो चित्र के सदन की ॥

देखत रंगीले नयन बोलत मधुरे बेन

मोहे सब कोटि कास छत्रीले बदन की ।

गावत मधुर ध्वनि मोहे सुर नर मुनि

शंकर से महायोगी तारी छटी तिनकी ॥

त्रिविध समीर जहा वसीवट भूले तहा

मद मद गावे सखी राधा के रवन की ।

नंददास प्रभु जहा ललिता भुलावे तहा

भई मग्न सिधु शोभा देख स्याम घन की ॥७५॥

(७६)

माई भुलत नवल लाल भुलावत व्रज बाल

कालिंदी के तीर माई रच्यो हे हिंडोरना ।

तेसेई बोले री मोर क्रीडा करे चहूं ओर

तेमोई मधुर ध्वनि लाग्यो घन घोरना ॥

तेसेई फूले री फूल हरत मन के शूल

अलि गण गुजे माई मन के सलोलना ।

नददास प्रभु प्यारी जोरी अद्भुत भारी

देखवोई कीजे जेसे चंद्र को चकोरना ॥७६॥

(७७)

माई फूल को हिंडोरो बन्यो फूल रही यमुना ।

फूलन के खभ दोउ डाडी चार फूलन की

फूलन बनी मयार फूल रहे बेलना ॥

तामे भुले नदलाल सखी सब गावे ख्याल
 बाये अग राधा प्यारी फूल भई मगना ।
 फूले पशु पंछी सब देख ताप कटे तब
 फूले सब ग्वाल कटे दुख दृढ़ना ॥
 फूले घन घटा घोर कोकिला करत रोर
 छबि पर वार डारो कोटि अनंगना ।
 फूले सब देव मुनि ब्रह्मा करे वेद ध्वनि
 नददास फूले तहा करे बहुरंगना ॥७७॥

(७८)

माई फूलन को हिडोरो बन्यो फूल रही यमुना
 फूलन के खंभ दोउ फूलन की डाडी चार
 फूलन की चौकी बनी हीरा जगमगना ॥
 फूले अति बसीबट फूले हे यमुना तट
 सब सखी मिल गावे मन भयो मगना ।
 फूल सखी चहुँ ओरे भुलवत थोरे थोरे
 नददास फूले जहा मन भयो मगना ॥७८॥

(७९)

आली श्रावन की पून्यो हरि हरियारी भूमि सोहत पिया सग
 जूलूगी हो नवल हिडोरे ।
 वरसत मेह भट्ट लागत प्यारो मोहे सखी
 आपुने प्रीतम को हो प्रेम रग बोरे ॥
 पीत कुल्ही राजे चूनरी पीत सारी लहेगा
 पीत कंचुकि सोहे तन गोरे ।

भोटन में लोटपोट जूलत दोउ रग भरे
निरखी छवि नददास बल तून तोरे ॥७६॥

(८०)

राखी बाधत गर्ग श्याम कर ।
हीरा रत्न बिच बिच मानिक बिच बिच मुक्तन भर ॥
दक्षिणा देत नद पायलागत असीस देत गुरुजन सब द्विजवर ।
नंददास प्रभु जियो तहा लो ज्यो लो चद सूरज मारुतधर ॥८०॥

(८१)

सब अंग छीटे लागी नीको बन्यो वान ।
गोरा अगर अरगजा छिरकत खेलत गोपी कान्ह ॥
हाथ भरे कनक पिचकाई भरि भरि देत सुजान ।
सुर नर मुनि जन कौतुक भूल जय जय जदुकुल भान ॥
ताल पखावज बेन वासुरी राग रागिनी तान ।
नददास विमलावलि वदित नही उपमा को आन ॥८१॥

(८२)

कुज कुटीर मिलि यमुना तीर खेलत होरी रस भरे अहीर ।
एक ओर बलवीर धीर हरि एक ओर युवतिन की भीर ॥
केकी कीर कल गुन गभीर पिक डफ मृदग धुनि करत मजीर ।
पग मंजीर कर ले अबीर केसरि के नीर छिरकत हे चीर ॥
भये अधीर रतिपथ के तीर आनद समीर परसत सरीर ।
नंददास प्रभु पहरें हीर नग मिटत पीर गह्यो सुख को सीर ॥८२॥

(८३)

तुम कोन के वस खेलो हो रंगीले हो हो होरिया ।
 अजन अधरन पीक महावर नेन रगे रंग रोरिया ॥
 बारबार जूभात परस्पर निकसी आई सब चोगिया ।
 नददास प्रभु उहाई बसो किन जहा वस वे गोरिया ॥८३॥

(८४)

निकस कुवर खेलन चले रंग हो हो होरी
 मोहन नंद के लाल रगन रग हो हो हो होरी ।
 सग लीने रग भीने ग्वाल वाल वे गुन रूप रसाल ॥
 कचन माट भराय सोधे भरी हे कमोरी ।
 रत्न जटित पिचकाई करन अवीर भरे भोरी ॥
 सुर मडल डफ भाभ ताल वाजत मधुर मृदंग ।
 तिन मे परम सुहावनी महुवरी वासुरी चंग ॥
 खेलत खेल जब रंगीलो लाल गये वृषभान की पोरि ।
 जो हुती नवल किशोरी भोरि ते आई आगे दोरि ॥
 सुनि निकसी नव लाडिली श्रीराधा राज किशोरी ।
 ओलिन पोहोप पराग भरे रूप अनूपम गोरी ॥
 सग अली रगरली सोहे करन कनक पिचकारी ।
 मोहन मन की मोहनी देत रंगीली गारी ॥
 तिनको छिरकत छबीली लाल राजत रूप गहेली ।
 मानों चंद सीचत सुधा अपने प्रेम की बेली ॥
 नवल वधून के रंगीले वदन अवीर घुमड मे डोले ।
 छूटहि निसक अरुण घन मे हिमकग्नि कर कलोले ॥
 इतने माभ छिपि छबीली कुंवरि पकरे हे मोहन आन ।
 छवि सो परस्पर भक भकोरत कापे परति वखान ॥

गुप्त प्रीति प्रगटित भई लाज तनक सी तोरी ।
ज्यो मदमाते चोर भोर भलकत निकसी चोरी ॥
सखियन सुख देखन के काज गाठ दुहुन की जोरी ।
निरख बलैयां ले सबे छवि न बढी कछ थोरी ॥
कोउ छेल छबीले लाले छिरकत रंग अमोल ।
कोउ कमल कर ले पराग परसत रुचिकर कपोल ॥
बने हे पिया के कमल लोचन जब गहि आजे अंजन ।
जानो अकुलात कमल मंडल मे फंदन फंदे युग खजन ॥
देखि विवस वृषभान घरनि हँसत हँसत तहा आई ।
बरजी आन नवल बधू भुज भरि लिये कन्हाई ॥
पोछत मुख अपने अंचल पुनि पुनि लेत बलाय ।
मुसकि मुसकि छोरत सुगाँठ छवि बरनी नही जाय ॥
छोडन न देही नवल बधू माँगे कुवर पे फाग ।
जो पे फगुवा दियो न जाय प्यारी राधा के पाय लाग ॥
और कहा लगि बरनिये वढयो सुख सिधु अपार ।
प्रेम कलोल हलोलन मे किन्हूं रही न संभार ॥
रग रगीली ब्रज बधू रगीले गिरिधर पीय ।
यह रंग भीने नित वसो नंददास के हीय ॥८४॥

(८५)

ब्रज मे खेले री धमार मोहन प्यारो री नद को ।
संग बनी रस ओपी गोपी कह्यो न परत कछू
वाढयो या सुख सिधु उडुचंद को ॥
बाजत ताल मृदंग किन्नरी उपर बाढयो सुख आनंद को ।
नंददास प्रभु प्यारे कौतुक देखत ओर
शोभा गिरिधर मेन फंद को ॥८५॥

(८६)

डोल भुलावत सब व्रज सुदरी भूलत मदन गोपाल ।
 गावत फाग धमार हरख भर हलधर ओर सब ग्वाल ॥
 भूले कमल केतकी कुजो गुजत मधुप रसाल ।
 चदन बंदन चोवा छिरकत उडत अबीर गुलाल ॥
 बाजत बेणु विषाण बासुरी डफ मृदंग ओर ताल ।
 नंददास प्रभु के सग विलसत पुण्य पुज व्रज बाल ॥८६॥

(८७)

पीतावर काजर कहा लाग्यो हो ॥ ललना कोन के पोछे हैं नयन ॥ध्रु०॥
 कोन के गेह नेह रस पागे वे गोरी कछु ओर ।
 देहु बताय कान राखति हो ऐसे भये चित चोर ॥
 अधरन अजन लिलाट महावर राजत पीक कपोल ।
 घूमि रहे रजनी जागे से दुरत न काम कलोल ॥
 नख निसान राजत छतियन पर निरखो नयन निहार ।
 भूम रही अलके अलबेली पाग के पेच सवार ॥
 हम डरपे जसुदा के त्रासन नागर नंद किशोर ।
 पाय परे फगुवा प्रभु देहो मुरली देहु अकोर ॥
 धन्य धन्य गोकुल की गोपी जिन हरि लीने हराय ।
 नंददास प्रभु किये कनोडे हे छाडे नाच नचाय ॥८७॥

(८८)

बरसाने की सीम खेलत रंग रह्यो हे ।
 छलबल बानिक बान ललिता ने लाल गह्यो हे ॥
 सखा श्रीदामा आदि हलधर भाज गये हे ।
 गही पिचकारी हाथ जुरी चहुं कोद भये हे ॥

कोउ न आवे पास उत बल बहुत भये हे ।
 अधिक भई अंधियारी गगन गुलाल छयो हे ॥
 ता मधि दमकत अग व्रज जन रूप छटा री ।
 सारी भरी सुरग सोहे कनक किनारी ॥
 जोरी बदन धूर अबीर मिलाय लियो हे ।
 छिरक छिरक घनश्याम सबे एक रग कियो हे ॥
 लपट परी विह बाल तरुन तमाले हेली ।
 पोहोप लता सिरताज कोधत उपर वेली ॥
 करत मनोरथ घेर गिरिधर सुघर सलोनी ।
 लाग्यो अरगजा गाल श्रीमुख लसत रिझोनी ॥
 पाग उत्तारत आप श्री वृषभान कुमारी ।
 केस खोल निरवार बेनी सरस सवारी ॥
 भव्बी जराउ जोर अग्रनि ग्रथ सवारी ।
 माग भरी मोतिन की पटियन ही ले पारी ॥
 सोस फूल सीमत किशोरी आपुन दीनो ।
 समभवार समभावत नयनन अजन कीनो ॥
 मृगमद आड मुदेस करी चद्रावलि नीकी ।
 * चद्रभगा ले बीच लगावत पिय को टीकी ॥
 पहरावत भकभोर बेसर निरमोली हे ।
 चारु छपेरी साज पचरग उर चोली हे ॥
 जेहर तेहर पाय बिछुवन छवि उपजायल ।
 अनवट नूपुर चूरा रत्न खचित हे पायल ॥
 नख सिख लो यह भात अभरन भीर भई हे ।
 निरख निरख यह काति व्रज आनद मई हे ॥
 बाजन लगे ढोल ओर डफ ताल मृदगा ।
 गोमुख किन्नरि भाभ बीच विच मधुर उपंगा ॥

सहचरी भई आनद गावत गारि सुहाई ।
 दिस दिस मोहन ओर चलत निकर पिचकाई ॥
 एक सखी बीच आई अरगजा डार गई हे ।
 देख पलक पर रेल पिय जु गारी दर्ई हे ॥
 ले ले अंचल आप पोछत अगुरिन दल सो ।
 मुठियन चलत गुलाल आगे पाछे छल सो ॥
 तेई घातन मधु पाय प्रानपिया को पोखत ।
 प्रेम विवशता हरि भर अकवारी भोखत ॥
 हो हो होरी बोलत ललिता आगन नाचत ।
 करे प्रेम की टोक चोख एको नही बाचत ॥
 नंददास खिलवार खिलारी खेलनहारो ।
 भयो नेह मद माद टोल दुहु दिस मतवारो ॥८८॥

(८९)

आज हरी खेलन फाग बनी ।
 इत गोरी रोरी भर भोरी उत गोकुल को धनी ॥
 चोवा को ढोवा कर राख्यो केसर कीच घनी ।
 नंददास प्रभु संग होरी खेलत मुर मुर जात अनी ॥८९॥

(९०)

अरी होरी खेलन जैये सावरे सलोने सो ।
 बडे बडे माट भराय केसर सो पिचकाइन छिरकैये ॥
 खेलत खेलत रग रह्यो अवीर गुलाल उडैये ।
 नंददास प्रभु होरी खेलत आनंद सिधु वडैये ॥९०॥

(६१)

अरी ऐसी नव यामिनी देखे भामिनी तोहि क्यो भवनसुहाय ।
जहा ब्रजवर नर नारिन के यूथ जुरे हे आय ॥
श्री नंदनंदन पुनि तहा आए रगीले रसिक मणिराय ।
आली तिन मे तु नहि देखी तव रहि गये नयना नाय ॥
तव इत उत तक मोहन पिय मोतन तक अरगाय ।
तव नयनन ही मे कह्यो कहा मे कह्यो श्रीव डुराय ॥
अव रगीले कुवर तोहि पैया सेनन दर्ई हो पठाय ।
तु न कर गहर नागरि त्रिय आन भलो बन्यो दाय ।
यह सुन नवल नवेली सहचरी मुसकी नयन दुराय ॥
इतनेइ परम निपुण सखी जिन प्यारी भुज भरि लई उठाय ।
गहि नव कंचुकी सोधे बोरी बीरी दर्ई बनाय ॥
पुनि पटपीत पटोरन पोछ के आगे धरी समुहाय ।
चली नवसत सज स्वामिनी कामिनी सखी के अंस भुज लाय ॥
जानो कनक धातु परवत पर तडित लता चमकाय ।
नव गुण नवल रूप नव यौवन नवल नेहु हुलसाय ॥
भूमक सारी प्यारी पहरे चलत ललित लरकाय ।
जनो नव रूप जोति जगमग सो पवन लगे भुकराय ॥
कमल फिरावत कर वर बाला माला उर सिर नाय ।
ललितादिक सखियन मे सुदर शोभित हे यह भाय ॥
जानो नव कुमुदिन के मडल मे इदु पगन चत्थो जाय ।
कवहूँ वदन उधारत पुन हँस लेत दुराय ॥
मजुल मुकुर मरीचिन सी मानो छिन छिन छवि अधिकाय ।
पुनि एक लट जो छवीली की छवि सो वेसर रही अरुभाय ॥
जानो प्रीतम मन मीन की बडसी भख मुक्ता लटकाय ।
ओर ऐसे नव मत्त गयंदन मलकत बहा दुराय ॥

शोभित श्रवणन स्वेद सुदित के मानो पटे चुचाय ।
 चंचल अचल छोर विराजत नेक चलत जब धाय ॥
 नीवी बधन फुदवा घटा किकिणी घन घघराय ।
 नूपुर उपर चुरा रुरा जनु शृखल भनकाय ॥
 सखियन के कर कुसुम छरित ते अगड बने चहु धाय ।
 मदन महावत को बल नाही अकुश देत डराय ॥
 सखियन मे हितू विशेष विसाखा जानो तन की परछाय ।
 सो नद नंदन नेरे जान के सहज उठी कछु गाय ॥
 सबहिन जान्यो श्री राधा जू आई भये चौगुने चाय ।
 जे हुती नवल किशोरी की साथिन ते दोरी समुहाय ॥
 तिन सग मोहन धाये आये जानो रंक महानिधि पाय ।
 प्रथम ही लाल जुहार कियो मृदु मुरली माभ बजाय ॥
 इत ते कुटिल कटाक्षन पिय तन चितई मृदु मुसिकाय ।
 चाचर देन लगी ब्रज वीथन रगीलो रग उपजाय ॥
 गावन लागी ग्वालनि गारी सुदर ललही लगाय ।
 राधा जू गारिन सुन सुन हस हस हरि तन हेर लजाय ॥
 ललन अबीर भरत गोरी ग्वालनि प्राण पियाहि बचाय ।
 सो सुख पिय नयना पहचाने सो मन मे न समाय ॥
 ओर जो प्रेम विवश रस को सुख कहत कह्यो नहि जाय ।
 यह सुख कहिवे को सरस्वती की कोटिक सुमति हराय ॥
 शेष महेश सुरेश न जाने अज अजहू पछिताय ।
 यह सुख रमा तनक नहीं पायो यद्यपि पलोदत पाय ॥
 श्री वृषभान सुता पद अंबुज जिन के सदा सहाय ।
 यह रस मगन रहत जे तिन पर नंददास बल जाय ॥६१॥

(६२)

खेले नंद को नदन होरी अपने रगीले ब्रज मे ॥ध्रु०॥
 बने हे ग्वाल बाल सग जनु अनेक मेन ।
 आपन मदन मोहन सोहन कह कहू छवि अने ॥
 उतते आई युवती वृद चद मुखी एक दाई ।
 चचल तन की दमक जनु दामिनि पट भाई ॥
 जुरे हे कंचन चोहटे अपने अपने टोल ।
 आनद घन ज्यो गाजत राजत दुदुभी ढोल ॥
 सुर मडल किन्नरी डफ बाजत रग भीने ।
 बीच बीच वँसुरिया वस कीनेहे मन दीने ॥
 बजत चट सो पटतार ग्वार गावत सग ।
 नाचत हे मधु मगल संगीत बढयो हे अति रग ॥
 कुकुम चदन वदन साख मृगमद मथि घोरी ।
 छवि सो छबीलो भरन डोलत बोलत हो हो होरी ॥
 रगे रग की छीटन भरी सोहत त्रिय नवेली ।
 वरन वरन फूलन मानो फूली आनद वेली ॥
 घुमड कर गुलाल को तामे दुर दुर आवे ।
 भर भागत हरि को भामिनि दामिनि सी छवि पावे ॥
 घेर लिये हे नवल त्रियन सावरे सिरमोर ।
 यह छबी सो अमत जेसे कमल कोश भोर ॥
 पकरे हे छवि सो आन मोहन राधिका वरजोरी ।
 कही न परे प्रेम की छवि छाई भकभोरा भकभोरी ॥
 व्हे ठाडे विवश सबे काहू न रही सभार ।
 छूटी हे छवि सो अलक लर टूटे हे मुक्ताहार ॥
 क्यो ही लुकत लाज पे अति प्रेम की उरेड ।
 नंददास निधि न रुकत वारू की मेड ॥६२॥

(६३)

राधा वनी रंग भरी रग होरी खेले अपने प्रीतम के सग ।
 एक पहले ही रगमगी पुनि भी रग रंग ॥
 रग रग की सहचरी वनी छत्रीली के साथ ।
 पहरे विविध वसन रग रग के रग भरे भाजन हाथ ॥
 रंग रंग की कर पिचकाई शोभित एक समान ।
 मानो मेन शिव पे सज्यो शोभित रूप कमान ॥
 काहू पे कुसुमन गूथी छरी काहू पे नये नये नोर ।
 काहू पे कुसुम गेदुक चले काहू पे न्यूतन मोर ॥
 काहू पे अरगजा रंग को काहू पे केसर को रग ।
 कोउ गोरा मृगमद लिये होत भ्रमर जहा पग ॥
 तिन मे मुकुट मणि लाडिली सोहत अति सुकुमार ।
 लटक चलत ज्यो पवन ते कोमल कचन डार ॥
 पिय कर पिचकाई देख के त्रिय नयना छवि सो ढराय ।
 खजन से मानो उडहि चलेंगे ढरक मीन वहे जाय ॥
 छिरकत पिय जब त्रियन को जो मन उपजे अनद ।
 मानों इदु सुधाकर सींचत जो कुमुदिन को वृद ॥
 भीजे वसन तन तन लपटाने वरणत वरण्यो न जाय ।
 उपमा देन न देत नयन राखे हाहा खाय ॥
 रंग रंगीली राधिका रग रंगीलो पीय ।
 यह रगभीने नित्य वसो नंददास के हीय ॥६३॥

(६४)

चली हे कुवरि राधे खेलन होरी । पकज पराग भर लीने हे भोरी ॥
 रंग रंगीली संग सोहे अनगण अली । सुफल करी हे सब गोकुल की गली ॥

सरस स्वर आछी मीठी ध्वनि । हर जो जायों मनोज जीयो जाहि सुनि ॥
 बाजे डफ ताल मृदंग सुहाये । मदन सदन मानो मगल वधाये ॥
 सोहे मुख कछू कछू अंबरन दुराए । आधे आधे विधु मानो बदरन छाए ॥
 अवीर धूधर मध्य राजे रंग भीनो । मानो डीठ डर मार सार ढाक लीनो ॥
 उत्तरे आए हे मोहन भीने रंग रंगा । चरण पलोतत आवे अनगा ॥
 रंगीली गलिन विच खेल मच्यो भारी । इन हरि उत वृषभान दुलारी ॥
 कनक यत्रन मिल शोभा भई भारी । छवि मो छूत मानो मेन फुलवारी ॥
 छिरकि छबीले आय प्यारी त्रिया गान । रंग बरसे मानो नौतन घन ॥
 त्रियन के अंग रंग कण गण सोहे । कचन छरी जराय जरी छवि को हे ॥
 इतते रंग की धारे सावरे को मेली ! आतुर उलही मानो प्रेम नवेली ॥
 अवीर गुलाल मध्य मडित गगन । मानो प्रेमरवि अब चाहत उगन ॥
 कामिनी वृंदन स्याम घेर लिये ऐसे । दामिनी निकर मानो नवघन जेसे ॥
 लपटी सांवरे अंग सोहे सब ऐसी । सिंगार कल्पतरु छविलता जैसी ॥
 हँसत हँसत चंद्रावलि उत गई । लाल सो कहत हो तिहारी दिश भई ॥
 मुरली छिनाय लई छल सो किशोरी । तारीदेहे हँसीहे सब बोले हो हो होरी ॥
 राधा जु अधर धरी बामुरी विराजी । ऐसी कबहू सावरे पिय पे न बाजी ॥
 बंसीदेन मिस प्यारी राधिका बुलाये । हँसत हँसत लाल अकेले ही आये ॥
 गावत ब्रज की वधू कीरति तिहारी । चिरजीयो प्यारो लाल अटल विहारी ॥
 फगुवा कुँवर कान्ह बहुत जो दीनो । सब सखी प्रेम प्रीत माथे मान लीनो ॥
 नददास यह सुख कहा लो बखाने । विधिहू कह्यो हे ऐसे जाने सोई जाने ॥६४॥

(६५)

एक दिस वर ब्रज बाला एक दिस मोहन मदन गोपाला ।
 चाचर देत परस्पर छवि जो कही न परत तिहि काला ॥
 कुसुम धूर धूधर मध्य चादनी चद किरण रही छाये ।
 तेसोहि बन्यो गुलाल गगन कछु वरणत वरण्यो न जाय ॥

सुर मडल डफ बीना भीना वाजत रस के एना ।
 चाचर मे चाचर सी चितवत छत्रीली त्रियन के नयना ॥
 बन्यो हे चटक कठताल तार ओर मृदंग मुरज टकार ।
 तिन संग रग रगीली मुरली बीच अमृत की धार ॥
 बढ्यो हे दुहु दिश गुण विनतान रसगान सुनत रसमूले ।
 मद मद आवन उलटन मानो प्रेम हिडोरे भूले ॥
 लटक लटक आवत छत्री पावत भावत नार नवेली ।
 प्रेम पवन वश डोलत मानो रूप अनूपम वेली ॥
 चारु चलन मे मणिमय नूपुर किकिणी कलरव राजे ।
 मानो भेद गति पाछे आछे मधुर ध्वनि छाजे ॥
 चमक चमक दशनावलि द्युति फिर बदरन माभ समार्ई ।
 दमक दमक दामिनी छबि पावत चद्रन मे दुर जाई ॥
 अनेक भात राग रागिणी अनुराग भरे उपजावे ।
 सुन विथके शिव नारद तेहू पार न पावे ॥
 रस कदब मे बोरी होरी नित उठ खेलन आवे ।
 नंददास जाके भूरि भाग्य जे विमल विमल यश गावे ॥६५॥

नित्य कीर्त्तन

(६६)

आगे आगे भाज्यो जात भगीरथ को रथ पाछे पाछे आवत तरंग भरी गग ।
 भलमलात अति उज्ज्वल जलजोति अब निरखत मानो सीसभर मोतिन मग ॥
 जहा परे हे भूप कबके भस्म रूप ठोर ठोर जाग उठे होत सलिल सग ।
 नंददास मानो अग्नि के यंत्र छूटे ऐसे सुरपुर चले धरे दिव्य अंग ॥१॥

(६७)

फूलन की माला हाथ फूलि सब सखी साथ
 भाकत भरोका ठाडी नदनी जनक की ।
 देखत पिया की शोभा सीया के लोचन लोभा
 एकटक ठाडी मानो पुतरी कनक की ॥
 पितासो कहत बात कमल कोमल गात
 राख हो प्रतिज्ञा शिव के धनक की ।
 नददास हरि जान्यो वृण कर तोर्यो ताही
 बास के धनैया जेसे बालक के करकी ॥२॥

(६८)

ढीले ढीले पग धरत ढीली पाग ढरक रही
 ढये सेहि फिरत ऐसे कोन पं जु ढहे हो ।
 गाढे तो हीय के पीय ऐसी गाढी कोन वीय
 गाढे गाढे भुजन बीच गाढे कर गहे ॥
 लाल लाल लोयन मे उनीदे लाग लाग जात
 साची कहो प्राणपति मे तो लाल लहे ।
 नददास प्रभु पिय निश के उनीदे आये
 भये प्रात कहो बात रात कहा रहे ॥३॥

(६९)

जागे हो रेन तुम सब नयना अरुण हमारे ।
 तुम कियो मधुपान घूमत हमारी मन काहेते जु नंद दुलारे ॥
 उर मख चिन्ह तुम्हारे पीर हमारे कारण कोन पियारे ।
 नंददास प्रभु न्याय स्यामघन बरपे अनित्त जाय हम पर भूम भुमारे ॥४॥

(१००)

जानन लागे री लालन मिल विछुरन की वेदन ।
 दृग भर आये री मे कही री कछुक तेरी प्रीति कि रीति ।
 आनाकानी भई घुमराई मे गये एते दिन ॥
 नेह कनावडे की रूप माधुरी अंग अंग लागी सरस हियो वेदन ।
 नंददास प्रभु रसिक मुकुटमणि कर पर धर कपोल रहेरी
 ध्यान धर ररकत ढरकत है री तिलक मृगमेदन ॥५॥

(१०१)

उपरना वाही के जु रह्यो ।
 जाही के उर बसे श्यामघन निश को जो सुख रह्यो ॥
 छबि तरंग अंग अंग दृग भेद न जात कह्यो ।
 नंददास प्रभु चले सेनदे जब दावन दौर गह्यो ॥६॥

(१०२)

ए आज अरुन अरुन डोरे दृगन लाल के लागत है अति भले ।
 बंदन भरे पगन अलि मानो कुज दलन पर चले ॥
 लाल की पगिया मे न समात कुटिल अलक आलस भलमले ।
 नंददास प्रभु पोहोपन मध्य मानो मधुप गुज सोवत ते कलमले ॥७॥

(१०३)

लहेकन लागी बसत वहार सखि त्यो त्यो बनवारी लाग्यो बहेकन ।
 फूले पलास नखनाहार के से तेसे कानन लाग्यो महकेन ॥
 कोकिल मोर शुक सारस हंस खजन मीन भ्रमर अखिया देख अति ललकन ।
 नंददास प्रभु प्यारी अगवानी गिरधर पिय को देखत भयो श्रमकन ॥८॥

(१०४)

नंदसदन गुरुजन की भीर तामे मोहन वदन न नीके देखन पाऊ ।
 बिन देखे जिय अकुलाय जाय दुख पाय यद्यपि यडरे छिन छिन उठ धाऊ ॥
 ले चलि री सखी मोहि यमुना के तीर जहा होहे बलबीर देख दृगन सिराऊ ।
 नददास प्यासे को पानी पिवाय ले जिवाय ते जीय की जानत हो
 नोमो कहा लो जनाऊ ॥६॥

(१०५)

नद गाम नीको लागत री ।
 प्रात समे दधि मथत ग्वालिनी सुनत मधुर ध्वनि गाजत री ॥
 धन्य गोपी धन्य ये ग्वाल जिनके मोहन उर लागत री ।
 हलधर सग ग्वाल सब राजत गिरिधर ले ले दधि भागत री ॥
 जहा वसत सुरदेव महामुनि एको पल नही त्यागत री ।
 नंददास को यह कृपाफल गिरिधर देखे मन जागत री ॥१०॥

(१०६)

माई री प्रात काल नदलाल पाग बधावत
 बाल दिखावत दर्पण भाल रह्यो लसि ।
 सुंदर नव करन बीच मजु मकुर की छवि रही फवि
 मानो गहि आन्यो हे युग कमलन शशि ॥
 बिच बिच चित के चोर मोर चद्र माथे दिये
 तिन डिग रत्न पेच बाधत है कम ।
 नददास ललितादिक ओट भये
 अव्योक्त अतुलित छवि कहिन जान फूज भरे हंस ॥११॥

(१०७)

सुंदर मुख पर वारो टोना । बेनी बारन की मृद बेना ।
 खजन नयनन अजन सोहे भ्रोहन लोयन लोना ॥
 तिरछी चितवन यो छवि लागे कंजपलन अलि छोना ।
 जो छवि हे वृषभान सुता मे सो छवि नाहन सोना ।
 नंददास अविचल यह जोरी राधा स्यामसलोना ॥१२॥

(१०८)

ये दोऊ नागर ढोटा माई कोन गोप के बेटा ।
 इनकी बात कहा कहो तोसो गुणन बडं देखन के छोटा ॥
 अग्रज अनुज सहोदर जोरी गौर स्याम ग्रथित सिर चोटा ।
 नंददास बल बल यह मूरति लीला ललित सब ही विध मोटा ॥१३॥

(१०९)

नंद भवन को भूषण माई ।
 यशोदा को लाल वीर हलधर को राधारवन सदा सुखदाई ॥
 इद्र को इद्र देव देवन को ब्रह्म को ब्रह्म अधिक अधिकाई ।
 काल को काल ईश ईशन को वरण को वरण महावरदाई ॥
 शिव को धन सतन को सर्वस्व महिमा वेद पुराणन गाई ।
 नंददास की जीवन गिरिधर गोकुलमंडन कुवर कन्हारी ॥१४॥

(११०)

कोन लई कौन दई इडुरिया गोपाल मेरी ।
 गो ग्वाल बाल सखा मांभ तुम ही हसत हो ॥

गहे पद सुधे रहो कौन लई कासो कही
 लेत कौन देख्यो सखी कहा तुम वसत हो ॥
 दई हे दुगाय धरत घोस मे कहा चोर परत
 ऐसी होय कबहु लाल कौन पे रीसत हो ।
 नंददास वसत बास ब्रज मे गिरिराज पास
 टेढो फेँटा आड बध कौन पे कसत हो ॥१५॥

(१११)

गोकुल की पनिहारी पनिया भरन चली
 बडे बडे नयना तामे खूब रह्यो कजरा ।
 पहिरे कसूभी सारी अग अग छवि भारी
 गोरी गोरी बहियन मे मोतिन के गजरा ॥
 सखी सग लिये जात हस हस बूझत बात
 तनहु की सुधि भूली सीस धरे गगरा ।
 नंददास बलहारी बीच मिले गिरिधारी
 नयन की सेन मे भूल गई डगरा ॥१६॥

(११२)

ए बाल आवत डगर डगरी ।
 रतन जटीत पटकीयेरी ओट शीश विराजत तापर कनक गगरी ॥
 भोहरर वीदीये छब्री सो दसन वसन साजे शोभा राजत सगरी ।
 नंददास नदलाल रीझे पाछे चल आवत बोलत वचन अचगरी ॥१७॥

(११३)

पनिया भरन कैसे जाउरी भटुरी ।
 नट नागर बागर जो डोलत छवि सागर नागर जो नटुरी ॥

मोहे न सभार रहत सारी की, बेन संभारि पीत पटु री ।
नददास प्रभु कहत बने ना मेहि लटु केधो वेहि लटुरी ॥१८॥

(११४)

दपति रस भरे भोजन करन लाडिली लाल ।
बीजनमधुरे चरपरे खाटे खारे रस धरे वनाय जमोदा जी भावत जोरी रसाल ॥
पय ओदन अरु दार भात गुजा मठरी जलेबी घेवर फेना रोटी
चद्रकला रुचि सो जेवत प्यारा मदन गोपाल ।
नददास प्रभु प्रिया प्रीतम परस्पर हसत कोर भरत ललीता
मनुहार करत छबी पर वल वल जात ॥१९॥

(११५)

चित्र सराहत चितवत मुर मुर गोपी बहुत सयानी ।
टक भुक मे भुक वदन निहारत अलकमवारत पलकन मारत जान गई नदरानी ।
पर गये परदा ललित तिवारी कचन थार जव आनी ।
नददास प्रभु भोजन घर मे उरपर का धर्यो वे उनते मुसकानी ॥२०॥

(११६)

खभ की ओभल ठाढो सुवल प्रवीण सखा
कर मे जटित डबा वीरा सो भर्यो जेमत हे री मोहन ।
परदा परे तिवारी तीनो तामध्य, भलकत अंग अंग रग सोहन ।
जाही को देखत रानी ताही को उठत भुक
कोऊ नही पावत सभयो जोहन ॥
नददास प्रभु भोजन कर बैठे तब मे
दई री सेन पान खाये आवन कह्यो री गोहन ॥२१॥

(११७)

डला भरहो लाल कंसे के उठावे, पठावो ग्वाल छाक ले आवे ।
 गिन देखो गाठ न जानो कोन कोन की मेवा
 वसन सुरग हाहाकार पायन परके पठावे ॥
 आप ब्रजरानी न विचारे मेरे डला पर
 थार ओदन बेला न समावे ।
 नददास प्रेमी स्याम परस पद कही बात
 काल्ह ते जु कावर भर किकर बुलावे ॥२२॥

(११८)

सव ब्रज गोपी रही तक तमक ।
 कर कर गाठ लसत सबहिन के बन को चलत जब छाक ॥
 मधु मेवा पकवान मिठाई घर घर ते ले निकसी थाक ।
 नददास प्रभु को यह भावत प्रेम प्रीति के पाक ॥२३॥

(११९)

उसीर महल मे विराजे मडल मध्य मोहन छाक खात ।
 ओदन रोटी जघा धरे लाल शाक पाक फल रसाल सीला पर गोरस के पात ॥
 चहु ओर मेघ ज्यो छूटत फुहारे फुही कबहु सुबल गोद हसि ढर जात ।
 नददास प्रभु स्याम ढाकतर आपुन
 हसत हसावत ग्वालन सरस बनावत बात ॥२४॥

(१२०)

यमुना तट भोजन करत गोपाल ।
 विविध भात दे पठयो यशोमति व्यजन बहोत रसाल ॥

मोहे न संभार रहत सारी की, बेन सभारि पीत पटु री ।
नंददास प्रभु कहत बने ना मेहि लटु केधो वेहि लटुरी ॥१८॥

(११४)

दपति रस भरे भोजन करत लाडिली लाल ।
बीजनमधुरे चरपरे खाटे खारे रस धरे वनाय जसोदा जी भावत जोरी रसाल ॥
पय ओदन अरु दार भात गुजा मठरी जलेबी घेवर फेना रोटी
चंद्रकला रुचि सो जेवत प्यारा मदन गोपाल ।
नंददास प्रभु प्रिया प्रीतम परस्पर हसत कोर भरत ललीता
मनुहार करत छबी पर बल बल जात ॥१९॥

(११५)

चित्र सराहत चितवत मुर मुर गोपी बहुत सयानी ।
टक भ्रुक मे भ्रुक वदन निहारत अलक मवागत पलकन मारत जान गई नदरान्दी ॥
पर गये परदा ललित तिवारी कचन थार जव ग्रानी ।
नंददास प्रभु भोजन घर मे उरपर कर धर्यो वे उनते मुसकानी ॥२०॥

(११६)

खंभ की ओभल ठाढो मुबल प्रवीण सखा
कर मे जटिल डबा वीरा सो भर्यो जेमत हे री मोहन ॥
परदा परे तिवारी तीनो तामध्य, भलकत अंग अंग रंग सोहन ।
जाही को देखत रानी ताही को उठत भुक
कोऊ नहीं पावत सभयो जोहन ॥
नंददास प्रभु भोजन कर बैठे तब मे
दर्ई री सेन पान खाये आवन कह्यो री गोहन ॥२१॥

(११७)

डला भरहो लाल कसे के उठावे, पठावो ग्वाल छाक ले आवे ।
 गिन देखो गाठ न जानो कोन कोन की मेवा
 वसन सुरग हाहाकार पायन परके पठावे ॥
 आप ब्रजरानी न विचारे मेरे डला पर
 थार ओदन बेला न समावे ।
 नददास प्रेमी स्याम परस पद कही बात
 काल्ह ते जु कावर भर किकर बुलावे ॥२२॥

(११८)

सब ब्रज गोपी रही तक तमक ।
 कर कर गाठ लसत सबहिन के वन को चलत जब छाक ॥
 मधु मेवा पकवान मिठाई घर घर ते ले निकसी थाक ।
 नददास प्रभु को यह भावत प्रेम प्रीति के पाक ॥२३॥

(११९)

उसीर महल मे विराजे मडल मध्य मोहन छाक खात ।
 ओदन रोटी जघा धरे लाल शाक पाक फल रसाल सीला पर गोरस के पात ॥
 चहु ओर मेघ ज्यो छूटत फुहारे फुही कबहु सुबल गोद हसि ढर जात ।
 नददास प्रभु स्याम ढाकतर आपुन
 हसत हसावत ग्वालन सरस बनावत बात ॥२४॥

(१२०)

यमुना तट भोजन करत गोपाल ।
 विविध भात दे पठयो यशोमति व्यजन बहोत रसाल ॥

ग्वाल मडली मध्य विराजत हसत हसावत ग्वाल ।
 कमलनयन मुसकाय मद हस करत परस्पर ख्याल ॥
 कोउ व्यार ढुरावत ठाडी कोउ गावत गीत रसाल ।
 नंददास तहा यह सुख निरखत अखिया होत निहाल ॥२५॥

(१२१)

जाको वेद रटत ब्रह्मा रटत शंभु रटत शेष रटत
 नारद शुक व्यास रटत पावत नहीं पार री ।
 ध्रुव जन प्रह्लाद रटत कुंती के कुवर रटत
 द्रुपद सुता रटत नाथ अनाथन प्रतिपाल री ॥
 गणिका गज गीध रटत गौतम की नारि रटत
 राजन की रमणी रटत सुतन दे दे प्यार री ।
 नंददास श्री गोपाल गिरिवरधर रूप रसाल
 यशोदा के कुवर लाल राधा उर हार री ॥२६॥

(१२२)

सारंग नयनी री काहे को कियो एतो मान ।
 गौरी गहेर छाड मिल लाले मन क्रम वचन याते होत कल्याण ॥
 जिन हठ करे री तू नटनागर सो भैरो ही देव गान ।
 मुरली तान कान्हरो गावत सुन ले री कान ॥
 रंग रगीली सुघर नायकी तू जिय मे अडान ।
 नंददास केदारो करिके यो ही बिहाय गयो मान ॥२७॥

(१२३)

आवत ही यमुना भर पानी ।
 स्याम रूप काहू को ढोटा वाकी चितवन मेरी गेल भुलानी ॥

मोहन कह्यो तुमको या ब्रज हमें नाहि पहिचानी ।
ठगी सी रही चेटक सो लाग्यो तब व्याकुल मुख फुरत न बानी ॥
जादिन ते चितये री मोतन तादिन ते हरि हाथ विकानी ।
नददास प्रभु यो मन मिलियो ज्यो सागर में पानी ॥२८॥

(१२४)

यमुना तट नव निकुज द्रुम नव दल पहेण पुज
तहा रची नागर वर रावटी उसीर की ।
कुकुम घनसार घोर पकज दल बोर बोर
चरचत चहु ओर अरुनी पकज पाटीर की ॥
शोभित तन गौर स्याम सुखद सहज कुजधाम
परसत सीतल सुगंध मदगति समीर की ।
नददास पिय प्यारी निरख सखी ललिता ओट
श्रवन धुनि सुन किकिणी मजीर की ॥२९॥

(१२५)

रच्यो खसखानो आज अति तामे राजे
रावटी उसीर नीर छीरक छबीली ।
लुटत फुहारे चार जल गुलाब भरि
अपार निरख थकित छबि जोवन खिली ॥
अरगजा चर्चित चदमुखी चहु ओर ठाडी
चनुर चमेली बेला राय बेली मालती कर सोहे ।
श्वेत वसन अति सुवास वरनत छबि नददास
निपट निकट कोटि मनमथ मोहे ॥३०॥

(१२६)

चंदन सुगंध अंग लगाय आया मेरे ग्रह हमही मग जोवत लाल तिहारो हे ।

ढीले ढीले पग धरत घाम के सताये लाल

बोलहु न आवे बैन कौन के वचन पारे हो ॥

बैठो लाल सीतल छाह श्रमहु को निवारन होय

सीतल जल जमुना को अनेक भांति पीजिये ।

नंददास प्रभु प्रिय हम तो दरस की प्यासी

ऐसी नीकी करो कृपा मोहि दरस दीजिये ॥३१॥

(१२७)

सुरग दुरग होत पाग कुरग लाल कैसे लोयन लोने ।

कपोल विलोलन मे भलके कल कुडल कानन कोने ॥

रंग रंगीले के अंग सबे नवरंग रंगे ऐसे पाछे भये न आगे होने ।

नंददास सखी मेरी कहा बचले काम के आये टटावक टोने ॥३२॥

(१२८)

हाके हटक हटक गाय ठठक ठठक रही

गोकुल की गली सब साकरी ।

जारी अटारी भरोखन मोखन भांकत

दुर दुर ठोर ठोर ते परत काकरी ॥

चंपकली कुदकली बरखत रसभरी

तामे पुन देखियत लिखे हे आकरी ।

नंददास प्रभु जही जही द्वारे ठाढे होत तही तही वचन मागत

लटक लटक जात काहू सो हाकरी काहू सो नाकरी ॥३३॥

(१२६)

धरे टेढी पाग टेढी चद्रिका टेढे त्रीभगी लाल ।
कुडल किरण मानो कोटि रवि उदय होत उर राजत बनमाल ॥
सावरे वदन पीतावर ओढे वजावत मुरली मधुर रसाल ।
नंददास बन ते ब्रज आवत मंग लिये ब्रजवाल ॥३४॥

(१३०)

धरे वाकी पाग वाकी चद्रिका वाके बिहारीलाल ।
वाकी चाल चलत वाकी गति वाके वचन रसाल ॥
वाको तिलक वाकी भृगरेखा वाकी पहिरे गुजमाल ।
गोवरधन अपने कर धरके वाके भये हे गोपाल ॥
वाकी खोर साकरी वाकी हम सूधी हे गिरिधर लाल ।
नंददास सूधे किन बोलो हे वरसाने की ग्वाल ॥३५॥

(१३१)

केलि कला कमनीय किशोर उभयरस पुजन कुजके नेरे ।
हास विनोद कियो बल आली केतो सुख होत है हेरे ॥
बेली के फूल प्रियाले पिय पर डारे को उपमा होत मन मेरे ।
नंददास मानो साभ समथ वगमाल तमाल को जात वसेरे ॥३६॥

(१३२)

चद्रमा नटवारी मानो साभ समे बनते ब्रज आवत नृत्य करण ।
उडुगण मानो पहोप अजुली अवर अरुण वरण ॥
नदीमुख सनमुख व्हे वामदेव मनावन विघ्न हरण ।
नंददास प्रभु गोपिन के हित बसि धरी गिरिधरण ॥३७॥

(१३३)

देखन देत न बैरिन पलके ।

निरखत वदन लाल गिरिधर को बीच परत मानो वज्र की सलके ॥
 बन ते जु आवत वेणु वजावत गोरज मडित राजत अलके ।
 माथे मुकुट श्रवण मणि कुंडल ललित कपोलन भाई भलके ॥
 ऐसे मुख देखन को सजनी कहा कियो यह पुत कमल के ।
 नंददास सब जडन की यह गति मीन मरत भाये नहि जलके ॥३८॥

(१३४)

ये आछी तनक कनक की दोहनी, सोहनी गढाय दे री मैया ।
 जाय कहोगो बाबा नद सो आछे पाट की नोड दुहन सीखोगो गैया ॥
 मेरी दाई के ढोटा सब छोटे तेऊ सीखेरी करत बन घैया ।
 नंददास कान्हहसत लोटत अरु भरत नयन जल यशुमति लेत बलैया ॥३९॥

(१३५)

घर नदमहर के मिष ही मिष आवे गोकुल की नार ।
 सुंदर वदन बिन देखे कल न परत भुन्यो धाम काम आछो वदन निहार ॥
 दीपक ले चली बाहिर वाट मे वडो करडार फिर आय छवि सो बयार को देत गार ।
 नंददास नंदलाल सो लागे हे नयन पलक की ओट मानो बीते युग चार ॥४०॥

(१३६)

आज अटारी पर उसीर महल रचि दपति व्यारु करत ।
 खोवा मलाड और वासोधी पय हसि हसि घूट भरत ॥
 चहु और खसखाने छूटत फुहारे फुट्टी बीजना व्यार सीयरी मन को हरत ।
 नंददास प्रभु प्रिया प्रीतम परस्पर हसि हसि कोर लेत
 मद्रचरी कनक दबा बीरा सो भरत ॥४१॥

(१३७)

बन ठन कहा चले ऐसी को मन भाई सावरे से कुवर कन्हाई ।
मुख सोहे जैसे दूज को चदा छिप छिप देत दिखाई ॥
चले ही जाऊ नेक ठाडे रहोगे किन एसी सीख सीखाई ।
नददास प्रभु अब न वनेगी निकस जायगी ठकुराई ॥४२॥

(१३८)

लालन अनत रतिमान आयेहोजमेरेगेह रसीले नयन बेन तुतरात ।
अजन अधर धरे पीक लीक सोहे तोहे काहे को दुरात भूठी सोहे खात ॥
बातेहु बनावत बातहु न आवत एते पर
रति के चिन्ह दुरात तिरछी चितवत गात ।
नददास प्रभु प्यारी के वचन सुन भुले नाम वही को निसर जात ॥४३॥

(१३९)

मेरे री बगर मे आवत छवि सो कमल फिरावत ।
ओरन सो वतरात मोतन चितवत चतुर परोसन देख देख मुसकात ॥
नयनन मनुहार करत बेनन समभावत नेह जनावत ओह चढावत ।
नंददास प्रभु सो स्नेह लांज लाज बाढी कैसे रे धीरज आवत ॥४४॥

(१४०)

भले जु भले आये मो मन भाये प्यारे रति के चिन्ह दुराये ।
सब रस दे आये अजन लीक लाये अधरन रग पाये कहा जाय ठगाये ॥
होही जानत और कोई नहीं जानत घड छोल बतिया बनाय तुम लाये ।
नंददास प्रभु तुम बहु नायक हम गँवार तुम चतुर कहाये ॥४५॥

(१४१)

प्यारे पैया परन न दीनी ।

जोड़ जोड़ व्यथा हुती मेरे मन मे छिन एक मे दूर कीनी ॥

जो सोतिन मोसो अनख करत ही सांइ आनद भीनी ।

नंददास प्रभु चतुर शिरोमणि प्रीत छाप कर लीनी ॥४६॥

(१४२)

आवरी बावरी उजरी पाग मे मेल के बाध्यो मजुल चोटा ।

चचल लोचन चारु मनोहर अवही गहि आन्यो हे खजन जोटा ॥

देखत रूप ठगोरी सी लागत नयनन सेन निमेष की ओटा ।

नंददास रतिराज कोटि वारों आज बन्यो ब्रजराज को ढोटा ॥४७॥

(१४३)

सिर सोने के सूतन सोहत पाग पेचन ऊपर नग लगे ।

रतनारे भारे ढरारे नयनन देखत मूर्छित मेन जगे ॥

मुख की मजुलताई वरनी न जाई चचलता देखि दूर भगे ।

नंददास नंदरानी छबी निरखत वार पीवत पानी जिन काहु की दृष्ट लगे ॥४८॥

(१४४)

चिबुक कूप मध्य पिय मन पर्यो अधर सुधारस आस ।

कुटिल अलक लटकत ऊपर काठन को कंटक डार्यो बाध प्रेम के पास ॥

चचल लोचन ऊपर ठांडे है श्रेवन को मानो मधुर हास ।

नंददास प्रभु प्यारी छवि देखे बढ़िहे अधिक गियास ॥४९॥

(१४५)

जल कों गई सुघट नेह भर लाई परी हे चटपटी दरस की ।

इत मोहन गास उत गुरुजन वास

चित्र लिखी ठाढी नाम धरत सखी परस की ॥

डूटे हार फाटे चीर नयनन बहेत नीर

पनघट भई भीर सुध न कलश की ।

नंददास प्रभु सो ऐसी प्रीत गाढी

बाढी फेल परी चायन सरस की ॥५०॥

(१४६)

जर जाग्रो री लाज मेरे ऐसी कोन काज आवे

कमल नयन नीके देखन न दीने ।

बनते आवत मारग मे भेट भई

सकुच रही इन लोगन के लीने ॥

कोटि यतन कर रही री निहारवे कू

अचरा की ओट दे दे कोटि श्रम कीने ।

नंददास प्रभु प्यारी ता दिन ते मेरे नयना

उनही के अग अग रग रस भीने ॥५१॥

(१४७)

तेरी ओह की मरोरन ते ललित त्रीभगी भये

अजन दे चितयो भये जू स्याम वाम ।

तेरी मुसकान देख दाभिनी सी कोध जात

दीन ह्वे याचत प्यारी लेत राधे आधो नाम ॥

ज्यो ज्यो नचायो चाहो तैसे हरि नाचत बल
 अब तो मया कीजे चलिये निकुज धाम ।
 नंददास प्रभु बोलो तो बुलाय लाऊ
 उनको तो कलप बीते तेरी घरी याम ॥५२॥

(१८८)

स्याम सलूने गात हे काहु को ढोटा ।
 आई हू देख खिरक मुख ठाढो न कछू कहेन की बात ॥
 कमल फिरावत नयन नचावत मोतन मुर मुसकात ।
 छवि के बल जग जीति गर्व भयों मेन मानो इतरात ॥
 नख सिख रूप अनूपरूप छवि कवि पे वरन्यो न जात ।
 नंददास चात्रक की चोच पुट सब घन कैसे समात ॥५३॥

(१४६)

तेरे री नव जोवन के अग रग से लागत परम मुहाए ।
 जगमग जगमग होत मनो मृदु कनक डड पर ललित नग लगाये ॥
 तामे तू कुवरि कर उरजन की प्रीति निरख याते मो मन भाये ।
 नंददास प्रभु प्यारी के अतर ठोर दे बाहिर निकस आये ॥५४॥

(१५०)

बेसर कोन की अति नीकी ।
 होड परी प्रीतम अरु प्यारी अपने अपने जी की ॥
 न्याय पर्यो ललिता के आगे कोन सरस कोन फीकी ।
 नंददास विलग जिन मानो कछू एक सरस लली की ॥५५॥

(१५१)

बनी आज श्वेत पाग लाल सिर चलो सखी देखन जाय ।
 उसीर महल मे कुसुम रावटी छिरवयो गुलाब नीर नैनन को फल पाय ॥
 मजुल चोटा ता मधि बाध्यो बने हे मदन रूप कदम की छाया ।
 नददासप्रभु प्रियाप्रीतम परस्पर कबहुक करत केलि
 कबहुक हसि ढर जाय ॥५६॥

(१५२)

रुचिर चित्रसारी सघन कुज के मधि कुसुम रावटी राजे ।
 चदन के चहु और छवि छाया रही
 फुलन के आभूखन सब फुलन सिंगार सब साजे ॥
 सीयरे त्हेखाने मे त्रिविध समीर सीयरी
 चदन के बाग मधि चदन महल छाजे ।
 नददास प्रिया प्रितम नवल जोरी
 विधना रची बनाय श्री ब्रजराज विराजे ॥५७॥

(१५३)

अद्भुत बाग बन्यो नव निकुज मध्य
 विविध पक्षी तहा गुजार करत री ।
 उसीर महल रचि बैठे प्रिया प्रितम
 चहु ओर सहचरी होदन भरत री ॥
 छूटत फुहारे फुही मेघ ज्यो बरखत
 उमगि घटा नीकी मदन अनुसरत री ।
 कदली खभ लपटयो श्याम तमाल सो
 नददास प्रभु कोटि मेन परहरत री ॥५८॥

(१५४)

चढ वढ विडर गई अग अग मानवेली तेरे सयानी ।

हृदय आलवाल मध्य प्रकट भई री आली

प्रीति पाली नीके कर छिन छिन रूसबो भयो पानी ॥

कोन कोन अंगन ते निरवारो री आली

अलक तिलक नयन बेन ओह सो लपटानी ।

नंददास प्रभु प्यारी दूती के वचन सुन

छबीली राधे मंद मद मुर मुसकानी ॥५६॥

(१५५)

ये मन मान मेरो कह्यो काहे को रूसानी

प्यारे स्याम सो सुधो क्यो न चितवे री मोतन ।

जे जे हुती सोती तेरी तिनहु की जीत होति सुघराई क्यो न
करत बडहंसि तेरी होति तू कर विचार नायका क्यो न होत तू नट ॥

जिन आडन पट दीजे री मेरी आली काफी के वचन सुनत
ललित कहै रस लैये जु कैसे के रिझैये ईन को मन ।

अरी धन ह्वे जु आशावरि रहिये तेरे उन आगे कैसे दिन भरो री
कहेत नंददास देशाख कहत वचन सुन कान्हूर सो आय पायन
परे कर आभरन उठि अक मिल माल बन ठन ॥६०॥

(१५६)

तुम पहिले तो देखो आय मानिनी की शोभा लाल

पाछे तो मनाय लीजे प्यारे हो गोविदा ।

कर पर धरे कपोल रहे री नैनन मूद

कमल बिछाय मानो सोयो सुखचदा ॥

रिसपरी भ्रोह तापे भ्रमर बैठे अरवरात
 इंदुतर आयो मकरंद अरविदा ।
 नददास प्रभु ऐसी काहे को रुसैये बल
 जाको मुख देखे ते मितत दुख द्वाद ॥६१॥

(१५७)

तेरे री मनावे ते मान नीको लागत
 जोलो रही आनी तो लो लाल ले आऊं ।
 तेरी तो रुखाई प्यारी ओर को हसनो
 मोर मुख सोरेह कला को पून्यो चंद बल जाऊ ॥
 चल न सकत इत पग न परत उत
 ऐसी शोभा फिर पाऊ के न पाऊ ।
 नददास द्वय दिय कठिन भई
 देखवो करु केयो लाल ले आऊ ॥६२॥

(१५८)

आपन चलिये लालन कीजिये न लाज ।
 मोसी जो तुम कोटिक पठावो प्यारी न मानत आज ॥
 हो तो तिहारी आज्ञाकारी मोसों कहा कहै महाराज ।
 नददास प्रभु वडरे कहे गये आप काज महाकाज ॥६३॥

(१५९)

तू न मानन देत आली री मन तेरो मानवे को करत ।
 पिय की आरत देख मेरे जिय दया होत तेरी दृष्टि देख देख डरत ॥
 मो सो कहत कहा मेरो न दोष कछू
 निपट हठीली धाय क्यो अक भरत ।

नंददास प्रभु द्वृती के बचन सुन
 ऐसे अंग ढर्यो जेसे आच के लगे ते राग ढरत ॥६४॥

(१६०)

काहे कु तुम प्यारे सपी भेष कीनो ।
 भूषण वसन साजे वीना कर लीनो ॥
 मोतिन माग गुही तुम कैसे ही प्यारे ।
 हम नहि जाने पहचाने कोन के दुलारे ॥
 रुंसवे को नेम नित्य प्यारी तुम लीनो ।
 ताही के कारण हम सपी भेष कीनो ॥
 सब सखी दुर दुर देखी कुजन की गलिया ।
 नददास प्रभु प्यारे मान लीनी रलिया ॥६५॥

(१६१)

मान न घटचो आली तेरो घट जु गई सब रेन ।
 बोलन लागे तमचुर ठोर ठोर तू अजहूं न बोली री पिक बेन ॥
 कमल कली विकसी तू न नेक हसी कौन टेव परी मृगशावक नयन ।
 नददास प्रभु को नेह देख हासी आवत वे बैठे हे रचि रचि सेन ॥६६॥

(१६२)

रेन तो घटन्ती जाती सुनरी सयानी वाते
 मेरो कह्यो माने नाही तोहि न सुहात री ।
 सुख के सुहाग भरी ऐसी कैसी टेव परी
 घटत ना मान तेरो दया न आत री ॥
 जाके दरश को सब जग तरसत
 सोई तेरे रूप विन रह्यो न जात री ।

नंददास नदलाल बैठे अतिशय बिहाल

मुरली की ध्वनि मुन तेरो नाम गात री ॥६७॥

(१६३)

प्यारी पग हरे हरे धर ।

जैसे तेरे नूपुर न बाजही जागत ब्रज को लोग
नाही सुनायवे योग हाहा री हठीली नेक मेरो कह्यो कर ॥

जो लो वन बीथिन माहि सघन कुज की परछाहि
तो लो मुख ढाप चल कुवर रसिक वर ।

नंददास प्रभु प्यारी छिनहु न होय न्यारी
शरद उजियारी जामेजेहोंकहुरर ॥६८॥

(१६४)

आज आये मेरे धाम श्याम माई नागर नद किशोर ।

चदा रे तू थिर ह्यो रहियो होन न पावे भोर ॥

दादुर चकोर पपैया बोलो और बोलो बन के सब मोर ।

नंददास प्रभु वे जिन बोलो वारो तमचर चोर ॥६९॥

(१६५)

चापत चरण मोहनलाल ।

पलका पोढी कुवरि राधे सुदरी नव बाल ॥

कवहु कर गहि नयन मिलवत कवहु छुवावत भाल ।

नंददास प्रभु छवि निहारत प्रीत के प्रतिपाल ॥७०॥

(१६६)

पिय प्यारी के चरन पलोटत ।

ललितादिक वीजना ले आई ताही देख के घूघट ओटत ॥

चदन लेप करत दोउ अगन आलिंगन अधरन रस घोटत ।

नंददास स्याम स्यामा दोऊ पोढे नव निकुज कार्लिदी के तट ॥७१॥

(१६७)

कुसुम सेज पोढे दंपति करत हे रस वतिया ।

त्रिविध समीर सीयरी उसीर रावटी मध

खसखाने सीचे सुभग जुडावत हे पिय छतिया ॥

कपोल सो कपोल दीये भुज सो भुज भीढे

कुच उतग पिय राजत हे भतिया ।

नंददास प्रभु कनक पर्यक पर सख सुख विलस

केलि करत मोहन एक गत मतिया ॥७२॥

(१६८)

दंपति पोढेई पोढे रसवतिया करन लागे दोउ नयना लाग गये ।

सेज ऊजरी चदा हु ते निर्मल तापर कमल छये ॥

फूक्त दृग वृषभान नदिनी भूपत खुलत मुरझात नये ।

मानो कमल मध्य अलि सुत बैठे साभ सभय मानो सकुच गये ॥

आलस जान आप संग पोढी पिय हिये उर लाय लये ।

नंददास प्रभू मिली श्याम तमाल ढिग कनक लता उल्हये ॥७३॥

(१६९)

चलिये कुँवर कान्ह सखी वेष कीजे ।

देखो चाहो लाडिली को अबही देख लीजे ॥

ठाडी हे मंजन किये आगन अपने ।
 देखि न सुनि न एसी संपति सपने ॥
 बडे बडे वार पाछे छूटे अति छाजे ।
 मानहुं मकरध्वज चमर विराजे ॥
 वदन सलिल कण जगमग जोती ।
 मानो इदु सुधा तामे अमीमय मोती ॥
 आधो मोती हार चारु उर रह्यो लसी ।
 कनक लता ते मानो उदय होत ससी ॥
 पुन सुरसरी सम मोतिन के हारा ।
 रोमावलि मिली मानो यमुना की धारा ॥
 पीक भलकन सौहे सरस्वती ऐनी ।
 परम पावन देखी मदन ब्रवेनी ॥
 अंचल उडन छवि कहिये कवन ।
 रूप दीप शिखा मानो परसी पवन ॥
 शिव मोहे जिन वह मोहनी जे कोई ।
 प्यारी के पायन आज आन परे सोई ॥
 नंददास ओर छवि कहा लो कहीजे ।
 देखे ही बने हो लाल चल्थोहि चहीजे ॥७४॥

(१७०)

बाके तो नयन मने चाहे पे वे प्यारी नही मानत ।
 दृगन ते रस की हासी भोहे करत उदासी बेनन आन आन वानत ॥
 वो तो तिहारे रस रूप की अधीनताई दरपण ले दरबराय आपवश आनत ।
 नंददास प्रभु जाके तन भेद भयो टूटेगो मानगढ्यों जानत ॥७५॥

(१७१)

दोरी दोरी आवत मोहि मनावत दाम खरच कछु मोल लई री ।
 अचरा पसार के मोहि खिजावत हो तेरे बाबा की चेरी भई री ॥
 जा री जा सखी भवन आपने लख बातन की एक कही री ।
 नंददास वे क्यो नही आवत उनके पायन कछु मेदी दर्ई री ॥७६॥

(१७२)

पोढे माई प्रीतम प्यारी सग ।
 रग महल की ललित तिबारी परदा परे सुरग ॥
 जगमगात पावक अगीठी धरी रति रस रग ।
 नंददास प्रभु प्यारी जीत हे मुदित अनंग ॥७७॥

(१७३)

बिलसत रग महल रग लाल ।
 रस रस की करत बतिया सग पोढी वाल ॥
 खचित परदा परे चहु दिश मुदे भरखा जाल ।
 जगमगात पावक अगीठी गान तान रसाल ॥
 नवल नारी निहारी प्रीतम व्हे रही उर माल ।
 नंददास प्रभु युगल छवि पर डारो सर्वस्व वार ॥७८॥

(१७४)

माई री लाल आए री मेरे ही महल तन मन धन सब वारो ।
 हो बल गई सखी आज की आवन पर पलकन सो मग भारो ॥
 अति सुकुमार पद करन सरी कंकर गुन सब टारों ।
 नंददास प्रभु नंद नंदन सो ऐसी प्रीत नित धारों ॥७९॥

(१७५)

लाल सग रितुमानी में जानी कहे देत नैना रग भोए ।
चचल अचल में न समात ईतरात रूप उदधि मानो मीन महावर धोए ॥
पलक पीक भ्रगमगात द्रग मानिक मानो जराय लीये प्रेम पाट पोए ।
नददास प्रभु सुख के लोभ लालचि जानत हो निश नेक न सोए ॥८०॥

(१७६)

खररी मधुवन की मोहन सग निस दिन रहत खरी ।
भवते परस भयो मोहन को तवते रहेत हरी ॥
सीतल जल जमुना को सीचन प्रफुलित द्रुम लता सगरी ।
नददास प्रभु के शरन जाए ते जीवन मुक्ति करी ॥८१॥

(१७७)

जो तु दरपन ले निरख निरख हसत सो तो में जानी री माई ।
के तेरे ईत रगीले नेनन प्राण प्यारे कि माधुरी मुरत ताकी वभाई ॥
हो तो रही रीझ रीझ मो पे कछु कहे न आवे रूप को लोनाई ।
नददास प्रभु की प्यारी अब कछु मोहि दिजीये जु देखो धो केसी बन आई ॥८२॥

(१७८)

हो तो वार डारी तन मन धन लालन पर ।
लाल सिर पाग ढरक रही रतन पेच सिर सुभग सवारी ॥
भाल विशाल तिलक गोरोचन अलक सोहत घुघरारी ।
नंददास प्रभु की छवि निरखत अखिया पलक न परत सवारी ॥८३॥

(१७६)

धन धन प्रभावती जिन जाई अैसी बेटी

धन धन हो वृषभान पीता ।

सुर धुननि की बानी सो तो तिहुं लोक जानी

उपज परी मानो कनक लता ॥

चरन पर गगा वारो मुख पर शशि वारो

अैसी त्रिभुवन मे नाहिन बनिता ।

नंददास स्याम बस करबे को राधा जु के

तोले नहि सिधु सुता ॥८४॥

(१८०)

कौन दान दानी को ।

करन लगे नई रीति अनोखे दुध दही को मही को अजहु हम जानी को ॥

करत हो विचित्र चाल सुवल तोक पे चखाय काहु सो

कहत गाढो जमायो काहु सो कहत पानी को ।

नंददास आसपास लटक रही कनक बेलि

भोहन की अमेठन मे सबही अरुभानी को ॥८५॥

(१८१)

भोहे बोलबो न चालबो बुलायबो न बोलबो

जसोदा जु तिहारे कान्ह ऐसी गारी दीनी ।

दधि मे लगायो दान दिये बिन न देत जान

ऐसी अटपटी बात तिहारे कान्ह कीनी ॥

खोर मे मरोरी बांह मटुकी भटक लीनी
 जानो कहा कीनी पाट इंडुरी नवीनी ।
 अकथ कहानी बरजो न मानी ब्रजपति
 रानी मे तिहारो कान कीनी ॥८६॥

(१८२)

लाल तुम मागत दान कैसो ।
 छाडो बाट हम जेहे मोहन रोकत हो मग ग्रैसो ॥
 दूध दही को दान सुन्यो कहीं देहो कहा कहो जु तैसी ।
 नंददास प्रभु गिरिधर सुत क्यों बोलत बोल अनेसी ॥८७॥

(१८३)

अरे तेरी याही मे बन आई ।
 यह मारग तुम रोके रहेत हो छीन छीन दधि खाई ॥
 तुम जानत हो घेरी हमने रही अपनी समदाई ।
 नंददास प्रभु तनक छाछ मे निकस जात ठकुराई ॥८८॥

‘ख’ प्रति से प्राप्त पद

(१८४)

योगी रे बसो तो बसो गोवर्द्धन नगर बसो तो मथुरा धाम ।
 सरिता बसो तो बसो यमुना तट रसना रटो तो जपो कृष्ण नाम ॥
 नंद के नंदन पति है हमारे पुष्ट लीला मारग है हे धनश्याम ।
 नंददास यदुनाथ आस एक चरण कमल लह्यो विश्राम ॥१॥

(१८५)

एरी तेरी सेज की मुसक्यान मोहन मोह लीनो ।
 जाको यश रटत सुनि सजनी सो तेरे आधीनो ॥
 और की सवार के घर किये रहत है आपुनपो तज दीनो ।
 नंददास वाको चितवन मे टोना सो कछु कीनो ॥२॥

४

(१८६)

तू तो नेक कान दे सुदर वासुरी मे वजावे तुव नाम ।
 पुनि पुनि राधे राधे प्राणेश्वरी वह गावै घनश्याम ॥
 तुव तन परसी जो पन जात ताको उठ परिरभन सुख को धाम ।
 नंददास ऐसे पिय सो क्यों रुठिएरी वल पूरिए मधुरिपु काम ॥३॥

(१८७)

आज मेरे धाम आए री नागर नदकिशोर ।
 धन दिवस धन रात री सजनी धन भाग सखी मोर ॥
 मगल गावो चौक पुरावो वदनवार धावो पौर ।
 नंददास प्रभु संग रस वस कर जागत करहु भोर ॥४॥

(१८८)

एरी इन वासुरिया माई मेरो सरवस चोरायो
 हरि तो चोरायो हतो अकेलो चीर ।
 अरुन बसन अरु नयन श्रवण सुख लोक लाज कुल धरम धीर ॥
 अधर सुधा सर्व्वस जु हमारो ताहे निधरक पीवत रह गभीर ।
 नंददास प्रभु को हियो कहा कहू यह प्रेम बीर ॥५॥

(१८६)

राम कृष्ण कहिए निशि भोर ।
वे अवधेश धनुष धरे वे व्रज जीवन माखन चोर ॥
उनके छत्र चमर सिंहासन भरत शत्रुहन लक्ष्मन जोर ।
उनके लकुट मुकुट पीताम्बर गायन के सग नदकिशोर ॥
उन सागर में शिला तराई उन राख्यो गिरधर नख कोर ।
नददास प्रभु प्रपच तजि भजिये जैसे निरत चन्दु चकोर ॥६॥

(१८७)

भक्त पर करि कृपा यमुना ऐसी ।
छाडि निज धाम विश्राम भूतल कियो न प्रकट लीला दिखाई जो तैसी ॥
परम परमार्थ करण है पवनि को रूप अद्भुत देत आप जैसी ।
नददास जो जानि दृढ़ चरण गहै एक रसना कहा कहु वैसी ॥७॥

(१८८)

नेह कारण यमुना प्रथम आई ।
भक्त की चित्त वृत्ति सब जानही ताहि ते अति ही आतुर जो धाई ॥
जैसी जाके मन हती मन इच्छा ताहि तैसी साध जो पुजाई ।
नददास प्रभु नाथ ताहि पर रीभक्त यमुना जू के गुण जो गाई ॥८॥

(१८९)

यमुने यमुने यमुने जो गावो ।
शेष सहस्र मुख गावत निश दिन पार नही पावत ताहि पावो ॥
सकल सुख देनहार ताते करो उच्चार कहत हो बार बार भूलि जिनि जावो ।
नददास की आशा यमुना पूरण करी ताते कहू घरी घरी चित्त लावो ॥९॥

(१६३)

भाग्य सौभाग्य यमुना जो दे री ।

वात लौकिक तजे पुष्टि यमुना भजे लाल गिरिधरण को ताहि वर मिले री ॥

भगवदी संग करि वात उनकी ले सदा सानिद्ध्य रहे केलि मे री ।

नददास जो जाहि बल्लभ कृपा करे ताके यमुने सदा वश जो रहे री ॥१०॥

(१६४)

जगावति अपने सुत को रानी ।

उठो मेरे लाल मनोहर सुदर कहि कहि मधुरी वानी ॥

माखन मिश्री और मिठाई दूध मलाई आनी ।

छगन मगन तुम करहु कलेऊ मेरे सब सुखदानी ॥

जननी-वचन सुनि तुरत उठे हरि कहत वात तुतरानी ।

नददास कीन्हो बलिहारी यशुमति मन हर्षानी ॥११॥

(१६५)

यमुना पुलिन सुभग वृंदावन नवल लाल गोवर्द्धनधारी ।

नवल निकुंज नवल कुसुमित दल नवल नवल वृषभानु दुलारी ॥

नवल हास नव नव छवि क्रीडत नवल विलास करत सुखकारी ।

नवल श्री विठ्ठलनाथ कृपावल नददास निरखत बलिहारी ॥१२॥

(१६६)

चंचल ले चली री चितचोर ।

मोहन को मन यो वश कर लियो ज्यो चकरी सग डोर ॥

जो लो न देखत तब मूर्ति तो लो पलक न लागत निमिष न ओर ।

नददास प्रभु प्रेम मगन भये नागर नंदकिशोर ॥१३॥

(१६७)

प्रात समय श्री बल्लभ सुत को पुण्य पवित्र विमल यश गाऊ ।
सुंदर शुभग वदन गिरिधर को निरखि निरखि दृग दृगन सिराऊ ॥
मोहन मधुर वचन श्रीमुख के श्रवण सुनि सुनि हृदय वसाऊं ।
तन मन प्राण निवेदि वेद विधि यह अपुनपो हो सुभल कराऊ ॥
रहो सदा चरणन के आगे महाप्रसाद उच्छिष्ट पाऊ ।
नंददास यह मागत हो श्री बल्लभकुल को दास कहाऊ ॥१४॥

(१६८)

आलस उनीदे नयन लाल तिहारे कहा तुम रैन विताए ।
पीक कपोल देखियत है प्रिय अधरनि अजन लखाए ॥
जावक भाल उर बिन गुण माल हृदय नख चिन्ह दिखाए ।
नंददास प्रभु बोल निवाहे भोर होत उठि धाए ॥१५॥

(१६९)

नंदराय जू के द्वारे भोरहि उठि पहाउ ।
निरवधि आनंद सूरति निरखि नैन सिराउ ॥
उज्ज्वल तन थोरी थोदि राता अम्बर सोहे ।
अरुण घनते निकसि पूरण चंद की छवि को हे ॥
ब्रह्म घनीभूत पूत कर अगुरिया लायो ।
मंद मद चलन सिखवति लोचन फल पायो ॥
रिद्धि सिद्धि निद्धि सहित रमा टहल करति फिरे ।
अर्थ धर्म काम मोक्ष भीख भिखारिन परे ॥
नंद जू कहत कहा मागत हो टेरि मुनाउ ।
नंददास नंदलाल को नेकु उत्तीरन पाउ ॥१६॥

‘अ’ प्रति से प्राप्त पद

(२००)

बोली मदन गुपाल लाल सुनि मानिनी ।

जिनि करि इतौ सयान अहो सुनि मानिनी ।

आयो सरस वसत समय । सु० । काहू को रहिहै न मान । अहो ॥

उतर घरनि के घर चल्थो । सु० । सुदर दिनमनि पीय । अहो ॥

छाडियै कछु इक मान जानि । सु० । दछिन वि० छन तीय । अहो ॥

मलय पवन की आजु ही । सु० । ह्वै गई ताती वासु । अहो ॥

जनु दक्षिण दिस विरहिनी । सु० । लीनी विरह उसासु । अहो ॥

वह सुनि कानन कान दै । सु० । केकी की कुहकानि । अहो ॥

आनक मनो रितुराज कौ । सु० । सिर पर वाज्यौ आनि । अहो ॥

जिह डर वृल्लिन मान छाडि । सु० । उलही है आनकपटि । अहो ॥

नाइक द्रुमनि के कठ सो । सु० । कैसी गई है लपटि । अहो ॥

काम भई रजनी भई । सु० । गई रवि मडल छाइ । अहो ॥

थिर चर तिय सव रहसि के । सु० । मिली पियनि सो जाइ । अहो ॥

ठोर ठोर मिलि मधुप पुज । सु० । गुजत सौरभ छाइ । अहो ॥

मनो विहरति छवि मधु वधू । सु० । नूपुर वाज पाइ । अहो ॥

मिलि कूजिह कल कोकिला । सु० । कोमल कठ सुजात । अहो ॥

अटनि चढी मानो मधु वधु । सु० । करति परसपर वात । अहो ॥

और विहंगम रंग भरे । सु० । करत जु कानन रौरि । अहो ॥

मनो मनमथ कुजर छुआ । सु० । परचौ मधु नगरी सोर । अहो ॥

त्रिगुन पवन चंचल तुरग । सु० । चढ्यौ रतिराज विदेह । अहो ॥

उडी जु पोहप पराग तहा । सु० । वढी मनो पुर पेह । अहो ॥

षग वंदीजन वदत विरद । सु० । मदन जहां सिरमौर । अहो ॥

तिनि मै कपोती कहति यहै । सु० । एकै तू नहि और । अहो ॥
 कुसुम सरासन कर धरै । सु० । विषम विष भरे वान । अहो ॥
 को सहिहै तीछन परे । सु० । चढे चंद पर सान । अहो ॥
 वृंदावन मिलि रम्य भयौ । सु० । नव कुसुमाकर चारु । अहो ॥
 ज्यौ कुच मडल जुवति के । सु० । मडित मजुल हार । अहो ॥
 तरुनि मुकुट मनि वाल तू । सु० । लाल रसिक मनि राय । अहो ॥
 कीजै सफल वसत समै । सु० । पहलै पिय सो जाइ । अहो ॥
 मिलहु न लाल गुपाल कौ । सु० । छुवत तिहारे पाइ । अहो ॥
 मान छाडि मोहन मिली । नंददास बलि जाइ ॥१॥

(२०१)

बराजोरी होरी मचावै री ।

अरी मैरी चूनरि भटके सावरो बराजोरी ॥

ग चौ (?) ऋज्ज कन्हैया कर गहि लीनी जु व ना अँ दस्त चलावे ।

सोहनी सुरति मोहनी मुरति रग भरी धुम मचावै ।

नंददास प्रभु तुम वह नायक हिलिमिलि कठ लगावै री ॥२॥

‘इ’ प्रति से प्राप्त पद

(२०२)

सखि नव नद नदन रुचिर रूप । नवल नागरी गुन अनूप ।

नव नेह नइ रुचि न विलास । नवरूप मोहर मंद हास ।

नव पीत वसन पहरे त्रिभग । नीलावर सारी गौर अंग ।

नव पुस्पित बल्लि कुज धाम । नव वृंदावन सुष अभिराम ।

नव नूत मंजरी अति विलास (विसाल ?) नव पल्लव दल मानो प्रवाल ।
 नव कोकिल कूजति अति सुहाइ । तहा नव मलया तिविधि बाइ ।
 तहां नव मडली सी आसपास । तहा नव सुप निरपत नंददास ॥१॥

‘ई’ प्रति से प्राप्त पद

(२०३)

कन्हैया माई पनघट बाट रोके रहतु ।
 कबहूं धाई मेरो अंचल गहे कवही नेन जोरि आन की आन कहतु ।
 सखिय मनाय लाई आपुही आपु आई एतो हठ सठ मेरो कोन धो सहेगो ।
 नददास क्यो समाय एक गाव को वसिवो सखी एसोधौ कैसे निबहेगो ॥१॥

(२०४)

नाचत रस रग भरी निज भुज हरि अंग धरी
 तरनि तनया तीर बनी गोप बधू मंडली ।
 कूजित मंजीर नूपुर कटि तटि मनि मेखला
 कर बलय मध्य बाजत धुनि मुरलिका भली ॥
 श्रमित स्वेद विदुका मुखारविद पर विराजे
 सिथिल कुसुम ग्रथित कचन विथुरीत अलकावली ।
 नंददास रास विलास रिभक्त मुख मधुर हास
 गिरिवरधर रूप देखि मनसा चली ॥२॥

(२०५)

आली री मंद मंद मुरली धुनि बाजत नृत्यत कुवर कन्हैया ।
 तेसीए सरद चांदनी निर्मल तेसी एक बनी है दुलहैया ॥

चंदन की खोर किये उर वनमाल हिये कंचन की वेलि मानौ उलहैया ।
नंददास प्रभु की छवि नि(र)खत दुहू करत बलहैया ॥३॥

(२०६)

रास मे रसिक दोऊ नाचत आनद भरि
गताद्रिता तत ततथेई थेई गति बोले ।
अंग अंग विचित्र किए लाल काछनी मुदेस
कुडल झलकत कपोल सीस मुकट डोले ॥
जुवति जूथ निरत करत श्याम ग्रीव भुजा धरे
व्यामा गीत रसनाहि सम तोले ।
नंददास पिय प्यारी की छवि पर
त्रिभुवन की शोभा वारो विनु मोले ॥४॥

(२०७)

बूदावन रास रच्यो वनवारी ।
वेणु वीणा नुपुर धुनि मिलवन वजत एक कर तारी ॥
बनि ठनि रसिक रसाल लाल निधि माथे मुकुट सवारी ।
श्रवणनि कुडल उर पीतावर गहे रे माल मुकता री ॥
पोड(स) साजि सिगार आभूषन नवल राबिका प्यारी ।
लेति उरप धुल लेति सुलप गति घुघरुन की छवि न्यासी ॥
सुख सागर नागर अति दपति भक्तन के हितकारी ।
बिहसि बिहसि बिहरत रग भीने निरखि मदन गयो वारी ॥
लीला ललित अपार लाल की वरने को कवि हारी ।
सिधासन आरति करि बैठे नंददास बलिहारी ॥५॥

(२०८)

बरसाने ते दोरि नारि एक नद भवन मे आई जू ।
 आजु सखी मगल मे मगल कीरति कन्या जाई जू ॥
 सुनि जसुमति मन हरप भयो अति बोलि लई ब्रजवाला जू ।
 मुक्ता मणिमाला भूषण वर मढई साज रसाला जू ॥
 चली गज गामिनि साथन हाथन कचन थार सुहाये जू ।
 * डह डहे मुख छवि छाजत राजत उपमा अधिक विराजे जू ॥
 हार सुढार उरन पर सोहत निरखि सची छवि लाजे जू ॥
 × × × × × × × × लाजन कोटिक मेना जू ।
 कजन पर खेलत मानो खजन अजन रजित नेना जू ॥
 कुडल मंडित नेन अतिराजत उपमा अधिक विराजे जू ।
 हार सुढार उरन पर सोहत निरखि सची छवि लाजे जू ॥
 गावत गीत करत जग पावन भामिनि मदिग आई जू ।
 आनंद के आगन मानो आनद सानद वटत वधाई जू ॥
 देखि मुदित वृषभान भये अति भेट रोच सो लीनी जू ।
 गदगद कंठ सबनि सो बोलत वीथिनि पावन कीनी जू ॥
 कीरति ढिग निरखि सुठि कन्या धन्या अधिक अपारा जू ।
 कोतिक मे कोतिक रस भीने बरखत सीसन धारा जू ॥
 सब जग धाम फुनि जाने सो सुधाम जाने जू ।
 नददास सुख को सुखसागर प्रकटे हे बरसाने जू ॥६॥

(२०९)

चलिहे भरत गिरिधरन लाल को बनि बनि अनगन गोपी ।
 उवटि उवटनो नवल चपल तन मनहु दामिनी ओपी ॥
 पहिरे विविध वसन संग भूषण करनि कनक पिचकारी ।
 चंचल वंक बडे डी अँषिया मनहु मृगी गतवारी ॥

छिरकत चली गली गोकुल की कहि न परे छवि भारी ।
 उडि उडि केसर बूका बंदन रंगि गये अटा अटारी ॥
 सखनि सहित सजि सावरे सुदर अति आतुर के आये ।
 मानो अंबुज बनवास बिवस ह्वे अलि लंपट उठि धाये ॥
 पहिले कान्ह कुवर मनमोहन पिचका उन पर मेली ।
 मानहु सोम सुधा करि सीची नवल प्रेम की बेली ॥
 दुरि मुरि भरनि बचावनि छवि सो आवनि उलटनि सोहे ।
 घुमड्यो अवीर गुलाल गगन मे जो देखे सो मोहे ॥
 हरि कर पिचका निरखि त्रियन के नेना छवि सो ढराही ।
 खंजन से उडि चले मनहु पुनि ढरकि मीन ह्वे जाही ॥
 पिय के अंग त्रियनि के लोचन लपटे छवि लोभा ।
 मानहु हरि कमलनि करि पूजे भई हे अनोपम सोभा ॥
 विच विच छूटत कटाछ कुटिल सर उचटि उलटि कहुं लागी ।
 मुरछित परचो तहा मेन महाभट गति भुज भरि ले भागी ॥
 ओर कहा लों कहि आवे छवि जो कछु बढी तिहि काला ।
 नददास प्रभु सब सुख वरषत ब्रजजन पर नदलावा ॥७॥

(२१०)

रथ चढि चलत श्री गिरधर लाल ।
 वाम भाग कीरत जू की कन्या सोहन परम रसाल ॥
 रचि पचि रचि रच्यो विश्वकर्मा तुरग अर्द्धरग भाल ।
 ता रथ कों खेचति ब्रज सुदरी चल नव नव गति चाल ॥
 अपने घर पधराइ भोग धरि इहि विधि सब ब्रज बाल ।
 नंददास आरती उतागत निरखत होत निहाल ॥८॥

(२११)

अखिया मेरी लालन संग अकी ।

वह मूरति मो चित मे चुभि रही छूटत नही मो भटकी ॥

भोह मरोरि डारि पिक वानी पिय हिय एसो घटकी ।

नंददास प्रभु की प्यारी लाज तजि डरी चलि निकट की ॥६॥

(२१२)

घोरि घन मन मोहे सोहे भूमि हरियारी

वरषे थोरे थोरे वूदे रंग भरी ।

रग भरी वूदन मे रग भरे मोर मधुर सुर गावे ।

गुजे अलिनन कूजे कोकिल मूर्छे मदन जगावे ।

तहा रच्यो नद नदन हिडोरो मजु कुज के धोरे ।

हेम को रुचिर हिडोरो जाहि नव नग लागे ।

बलिक वरनि न जाइ देखि सबे अनुरागे ।

छंद

देखि सबे अनुरागे नव नग लागे अरु उज्ज्वल गज मोती ।

ससि ते सहज गुण एक एक लागि रहे जगमग जोती ।

ऊपर सुरग वितान विराजे मानो उनयो घन प्रेम को ।

बलि न दे परमानंद वरषे रुचिर हिडोरो × म को ॥

भूले मदन गोपाल कहि न परति तन सोभा ।

सग बनि वर वाल जानो रूप की गोभा ।

रूप की गोभा अद्भुत सोभा कहत नही कछु आवे ।

ठोर ठोर प्रतिबिंब भलमले चखन को चोध जनावे ॥

जुगल किसोर माई सुरग हिडोरो निरखि जन फूले ।

बलि नंद सग बनी वृषभान वाला मदन गोपाल भूले ॥

सोहे भूल की फूल मे जनमे तन भलके ।
 अरुभे नेन कटाछे अरु कुडल की ललके ॥
 कुडल भलके अरुभी अलके मद हसनि चित चोरे ।
 रंगनि लपटे अरु सुष दपटे परिमल पवन भकोरे ।
 छबीली दूरनि हसि घूरत परस्पर कोटि मदन मन मोहे ।
 बलि नददास जीवन ब्रज की दोऊ भूल फूल मे सोहे ॥१०॥

(२१३)

प्यारी भूलति नवल लाल के सग । ध्रुव ।
 सावन सुहावन हरित भूमि वारि नर आनद ।
 विचित्र भाति सो कामिनी बहु किए सिगार सुखंद ।
 बनि केलि करती कत मन की मुरो अलके फद ।
 सारी कसूभी सवुज अगिया लाल तोई वद ।
 ताहा उमगी घहराय वरषे रमे दादुर मोर ।
 शीतल मद पवन भकोरे पछी करे अति सोर ॥
 चद बदनी हुलसि गावे नील मधुर सुर घोर ।
 श्याम बादर दामिनी दुति श्याम श्यामा जोर ॥
 चहु ओर सखी मिलि जूथनि अपने अपने सुभाय ।
 हंसति किलकति मान मोहति लेति तान बनाय ॥
 कर कमल तारी देति भुकि मुरि उमगि चोप भुलाय ।
 गहि लपकि लागति कठ भाभिनि लेति पिय उर लाय ॥
 अगर चदन ब (न्यो) (हि) डोरो लखि रह्यो चकि मेन ।
 रचि हेरत न हिडोर पाइन कर चढन सुख देन ॥
 नददास कहा कहूं उपाय × × अनग की सेन ।
 प्रभु की लीला सोइ (जाने) निरमल नेन ॥११॥

(२१४)

हिडोरे भूले नवल लाल गिरिधारी ।
 वेठी अंस पर भुज दे अरु वृषभान दुलारी ॥
 कचन के द्वे खंभ मनोहर डाडी सरस सिगारी ।
 विविध भात के बने फोदना विद्रुम भोमि संवारी ॥
 करत विलास हास मन भावन रसिक राधिका प्यारी ।
 दरपन मे मुख निरखि मनोहर दे (त परस्पर गा) री ॥
 ललितादिक × × × गावति नारी सुढारी ।
 (यह) छवि निरखि निरखि सचु पावति नंददास बलिहारी ॥१२॥

(२१५)

आजु भूली सुरग हिडोरे प्यारी पिय के सग ।
 गौर तन वनि सुरग चूनरी पीत वसन सोहे सुभग सावरे अंग ॥
 तेसेई वादर ऊलि आए तेसोई गावत ललितादिक भीने रग ।
 नददास प्रभु प्यारी सी छवि पर वारो कोटि अनग ॥१३॥

(२१६)

रंगीले हिडोरे भूले रंग भरे अति ।
 नंद कुवर वृषभान कुवरि वरपि छबीली भाति भूली रति पति ।
 श्याम वरन पिय गौर वरन त्रिय भलमलाति भाई अंग अंग अति ।
 छिनु छिनु वाढे छवि कोउ केसे कहे कवि तिनके छिलन ले किये हेमरति ।
 गुण रूप छां वाढी तेई ढिग ढिग ठाढी गावति भुलावति सुमंद मंद गति ।
 नंददास प्रभु दृष्टि ड(र)ति त्रिलोकी तरुणी वारति आरति ॥१४॥

‘ऊ’ प्रति से प्राप्त पद

(२१७)

प्रात समे पंछी बोलत है, छाँडौ हरि ! अंचल घर जाऊँ ।
ऐसी करौ जो कोउ न बूझै निस-ई-निस बहुरचौ फिर आऊँ ।
हठ करे होड उजियारौ पथ मे, गमन समे लोगन की लाज ।
तुम तौ अपने भमन बिराजौ, मोहि कठिन लोगन सो काज ।
चतुराई चतुरन से सीखौ, पर नारिन सो नाहिन जोर ।
नेह बिना कोउ पास न आवै, तनक विचारौ नंदकिसोर ।
रसिक रसीले रस की ठानो बिरस किए कछु रहै न स्वाद ।
नददास प्रभु दुरजन बैरी, बिना विचारे मिथ्याँ बाद ॥१॥

(२१८)

तुम कव ते सीखे हो लालन या लगन को जानन ।
सोबत नाहि रैन दिन लगी रहै आसरे, कवहूँ हँस बोलत नहि आनन ।
ध्यान धरत पुनि अक भरत ही, गाइ उठत कभो वाके गुन ग्रामन ।
साँची कहत हो वदन विलोक्यौ भामिनी—
भेद जनायो, कटाच्छन, नददास पाँइन परे त्रिन लै पानन ॥२॥

(२१९)

स्याम अचानक आए सजनी, फिर पाछे कहूँ भागे ।
चोक परी सपने मे देखे बिमल वसन तन त्यागे ।
जरौ नेह यह नैना खुल गए , पाए न ढिँग, दुख पागे ।
नददास बिरहिन कैसे जीए, पच वान उर लागे ॥३॥

(२२०)

उंनीदी आँखे लागत प्यारी, कजरारी कोर बारी ।
 सगरी रैन जगी पिआ के सँग ताते भई रतनारी ॥
 घरी घरी, पल पल भपकत मानो करखत कज पँवारी ।
 नंददास प्यारी छवि निरखत मोहे कुज बिहारी ॥४॥

(२२१)

भले भोर आए नैना लाल ।
 अपनो पटपीत छाड नीलाम्बर लै बिलसे,
 उर लाइ लई रसिक रसीली बाल ॥
 रति-जै-पत्र लिखित दीनो उर, सोहत बिन गुन माल ।
 नंददास प्रभु साँची कहिए, फिरि फिरि प्यारे हमारे नंदलाल ॥५॥

(२२२)

तमचुर अबलन को दुखदाई ।
 बिछुरत जनम भरे तोहि वीतै, हो नाके बहु आई ।
 हाड दई कहा कीजिए, एक न बोल उपाइ ।
 अरध रात कूकन लगै, सोवत देत उठाइ ॥
 सुख सोवत नर नारि नगर में, अपने अपने धाम ।
 काम बियोगिनि बिरह के अरथ करन बिस्वाम ॥
 लिपटि पिआ के अग सो, करत दुख को नास ।
 तमचुर पापी बोल तहँ, करत सुख कौ ह्वास ॥
 छतियाँ सो छतिया मिली, अधर अधर रस लेत ।
 नीद भरे नैना नए, ये बोल बोल दुख देत ॥
 सीत समे सोवत पिआ, मन ही मन अकुलात ।
 प्यारी के संजोग में, धुन सुन ग्रीव डुलात ॥

लोक लाज डर मॉन के, मात पिता की कॉन ।
 मो मैहलन ते उठि चले, भोर भयौ जिअ ग्रॉन ॥
 बहुत कही पिअ रैन है, करत जु तमचुर रोर ।
 गाइ दुहन समयौ भयौ, रही रैन अर थोर ॥
 नैन मूद, कर जोर के, बिनवो ओली ओट ।
 अबलन की यह टेर है, परियो तमचुर बोट ॥
 तमचुर तू मर जाइयो, विधना को कर दोस ।
 सीत काल सिर पर छयौ, कातिक, मगसिर, पोस ॥
 गोपी जन मन कलप करि, छिन न वियोग सुहाइ ।
 दाँत चबामे, का करे, मन मन देव मनाइ ॥
 कोकिल ओर पपीहरा, बर बोली बन मोर ।
 नददास क्यौ बाज न बोलै, कहियतु है चितचोर ॥६॥

(२२३)

ठाढी री खिरक माई कोन को किसोर ।
 सावरे वरन, मन हरन, बसीधरन, काम करन कैसी मति जोर ॥
 पवन परसि जात चपल होत देखि पिअरे पट कौ चटकीलौ छोर ।
 सुभ साँवरी छोटी घटा ते निकसि आई,
 वे छबीली छटा को जैसो छबीलौ ओर ॥
 पूछति पाँहुनी ग्वारि हाहा हो मोरी
 कहा नाउँ को है चित बित चोर ।
 नंददास जाहि चाहि चक चौधी आइ जाइ,
 भूल्यौ री भमन-गमन भूल्यौ रजनी भोर ॥७॥

(२२४)

लाल सिर पाग लहरिया मोहै ।
 तापर मुभग चद्रिका राजत निरख सखी मन मोहै ॥

तैसौई चीर सु बन्धौ लैहैरियाँ पैहरे राधा प्यारी ।
तैसौई घन उमड्यौ चहुँ दिस ते नददास बलिहारी ॥८॥

(२२५)

पनिआँ न जाउँ-री आली, नद नंदन मेरी—

मटकी पटकि के हों भटकी ।
ठीक दुपैहरी मे अटकी कुजन लो,
कोऊ न जाने मो घट की ॥
कहा-री करो कछू बस नहि मेरौ,
नटनागर सो अटकी ।
नददास प्रभु की छवि निरखत,
मुधि न रही पनघट की ॥९॥

(२२६)

पिछौरा केसर रंग रेंगायौ ।

मेघ-गँभीर-स्याम-तन सुंदर, लागत परम सुहायौ ॥
रोकै आइ घाट जमुना के गोपी जन मन भायौ ।
भरि गागरि नागरि के सिर धर, कुच कर कमल फिरायौ ॥
आगे चलत कछुक मिस करके, बातन रस बरखायौ ।
नददास ब्रजवास सदाँ वसि, नेह नयौ दरसायौ ॥१०॥

(२२७)

जेमत है-री मोहन, जिन जाऔ तिवारी ।

सिध पौरि ते फिर फिर आवत, वरजी हो सो बारी ॥
रोहिनि आइ निकसि ठाढी भई दै दै ओट मुख-सारी ।
तुम तरुनी जोवन मद माँती, देखी देखन हारी ॥

कोउ कछु कहति, कोऊ कछु गावति, कोऊ बजावति तारी ।
नंददास प्रभु भोजन-घर मे, अब ही बैठे थारी ॥११॥

(२२८)

तपन लाग्यो तरनि परत अत घॉम भैया, कहूँ छॉह सीतल किन देखौ ।
भोजन को भई अवार, लागी है भूख भारी, मेरी ओर तुम पेखौ ॥
वर की छैयाँ दुप्हर की बिगियाँ, गैयाँ सिमिटि इहाँ आवै ।
नंददास प्रभु कहत सखन सौ, यहै ठौर मेरे जिअ भावै ॥१२॥

(२२९)

अहो हरि भोजन कीजै, आई छॉक इक वार ।
यै बैठी छकिहारी कदमतर, रूप रसिक सुकुमार ॥
उँमगी घटा, घटा चहुँ दिस ते, लागी परन फुहार ।
उलटि चली तकि तीर ग्वालनी, करति नमनि बलिहार ॥
कर, कर ऊँची बाँह बुलावत, चल आए सब ग्वार ।
नंददास प्रभु जो मडली, बैठे नदकुमार ॥१३॥

(२३०)

आज बृदा विपिन कुज अदभुत नई ।
परम सीतल सुखद, स्याम सोभित तहाँ,
माधुरी मधुर अति पीत फूलन छई ॥
विविध कदली खंभ भूमका भुक रहे,
मधुप गुजार, सुर कोकिला धुनि ठई ।
तहँ राजत श्री वृषभाँनु की लाड़िली मनो—,
घनस्याम ढिँग उलही सोभा नई ॥

तरनि तनया तीर धीर समीर जहाँ

लखि ब्रज बधू अति हरखित भई ।

नंददासनि नाथ और छवि को कहै,

निरखि सोभा नैन पंगु गति ह्वै गई ॥१४॥

(२३१)

प्यारी, तेरे लोयन-लोने जिन मोहे स्याम-सलोने ।

रस के आल-वाल रंगीले बिसाल, ऐसे पाछे भए न आगे होने ॥

रूप रिझोने जब मुसकि चलत कोने, काम-केहरी टटावकटोने ।

नंददास नद-नदन के नैना तोसे नेक नाहिँने होने ॥१५॥

(२३२)

गोधन धूरि मे हरि आवत, कैसे नीके लागत मोर मुकट की ढरकन ।

मुरली बजावत, कमल फिरावत, मनो गयंद की मलकन ॥

नैन कमल मकराकृत कुडल, ज्यो घन मे-री मीन चढि किलकन ।

नंददास प्रभु की छवि निरखत, नेक न लागे पलकन ॥१६॥

(२३३)

मो सो क्यों बोले रे नंद के लाल, तेरौ कहा लिये जात ।

छाँड़ दै अचल न कर गैहरु, जानत हो तेरे मन की बात ॥

बन ते आवत कमल फिरावत, ता पर गावत तान रसाल ।

नंददास सूधे किन बोलै मै वरसाँने की बाल ॥१७॥

(२३४)

ऊसीर के मैहैल ब्यारू करत दोऊ भैया ।

बिजन मधुरे, खाटे, खारे, परसत रोहिनि मैया ॥

कर मनुहार जिमावत सुत को, परिपूरन कर प्रेम अघैया ।
नददास ऊपर पै पीवौ, बीरी लेहु कन्हैया ॥१८॥

(२३५)

ब्यारू करत भाँमते जिअके ।
खट रस विजन मीठे खारे, अचल ब्यार करत पिअ पिअ के ॥
कबहुँक कौर देति श्री मुख मे ताप समोवत अपने हिअ के ।
नददास प्रभु रग मैहैल मे प्रान पिअारी अपने पिअ के ॥१९॥

(२३६)

आली री सघन कुज पुहुप पुज उसीर की रावटी,
तामधि राजत पीतम प्यारी ।
कचन थार साजि लाँई ब्रज वाम,
जिमावत प्रान पिअहि गूँथत हार निवारी ॥
कोऊ बिजना कर गहे, कोऊ परसत पिअ को,
कोऊ अरगजा घसि लावत , फलन की कचुकि सारी ।
जेमत स्यामा स्याम, देखि लजाने कोट काम,
नददास तहाँ पै जाइ बलिहारी ॥२०॥

(२३७)

ब्यारू करत बलराम स्याम जैसी घटा स्याम सुख स्याम देखत मन ।
पलक ओट अकुलात, आरत अत तज न सकत एकौ घरी पल छन ॥
लाखन अभिलाख लाख छक छकि भूरि भाग, धनि धनि कहै गोपीजन ।
नंददास प्रभु के ऐसे सुख ऊपर वार फेरो अपनो-री तन मन धन ॥२१॥

(२३८)

अधरन रँग राखौ अरुन अत प्रेम-प्रीति के पान हरित तन बीरा ।
 ये सुख-रास ब्रज-बास लाल-सँग, नित गौ चारन नित वन क्रीरा ॥
 ये बरखा रित सुभग हरित अत, बृंदावन जमुना के तीरा ।
 नंददास प्रभु ब्रजवासिन हँस गोपी जन दियौ भुकि भुकि बीरा ॥२२॥

(२३९)

चटकाव-री पावरी पगन, भगन, पैहैर निकसे नदलाल पिआ ।
 कटि तट पट चटकीलौ रँगीलौ, छबीलौ, चपल काम-रस बिलोवत हिया ॥
 जब मुसिकाइ चितए री मो-तन निठुर, मुरभन, भपकन,
 मन पलकन मनु पवन कलावत प्रान दिआ ।
 नंददास प्रभु ता दिन ते मेरी गति-हो जानौ कै जाने मो जिआ ॥२३॥

(२४०)

सैन दै बुलावौ लाल, बैठी है-भरोखे वाल, वन ठन के छिप री ।
 सिध द्वार ठाढ़े ललन रसिक वर किए बिचित्र भेख, अग रहे दिप री ।
 रूप रिभवार ब्रजराज कौ कुँमर आली,
 द्विग अँकवार भर लिए पलक न भिप री ।
 नंददास दोऊ ओर प्रेम की भकोरनि मे प्रीत की ललित गत,
 चित चितेरे ने लई कठिन लिप री ॥२४॥

(२४१)

प्यारी तेरे मुख-सम करिबे को चंदा बहु तपयौ ।
 उड़गन कौ ईस पुनि औषधीस भयौ ईस सीस लों गयौ ॥

सुधा मै सरीर कियौ, बाँट बाँट सुरन दियौ,
 मर मर के फेरि जियौ तन धर के नयौ ।
 नंददास प्रभु प्यारी, तदपि न कछु अरथ सरचौ,
 फेरि जाइ समुद्र परचौ, बिधि बूड़न न दयौ ॥२५॥

(२४२)

आली तेरौ बदन चद देखत, बस भए कुजबिहारी ।
 उसीर मैहैल मे तो मग निखत (निरखत?) बारंबार सँभारी ॥
 तो बिन रहि न सकत नवल प्रान प्यारौ,
 ऐसी निठुराई तू सुनि री कुमारी ।
 नंददास प्रभु प्यारी रूप गुन उजियारी,
 ऐसे ब्रजाधीस सो मान करत, तू चल लाज निवारी ॥२६॥

(२४३)

सुननि खसानी दूती, चलि पीतम पै गई है लजाइ ।
 वे तौ नहि मानति, कोट जतनन किए,
 हां पचिहारी बहौत मनाइ ॥
 आपु ही मँनाइ लीजै, मो सो ऐसे कही,
 सुनौ अब कहा कीजै लाल दूसरौ उपाइ ।
 नंददास प्रभु ऐसी सुन आपुही प्यारे,
 तव पौढे अपनी प्यारी कों उर लाइ ॥२७॥

‘ए’ प्रति से प्राप्त पद

(२४४)

जिते जिते माई सभा अथाई भर द्विज बेटे वरसोंडी पात ।
 विजे दसहरा परसन कों सब प्रमुदित मन अकुलात ॥

लीये गोद गिरधर को राजत ब्रजराज मन फूलि न समात ।
 कनक थाल मगल समाज सो एक आवत एक जात ॥
 आगे ढेर लाग्यो हे धन को देत नंद क्योहू न अघात ।
 गाइक चहु दिस गान करत हे जोरि जोरि ब्रज वात ॥
 परदा परे भरोषा रिभवत वाल लाल मुसिकात ।
 नंददास प्रभु कहा कह कुवर छवि भलकि रह्यो सब गात ॥१॥

(२४५)

माई वावरी सो जो वासुरी सो लरे ।
जैसी जाकी प्रीति तेसी तुम्हारे कहा है
याही ते गिरधारी लाल अधर ले ले धरे ।
जो ही लो मधु पीवत रहे तो ही लो
जीवत रहे नेकु विछरे ते मुरझि धर परे ॥
नंददास प्रभू जाकी ऐसी प्रीति
ताकी आली रस भर को करे ॥२॥

(२४६)

मुरली रस वाजे राजे जोवन घन आली अति आनंद अरगजी धुनि ।
 जब ते तनक भनक परी कान तब ते मोहि सब बिसरचौ
 जो न पत्याई तो री तुही धो सुनि ॥
 जो ही लोतू सीष देत ही तो ही लो ना सुनी री मोहन की मीठी तान
 याही मे अधर मधुर की पुट आई पुनि ।
 नंददास प्रभू एसी तरुनी को धीरज धरे
 सुनि धुनि मुनिन के हीये गये धुनि ॥३॥

(२४७)

तेरे री वदन कमल पर नंद नंदन आली मुरली नाद करत गुजार ।
जलित बभगी तेरे रोम रोम रमि रहे करि गये उर हार ॥
जेनकी चरन रज ब्रह्मादिक दुर्लभ सो अब पाइन परत मुरारि ।
नंददास प्रभु कमलापति बस करिवे को किन हू न पायो पार ॥४॥

(२४८)

प्राली री सामरी मूरति तेरे जीय मे बसति
काहे को दुराव करत न दुरत ।
नेनन बेन प्रगट देपियत धाम धरीनिधि
जेसे लिलाट लसत ॥
मुष की रुपाई तो छिपाई न छिपत आछे
आनन को जोति ससि जोति हरति ।
नंददास प्रभू प्यारी एसी सकुच कोन की बलि
जाको मुष देये उर को तिमर नसत ॥५॥

(घ) सुदामा चरित

जदुवर एक सुदामा नामा, पुरी द्वारिका ढिग विसरामा ।
जामे बसै जु अलि-पति एमै, सरवर मे सरसीरुह जैमै ।
परम अकिंचन कछु नहि चहै, जथा लाभ सतोपित रहै ।
दीन, कृष्णचरननि रति सरसे, इहि ससार बयार न परसे ।
जानै जिय सब विषय-वगर सो, देखन को गधर्व-नगर सो ।
अह-ममता सपनो सो लागै, माया सन सपनो सो जागै ।

नेहि न देह, गेह सन कवहूँ, उपसम चितन समता सबहूँ ।
 सखा आपुने श्री जदुनाथा, गुरु-कुल पढे एक ही साथ ।
 तातें निसा-अनी न बिचारै, बिषयन दीन देह प्रति-पारै ।
 तातें दुरबलता तनु ताकै, नाँहिन कछूक दरिद्रता जाकै ।
 तिय ताकी पतिबरता अहै, पति ही तोख्यो, पोख्यो चहै ।
 जानत सब सेवा के धरमै, और बिभूति नही कछु घर मै ।
 निपटहि लटचौ देख कै गातें, कहन लगी कत सौ बातें ।
 इत तैं निकट जदुपुरी आँही, तनक चाह ह्वै आओ तौही ।
 जहाँ प्रभु-कमला-कत पियारे, तुम जु कहत, है सखा हमारे ।
 कीजै दरस, अरस नहि कीजै, जीवन सकल सफल करि लीजै ।
 बिप्र कहत, नहि घर कछु साजा, तिन्है मिलन मोहि आवत लाजा ।
 तीय कहै वे त्रिभुवन-स्वामी, अखिल लोक के अतरजामी ।
 रीभक्ति देरि कछू नहि आनै, केवल प्रीति रीति पहिचानै ।
 कहत जदपि, जदुपति है ऐसे, चक्र-पानि प्रभु परसहु कैसे ।
 तब तिय उठी चलत पिय जाने, माँगि मूँठि द्वै चिरवा आने ।
 चीर लपेटि सु पिय पकराए, नीकै लिए सु द्विज उठि धाए ।
 दृष्टि परी जदुपुरी सुहाई, जगमगात छवि वरनि न जाई ।
 बन उपवन फल फूल सुहाई, सब रिनु रहति समान सुछाई ।
 सरबर की छवि वरनि न जाई, मलिन होत सु मलिनता आई ।
 ऊँचे कनक-भवन जगमगही, चखन माँहि चक्रचौधा लगही ।
 लगे जु नग जगमग रहे ऐना, मानहु सरस भवन के नैना ।
 ता पर चपल पताका चमकै, बिनु घन जनु दामिनि सी दमकै ।
 सुदर सुथरी डगर जो पुर की, चोबा, चदन, बदन बुरकी ।
 हाथी, हय, रथ गहै सुसवर, निकसि न सकत अटनि तनु अंबर ।
 महा बिभूति कछु सुधि नहि परही, भ्रमभ्रम द्विज वर मग अनुसरही ।
 पहुँचे पौरि, रोरि तहँ छवि की, वरनि न सकै महा-मति कवि की ।

जहँ सकर नारद मुनि ठाढ़े, औ सुर-पति, नरपति अति बाढ़े ।
 समय स्याम को नॉहिन अबही, रोकै रहति पौरिया सब ही ।
 ठाडो भयो द्वारि पै द्विज-वर, एकु पौरिया आइ गह्यो कर ।
 लै गयो जहँ रुकमिनि को मदिर, बैठे तहँ जदुनायक सुन्दर ।
 चँवर चारु ढोरत है ठाडी, पियमुख निरखति अति रति बाढी ।
 जदपि सहस-दस दासी आही, प्रेम-बिबस रस देनि न काही ।
 दृष्टि परे द्विज वर तहँ जबही, अरबराइ हरि दौरे तबही ।
 भले मिले, कहि अति मृदु बानी, भैठति भरि आए दृग पानी ।
 अपुने आसन द्विज बैठारे, निज कर-कजनि चरन पखारे ।
 पोछत रुचिकर पग जग-नायक, अपुने पियरे पट सुखदायक ।
 चरन माँहि पट अटक रहत जब, रमा सुन्दरी मुसकि परत तब ।
 सुन्दर भोजन विविधि प्रकारी, आनि धरे भरि कचन थारी ।
 जो सपने कबहूँ नहि दरसे, श्रीपति ललना निज कर परसे ।
 ताहि पाइ द्विज मुख नहि मान्यो, परमानद कद रस सान्यो ।
 लै बैठे पुनि श्री जदुनाथा, मुनि कीनी गुरुकुल की गाथा ।
 अहो मित्र ! जय ईधन आनन, गुरु पतनी पठए तब कानन ।
 तोरत ईधन घन धिरि आए, अमित जोरि सो जल बरसाए ।
 बरसत बरसत पर गई रजनी, कितहु नगर की डगर सु न जनी ।
 भूले फिरे रैन तहँ सगरी, तऊ न गुरु की पाई नगरी ।
 भयो प्रभात तब गुरु पै आए, धरि ईधन तहँ शीस नवाए ।
 वे दिन भले हुते अहो तब तो, बट गयो ठोर ठौर चित अब तों ।
 भली भई फिरि मिलहे तुमको, भाभी कछू दियो है हमको ।
 चिरबा छोरि चीर तै लीने, भर मूँठी निज-मुख मे दीने ।
 तिसरी बेर बहुरि मन कीने, तब उठि रमा । रमन गहि लीने ।
 करत बात पौढे द्विज राती, खान पान करि नाना भाँती ।
 प्रात होत निज धाम सिधारे, रहे नॉहि बहुतक पचि हारे ।

करत चबाव जात निज घर को, मन मे कहत कहा कहीं हर को ।
 पुनि पुनि कहै अति ही भल कीनो, जो हरि हमको कछु नहि दीनो ।
 राखि लयो, अपुनो करि जान्यौ, परम अनुग्रह इतनो हम मान्यौ ।
 सब मद तै धन मद दुखदाइक, नहि पायो भये पुत्र सहायक ।
 अँधरोँ करै, बधिर पुनि करही, उतपथ चलत विचार न टरही ।
 दिन न चैन निसि नीद न परही, मोद मुदित मन अति सुख भरही ।
 मन सौ करत बात चलि आए, चकित भए निज ठौर न पाए ।
 कहन लगे इहि भवन कौन के, ऐसे है वहाँ रमा-रमन के ।
 अब लौ इहाँ हुतो नहि ऐसौ, अबही इहाँ भयौ है जैसौ ।
 कहन लगे पुनि सभ्रम पायो, कै हौ बहुरि द्वारिका आयो ।
 देखति इन्है सुसेवक धाए, अमरनि तै वे अधिक सुहाए ।
 अटा चढी अवलोकत तिरीया, टिकत धाम बाम दिय भरिया ।
 आतुर तिय, लखि पिया सुचमकी, जनु सुमेर तै दामिनि दमकी ।
 मुदित बदन छवि कौन बखानै, अबनी उत्तरति उडपति जानै ।
 सहस अली लिए सग सुन्दरी, उडगनमध राजत ज्यौ चन्दरी ।
 करि आरति निज भवन सुलीने, सब मनोरथ पूरन कीने ।
 बहु विभूति हरि द्विज को दीनी, दया भक्ति पतनी सुभ कीनी ।
 ऐसे जो कोऊ हरि को भजै, हरि उदारना तै सुख सजै ।
 दीनन कौ वरदायक नित ही, रहत अधीन भवत के हित ही ।
 चरित स्याम को इहि है ऐसो, वरन्यौ नद जथामति जैसौ ।
 दसम सकध विमल सुख बानी, सुनत परीछित अति रति मानी ।
 परम चरित्र सुदामा नित सुनि, हृदय कमल मे राखो गुनि गुनि ।
 नददास की कृति सपूरन, भक्ति मुक्ति पावै सोई तूरन ।

(ड) नासिकेत पुराण (उद्धरण)

(१)

“× × × बानारसी बिषै रह्यौ है। सो एक दिन सरब नगरा का अस्त्री विरहा पाचै को दिन नाग की बंबई पूजिबे कू चली है। जब पुडरीक नाग एक ब्राह्मन की कन्या कू पूछित भयौ। तुम कहा जात हौ। जब कन्या बोली है। गुसाई जी नाग पूजिबे कुं जात है। जब पुडरीक नाग बोल्थौ है। अहो ब्रह्म कन्या हुं तोसु एक गुभ की बात कहूं। जौ तो कहूं नै कहे तौब हूं कहूं नाहीं। तदि ब्राह्मन की कन्या कह्यौ। गुसाई जी हूं। कहूं तुम्हारी वारता कहूं तौ मो कु सोहहै। मेरौ वडौ भागि जु तुम मो कु आपना गुभ की बात कहत हौ। त (दि ?) पुडरीक बोल्थौ है। पुडरीक उबाच। तू हमारी दासी है अरु बहुत प्यारी है। तेरे घर हूं नाग की देही धरै हूं आऊगौ। तू डरपै मति। घर ही बिषै नाग होइ तौ बाबी काहे कू जइयै। पुडरीक नाग ब्राह्मन के घर आयौ है। अपनौ सरूप नाग को धरचौ है। मस्तिक मनी है। अरु कमल कौ पौहोय है। अरु सुरह गाइ कौ षोज है। जब वह कन्या। नाग की पूजा करी है। बिधि संजुगति करी है। तब वाही की माता देषि के अचरज भई है। हे देव कहा बनायौ है। नाग कौ सरूप देपी जब वह कन्या पूजि करि परक्रमा करी आपनी माता सु कह्यौ। यह नाग मेरो भरतार है। तब माता कह्यौ यह तौ नाग है। तू मनिष देह है। तोहिर याहि जोगि नाही। जब कन्या कह्यौ यह औतार है तू जानै नाही। मनिष रूप भी धारै। अरु नाग रूप भी धारै तब पुडरीक ए वचन सुनि करि मन मै सोच करत भयौ। कहतौ भयौ आपनी बात अस्त्री कू कहिये नाहि। अस्त्री कु सराप है। राजा जुधिष्टिर नै दीयौ है। जा समए करन मारचौ है। तब कौता नै सराप दीयौ है। तब यही बाह्मनी आपना भरतार सु कही। जा बिधि पूजा

की कन्या की सब कही । सो ब्राह्मन सुरग वानी पंडित हौ कन्या पुंडरीक नाग कु परनारी । जब सारी कासी मैं घर घर बारता भई । अरु पुंडरीक नाग प्रगट भयौ । तब यह बात चली चली राजा की जग्य बिषै गई । जब राजा जनमेजय बोल्यौ है । असौ कोइ होय पुंडरीक नाग कू जगि मैं लावै । जब राजा कौ मंत्री सुबधिक नाम बोल्यौ है । महाराज लावै समर्थ और तो कोई नाहि । गरुड जी आवै तौ नाग कू जगि मैं लावै । जब गरुड की अस्तुति करी है जी अरु बेद मंत्र कौ उचार कीनौ है । जब गरुड देवता प्रसन्न भयो है । गरुड कौ वेग असौ है । मन को वेग ताते दस गुनौ है । गरुड को वेग चलतु है । जब गरुड जी आए है । जब पुंडरीक की कालदृष्टि सौ मन मैं डरप्यौ है । तब राजा की जगि मैं गरुड आयौ है । राजा गरुड की पूजा करी है । अरु सब बारता कही हैगी । जब गरुड नै आग्या दई है । कहुँ गरुड जौ पुंडरीक नाग बानारसी बिषै आयौ है । सो तुम जाय कैं पुंडरीक नाग कू जगि लावौ जब गरुड जी बानारसी मैं आयौ है । मन मैं विचार करत भयौ । अरु सोच करत भयौ है । मन मैं कहुँ बानारसी को उपारो तो दोषारथी कहउ पीछे महादेव जी सराप दैही । तब पीछे बिचारि करि छोटी देह चिरिया की धारी है । अरु पनहट बिषै आयौ है । जब वा नाग की अस्त्री पानी कू आई है । अरु जब बातें एक अस्त्री बोली है । बाई तुम्हारौ भरतार सरप की देह धरि । अरु मनिष की भी देह धारै । असौ हम काहू कौ भरतार देख्यो नही । जब ऐसे वचन गरुड जी सुन्यौ । तब नाग की अस्त्री अपने घर कु आवत भई जब घरा उपर गरुड जी चढि बैठ्यौ है । एते मैं नाग पतिनी घर आई है । नाग की दिष्टि चिरा परचौ तब पुंडरीक नाग तारी दीन्ही है । जब गरुड बोल्यौ कहौ पचायन सष मो ऊपर बाजत है । अरु मेरो पराक्रम तैं त्रिलोकी का जीव कापत है । अरु मेरी पाप का वेग ते हाथी उडत है । जब पुंडरीक कहुँ तु कौन है । जब गरुड जी बोले है कहत है । हूं तो कू लेवे कु आयौ हूं । जब पुंडरीक डरप्यौ है । अरु सोच

करत भयो है । जब गरुड जी पुडरीक नै अस्त्री सहित लै चलयौ एता मही दीन अस्त भयौ है । जब विश्राम कियौ है जब गरुड जी बोल्यौ है । अहो पुडरीक कोई कथा श्री राम चरचा कहौ । काल्हि तुम्हारौ काल है । जब पुडरीक भय कपत भयौ है । अरु बोल्यो है । गुसाई जी आपनै गुफ की बात अस्त्री को कहियै नही । तब ब्राह्मन की कन्या । नागपतिनी वौहौत पढि ही । अरु मुरवान ही । कन्या ब्राह्मन की नागपतिनी मन मै कह्यौ । गरुड जी आपना मुख सु पुडरीक गुर कीयौ है । अबै नाग पतिनी गुर धरम की कथा कहत भई है । अरु ग्यान की चार्त्त (चर्चा ?) कही हैगी । गरुड जी अश्लोक करि कै कहत है । श्लोक । एकाक्षर प्रदातारं यो गुरुं नाभिमन्यते । श्वानजन्म शतगत्वा चाडोलेष्वभिजायते ॥ वारता । जब गरुड जी कहत है मेरे तुम गुरु हौ । तुम वचन करि मन माँहि सोचु मति करौ । निरभै रहौ । तुम जग्य मै ब्राह्मन कौ सरूप धरि करि वेद कौ उचार कीजियौ राजा तुम कु छोडैगो । अरु हू सापी भरगौ । अरु तब एक ब्राह्मन राजा कौ जग्यसुनि जगि कु चाल्यौ है । भूपौ महाराज की आसा करि राजा पै चाल्यो है । दोनो एक नगर मै भिछा करत भए है । भिछा काहू नै घाली नाही तब ए दोनौ के प्रान छूटन लागै । अस्त्री पुरीष के अनं विना । तब एक हाथी के थान महावत के पास आए है । जब महावत हस्ती का जूठा चना दीना है । तब दोनौ भूठे चना चाब्यौ है । उबरचौ सो ब्राह्मनी गॉठि बाधि लाई है । अैसे मै प्रात भयौ है । ए दोनौ जगिं कु चले है । तब अस्त्री पुरीष क वचन कहत है महाराज एतौ रास चना है । जब ब्राह्मन बोल्यौ है चना डारि देह ए चना चवाय नरक कु प्रापति होत है । ए महाकुधान है । जब अस्त्री बोली है गुसाई कालि तौ नरक गया नही आज कैसे नरक जात है । जब ब्राह्मन बोल्यौ है । अपघाती महापापी । जो आपनो प्राण घात करीयै तौ बज्र पापी कहियै । अगति कू प्रापति करीयै । ताते कालि चना चाबे हे. . . ”

(२)

“नासकेत उवाच । अर नासकेत कहत है । समस्त रषीसुरन सू कहत है । गुसाई जी हूं बार बार कहा कहूं पै जम की त्रास बहौत दृष्टि देखी है । सो मेरा रोम रोम उभै होत है । रिषि पूछत है । अहो नासकेत पापी पाप करता कौन कौन कही । नासकेत कहत है । पापीन के ए लछिन है । पर द्रवि कौ वाछित । पर अस्त्री कौ बंछित । पर निद्रा के करन हारे । अर यौही परायौ बुरौ करत है । अर पाप करते पाछौ देषै नाही । अरु बिना अपराध करहू सेती द्रोह करत है । अर भूठी साखी भरत है । अर अतर पापी होत है । अर अछिर कौ बकता बिषै कमावत है । अैसे सी पापातमा । महा उग्र सासना । भाति भाति के नरक बिषै लै लै त्रास देत है । अरु बिस्वासघाती अरु कृतघनी । अरु गुरु द्रोही । अरु गौ द्रोही । अर अस्त्री घाती बालघाती । अैसे अैसे बज्र पापीन कू जमदूत नरक के मंदिर बिषै डारि डारि देत है । अर ऊपर महा बज्र मार मुग-दर की देत है । अरु वज्र आगि लोह की तिनकरि महामार करत है । अर ह्वा हाहाकार होतु है । अरु वज्र पापी कौन कौन अगिन दाहक । अरु बिष दाहक । अरु गुरु मात पिता के मारिवे वारे । अर पुन्य करत अगिले कू वरजत है । अर पतिग्रह छेत्र बिषै लेत है । अर वज्र दान लेत है । अरु सदा अस्त भाषत है अर निरदर्ई है । अर कुसंगी अरु असुची । अरु दिवस बिषै अस्त्री भोग करत है । अरु आन मारगी अरु अस्नान बिना भोजन करत है । अरु गुरु मत्र बिना पानी पीवत है । अर पराई व्रत के हरन हार । अरु बाट के विघनी । अरु वेद सास्त्र धर्म नेम नै मानत नाही । अैसे अैसे पुरिष महा नरक के मंदिर मै लै लै जमदूत त्रास । बज्रमान देत है । अर जे प्राणी अहो राषत है । अरु जो दान करत है । जगि होम करता कथा माही । परमेसुर कौ कीरतन करत भोजन मै । इतनी ठौर जो बिघन करत है । ते पुरिष जडरूप जोनि बार बार । वृछ की जोनि

पावत है। ताकू वार वार काटत है। नासकेत उवाच। नासकेत सर्व रिषी सुरनै कहत है। गुसाई जी सुक्राती जीव सुभ आचार। सुभ कर्म के करिबे वारे। बवेकि पुरिप मै। दिव्य दिव्य विमान चढि चढि सुर्ग कू जात है। अर कैसे देपे है। जिनके आगै अनेक वाजित्र वाजत देपे है। अर नाना प्रकार के। पौहोपन की बर्षा होत है। अर अपछरा नृत्य करत है। सुक्रती जीव है। सो सुर्ग विषै विलास करत करत देपे है। सुक्रती जीव कौन कौन कहीयै। प्रथम तौ नाम विषै रहत होत है। अैसे प्रानी सुर्ग विषै जात देपे है। जीव कैसे जानीयै। एक ब्रह्म विषै ध्यान करत है। सो ध्यान कौन कौन कहीयै। भक्ति योग तपस्या। अहो राति ब्रह्म सौ ल्यौ लगावत है। जो महापुरिप है। तत्त्व के जानन हारे सुमिरन नाभि कमल विषै। सासा सुमिरन ल्यौ लगावत है। सो अैसे महापुरिप परम पद कू प्रापति होत है। अर जो सुक्रती जीव है। नितकौ शुभ करम। जु धर्म नेम के जानिबे हारे। सुर्ग लोक कू प्रापति होत है। सुक्रती जीव कौन कहीयै। नासकेत कहत है। तिनके सेवा श्री परमेसुर की। अर अग्नि होत्र होत है। तिनके बेद उचार होत है। अर गुरदेव साध की। ब्राह्मन भगति आराधन करत है। अैसे जीव सुक्रती है। तिनकू सुर्ग विषै देवता आदर करत है। अर जे परमारथ करत है। अर जे पराई पीर विषै जाय परत है। अर बेद शास्त्र की सत्य मानत है। अर नित्य अस्नान करत है। अर माता पीता को मानत है। अर धर्म नैम तीर्थ व्रत आदि करत है। अैसे प्रानीन कू। सुर्ग विषै देवता आदर करत है। नासकेत हाथ जोरि नमस्कार करत है। कहत है धन्य मेरे पीता कू। धन्य मेरी माता कू। तिनकरि हू उत्तपनि भयौ। अर मोकू सासना देत है। पिता मो कू आप दीयौ हो। तौ हू कृतार्थ भयौ। अर आप निष्ट सुर्ग लोक देप्यौ। नर्क कुड देपे अर मै नाना प्रकार की सासना देषी। अर मै धर्मराज की पुरी विषै। वडे वडे ग्यान सुनत भयौ। नासकेत कहत है। गुसाई जी तुम मेरे सर्व पिता समान हौ। मेरे तुम गुरु हौ।

गुसाई जी मो कू पिता सराप न देतो तौ । तुम्हारौ दरसन कहा होतौ । ए वचन कहि करि । समस्त रिपीसुर नै डडौत परिक्रमा करत भयौ । अरु सबही कौ दासातन कीयौ । जब रिपीसुर समस्त है करि नासकेत कू आसीर्वचन कह्यौ है । रषीसुर सर्व आपनै आपनै आश्रम ठीकानै जाइ प्रापति भये । अर आपनै मन विपै ब्रह्म सु ल्यौ लगावत भये । अर नासकेत तपस्या कू जात भयौ । अैसे नासकेत की उतपनि भिन भिन राजा जनमेजय कौ सुर्ग के बिमान आये है । अर सर्पन कौ दोष दूरि भयौ है । अर सर्व पाप दूरि भए है । अर क्रनार्थ भयौ है । वसंपायन रिषि कहत है । एक समै नारद अरु जम सू सवाद भयौ है । नारद रिपी जम कू पूछत है । ए पापातमा जीव है । पाप के करता महावज्र पापी महा सो क्यौ करि तिरेगे । जदि नारद कू जम कहत है । गुसाई जी जो महा पापी जीव है । अर दुष्ट तिनकी बुधी है । अैसे पापी नाम सु तिरेगी । अर जो प्राणि नासकेत पुरान पढे हैगे । अर सुनेगे सो गति कू प्रापति होहिगे अर जम कहत है नारद कू । जहा नाम कौ उचार होत है । अर जहा नासकेत पुरान की कथा होत है । तहा हमारी पौहोच नाही होत है । अर जहा परमेश्वर की पूजा करत है । सेवा करत है । अर जाकै गीता सहस्र नाम बेद धुनि होत है । अर जाकै सत्ति वचन होतु है । तहा महारी पहुच नाही । इतनौ सवाद नारद सू जम करत भयौ । यह नासकेत पुरान कैसेो है । या पुरान सुने ते महागति कू प्रापति होतु है । राजा जनमेजय सुनत पुरान । गति कू प्रापति भयौ है । जब सवरी कथा संपूरन भई है । जदि राजा जनमेजय वसंपायन रिषि की पूजा करी है । बहुत अस्तुति करी है अरु बहौत दासातन कीयौ है । जब राजा नै रिषि आसीरवाद कीयौ है । मुभ वचन कीयौ है । अैसे वचन कहे है । राजा कौ सरव पाप दूरि भयौ है ॥ इति श्री नामकेत महा पुराने रिषि नासकेत संवादे अष्टादशोध्यायः ॥१८॥

यह कथा रिषि राजा जनमेजय नै सहस्रकृती करि कही है । अर भापा फरी स्वामी नंददास अपनै सिष्य सू कहि है । इति श्री नासकेत कथा संपूरण ॥ शुभं ॥”

(३)

“॥श्री राम जी॥ श्री गणेशायनमः ॥ अथ नासकेत पुराण लिख्यते ॥
 आदि सहस्रकृत महाभाषा करि विस्तरी छै ॥ नासकेत पुराण भाषा करि
 नददास जी आपण सिष्य नै कहत है । सो याह कथा केंसी है ॥ या कथा
 सहस्रकृत पुराण बैसपायन रिषि राजा परीछित को पुत्र जनमेजय कौ कथा
 कही है ॥ और जनमेजय या कथा सुणी परम गति कौ प्रापति भयौ है ।
 और सर्व पाप कटे है । और स्वामी नददास जी आपण मित्रनै भाषा करि
 कहतु है । सिष्य पूछत है गुसाइ जी मेरै अभिलाषा नासकेत पुराण सुणिवा
 की ईछा बहौत है मोनै भाषा बारता कहौ । सहस्रकृत मै समझौ नही ।
 अत्रै नददास जी कहत है सिष्य कौ और बैसपायनि रिषि राजा जनमेजय
 कौ कही है । रिषि कहत है राजा परीछित कौ सराप भयौ है पहेप की
 कली माहि तछिक सरपि डस्यो सीगी रिषि का पुत्र को सराप भयो है सम्यक
 रषिसुर कौ जब राजा जनमेजय पिता का बैर निमति जग्य रच्यो है सरप
 होमि बाकै नित्य जग्य को आरभ कीयौ है । जग्य पुर कै विषै रच्यो है
 और वेद मंत्र की सकति तै सरप आवत भयौ है तब ताषो नाग भाग्यौ है
 जाय करि भुगर को सरूप धरचौ है नाग की भी देह धरै अर सरप की भी
 देह धरै । सरप है सो विष को जीव है नौकुली नाग है और सेस नाग भागे
 है सो इन्द्र के सरने जाय रह्यौ है जीह समय प्रथी को भार कूरम ही धरचौ
 है । जै विराम्हण यती कहै डद्राय स्वाहा तौ इद्र आदि अग्नि मै आय
 परहि ॥ पणि वेद मंत्र इतनू लियया । ओर पुडरीक नाग भागो है ।
 सो वाराणसी विषै जाय परचौ है । ओर पुडरीक नर देही धरी है ॥
 और महाबुधिवान है ओर बेदात अग सहत पढ्यो और सरब वारता मै
 परंबीण है । इह प्रकार पुडरीक नाग वाराणसी विषै रह्यौ है । एक दिन
 सरब नगरी की असत्री बिरहा पाचै कौ दिन नाग की बबइ पूजिवा चली
 है तब पुडरीक नाग एक ब्राह्मण की कन्या . . . ।”

२ प्रक्षिप्त सामग्री

(क) 'मानमंजरी' के प्रक्षिप्त दोहे

‘अ’ प्रति से उद्धृत

खरग

गोकुल गोथल घोष ब्रज खरग कहत पुनि नाम ।
तहँ नित प्रति बिहरत प्रभू कोटि काम अभिराम ॥१॥

गोप

बल्लब गोदुह गोप पुनि कहि अभीर गोपाल ।
गोसष्वक बरनत सुमति चरवाहे नर जाल ॥२॥

तरकस

उपासग तूनीर पुनि डपुधी तून निपग ।
भाथ मनो मनमत्थ की पिडुरी भरी सुरग ॥३॥

श्री कृष्ण

बिघन हरन सब सुख करन सुदर रस के धाम ।
प्रथम मंगलाचरन हित श्री नैद नदन नाम ॥४॥
कृष्ण बिस्नु बावन विमल बामुदेव भगवत ।
बिस्वरूप परमात्मा कमलाकात अनत ॥५॥
श्रीधर गिरिधर मुरलिधर पीताम्बर नैद नंद ।
हरि मुकुन्द गोविन्द प्रभु पावन परमानंद ॥६॥
रिखीकेस जगदीस कह गोपालक जोगीस ।
मोहन मधु-अरि मुष्टि-अरि दामोदर जदु-ईस ॥७॥

माधव बनमाली कहत बलभाई जसमाल ।
है मुकुन्द पारथ सखा गरुडधुज जो बिसाल ॥८॥

अँगुली

अँगुली कर पल्लव करज करसाषा पंचाप ।
नघनप क्रोनी कर्प अपि अरु पुनि कहीअै काप ॥९॥

आँगन

आँगन चातुर अजर कहु बरनत सुकवि प्रवीन ।
जसुदा आँगन मध्य प्रभु माँगत माखन दीन ॥१०॥

ऊँच

उपर उर्ध उत्तान नभ बनी बितान सुबानि ।
चद उयो ऊँचो मनो ऊपर राखो तानि ॥११॥

कपोल

गड कपोल मुगाल ते क ऽरुहं तो करई तीय ।
स्याम जु लट छूटी मनो लखि सकात मो हीय ॥१२॥

जग्य

सप्ततन्त्र मख जग्य कृत बैसन्धर कह जाग ।
बड भागिन तव तूप या जग्य पूर्ख बड भाग ॥१३॥

जाल

कहत जाल आनाय पुनि मीन-निरोधा सोय ।
कोसन की उनमान ते कह कोबिद सब कोय ॥१४॥

ढिल्या

कहत कुबेनी सकल कहि बमसा धारी ताह ।
ढिल्या कोबिद बरनही कविता महँ निरवाह ॥१५॥

तरकिया

मुखी खुली कचन मई जटित लाल मनि हीर ।
जिमि निज रूप कमल कली देखियत ससि के तीर ॥१६॥

दीप्ति

भास तेज अरु रुचि त्वखा दीप्ति जु अर्चि प्रकास ।
भा अरु प्रभा जु दीप्ति के नाम करहु बिश्वास ॥१७॥

बखतर

दनसन कह तिशरान पुनि बखतर दसन जो नाम ।
बद्ध मरम-रच्छक कवच तनुवान औ धाम ॥१८॥

राहु

सिहकेय स्वभान तनु राड (हु ?) बिधुतुद भाइ ।
बन्दन चन्द सुभूम मनहु राहु रहो ढिग आइ ॥१९॥

रूखे वचन

उदासीन काहल परुष तुछ अस्ति अस्थील ।
ग्राव वचन ते क्यो कहै जिनके सुदर सील ॥२०॥

लेषन

लेषन रदनी मिस मुषी कठी कलम कहाय ।
लिषत लिषत कै हाथ की किलक लूष ह्वै जाय ॥२१॥

सीस

उत्तमाग कं सीश सिर मोती माग सु ढार ।
राह दुधा करि उदित मनु सोहत चंद लिलार ॥२२॥

(ख) 'अनेकार्थमंजरी' के प्रक्षिप्त दोहे

‘अ’ प्रति से उद्धृत

सब्द एक नाना अरथ, मोतिन कैसी दाम ।
जो नर करिहै कंठ यह, ह्वैहै छबि को धाम ॥१॥

अनमिष

अनमिष कहिये देवता, अनमिष मीन कहत ।
अनमिष काल कराल यह, जाको कह न अत ॥२॥

अहि

अहि वासर अहि राहु पुनि, अहि इक दानव नाम ।
अहि काली सिर पर नचै, नटवर बपु घनस्याम ॥३॥

कातार

कातार कानन कह्यो, पुनि कारन कातार ।
कातार दुरभिच्छ पुनि, स्तुति कहिये कातार ॥४॥

काष्ट

काष्टा काल विशेष इक, काष्ट दिशा जो आठ ।
काष्ट बहुरि वासुधरा, बुद्धहीन नर काठ ॥५॥

कुत

कुत सलिल औ कुत कुस, कुत अनल नभ काल ।
कुत कहत कवि कमल सो, कुत जु खङ्ग कराल ॥६॥

कुतल

मूत्रधार कुतल कह्यो, कुतल कपटी बेस ।
खङ्ग पानि कुतल बहुरि, कुतल कहिये केस ॥७॥

कुथ

कुथ कथा कुथ कीट पुनि, दर्भ बहुरि कुथ होइ ।
प्रातस्नाई विप्र कुथ, कुथ करि कंबल होइ ॥८॥

कृस्ना

कृस्ना कालिदी नदी, कृस्ना पीपलि होइ ।
कृस्ना बहुरिचौ द्रोपदी, हरि रखि अबर गोइ ॥९॥

केतुकी

केतुकि नभ केतुकि कुसुम, केतुकि सूरज चंद ।
केतुकि कहत मनोज सो, केतुकि बहुरो छंद ॥१०॥

खजूर

गर्भ जरा खजूर है, बहुरि रजत खजूर ।
छुद्र जाति खजूर पुनि, अरु ताली खजूर ॥११॥

गुरु

गुरु नृप गुरु माता पिता, गुरु जो परो हित छंद ।
गुरु बीफै गुरु ऊँख रस, सबके गुरु गोविंद ॥१२॥

गौरी

गौरी अप्रसूता तिया, गौरी हरदी होइ ।
गौरी गिरिजा सुदरी, शिव अर्धंगी सोइ ॥१३॥

चक्र

चक्र चरन रथ चक्र गन, चक्र देस पुनि होइ ।
चक्रवाक खग चक्र पुनि, चक्र सुंदरसन सोइ ॥१४॥

छन

छन उत्सव छन नेम पुनि, छन मुहूर्त कहियत ।
छन यह समय न पाइये, भजि ले मन भगवत ॥१५॥

छुद्रा

बेस्या नटी कटी हरी, मधुमाखी अरु लाख ।
इनकों कवि छुद्रा कहत, छुद्रा कहिये दाख ॥१६॥

तंत्र

तंत्र शास्त्र सुख तंत्र पुनि, सिद्ध औषधी तंत्र ।
तंत्र कहत संतान को, सिद्ध मंत्र पुनि तंत्र ॥१७॥

द्रोन

द्रोन महिष दिस द्रोन पुनि, द्रोन कहै गृह कोन ।
द्रोन काक अरु द्रोन गिरि, कुरु आचारज द्रोन ॥१८॥

नदन

नंदन चदन को कहत, नदन कहिये तात ।
नदन बन पुनि इद्र को, नंदनंदन बिख्यात ॥१९॥

नेत्र

नेत्र नयन पुनि नेत्र पट, मृग मद नेत्र कहत ।
नेत्र ज्ञान जव जगमगै, तव सूभै भगवत ॥२०॥

परिघ

परिघ पवन जल रथ नदी, परिघ सूर ससि सेष ।
परिघ वज्र पर्वत परिघ, परिघ जो सस्त्र विशेष ॥२१॥

पलास

• हरित वर्न पालास पुनि, राख्यस बहुरि पलास ।
द्रुम दल सकल पलास है, बहुरो ढाख पलास ॥२२॥

पुण्डरीक

पुंडरीक सायक कहै, पुंडरीक आकास ।
पुंडरीक पुनि कमल जह, कमला को नित बास ॥२३॥

बला

बला सैन्य वसुधा बला, बला औषधी होड ।
बला चंचला लच्छिमी, जेहि जाचे सब कोइ ॥२४॥

बलि

बलि पूजा बलि असुर पुनि, बलि तिय को मधि भाग ।
बलि कहिये पुनि लच्छिमी, जाके सदा सुहाग ॥२५॥

बारुनी

गजगति कहिये बारुनी, सुरा बारुनी नाउ ।
पच्छिम दिसि पुनि बारुनी, बरुन बसै जेहि गाउ ॥२६॥

मान

मान कहाबै पूजिबो, गर्ब कह्यो पुनि मान ।
नाप दड को मान कहि, जेहि नापे परिमान ॥२७॥

सित

सित रूपा सित जज्ञ पुनि, सित पर लोय कहत ।
सित तीछन मित शुक्र पुनि, सित उज्ज्वल भगवत ॥२८॥

सिव

सिव हर सिव वसु सुक्र सिव, सिव कहिये कल्याण ।
सिव सुखदायक सबन के, हरि ईस्वर भगवान ॥२९॥

सीता

सीता निधि सीता क्षमा, सीता गगा होइ ।
सीता कृषि की देवता, जेहि जीवै सब कोइ ॥३०॥

सुधा

सुधा दुग्ध त्रिजुरी सुधा, सुधा धवल जो धाम ।
सुधा बधू धात्री सुधा, सुधा अमृत को नाम ॥३१॥

सुभा

सुभा सुधा सोभा सुभा, सुभा सुभग वरनारि ।
बहुरो सुभा हरीतकी, उदर रोग की धारि ॥३२॥

स्यामा

स्यामा जुवती रज बिना, स्यामा रजनी होइ ।
स्यामा प्यारी को कहै, स्यामा रति पुनि सोइ ॥३३॥

हरिद्रा

कहत हरिद्रा बन थली, निसा हरिद्रा होइ ।
बहुरि हरिद्रा मगली, हरद हरिद्रा सोइ ॥३४॥

हार

हार मुक्त को फूल को, हार छेत्र बिस्तार ।
हार बिरह को बोलिबो, मारग कहियत हार ॥३५॥

चपक

चपक बिष बित्तान तन, रितु बसत छवि चीर ।
ये सारग सब परम पद, परम रग रघुवीर ॥३६॥

चित्र

चित्र कहत रवि अमीर सो, चित्र जो प्रीतम होइ ।
चित्र कहत आचार्य को, चित्र लिखत जो लोइ ॥३७॥

जुवती

जुवती बनिता पवन पी, घन तडि ताड सबूज ।
पावक त्रिन घन धनुश निसि, मृग सग्राम अरूज ॥३८॥

३ पाठांतर

रूपमंजरी

- ७ इदु—चद (क) ।
- ८ जु कछु . . भाई—जो कछु मानस रस की भाई (क) (ख)
(ग) (ङ), इसके पहले 'ड' ने यह अस्पष्ट पक्ति दी है—
इहन कह इहा अस इहा असै, जैसी ये वस्तु प्रकासक जैसै ।
- ९ फटिक माँझ—भटक माहि (क) (ख) ।
- १० बूँद—उदक (क) ।
- ११ सो कुरूप . . . दुरावै—सो एक रूप ढिग वदन दुरावे (क)
अवर जु एकु हि वदन विरावै (ख) ।
- १८ हौ तिहि . . . चहै—ते बल जो यह चलयो चहे (क) (ख)
- २१ निरवारि पियै जो—निरवारे जोई (क) (ख) ; इहि मग . . .
सो—यह मग प्रभु पद पावे सोई (क) (ख) ।
- २२ खोज सोई—खोज कर पावे सोई (क) ।
- २५ सरसुति—रसिकन (क) (ख) (ग) (घ) ।
- २६ अति—रस (क) (ख), जस (घ) ।
- २६ जौ—जे (ङ) ; फिरि—सुनि (क) (ख) ।
- ३० स्मित—सुमति (क), सुहत (ग) ।
- ३८ सठ कठपुतरी सग गह सोये को फल ताहि (ग) ।
- ४० का कहि—कह करि (ख) ।
- ४१ सु बास—सुपास (ङ) ।
- ४५ विमल—व्योम (क) (ख) ।

- ४६ फूलत ती फुलवारी—फूलत फूलन वारी (क) ।
 ४७ उन ही फूल मालन छवि भरी (क) (ख) (ग) ।
 ४६ अस—यह (क) ।
 ५१ का कहियै निकाई—कहा कहिये यह सार निकाई (क)
 (ख) ; छाई—पाई (क) (ख) ।
 ५३ राजीव, कुसेसे—राजीवकु जैसे (क) (ख) ।
 ५६ जनु ननकारति—जानेन कारत (क), जनु ना करति (ख) ।
 ५६ धर्मधीर तहँ कर—धर्मधीर करत (क), धर्महि राज करत (ख),
 धर्मधीर तिह कर (ग) ।
 ६२ सर आवहि दुआरा—सुनि आवे सव राज दुवारा (क) ।
 ६३ नित—दिन (ङ) ।
 ६६ शोभित ऐसे वेश सुकुमारी, हिम गिरिवर जनु ही मतवारी (क) ।
 ६७ भूषन पाई—भूषण ताई (क) ।
 ६८ औनी—रोनी (क) (ग) ।
 ७१ दीप न साँझ—उदय न वारे साज (क) ।
 ७४ व्याल . . . बखानै—बार बार सम बाल बखाने (क) (ग) ।
 ७६ छूटी—छुट्टी ; काम-कलभ . . . उगी—काम कला जानो दुतिया
 उगी (क) ।
 ८३ कुरूप—कुपूत (क) (ख) (ग) ।
 ८४ मूरख अहित—मूरख हित अहि हेत (क) ।
 ८५ इस के बाद 'क' ने यह पक्ति दी है—
 काह करे रूप अनूप कोई, मुख पर श्वेत कुष्ठ जो होई ।
 १०० पुर—पर (क) ; वन—तब (क), तर (ख) ।
 १०७ इदुबदनि पावै—इंदु बदन तब देखन पावे (क) (ख) ।
 १०८ पौछे—पाछे (क) ।
 ११३ वरनौ छय-कारा—वरणो जगपती को अविकार (क) ।

- ११४ ती कौ—नीको (क) (ख) (ग) ।
- ११७ ताही—पाई (क) (ख); आही—आई (क) (ख) ।
- ११८ साँपिनि आही—सपनि सुहाई (ङ) ।
- ११९ भाल भाग-मनि—बाल भाल मणि (क) ।
- १२३ चहनि-चलनि—चलत चहत (क) ।
- १२५ खजन भजे—खजन लजे (क); कज लजे—कज लई (ग) ।
- १२६ मधि—रस (क) (ग); अरुन पाट . . पवारी—अरुण पाट
जनु परी पनारी (क) ।
- १३० लसत जु हँसत—दमकत लसत (क); दाडिम—दामिनि (क)
(ख) ।
- १३२ छवि—मध्य (क) ।
- १३४ कराही—कहाँही (ग); अस क्यों . . . नाही—अस क्यों कहे
कित बुद्धी नाही (क) ।
- १३५ इह—ये (क) (ङ) ।
- १३७ परसन बाढ्यौ—परसन बैठो (क) (ग); नभसि—बिहसि (ग) ।
- १३९ दै—हैं (क) ।
- १४० सम माने—सनमाने (ङ); परमाने—परवाने (ङ) ।
- १४१ तब कही—तब की (ङ), तब गहि (ग); विवि—विच (ग) ।
- १४७ अरुन होत सो—अस न होत जो (क) ।
- १५० जे गाई—जिगाई (क) ।
- १५१ जस—सी (क) ।
- १५४ तन—तिन (ग) ।
- १५५ छिति—छवि (ग) ।
- १५८ मिले—सु मिल (ङ); सुठौन—सुठौर (ग) ।
- १६४ मूसति मन . . . करतारै—मो मति को कर सत करतारै (क),
कर मीडै भरि भरि सितकारै (ख) ।

- १६६ कोऊ कहै—को कहुं कहे (क), का कहु अहै (ख) ।
 १७१ देखत—देखन (क) ।
 १७३ बसै—बनै (क) ।
 १८३ सो सूछ्यम . . . पैयै—सो सुख मे तब ही लखि पावै (क) ।
 १८४ ये तौ वर—ये तब (क) (ख), ये तौब (ङ) ।
 १८६ करता हू के तुम—करता के तुम ही (क) ।
 १८६ तिय—तो (क) (ख) ।
 १९४ सखिहि घुरि—सखी दुर (क) ।
 २०५ सखिन बूझनी—सखी यो बूझन (क) ; गोद लुठि—दूर दुर (क) ।
 २०६ कछु—को (क) ।
 २०६ ठाँउ—गाम (क) , (ख) ।
 २१२ रूखन—रूपन (क) ।
 २१५ वान अस वाने—तान अस ताने (ग) ।
 २१६ बेली—बेलि की (ङ) ।
 २१८ इक—जनु (ङ) ।
 २२६ लगि—मुनि (क) ।
 २३५ पैयत—पाई (ङ) , या—हे (क) ; सपन—प्रेम (क) ।
 २३६ काके—काहे (ङ) ।
 २४० हू—सो (क) (ग) ।
 २४१ इक . . . अली—इक हुती कुवरि उखा मेरी आली (ग) ।
 २४६ बूझि बूझि—पूछि पूछि (क) ।
 २५६ मरकत रस . . . कीनौ—मरकत मणि निचोय रस लीनो (क) ।
 २५७ टटावक—टटवारक (क), टटवारिक (ख) ।
 २६१ कहत जु मो मति—कहती तौ मति (ङ) ।
 २६६ सबै—और (क) (ख) ।

- २६७ आनंद भरी—आनंद सहित (क) ।
 २६९ यह—वह (ग), इह (ङ) ।
 २७१ तौ वह—तोऊ वे (क) ।
 २७३ पिय सौ मिलि—से पिय मिल (क) ।
 २७४ तामै—तातै (ङ) ।
 २८१ तब—तौ (ङ) ।
 २८२ तन—तप (ङ) ।
 २८९ ठकुराइत . . ताकी—सुरपति रवनी कोन वराकी (क) (ख) ।
 २९२ प्रीतम . . परसि—प्रीतम रवि की किरन लगि (क) (ख);
 जागि—लागि (ङ) ; तन—तिहि (ङ) ।
 २९३ हिय मै सपने—जिय मे अपने (क) ; अपने—सपने (क) ।
 २९५ अपनौ आलय—अपनो आपे (ग) ।
 २९८ मंद हिलौर—मदहि डोर (ङ) ।
 ३१० खाइ—लाज (ख) ।
 ३११ ढारा—तारा (क); मन की . . . ढारा—मन की गति पे ह्यीये
 अधारा (ग) ।
 ३१५ पै—की (क) (ख) ; बिरियाँ—बरिआ (ङ) ; तृपति न
 आवै—तपत ह्वै आवे (क) ।
 ३२६ सु निकट न—सु निकटहि (क) ।
 ३२७ बूझै—मूझै (ङ) ।
 ३२८ उडत . . जिमि—अनं व नाव बिहग जिम (ङ) ।
 ३३० रेनु—रैन (ङ) ।
 ३३१ पावस—आगम (क) (ख) ।
 ३३५ छटन छोह—छटन सो भय (क) ।
 ३३६ छोर—छोरि (क) (ङ) ।
 ३४४ दहै रे—दहरे (ङ) ; रहै रे—रहिरे (ङ) ।

- ३४५ सो तौ...ये ही—सु तौ सठ चातक पातक ये ही (ङ) ।
- ३४८ ऐ परि....जौ—ऐ परि याको नेम सुनीजे (क) (ख) ;
लाडिली....रहै तौ—लाडिली लागि अचरज गहीजे (क),
अचरज लाडिली लागि गहीजे (ख) ; लागि—लाड (ङ) ।
- ३४९ जब कब तब घन स्वातिन बरसै, तब भलै जाय चचु जल परसै (ङ) ।
- ३५२ सुपनहि—सपन ही (ङ) ।
- ३५४ घन—जल (क) ; सुधि नहि—समझ न (क) ।
- ३५५ अभ्यास—अभ्यस (ङ) ।
- ३६४ जबहि...जानी—जबई सरद उवानी जानी (ङ) ।
- ३६८ पत्रन—रचि रचि (क) (ख) ।
- ३७१ बिहाला—विशाला (क) (ख) ।
- ३७३ कहँ—कहा (क) ।
- ३७५ सब इकसार—कमल की सार (ङ) ।
- ३७८ टूटहि तार कि—टूट तारक (क) (ख) ।
- ३८५ खडन—खडनि (ख) ; माई—माही (क) ; जरा आनि
....जुराई—जरचा आहि कित लेहि जराही (क) ।
- ३९० अलि—अति (ङ) ; साँवरे...चहै—साँवरे उदर धर सोयो
चहै (क) ।
- ४०० चुबक—चुभत (क) ; यह—है (ङ) ।
- ४०२ तू क्यौहुँ—तू कहू (ङ) ।
- ४०६ पुन सहचरी को वचन उचारा, बोली मुग्धा मुधा की धारा (क)
(ख) ।
- ४१० जग—होय (क) ।
- ४१५ फाग....आयौ—फाग मानो यह पटिया आयो (क) ।
- ४१७ होरी...माई—होरी खेलन खेल उमाही (ङ) ।
- ४१८ नवीन—नव नवल (क) ; हौ—हो (ङ) ।

- ४२४ जानौ . . . रहसि—जनु रति व्याहन रहस भरि (ङ) ।
 ४३२ सखी तन कुंवरी ताहि क्षण चहे, मन मन बूजे अरु इम कहे (क) ।
 ४३५ दुरि—हँसि (क) (ख) ।
 ४३७ है—बल (क) (ख) ।
 ४४२ कहहि—कहे (क) ।
 ४४४ माई—जाई (ङ) , तब भलै . दिषराई—तब भली दृष्टि देखे दिखराई (क) ।
 ४४५ ऐ परि—तापर (क) ; जाकी बलि ये—तहाँ की बलि यह (क) ।
 ४४८ सो सखि मुख—जो सखी मुख (क) ; सुनि—सुनी (ङ) ।
 ४४९ किहि बिध राखे क्यो रहे, रुई लपेटी आगि (क) ।
 ४५७ घैर—गहर (क), तहँ तै (ख) ; घर हू—गर हूँ (क) ।
 ४६३ बहेर तर—बहेरत उत (क), बहिरत उत (ख) ।
 ४६५ नाथ—राज (क) (ख) ।
 ४६६ इक पहिले यौ—एक पहलिये (ङ) ।
 ४६८ बहुरि . . . लई—बहुरि नारि नोहरि सी लई (ङ) ।
 ४७० किन आनौ—किहि आनै (ङ) ।
 ४७६ सुभायौ—सुहायौ (ङ) ।
 ४८१ अँग न लगाऊँ—अग न लाऊ (क) (ख) ।
 ४८४ कोउ तीर न जाई—न तीर ह्वै जाई (ङ) ।
 ४८५ जनु हिय घुरि—जननी दुर (क), जननी ढिग (ख) ; याही—इनही (क) ।
 ४८६ ता मै—जा मे (क) (ख) ।
 ४९० नह—नख (ख) ; नह रे—नहुरै (ङ) ।
 ४९४ छट—छुर (क) ।
 ४९५ तर—रहत (क), रहति (ख) ।
 ४९६ एक राउ—राउ बसत (ख) ।

- ५०६ क्यौ... विना—चढे जाइ पिय प्यारे विना (ङ) ।
 ५०८ चहै—लहै (ङ) ।
 ५१७ दोस बिधाता—बान बिधाता (क) ।
 ५१८ सु करहि री माई—सो करो उपाई (क) ।
 ५१९ डसनि—वसन (क) ।
 ५२० चदन उगवाई—चदन पर चदन चरचार्ई (क) (ख) ।
 ५२३ भोई—गोई (ङ) ।
 ५२६ बूड़ि—भूड (ङ) ।
 ५३७ सखि—हेत (क) , लपटनि—लपटत (क) ।
 ५४६ रु—X (ङ) ; कौ यह—के इक (ङ) ।
 ५५० उरसि रसाला—उर सरि माला (ग) ।
 ५५१ भोजन भूख मिले जिम अहे, ए पर इन तव परत न कहे (क) ।
 ५५२ अक्र—अतर (ङ) ।
 ५५५ कौ मनौ—पीय पै (क) (ङ) ; पिय की—मानो (क) (ङ) ।
 . इसके पश्चात् 'ङ' में यह छंद पाया जाता है—
 गुणि गण गुणाण गणिय मद्दा भगा विहग मारे हा ।
 तिय रस पेम पभाण जाण जीयणं जपिय जीहा ॥
 ५५७ सियरे—सीतल (ङ) ।
 ५५९ लीने. विसाला—लेति उसास दुसास विशाला (क) ।
 ५६५ हरि प्रीतम—प्रीतम के (क) (ग) ।
 ५६८ तै—ते (ङ) ; हौनौ—औनौ (ङ) ।
 ५६९-५८० इन पक्तियों के स्थान पर 'ख' ने निम्नांकित पद्यांश दिया है—

सब ही सोभित परम उदारा । प्रिया मिली नव प्रेम अधारा ॥
 मधुरि मधुरि धुनि नूपुर बाजै । घुमरि नैन रस-भरे बिराजै ॥
 रागहि मग ह्वै पिय पै जाइ । कोउ जानै इहि बैठी गाइ ॥

औरै प्रेम के लच्छिन कहै । तेऊ तरुनि सु-तन मे लहै ॥
तिनके नाम भेद हौ कहो । जा तै रस परिपाटी लहो ॥
उत्तम-सँग उत्तम-छवि पावै । मध्यम-सँग मध्यम दिखरावै ॥

जैसे सुन्दर-मुकुर मे, मुख पानिप अधिकाइ ।

बुरे मुकुर मे सुकर ते, भलेई सुपानिप जाइ ॥

लीला छवि-विलास सभ्रमा । मोटाइत, कुटमित क्रम क्रमा ॥
ललित, विहित, बिबोक किल किंचित । स्थाई सखी सु-पिय-हिय सचित ॥
जब रचकि पिय अतर होई । अति अंतर सहि सकति न सोई ॥
पीतम को सखि भेष बनावै । पीतम ज्यौ हँसि चलि छवि पावै ॥
प्रेम बिबसि पिय-मुख ही रहै । ताकौ कवि लीला छवि कहै ॥
पिय सुमिरै, तन तोरि जँभाई । मोटाइत-छवि की अधिकाई ॥
बरनति बैठि रहसि की बातै । ए ललना की रहसि सुधातै ॥
पिय सौ नव हित गरबित होइ । सो बिबोक-छवि कहियै सोइ ॥
इक दिन मुदित सेज पै सोई । सुन्दर स्याम पिया रस भोई ॥
भोर भए जो सहचरि लहै । सूनी-सेज कुँवरि नहि अहै ॥
सोच भरी सहचरि कहै दई । कुवरि इहो तै किहि ठा गई ॥
ढूढति भवन, भवन चित्रसारी । फिरिफिरि ढूढि फिरी फुलवारी ॥
इहि का करी सुजान-पियारी । मो को कित छोड़ी करि न्यारी ॥
जल तै बिछुरि मीन जस होई । दुखित भई अस सहचरि सोई ॥

तिय-दुख सखि करतल भयो, रूपमजरी हीन ।

जल तै बिछुरित मीन जस, होत सुदेखी दीन ॥

थकि आसन बैठी सहचरी । रूपमजरी उर में धरी ॥
तजत भई तून सम तन सोई । ज्यो जीरन पट त्यागत कोई ॥
ज्यो रबि औ रबि की गरमाई । किरन माँझ ह्वै रबि पै जाई ॥
सखी जबै वृंदावन ढिग गई । विपिन विलोक चकित अति भई ॥
धरनी चिता मनि मन हरै । बछित अन बछित सब अरै ॥

ख ऋतु बसति बसत सम जहाँ । पात पुरातन होति नहि तहाँ ॥
 हुसुम धूरि धूँधरि तहाँ रहै । सीतल, सुभग, पवन जहँ बहै ॥
 उजत पुज-भँवर छवि-छाजै । ठोर ठोर जनु बीनहि बाजै ॥
 मुधि न रही एही छवि गोहन । राग मई कै प्रेम मई बन ॥
 नेकट बहै जमुना सुख दैनी । कनक-किनारी रतन निसैनी ॥
 जो रस कहियै प्रेम उदारा । सो सब बहति कालिदी धारा ॥

जो मुख होहि अनंत सखि, रसना ताहि अनंत ।

वृन्दावन गुन कथन को, तोऊँ न पहुँचै अत ॥

ख वृन्दावन कुजन छाँही । देखी जीवन-मूरि सुठाँही ॥
 सहस सखिन संग तहँ अति सोहै । रमा, उमा की हूँ छवि को है ॥
 इन्दुमती प्रनाम तब कीन्हो । बेहूँसि करि कर गहि लीन्हो ॥
 कहति मुसकि तू तो मे लखी । रूपमजरी की जनु सखी ॥
 इन्दुमती जब इहि कछु सुनी । उपजि परी सिरधा सत-गुनी ॥
 का कहियै तब भाग बडाई । जानै तू वृन्दावन आई ॥
 इहि बन दुरलभ आइबो, इन्दुमती सुनि बात ।

जाकी रचक रज-गरज, अज से मर, पचि जात ॥

हूँछति अति आतुर सहचरी । कित है देव । रूप-मजरी ॥
 तब इकु दीनी अपनी अली । सो लिवाइ लै तिहि ठाँ चली ॥
 परचो पुहुप-इकु तहँ तै लीनो । वह लै इन्दुमती कर दीनो ॥
 ताहि सूँधि सखि अतिसुख लह्यौ । सो रस मो पै जात न कह्यौ ॥
 तब क्रम क्रम वह सखी सुहाई । विहँसि रास मडल मे लाई ॥
 मृदु कचन मनिमय तहँ धरनी । मनहरनी छवि परत न बरनी ॥
 जगमग जगमग अस कछु करै । दिवस कै रजनी समझ ना परै ॥
 प्रेम-सई इकु ढिग तहँ केला । तापै अति रस चक्र सुमेला ॥
 ठाढी तहाँ नवल ब्रज बाला । मूरति धरै मनोहर माला ॥
 ठाड़े नंद-सुवन तिन माँही । दै बृषभानु सुता गलबाँही ॥

कहति सखी सन मृदु मुसिक्यार्ड । देख्यो इन्दुमती हू आई ॥
 कुवरि ग्रनूप रूपमंजरी । इन्दुमती ताकी सहचरी ॥
 सुरस सुभाइ, भाइ अनुसरी । नंददास इहि लीला करी ॥
 जो कोउ सुनै गुनै मन धरै । सो सहजहि मोहन बस करै ॥
 जो प्रभु पद-पकज की धूली । नित बाँछित कमलासन सूली ॥
 जो रज ब्रज बृदावन माँही । सो बैकुण्ठि-लोक मे नाही ॥
 जो अधिकारी होइ सु पावै । बिनु अधिकारी भए न आवै ॥
 जदपि दूरि तै दूरि प्रभु, निगम कहति है ताहि ।
 तदपि प्रेम, मन, बच गहै, निपट निकट है आहि ॥

बिरहमंजरी

१ उच्छलन कौ—उछलत इक (ग), उछलन इकु (ङ) (च) ।
 इस दोहे के पहले 'च' ने निम्नलिखित पद्यांश दिया है—

चलन कह्यो पिय प्रात ही श्रवन सुनी तिय बात ।
 बिरह बिहगम बिषम बिष छाया गयो सब गात ॥
 पीय पयानौ जिय मुन्यौ मुखहु न आवत बोल ।
 बीरी तौ अधरन रही पियरे परे कपोल ॥
 अति ब्याकुल मुरझाय कै बढी लहरि असरार ।
 परी कनक के दड लौ पट भूषन न सँभार ॥
 चरन पलोडत लाल ज त न न बोरौ जीव ।
 मिली अक नैनन भरि देखे कब प्राये तुम पीय ॥

३ रस-कंद—सुखकंद (क) (ङ) ।

८ प्रसन्न भये किधौ सुन्दर स्याम, सदा बसौ ब्रन्दावन धाम (छ) ;
 भई—करी (घ), भए (च) ।

९ याके—वाके (क) ; नंद—चंद (ग) ; कारन—करनौ (च) ।

- १६ चकित होत—थकित भए (च) ।
- १७ नव—वन (ङ) ; बिहरति—बिरहत (ग) (च) ; बिहरति . .
..अबाधा—विहरति पिय सँग रूप अगाधा (क) ।
- १८ कछु इक . . . आई—कछु इक लहर प्रेम की आई (क), कछु
जु प्रेम लहरी कोऊ आई (ङ) ।
- २७ के—को (ङ) (च) ; रची—रचे (घ), परे (च) ।
- ३० पलक—अल्प (क) (ग) ।
- ३३ तनक प्रान—प्राण मात्र (क) ।
- ३५ बिती—भती (क) (छ), तिती (घ) (च) ।
- ३८ मिले हे—मिलैगे (ग) ।
- ३९ हिय—इक (क) (घ) (च) ।
- ५५ तिहि—तिनि (ङ) ।
- ५६ पाँचबान—पाँच प्राण (क) ।
- ६१ नीर तै—तीर मे (क) ।
- ७९ चदन चरचत जिनकौ सियरे, तिनकौ नद सुवन पद नियरे (च) ।
- ८१ मो दुख तन—मो दुखित न (क) ।
- ८३ बिपिन—त्रियन (क) ।
- ८६ कह्यौ—करै (क), रटै (च) ।
- ९३ बदरा बने—बदर बनैत (छ) ।
- ९४ जैसे—अलि (छ) ।
- ९७ परौरत—मरौरति (ख) ; वाहि—जाहि (क) ।
- ९९ आये नहि . . . भवन—आये नहि कारन कवन (च) ।
- १०० सभी पोथियो ने “मदन की ढाला” पाठ दिया है । केवल ‘क’
तथा ‘ख’ मे इसके स्थान पर “मदन के ब्याला” पाठ पाया जाता है ।
- १०५ पिय के—तियनि के (क) ।
- ११३ घन हर—घन अरु (क) (ख) ।

- १२० जव—वय (क) ।
 १२१ भर—डर (छ) ।
 १३६ जैसे . . . सुहाइ—जैसे बलि बलि उनही सुहाइ (क) ।
 १३७ बेलि—बलित (छ) ; बेलि, मल्लिका—मल्लि बल्लिका (ग) ।
 १३८ उहै—भयौ (क) ।
 १४२ ता करि—ता सुर (च) ।
 १४६ जोग बनि—योग जोवन (क) ।
 १५६ सोये—सूने (छ) ।
 १६७ सदन—सुवन (ग) ।
 १७० लै—लौ (ग), ज्यौ (च) ।
 १७१ जात नहि—जान बिन (क), जान मनि (छ) ।
 १७८ पवन—अगिनि (क) (घ) ।
 १८० मास मास—महा मास (क) ; कदन—बिरह (च), दिवस (छ) ;
 १८१ लपटि कै—पलटि कै (ग) ।
 १८२ न खेलौ—न खेलहि (ग) (ङ) ।
 १८३ कोउक . . . आइहै—पिय तुमही पे आय हे (क) ।
 १८७ घरिक—घरीक (क), घरी इक (छ) ; वात . . . अटपटी—
 प्रेम की रीति निपट अटपटी (क), उपजी बिरह प्रीति अटपटी (च) ।
 १९२ निसि—भाल (छ) ।
 १९४ आलस . . . नैन—सालस रस भरे चचल नयन (क) ।
 २००—२०१ और भात ब्रज को बिरह, वने न काहू अंग ।
 पूरनता हरि बृंद की, परत तास मे भंग ॥ (क) ।

रसमंजरी

- ३ कछुक—कछू (ग) ; ससार—संसार (क) (ख) ; आधार—
 आधारा (क) (ख) ।

५ बरनौ—बरने (क), करनौ (घ) ।

७ बरै—बहै (ग) ; सब तामै—सब तिन मे (क) (ख) (घ),
सबिता मै (ग) ; ररै—रहै (ग) ।

८ तुम तै सोहै—तुम्हरी माया सब जग मोहै (ग) ।

१३ रति समेत—रति सु समै (ग) ।

१४ जानै—जानै (ग) (घ) ; प्रेम न तत्व—प्रेम तत्व न (ग) ;
पिछानै—पिछानै (ग) (घ) ।

१६ मधुलिह—मधुप (क) ।

१६ देख्यौ—चाह्यौ (ग) ।

२० अब—नव (ग), तब (ङ) ; मोहब—मोहित (क) (ख) (ङ) ।

२३ ता कहूँ कर—ताहि कलह (क), ताही करि (ङ) ।

२७ इस के स्थान पर 'ग' ने यह दोहा दिया है—

तू सुनि लै रस मजरी, भरी प्रेम प्रमोद ।

बुद्ध जनम अलिगन रसिक, सरसे सरद बिनोद ॥

२८ अनुसारि कै—अनुसार के (क) (ख) (ग) ।

३१ पुनि—बहुरि (क) (ख) ।

३२ पुनि—सब (ग) ।

३३ मुग्धा गनी—तहा मुग्ध दुबिधा करि गनी (ग) ; उत्तर
उत्तर ज्यौ—ज्यौ उत्तर उत्तर (क) (ख) (ङ) ।

३५ लाज संकुरै—मिल्यो न पिय हिय परसति डरै (ग) ; इस
पंक्ति के बाद 'ग' ने यह पंक्ति दी है—आखै आफार सम सूधी,
बंक बिलोकनि मै नहि लूधी ।

३६ भूषन ताकी—भोरी निपट अवस्था ताकी (ग) ।

३७ पकज—कर (ग) ; सेज—सैन (ग) ।

३८ वह—उर (क) (ख) ।

४५ प्रेम भाउ—भाव प्रेम (क) (ख) ।

४६ अनुरागी—अनुरङ्गी (ग) ; मुसकि लागी—मुसकि सखी
कूँ चाहन लागी (क) ।

४७ नवल—सु नव (ग) ।

४९ मुक्ता फल—मुक्ता मै (ग) ; इस के बाद 'ग' ने निम्नांकित
अतिरिक्त पंक्तियाँ दी है—

वचन सुधा समुद्र की लहरी, उपजति लागी अति रस गहरी ।

क्रिया मनोहर हिया मनोहर, कछू कछू ऊचे भये पयोधर ।

पिय समीप जब पौढे बाल, का कहिये छबि निपट रसाल ।

५१ उरज . . . करै—उर जुग मद्धि बाधि इक करै (ग) ; बाँधि
इक—बाधी एक (क) ।

५५ सौ—को (क) ।

५६ डरति—अरति (ख) (ग) ; होइ—कोय (घ) ।

६१ इस के बाद 'ग' ने ये अतिरिक्त पंक्तियाँ दी है—

नवला निकसति तीर जब, नीर चुवत वर चीर ।

जनु असुवनि रोवत बसन, तन बिछुरन की पीर ॥

जिमिजिमिविविकुचउच छविलहै, तिमि तिमि नैन बकता गहै ।

ज्यौ कोपिय सुन पर उदो चाहि, कुटिल होइ न सकै तन ताहि ।

अज हूँ उरज उतग सु नाहि, मेर श्रिग छबि फिरि फिरि जाहि ।

६३ इक ठाँ विवि—इकठे भये (क), इकठे भय (घ) ।

६८ मोहन—सोहन (घ) ।

६९ ग्रहन—रहत (क) (ख) ; रम्यौ सग—रम्यो चहे नव रस
नव रग (क) ।

७१ छूट हिय हार विहार सब, सूध्यो करे कच हार (क) ।

७२ मध्या—मध्यम (क) ; परी सु—परिमल (क) ; अधार—
अपार (ग) ।

७३ तिहि—जिय (क) ।

- ७४ कलाप—कलानि (क) ; चहै—बहै (ग) ।
- ७७ रस ऐनी—गज गवनी (ग), रस रैनी (घ); सो....दैनी
—सा रस बोढ़ा प्रौढ़ा रवनी (ग) ।
- ८३ पल्लव—कमल (ग) ।
- ८५ भ्रमत—बसत (क) , जगत (घ) ; श्रमित—भ्रमित (क) ।
- ९१ मिलि—बनि (घ) ।
- ९२ अविग कहै—व्यंग करै (क) , रिस—रस (क) (ग) ।
- ९३-९५ बिगि अविगि वचन रिस सानै, कहै पीय सौ सागस जानै ।
रवाकत अहो कत पियारे, मोहन सोहन नाथ हमारे । नव
अनुराग चतुर नंदलाला, नव किसोर चित चोर रसाला (ग) ।
- ९६ जोई—जो है (ग) ; सोई—सो है (ग) ।
- ९८ अनुनय—विनय जु (घ) ।
- ९९ सुधा सी—सुधा की (क) ; रूप की—रूप सी (घ) ।
- १०० सेज न. . . भोरी—सेज नवसि लाज जिय थोरी (क), सेज
• मान लजसि क्यो भोरी (घ) ।
- १०१ अकुटि....लहियै—सखि तन कोप करति ज्यौ लहियै (ग) ।
स के बाद 'ग' ने यह पक्ति दी है—सुदर पिय कौहु सागस जानि,
कनखै अनखै भोहनि तानि ।
- १०४ पुनि....निवारै—पुनि पकज लै कोपु निवारै (ख) (ग) ।
- १०६ रसीले—सलोने (क), रसीलौ (ग) ।
- १०८ रिस-रस—रस रिस (क) (ग) ।
- १०९ इहि....लहियै—कछु प्रन दिढ़ कछु अदिढ़ लहीये (घ) ।
- ११७ इक जहां—है तहा (घ) ।
- ११८ पय—रस (घ) ; मारग—सारग (ग) ।
- १२० लच्छन....पाई—लक्षण चिह्न कर जो लखि पाई (क) ।
- १३१ निज—सब (क) (ख) (घ) ।

- १३२ पौढ़ि—सोइ (क) ।
 १३४ जामिनि—भामिनी (क) ।
 १३५ पिय बिनु पति बिरहानल दहै, कछूक कहै कछू नहि कहै (ग) ।
 १३७ सोइ—लेय (क), तेई (घ) ; कटि—पट (क) । इसके बाद
 'ग' ने यह पंक्ति दी है—चंदन तन चितयौ नहि जाइ, आगि रुचै
 पै वह न मुहाइ ।
 १३८ इसके बाद 'ग' ने यह पंक्ति दी है—भली करहि जौ न दिन माही,
 प्राण पियारे आँवै नाही ।
 १४२ कर—मुर (क) ।
 १४७ परकिय बिरहिनि—बाल बिरहिनी (क) ।
 १४८ सखि जब—सासु जु (ग) (घ) ।
 १५१ मिटै—बुझै (घ) । 'ग' ने इस दोहे के स्थान पर निम्नांकित
 पद्यांश दिया है—

उघरि पिया कौ बिरहु जनावै, भीतर कहइ कि क व द बुलावै ।
 मरिच मेलि लोचन जल नावै, द्वार देस ठाढी दिखरावै ।
 इहि परकार जुवति जो लहिये, सो सामान्य प्रोषितपतिका कहिये ।
 रसाभास जस जान्यौ जाइ, सो सामान्य प्रोषितपतिका लहिये ।
 अरु या करि समुझे ए लोइ, प्रेम बिडंब करौ जिनि कोइ ।

नंद निपट कपटहि तजै, तन मन बिरही होइ ।

उहि रस भीनै बिरह बिनु, पियहि न पावै कोइ ॥

- १५६ ते प्रीतम चहै—प्रीतम तें पूछ्यो नहि चहै (ख) ।
 १५८ कछुवै नहि—कछु बैन न (घ) ।
 १६० दुरावै—भिलावै (घ) ।
 १६१ इहि प्रकार तिया प्रीति जनावै, सा मध्या खंडिता कहावै (घ) ।
 १६५ ढकहु छती नख—कहु कहुं नख क्षत (क) ।
 १६६ ऐ परि—ऊपर (क) ।

- १६८ गर—कर (घ) ; गंडनि श्रम-कन—गडन श्रम के कण (क) ।
 १७० दूती . . . तरेरै—दूती तन करि नैनन तारै (घ) ।
 १७७ जो—जव (घ) ।
 १७९ घुरि—धरि (क) ।
 १८५ मै—मो (घ) ।
 १८७ अली अदिष्ट—अलिक दृष्ट (क) (ख) ।
 १८९ गरुये गुर—गुरु वे जे (क) ।
 १९० नीति . . . बिरराई—त्यो त्यों सहचरी सो चिर राई (क) (ख) ।
 १९१ सम—सरि (घ) ।
 १९२ अपमाने—अनमाने (घ) ; बिकूलयै—प्रतिकूलहि (क) (ख) ।
 १९४ काउ—काय (क) (ख) ।
 १९७ आरति करि—अरति कंप (घ) ; जुड़ाई—जनाई (क) (ख) ।
 १९८ सु है—वहै (क) (ख) ।
 १९९ अज हूँ—पिय जु (घ) ।
 २०० मन ही मन—मन ई मन (घ) ; मूभै—सूभै (क), खूभै (ख) ।
 २०५ परचौ—परे (क) ; घूम . . . सयानी—घूमति फिरै कछु कहति न आनी (ख) ।
 २०८ बहिन—मनहि (क) (ख) ।
 २१२ बारिद . . . लियौ—बारिद बाहिर रहिबो लियो (क) ।
 २१३ दिढ—इम (क) (ख) ।
 २१७ परै—लरै (क) ।
 २२३ लहै—चहै (घ) ।
 २३५ इसके बाद 'क' ने यह पंक्ति दी है—दूती कुसुम बीजना बीजे,
 ता पर सतर भ्रोह कर खीजे ।
 २३७ सज्जन सघन बन माभ तहां, गुरु गहेबर बन बेलि (क) (ख) ।
 २४२ दीप सँवारि—दीपहि बारि (घ) ।

- २५३ सास कौ स्वावै—स्वास कू खावे (क), अलसान दिखावै (ख) ।
- २६२ कहत . . . बार—कहत सुभग धन वन की बार (क), कहति सुभग धन वनहि बहार (ख) ।
- २६५ जाहि—ताहि (घ) ।
- २७३ जिमि—तिहि (घ) ।
- २७५ काकौ—की को (घ) ।
- २७६ मजु कुज—कुज सदन (घ) ।
- २८० सुकुमारा—सुकुमारी (ख) ; बारिधर-धारा—बॉह धरि प्यारी (ख) ।
- २८२ इसके बाद 'ड' ने यह दोहा दिया है—
जो कछु निरवधि प्रेम रस, गुणी गुणत जग माहि ।
सो परकिय तिय मे वसे, विलसे सुकृती ताहि ॥
- २८३ पार्स्व—पास (क), पारिस (घ) ।
- २८६ कछु अति नहि—नहि अतिशय (क) (ख) ।
- २८७ गरिमता—गरमता (क), उरूजता (ख) ।
- २८८ नहि चलनि—कछु भई (क) (ख) (घ) ; वक्रिमा—वक्रता (क) (ख) ।
- २९१ धरनी धसि परौ—वरणी खिस परे (क), धरनी पर परौ (ख) ।
- २९४ तौ—तू (क) ।
- २९५ अरग अरग इमि सखी सो कहै, मध्या स्वाधीन पतिका वहै (क) ।
- २९६ मोही . . . पीया—भरि भरि रही प्रेम रस हीया (क) (ख) ।
- ३०० रैनी—बेनी (क), अँनी (ख) ।
- ३१७ बियोग—बिवोग (घ) ; की—कि (घ) ; इह बियोग . . .
नहियाँ—यह बियोग ज्वर त्यजत स्वकीया (क), इहि बियोग
जुर तजति न करिया (ख) ।
- ३१८ चपक कुसुम बन भोर परे रे, देत जु गंध मरण कहुं ने रे (क) (ख) ।

- ३१६ परलोकहु—परलोक हो (क) ।
 ३२५ तपन जाचना—तपत यातना (क) (ख) ; तन कौ—तन के (क) ।
 ३२७ जुगति—युवति (क) ; तोहि—जो ही (क) ।
 ३३५ इस के बाद 'घ' ने यह पक्ति दी है—जो पिय कनक कहु करूनावै, पाटी तरै परचो तिहि पावै ।
 ३३७ बाल भाल मे तिलक बनावे, गुहि गुहि फूल माल पहिरावे (क) (ख) (घ) ।
 ३४० बल—मिस (क) (ख) ।
 ३४५ भीतर... लहै—सब के मुख सुख अंतर लहे (क) ।
 ३५२ रे नग ! मग—रेन गमन (क) ।
 ३५५ जोइ—आही (क), आई (घ) , सोइ—ताही (क) ।
 ३७४ तन . जनावै—हृदय कंप बैबर्न जनावै (ग) ।
 ३७५ इस के बाद 'ख' ने निम्नांकित पद्यांश दिया है—

दूँती बरनी चारि प्रकारि, तिय पिय प्रेम बढावनि हारि ।
 प्रथमहि एकु निसृष्ट सु अरथा, पुनि बरनी तातै अमितरथा ।
 तिसरी पत्र हारनी गुनी, चौथी स्वयंदूतिका सुनी ।
 प्रथमहि तन को भाव विचारै, बुद्धि आपुनी पुनि अवधारै ।
 तब अति दुहुन भरोसो देइ, भार सबै अपने सिर लेइ ।
 जुलिहि जुलि जु आनि मिलावै, दूति निपृष्टि अर्थिन कहवावै ।
 जाहि अनेक फुरहि चातुरी, लखि पावहि पिय की आतुरी ।
 अगम ठौरि तै नाहिन डरै, लुकअंजन दै तहँ संचरै ।
 अस कछु वातै कहै बनाई, पिय हि मैन-मय करै सुहाई ।
 तुरतहि आन मिलावै जोई, अमितार्थी कहावति सोई ।
 जो कछु पठिवै दै नंद-नंदन, माला फूल फुलेल, सु चंदन ।
 दै आवै, तहँ तै लै आवै, पत्र हारिनी दूति कहावै ।

दृष्टि परै जब मोंहन लाल, उठति अनंग सु अंग बिसाल ।
 धीरज गलित गलित पुनि बीरा, तनकहि मे ह्वै जाति अधीरा ।
 पिय तन तनक कनखियन भंकै, नाभी कुच प्रगटै वरु ढंकै ।
 नैन सैन संकेत जनावै, स्वयदूतिका सु तिय कहावै ।
 इतने लच्छिन तू सब जानि, तासो परम प्रेम पहिचानि ।

मानमंजरी नाममाला

- १ पद—श्री (अ) ।
- २ करुनार्नव—करुना रवन (आ); जिन—जा (अ) (च) ।
- ३ समुक्ति—उचरि (अ) (ए) ।
- ४ लगि—हित (अ) ; रची—रचत (अ) ।
- ५ गुथनि—ग्रंथन (अ) ; नाम—ग्रंथ (आ) ; की—के (अ) (ए) ।
- ६ मिलै—मिले (अ) ।
- ८ करत—कर (अ), करै (आ), करौ (इ) ।
- १० बृषभान—नंदलाल (इ) (ए) (क) (ख) (घ) (च) ।
- १३ गिरा—इड़ा (आ) (इ) ।
- १५ सत्वर—सद्य (ए) ।
- २० महारजत—भर्म्मरजत (ए) ।
- २१ जातरूप . . . देत—हेम सु सौने के सदन बनै जहा छबि देत (ग) ।
- २२ तहा—निरखि (ए) ; निज—मिलि (आ), सब (इ) ।
- २३ रुक्म—सुकुम (आ) ।
- २८ दुति—छबि (अ) ; दिखि—लखि (अ) ।
- ३० रस्मि . . . होति—पादभान दीधितिरस्मि रवि ससि जगमग होति (ए) ।

- ३५ व्याघर हरि जक्ष केसरी घेरी व्याघ्र गजारि (ए) ।
 ३६ द्वीपी—हथी (अ) ; सेर सूर भनि सारदूल पलभक्ष सिघ मृगारि (ए) ।
 ४३ अनकप—अनगय (अ) (आ) (उ) ।
 ४७ ये जु . . . करि—अष्टसिद्धि जो कष्ट करि (अ) ; लहै—लहत (आ) ।
 ४८ सो—ते (आ) (ए) ।
 ५१ या—जे (ए) ।
 ५२ ते सब बल्लभराइ के—तेई श्री बृ भान के (ए) ।
 ५३ मुक्ति—मोक्ष (अ) ।
 ५४ पद—सुख (आ) (उ) ।
 ५६ बृषभान की पौरि भुकि—बृषभान के पौरि पर (अ) ।
 ५७ महीपति—परिव्रढी (आ) (उ) ; प्रभुपति—प्रजापति (ए) ।
 ५८ बनि, बैठे—तहँ बैठी (अ) ।
 ६६ तहँ, जहँ—जहँ तहँ (आ) (उ) ।
 ६६ पुनि—जन (अ) ।
 ८० बिहँसत—बिहसै (इ) (ए) ।
 ८२ ठाँ ठाँ—ठाढ़े (अ) (आ) (इ) (उ) ।
 ८३ होइ—नाम (इ) ।
 ८४ बने जु गज मोती भवन मनहु सुक्र की दाम (इ) ।
 ९१ करि—कहि (आ) ; वंदन अभिनव प्रनति पति अभिवंदन करि ताहि (इ) ।
 ९२ आगे . . . अलि—सकुच अली आगे चली (अ) ; बर—बुधि (आ) ।
 ९४ चली—सखी (अ) (आ) (उ) ।
 ९९ कडुक सोइ उछीर—कंडुक सोई छीर (आ) (उ) ।

- १०० उठँगि—उभक्ति (अ) ।
- १०१ कुसुम, सु सुमन—सुमनस सुमन (अ) (ए) ।
- १०२ कर वर—बर कर (अ) ; उदगम प्रसव लतान की फूल गेद कर भाम (ए) ।
- १०५ सेखर अलिक रु गोधिका पट वैदीय जराइ (ए) ; पट—मधि (अ) (क) (च) ।
- १०७ अक्षन—ईक्षण (ए) ।
- ११२ फूली—खुली न (अ), फूली न (ए) ।
- ११३ बनित—बिबु (अ) (ऊ) ।
- ११४ जिनके—जिन कौ (आ) (उ) ; जिनके...ही—लिखत लिखक के हाथ की (इ), दसन वसन के लिखत ही (ए) ।
- ११५ रदन...रद—दसन दंत द्विज रदन रद (अ) ; रस—रँग (अ) (आ) (उ) ।
- ११६ नव...जमे—नव नीरज मधि जनु कमल (अ), ओपि धरे जनु कमल मो (इ) ; जमे—जमै (आ) (उ) ; उज्जल—विज्जुल (अ) ।
- ११८ मुहकरि—मुहखर (इ), मुख कर (च), मुख पर (छ) ; की, मुहकरि—की कहु मुह (आ), की कहूं महूं (उ), महंमोंगहर (ख), के मुकुरित (घ) ।
- १२३ कर—पुनि (ए) ; कबहूँ...कपोल—कर पर धरे कपोल (ए) ।
- १२५ कैन—कून (उ) ; गल, नल...कैन—गल कधर ग्रीवा पुनि गल कपोल कोयान (ऊ) ।
- १२६ सो—सब (ए) ; सो छबि...ऐन —सब छबि कीनो पान (ऊ) ।
- १२८ कचन संपुट देवता पूजत पाये मैन (आ) (उ) ।

- १३३ वासन—वासस (ए) ।
 १३४ नील बस्त्र में दीप जनु दमकत गोर सरीर (अ) ।
 १३७ सु दर्पन—सुकर तिय (आ) ।
 १३८ पिय-मूरति . . . देति—नैननि में पिय भलकि लखि बहुर डारि
 तिहि देत (अ) ।
 १४० बहुरचौ—तरजति (अ) ।
 १४१ ताम्बूल अहिबेलिदल द्विज मुख मडन पान (अ) ।
 १४२ नहिन खाति अनखाति अति भर जो रही मन मान (अ) ।
 १४३ सामय—सॉमज (आ) ।
 १४४ वड़ी बेर सखि तन चितै रचक बोली बाल (अ), वड़ी बेर लो
 सहचरी देखी बाल रसाल (ख) ।
 १४५ अबु—अभ (अ) ।
 १४६ पापारि—वा पारि (अ) ।
 १४८ कपीट—कपीठ (अ), कुपीठ (आ) ।
 १४९ कै—मुख (आ) (उ) ।
 १५६ परत—मिलत (अ) (ए) , यौ—त्यौ (अ) ; तिहि दिखि—
 देखत तोहि (अ), तो दिखि (आ) ।
 १५८ छोभ . . . निरखि—छोभ भरी सुदरि लखी (अ), छोभ भरी
 तिय को निरखि (ए) ।
 १६१ तद्रा—तन्द्री (ए) ।
 १६५ आह्वय—अहवय (आ), आहुव (ए) ; धाम—नाम (आ)
 (उ) ।
 १६६ या दरस जिहि—तुव दरस ते (अ) ; तै—भे (अ) ।
 १७१ अज . . . पिता—पिता स्वयभू आत्मभू (इ) (क) ; विधना—
 बेधा (आ) ।
 १७६ पुनि—उस (ए), ऊस (ङ) ।

- १७७ तैसै—तैसी (अ) ; कुँवर—कुँवरि (अ) ।
 १७८ वीय—होइ (अ) ।
 १८२ तुव—तू (आ) (उ) ; रची....तीय—रची बिरंच न कोइ (अ) ।
 १८३ कुरराउ—कुरराइ (अ) ।
 १८४ तेरे सौति अभाउ—सो तेरे अति भाइ (अ) ; नाम युधिष्ठिर जानिये भजि लीजै जदुराइ (ग) ।
 १८५ निगम नदी—निगमपदी (आ) (उ) ।
 १८६ ध्रुवनदा—स्वर्गनदी (अ) ।
 १८७ तिहुँ—ईहि (अ) इ) ; सुभकारि—सुखकारि (आ)(उ) ।
 १८८ सरित—सरति (ए) ; बिय—सम (ऊ) ।
 १८९ तुग—तुद्र (इ), तद्र (ए) ।
 १९० कहि—हे (अ), यह (ऊ) ।
 १९२ अपघन—उपघन (ए) (क) (ङ) (छ) ; सहनन—सग्रहन (अ) ।
 २०० अज—अबुज (आ) (उ) ; ससिधर हिमकर निसाकर कुमुद-वधु हिमरोम (अ) ।
 २०२ कौ—वह (अ), लहि (इ) ।
 २०३ मदन मनोभव पचसर मथन कुसुमसर मार (अ) ; समर—अतन (ए) ।
 २०४ अति सुकुमार—विरह बिदार (अ) (उ) (ऊ) ।
 २०५ मनमथ मनसिज आत्मभू संबर दलन अनग (इ) ।
 २०६ पुहुप चाप हु छय बितन दिन दूलह नव रग (इ) ।
 २१० भवँर नाम जुरि मौरवी होत काम सिरमौर (ए) ।
 २१२ वनै—कछू (अ) ; विद्युत संप विजाग विज्ज दामिनि घन विन सोइ (ए) ।

- २१६ प्रीतमा—प्रणयनी (इ) (च) , प्राणपति (ए) ।
 २१७ बिष्णी—बल्ली (अ) ।
 २२० पै—सौ (आ) (उ) ।
 २२३ पुनि—मृतु (ए) ।
 २३४ अति—थर (अ) ।
 २३८ सो तुव पिय पद—हरि पद पंकज (ए) ; नाहि सु बेर—नाहिन बेर (ए) ।
 २४६ तंत—तात (आ) ।
 २४६ बंचक—जिह्वा (आ) (उ) (ए) ।
 २५१ सारंग—कुरग (अ) ।
 २५२ मृग, कुरंग से—मृग सिमु कैसे (अ) ; इतराहि—अनखाहि (आ) ।
 २५३ मलीन, मसि—अमीव पुनि (ए) ।
 २५५ दहन-दव—दवन वद (अ) (उ) ।
 २६१ श्रोनिता . . . पुनि—श्रोनिता रक्तककौनि पुनि (आ) (ए), श्रो-
 णिता रक्त कोण्यप जु पुनि (ऊ) ।
 २६४ निसाचरा—निसाचर जु (आ), निसाचर रु (ए) ।
 २६८ रेनु कौ—रेनुका (अ) ।
 २७९ कहत . . . जाहि—खंडन तम संसार (अ) ।
 २८० सो कान्हर कपटी कियो जग जाके आधार (अ) ।
 २८४ हौइ जौ—होत है (अ) (उ) ।
 २८९ केत नाम जुरि मदन ह्वै सिध चंद ढिग आइ (ए) ।
 २९२ कौस्तुभ-अवधि—कुस्तभ अवधि (अ) ।
 २९३ सुदर—मोहन (अ) ; पीय—लाल (अ) ।
 २९४ तिहि—हिलि (अ) ; तीय—वल (अ) ।
 २९९ जमुना भेदी तालधुज प्रलंघन जल बेत (ए) ।

- ३०३ उरवरा—लोर्वरा (ए) ।
- ३०७ सबधर जिहि—राखी धर (अ) ।
- ३०८ आवैं—आवत (अ), आनहि (ए) , कौ—के (ए) ।
- ३१० सर—कण (आ) (उ) (ए) ।
- ३१५ जलजोति—जलजोनि (अ), जल जोन्ह (ग) (घ) ।
- ३१७ फूलत, फल—फल फूल न (ए) ।
- ३१८ जिनके हिये—ते जीव बलि (ए) ।
- ३३६ वस—रस (आ) (ए) , हुती—हते (अ) ।
- ३४२ चलहु बलि—छैल अव (अ), छैल चलि (ए) ; जिनि करि
इतनौ—छाँडि जीय को (अ), छाडि छिमा करि (ए) ।
- ३४४ मै इकले दर्ई—माह अकेल है (अ) ।
- ३४६ अवार—विचार (अ) ।
- ३५२ अनखाति—इतराति (अ) ।
- ३६१ सख्य—सक (आ), सग (ए) ।
- ३६३ सुरति सौ—कदन सक्रि जुध सुरत पिय (ए) ।
- ३६६ माया—मया (ए) (च) (छ) ।
- ३७२ जितौ तेतौ—जिते ताते (अ) ।
- ३७४ चितवत ह्वै है पीय इमि जिमि ससि उदित चकोर (अ) ।
- ३७६ सोतास्वती निम्नगा पगा द्विरेफा सोइ (ए) ।
- ३८२ साति. . . नही—सात परज जासो भयो (अ), संति पति उ
भयो नहि (आ), सात फेरी तौ भइ नहि (घ) ; दुख . . . नाह
—दुख न देत वह नाह (अ) ।
- ३८३ सुरा, वारुनी होइ—मधुर मछनी हेय (आ), बहुरि मधुरनी हो
(उ) ।
- ३८४ हलिप्रिया—मधुवारा (ए) ।
- ३८६ कोउ—को (ए) ; कहति—बकति (अ) (आ) (ए) ।

- ३८६ अध तिमर अनकाव तम ध्वात कुहर नीहार (ए) ।
 ३९० तिमिर मिटो मग मॉभ को बदन चंद उजियार (अ) ।
 ३९३ तरे—तल (अ) ।
 ३९५ छदन—बर्ह (ए) ; तरु—सब (अ) ।
 ३९६ भ्रम—मै (अ) ।
 ३९७ हरि—मरु (अ) ।
 ४०४ फिरि—बलि (अ) ; लोग—सोग (अ) ।
 ४०५ अनंत—नितंत (ए) ।
 ४१३ सकट तुदन दहन—अक दून तुद गहन (आ) (ए) ; पुनि—
 अघ (अ) ।
 ४१६ क्यौ जैहै बलि सोइ रहु जैहै उठि परभात (अ) ।
 ४१७ बज्र सु तेरे—बज्र सु तुरे (अ) , उलका तेरी (ए) ।
 ४१८ परे—परचौ (ए) ; धाम—सीस (आ), बज्र (ए) ।
 ४२० पियहि मिलि—पीय पे (ए) ; न—कि (अ) ।
 ४२३ जु तिय—कुँवरि (अ) ।
 ४२४ सोभित . . . तै—उज्जल जलधर ते मनो (अ) , महल धौर-
 हर ते मनो (ए) ।
 ४२६ जौन्ह . . . तै—जौन्ह तुल्ल परसत बदन (अ) ।
 ४२९ सोइ—सो (ए) , अरु (अ) ।
 ४३० दिखि—लखि (अ) ।
 ४३२ यातै—दिन दिन (अ) ।
 ४३५ रँग—मद (अ) ।
 ४३६ तुव आगम आनंद जनु करत परसपर बात (आ) ।
 ४४० अंबुबास—अंबुवसा (आ) (ए) (ख) ।
 ४४५ गुडफूल—सुरफूल (आ) ।
 ४५० यह कदली बलि पाँ परै तुव जंघन उनहार (अ) ।

- ४५३ सहज—यह जु (अ) ।
 ४५४ बैठे . . काल्हि—जा तर बैठे काल (अ) ।
 ४५६ जिहि—जह (आ) ; चढि—कलि (आ) ।
 ४५७ किसुक—यह लखि (आ) ।
 ४५८ नहन—नहुर (अ) ।
 ४६१ लागूल पुनि—पुनि लागली (अ) ।
 ४६२ अहो नारि बर—आयो फलपति (अ) ; करत—करन (अ) ।
 ४६४ वारी वारी—बार बार यह (अ) ; इन—या (अ) ।
 ४६६ कैछ न छू—कौन छुअै (अ) ।
 ४६६ तदुला—तडला (आ) (ए) ।
 ४७१ गहै—गहत (अ) ; कहति—भाखै (अ) ।
 ४७४ पुनि पूतना—विजया जया (ए) ।
 ४८१ स्वादी—माध्वी (ए) ।
 ४८२ प्रयाला—प्रवाला (अ) ।
 ४८३ इहि—जिहि (अ) ।
 ४८४ गसीली—गुसीली (ए) ।
 ४८६ केसरि दृग भरि पग धरति कहति कि बलि बलि जाँउ (अ) ।
 ४९० तुर्माहि देखि फूली जु अति, बलि रचक इत चाहि (अ) ।
 ४९४ मूरि बलि—पग परति (अ) ।
 ४९६ दुपहरिया . . . बलि—दुपहर फूलत फूल जे (अ) ।
 ४९६ ताली तूनद्रुम केतकी खजूरी यह आहि (अ) ।
 ५०० बलि—तै (अ) ।
 ५०३ बालुका—पुलिकनि (ए) ।
 ५०४ इहि . . . मेलि—रचक मुख में मेलि (अ) ।
 ५०६ इतहि . . . परति—इत माध्वी की पा परति (अ), इत माध-
 विका पाँ परति (आ) ।

- ११० सब . . . रोध—सब सुख को अवरोध (अ) ।
 ११६ जनु—बलि (अ) ; परसति—पकरति (ए) ।
 ११८ तीर तीर—ढिग ढिग (अ) ।
 १२० तर—बलि (अ), तहा (ए) ; जहँ बैठे—बैठे हे (ए) ।

अनेकार्थमंजरी

- १ जु प्रभु . . . जगत-मय—जो प्रभु जोति सु जगत मय (इ) (उ) ।
 २ बिघन—अशुभ (आ) ; सुभ—सुख (इ) (उ) ।
 ४ तै—की (अ) ।
 ५ अरु . . . असमर्थ—समुभन को असमर्थ (इ), अर्थ ग्यान अ-
 समर्थ (आ) ।
 ६ भाख्यौ 'अनेका अर्थ'—भापानेकाअर्थ (इ), भाखि अनेक जु
 अर्थ (आ), रचत अनेका अर्थ (छ) ।
 ८ तरु—तर (छ) ।
 १० सुरभी चारत—सुरभि चरावत (छ) ; सुरभी चंपक बन कहे
 जो जग करता कंत (उ) ।
 ११ मधु चैत्र—तरु चैत्र (आ) ।
 १४ तहँ अवर—ते और (इ), तिहि और (ग) (ङ), महि और (घ) ।
 १७ कहत कवि—कोस इक (आ) ।
 १८ अर्जुन . . . धनंजय—बहुरि धनंजय अर्जुनहि (ग) ।
 १९ अस्थ—हस्थ (अ) (ग) ।
 २० मद्धिम—केकी (आ) ।
 २१ रथ—सर (आ) ।
 २२ उड़ि . . . मित्त—उड़ि उड़ि मिलिते मित्त (आ) ।
 २४ पत्री सर . . . जिमि—पत्री सरवक चित्त जिय (अ) ।

- २८ धनीभूत—धनीभूत (अ) (च) (छ), धन मूरत (इ) ।
- ३१ अरु वाम—कुच धनुष (आ) ; वाम काम—वाम जुवति (आ) ।
- ३५ क सुख पथ जल तन अनल, बिधि द्युति सिर सठ काँम (आ) ।
- ३६ कं कचन चित प्रीति ज्यौ यों भजिए रे हरि नाम (आ) ।
- ३७ खं नभ पुर भू द्यौ नखत, ग्यान रध्र सुख धाम (आ) ।
- ३९ कोइ—होइ (इ) ।
- ४२ कर....मन—करज बिखय सम तजि बिखय (अ) ।
- ४३ कवि—दरि (आ) ।
- ४४ कुँवरि—कुँवर (ग) (छ) ।
- ४७ बृख सुरपति गो कर्म बर शूद्र बृखभ बल काँम (आ) ।
- ५३ कौ कहत कवि—मूरख उडद (आ) ।
- ५४ गोपिन—सो पल (अ) ।
- ५५ बहुरि—धरम (आ) (ख) (ङ) ।
- ६४ सरस—अमृत (आ) (इ) (उ) ।
- ६५ सार बज्र ...सार—थिर बल पवि घृतसार (आ) ।
- ६६ सबन कौ—बित बर (आ) ; मही परचौ—जिनि मोह्यो (उ),
सहीपरचो (क), मही धरचो (ख), महिवालो (ग), महिचाल्यौ
(च) ।
- ६७ सावकहि....उत्ताल—साव कों, कोडी ऊँट उत्ताल (आ) ।
- ७० रमानिवास—राम निवास (इ) (उ) ।
- ७१ बन्हि....नीर—बन्हि रवि प्रभा किरनि सिव नीर (आ) ।
- ७२ बसु धन जग—बसु नृप धन (आ) ।
- ७६ रस—रँग (अ) (आ) (ज) ।
- ८१ हस रवि—धर्म रवि (आ) ; हस मराल—तपी मराल
(आ) ।
- ८२ हस जीव....कवि—हंस गेह नृप जीव सिव (आ) ।

- ८५ कहावै—सुष्क फल (आ) ; आहि पुनि —रु चलनो (आ) ।
 ९३ बाल चिहुर अहिकांस तुर जल सिसु मूक जु बाल (आ) ।
 ९५ जाल गन—नीप गण (आ) ।
 ९६ दिखि न . . . नंद-नद—निरखि भूलि जनि नंद (इ) ।
 १०४ जलज . . . फिरावते—जलज कमल कर फेरतै (इ) ।
 १०८ उर धरि—उर धर (ख) (छ) (ज) ।
 १११ जाल—नाम (आ) (घ) ।
 ११२ आवत मदन गुपाल—बनि आवत घन स्याम (आ) (च) ।
 ११७ कहावै—गेह अरु (आ) ; पोत जु पत्र—करट पात्र (आ) ।
 ११८ जग—जल (आ) ।
 १२० भयौ—भए (इ) ।
 १२१ कहत कवि— पुनि सतत (आ) ।
 १२३ कौ कहत कवि—उपसम कहत (अ) ।
 १३८ उडप चंद उडपरु गरुड श्री गरुडध्वज बाह (अ) ।
 १३९ मंद सतत सनि अल्प खल रोगी पाप स्वछंद (आ) ।
 १४३ स्यदन . . . कवि—स्यदन सुर जल तरु निगम (आ) ।
 १४४ चढि—जिहि (इ) (छ) ।
 १४५ मंथी मदन—मथिवौ मदन (आ) ; मंथी ग्राह—दिनकर ग्राह (आ) ।
 १४६ जिहि . . . खड—हरि कीने विवि खंड (आ), जो हरि कियो विखंड (इ) ।
 १५३ संबर असुर—वातप असुर (आ) ।
 १५५ गोगल—गौबल (अ) ; तर—तन (अ) (आ) (ग) (च) ।
 १५७ नग . . . नग रतन—नग कहि अहि द्रुम रवि रतन (आ) ।
 १५९ अरु नाग—जीमूत (आ) ; नाग दुष्ट—मखी दुष्ट (आ) ।
 १६१ कहत—प्रसभ (आ) ।

- १६३ कौ कहत कबि—ताबूल भय (आ) ।
 १६४ जानहि भगवंत—जानै श्री कंत (आ) ।
 १६५ अज कहियै . . . ईस—अज विल्व रु अज ईस (आ) ।
 १६६ अज . . . नर कहत—अज जोबन भर कहत अज (अ), अज जोबन अज कहत नभ (उ), अज जोबन भरि नर कहत (ग) ।
 १६७ सिव सुख—शुक्र कील (आ) ; श्रेष्ठ—जेष्ट (आ) ।
 १६८ सलिल पुनि—बल लियौ (आ) ; कृष्ण-दास—कृष्ण-सदा (आ) ।
 १६९ गात—राति (आ) ।
 १७१ जूगरी—ऊगरी (क), बल्लरी (ख), ल्हवरी (ङ), गूजरी (छ) ।
 १७४ सिव—सब (इ) ।
 १७८ जहाँ बसे बलबीर—बसे जाइ बलबीर (इ) ।
 १७९ औ कंबु—अरु वलय (अ) ; इष्ट—दृष्टि (आ), दुष्ट (ख) (छ) ।
 १८५ अन्न—अल्प (इ) ।
 १८९ कहियै—जननी (आ) ।
 १९३ कहत कबि—मेघ धुनि (आ) ।
 १९६ जिहि—जिन (इ) ।
 १९९ तिय इला—तिय बचन (आ) , इला उमा—गेऊ उमा (आ) ।
 २०२ अनंदहि—अलिदहि (आ) ।
 २०५ इडा कहत . . . अभिराम—इडा वचन गो वर्ष जल सुरकाभू अभिराम (आ) ।
 २१० बिधि बिधि जोई—बिधि के बिधि जो (इ) ।
 २१२ घट घट . . . गूढ़—घट परगट है गूढ़ (अ) ।
 २१४ नर हीरा—हरि हीरा (आ) ।
 २१५ कृतात सिद्धांत—अदिष्ट सिद्धांत (आ) ।
 २१६ जम कृतात की—पाप कर्म जम (अ) ।

- २२२ कुदंड—कुंडल (अ) ।
 २३३ अरु—रस (आ) ; अरु रस नीर—रस अरु नीर (इ) ।
 २३७ जो . . . सदा—जो इहि अनेका अर्थ कौ (आ), जोइ अनेका
 अर्थ को (इ) ।
 २३८ सो . . . लहै—ताकौ अनेक अर्थ बुधि (अ) ।

स्यामसगाई

- १ नद—स्याम (अ) ।
 ३ महरि—राय (ग) (ङ) (च) (छ) ; कह्यौ—चह्यौ (अ) (ख) ।
 ४ मो—मेरे (ग) (ङ) (च) (छ) (ज) ; गोबिंद—श्री गो-
 विंद (घ), जो गोविंद (ङ) ।
 ५ सोहनी—सोहती (अ) (ख) (ज) ।
 ६ एक—रहसि (छ) ; द्विज—व्रज (क) (ङ) (च) (छ) ।
 ७ मरम—प्रेम (च) ।
 ८ करियौ बहु—बहुत करो (क) (च) ।
 १० सोहनी—अधिक है (ग) (ज) ।
 ११ बेगि—पौरि (अ), दौरि (ख), तुरत (छ) ।
 १२ तहँ—के (ग) (घ) (च) (छ) ; बैठि . चलाई—मरम
 की बात चलाई (क) ।
 १३ जिन—हौ (अ) (क) (ख), हम (ग), उन (घ) (च), मे
 (ज) ।
 १४ बहुतहि करि अरदास—तुम सुनौ बीनती तास (च) ।
 १६ मेरौ अति—इत मेरौ (अ) (ख) ।
 २१ कीरति—रानी (अ) (क) ; सु हौ नहि करौ—नाहि ने हम
 करे (ग) । नाहि हम करत (च) ।

- २४ कहत सुनत . . . और—राजनीति जानै नहि करत और सू और
(च) (छ) ।
- २६ फिरि—पुनि (अ) (ख) (ग) (ङ) ।
- ३१ मैया लाल सौ कहै—जसुमति लालहि कहति (अ) ।
- ३२ जहँ करियत तो—जहँ कहीयत तेरी (ग) (ज) ; जहाँ चलै
तेरी (च) (ञ) ।
- ३३ तोइ—तोहि (ग) (छ) ।
- ३४ उनहूँ बहि—तिनहूँ बहि (अ), वह रानी (क), उन हमकु (च) ।
- ३६ कहत यौ—कही तव (च) ।
- ४५ मनहि—कुवर (ज) ।
- ४८ देखि सखी बुझन लगी मुखै चुचावत नीर (च) (ज) ।
- ५४ स्याम स्याम कू कहि उठी कैइक बार अनेक (ज) ।
- ५५ प्रेम की लहरि सों (ज) ।
- ५६ बतावै—बताऊँ (अ) (ख) ।
- ५८ पूँछै तो—पूँछैगी (च) ।
- ५९ मीत गुपाल की—मंत्री स्याम कौ (च) ।
- ६१ कुँवरि—लई (अ) (क) (ख) ; पकरि . . . लाई—पकरि
के सुदरि लाई (ग) ।
- ६२ बिबस दसा लखि—जब निरखी निज (ग) (च) (ज) ।
- ६५ कह्यौ—कुवरि (ग) ।
- ७१ समुझाइ—मुसिव्याय (ग) ।
- ७३ जौ . . . माइ—पठवै बाकी माइ (अ), जौ पठवै बाकी माइ
(ज) ।
- ७४ गारुड़ी—गारडु (ग) (झ), गाडरू (ज) ।
- ८६ रहसि—दौरि (अ) (ख) (ज) , हर्ष (क) ।
- ८७ दौरि—चले (अ) (ख), तुरत (छ) ।

- ८८ ग्वालिन . . . कै—लखि गुपाल भगरन लगे (अ) (ख), देखि सखी बूझन लगे (छ) ।
- ८९ कहौ . . . आइ—कौन गाँव सों आइ (ख), कौन गाम तैं आय (क) (झ) ; ए तो नारि गँवारि है, मति बहिकै तू माइ (अ) ।
- ९० सोझ हमसो कहो (झ) ।
- ९१ तेरी . . . बलाई—तेरी हौ लैहु बलैया (अ) (ख), मै तेरी लैहु बलैया (ज) ।
- ९२ ग्वालिनी तित तैं आई—ए तित तैं आई मैया (अ), ए तित तैं आई भैया (ख) ।
- ९५ लाल जस लीजियै (झ) ।
- ९६ सुनै—कहन (झ), सुने (ज) ; ताहि —कहो (झ) ; कौन बाइगी . . . बतायौ—मैया मै गाररु किनि सुन्यौ कहौ कि मोहि सिखायौ (च), मैया सु मसिक्याय कही जब नंददुलारे (छ) ।
- ९७ परपचिनि तुम ग्वालि—तुम ग्वालिनि परपच (च) (ज) ; अरी कौने कीए गाररु कौने मत्र सिखाए (छ) ।
- १०६ समौ मुकरन कौ नाही—साँवरे कुँवर कन्हाई (अ) ।
- १०७ कुँवरि जीवैगी नाही—कुँवरि जीवन की नाई (अ), कुँवरि वचने की नाही (च) ।
- १०८ सम—सौ (अ), सिर (च), सरि (छ) ।
- १०९ बृदावन मै साँवरे—तुम श्री वृंदावन मै आगरे (च), मथुरा मै हरि अवतरे (ज) ।
- ११२ मोहिं राधे—मोइ कुँवरि (अ) ।
- ११८ लीने—लीये (च) ।
- ११९ ततछन—पावन (झ) ।
- १२१ लाई—ल्याई (अ) (ख) ।
- १२३ फूँक—मंत्र (ख) (झ) (ज) ; निज—हरि (ख) (झ) ।

- १२४ धन—विधि (अ) (ख) ; है—ए (अ) (क) (ख) (ग) ।
 १२८ सब अपने घर—सब अपने ढिग (अ) (ख), अग अंग छवि
 (च) (छ) (ज) ।
 १२९ मन दीनौ मुसकाइ—मधुर मधुर मुसकाइ (अ) (ख), मन दीयो
 मुकलाय (च) (छ), मुख दीयौ मुकलाय (ज) ।
 १३१ कौ प्रेम—की रीति (च) (छ) (ज) (झ) (ञ) ।
 १३४ छावाइ—छाइ (अ) (ख) (च) (ज) ; गर—गहि (अ)
 (ख) (ज) ।
 १३९ बटत—बजत (अ) । 'ज' ने अंतिम छंद इस प्रकार दिया है—
 तबई लाल की भई सगाई, फूले ग्वाल अंगनहि माई ।
 गावत गीत राग रस भरे, सबै मैंन से लागत खरे ।
 समचार जसुमत नै पाये, आंगन सुदर चौक पुराये ।
 कुल की बधू बुलायकै, करत आरती माय ।
 श्री कृष्ण चंद्र के चरन पर, तारपान बलि जाय ॥
 इसी प्रकार के पद्यांश 'च' तथा 'छ' में भी पाए जाते हैं किंतु उन में
 'तारपान' की छाप नहीं है ।

भँवरगीत

- ३ रसरूपिनी—सरूपिनी (ख), रस रोपिनी (झ) ; उपजावनि—
 उपजावत (ग) ; सुख—रस (क) ।
 ५ नागरी—बासिनी (ग) (ङ) (च) ।
 ६ कह्यौ—कहौ (ग), कहन (घ) (च) (ज) (ट) (ठ) ; लायौ—
 आयौ (ख) (घ) (च) (ज) (ट) (ठ) ।
 १२ भरि—भरचौ (ग), भरे (झ) ; द्रुम—दृग (क) (ग) (घ)
 (ङ) (च) (छ) (ज) ।

- १६ और—बहुरि (ट) (ठ) ।
 १८ बिहसित—बिहसत (ख) (ग) (ङ) (ट) (ठ) ।
 २३ आयौ—पठयौ (ख) (घ) (च) ।
 २४ जिनि जिय—तुम जिनि (क) (घ) (च) ।
 २७ अलक—कमल (ट) (ठ) ।
 २८ धरनी—धरती (ङ) ।
 २९ प्रबोधही—प्रमोदियो (ख), प्रमोद की (छ) (ङ) ; बात बनाइ—बैन सुनाय (छ) (ठ) ।
 ३२ ब्रह्म सब रूप—रूप सब उनहि (ट) (ठ), निर्विकार निज रूप आप अपने हिंदै पेखौ (च) ।
 ३३ माहि—महि (ट) (ठ) ।
 ३४ बरतत—पर्वत (क) (ग) (ङ) (छ) (ज) (ङ) ।
 ३८ श्रुति, नासिका—मन प्रान मै (ग) (छ) ; दिखाइ—लखाय (ट) (ठ) ।
 ४१ यह सब सगुन—सरगुन सबे (ख) (घ) (च) (ज) ।
 ४४ है—की (ङ), ही (ट) (ठ) ।
 ४७ को बन बन —बन बन को (क) (च) (ज) (ट) (ठ) ।
 ४९ ह्वै—है (क) (घ) (ङ) (च), है (ट) (ठ) ।
 ५२ तैं—मैं (क) (च) (छ) (ठ), सो (ट) ।
 ५३ गुन—कौ (घ) (च) (ज) ; अवतारि कै—अवतार है (घ) (च) (ज), अवतार ह्वै (ट) (ठ) ।
 ५४ पुर—पर (क) (ख) (ङ), पद (घ) (ज) (ङ) ।
 ५६ पावौ—भावै (घ) (ठ), पावौ (ट) ।
 ५७ गावौ—गामै (घ), गावौ (ट), गावै (ठ) ।
 ६६ धर्म—धूरि (क) (ग) (छ) (ट) (ठ) ।
 ६९ कर्म बध—कर्म बद्ध (ट) (ठ) ।

- ७१ कर्महि निदौ कहा—तुम कर्म निदौ कहा (क), तुम कर्महि कस निन्दत (ठ) ।
- ७८ भोग—नर्क (ट) ।
- ७९ रोग—गर्क (ट) ।
- ८१ कोउ धारै—कौ धारै (क) (ख) (ङ) (च) ।
- ८२ द्वार—धारि (ख) (ग) (ठ) ।
- ८३ सिद्धि—सुन्य (घ) ।
- ८४ जोतिहि—जोति मे (क) (ग) (ध) (ङ) ।
- ८८ यह—ये (छ) ।
- ८९ आयौ—आये (ख) (ङ) (छ) ; पूजही—पूजियै (क) (ख) (ग) (घ) (च) ।
- ९१ बतावै—वखानै (क) (ट) (ठ) ।
- ९२ रचि—चारि (ख), रुचि (ग), रिचा (क) (घ) (छ) (ज), सब (ट) ; उपनिषद जु—ऊपर सुख (ठ) ; जु गावै—वखानै (ट) ; गावै—सानै (ठ) ।
- ९३ नहि पायौ गुन —पायो किनहूँ न (क) (ग) (झ) ।
- ९४ कहौ—कहि (च), कहु (घ), कह (ट) (ठ) ; टेक—हेत (ख) (च) ।
- ९९ न्यारे भये—न्यारो भयो (ख) ।
- १०२ वा—उन (ट) (ठ) ।
- १०४ कौ—कै (क) (ङ), कहि (छ) ।
- १०६ ही—हो (ट) (ठ) ।
- १११ प्रेमहि—प्रेम हु (क), ब्रह्म हू (ख) (च) (ज), प्रेम जो (ठ) ।
- ११३ तरनि चंद्र—रतनचन्द्र (क), तरुन चंद्र (ख) (घ) (ङ) (च) (झ), श्रीकृष्णचंद्र (ग) ।
- ११६ तरनि—रतन (क) ; तरनि अकास प्रकास—तरुनाकार पर-

- कास (ख) (घ) (च) (ज), तरुन अकार प्रकास (ग) (ङ)
(ण) ; तेजमय—ते जामै (क) (ग) (घ) (च) (ङ) (ण),
मे जामै (ख), ते जमपुर (ज) ।
- ११७ दिव्य दृष्टि ही भलै रूप वह देखौ जाई (ग) (च) (छ) (ज) (झ) ।
- १२१ जब—जो (घ); हू—हूँ (ग) (छ); तामै—या मै (ट),
जामै (ठ) ।
- १२२ तै—कातै (ट) (ठ) ।
- १२३ करम . . . किये—करम करम कर ही किये (झ), करम करम ही
किये तै (ट), क्रम क्रम कर्म सबहि किये (ठ) ।
- १२४ हूँ—करि (क) (ख) (ङ) (च) (ज) (झ) ।
- १२६ हूँ—क्यो (ट) (ठ) ; कर्म . . . आवै—कर्म क्यो बदन, आय
वे ये (ख) ।
- १३१ आवै—आवै (क) (ख) (घ) (ङ) ; नस्वर है—नहि ईस्वर
(ट) (ठ) ।
- १३४ तिन कौ—जिन को (ख) ।
- १४१ ऐसै मै—एक समे (ख), यते ही मै (ग) ।
- १४२ बने बीरे अरु—बनी बीरी अरु (ग), बन्यौ पियरे अरु (घ),
लसे उर पियरे (ट) ।
- १४३ कहै—कहि (ग) (च) ; तिन . . . वात—कहत जु तासौ
वात (घ), करत तिनहि सग वात (ट), बैठि सकुच कह वात (ठ) ।
- १४४ चुचात—चुवात (ट) (ठ) ।
- १५४ बहुत पाइ—बौहौताइति (क) (ग) (झ), बहोत भाति (ख)
(घ) (च) (ज) (ठ) ।
- १५८ सब रस—सब दरस (ग) (च) (छ) (झ), परवस (ट) (ठ) ।
- १५९ पराधीन जो मीन—प्रेमातुर जो मीन (ज), गहिरे जल की मीन
(ट) (ठ) ।

- १६४ अबला-बध—अबला बधु (क), अबला बुद्धि (ठ) ; डरि गये—
दुरि गये (क) (ढ), डर गई (ठ) ; बड़े....माहि—बली
बुरे जग माहि (ख), बली डरे जग्य माहि (च) (झ), बली डरें
जग माहि (ट) (ठ) ।
- १६८ लई—लीये (ख) (ग) (घ) (ङ), लये (ट) (ठ) ।
- १६९ बिरह....हौ—अब बिरहानल दहेत हो (ख), बिरह अनल अब
दाह है (ग), बिरह अनिल अब जारि हो (घ) बिरह अनल तैं
दहत हौ (ट) ।
- १७४ पय पीवत ही पूतना मारी बाल चरित्र (ठ) ।
- १८२ लच्छ . धरे—लघु लाघव संधान बान (घ) (च) ; सूरे
—रूरे (ट) (ठ) ।
- १८४ श्रवन नासिका काटि कै दीयो सुर्य वश कुल लोप (ज) ।
- २०३ ठाढ़ौ—ठाढ़े (ट) (ठ); हो—भयो (क) (च) (छ), है (झ),
है (ठ) ।
- २०६ इहि—यहि (ट) (ठ) ।
- २०७ तहाँ कछु—बिबस्था (घ) ; तहाँ. . .लागी—कछू सोचन
मन लायो (च), तहाँ ते देखन लागी (ट) (ठ) ।
- २११ नेम—भरम (ग) (ङ) (छ) (झ) ।
- २२२ पुज—बृंद (घ) (च) ।
- २२४ मन....भयौ—मानहु मन ऊधव कौ भयौ (क), मनु मधुकर
ऊधव कौ भयौ (ट) ।
- २२६ उत्तर—उत्तम (क) (ख) (ग) ।
- २२८ तुम....चोर—तुम मानत हम चोर (ट) (ठ) ।
- २३२ मसिहारे—मति हारे (क), मुसन हारे (ख), मुसिहारे (ग) (ज),
बिष वारे (ट) ।
- २५३ हरि भाँति कौ—सब भाति कै (ट) (ठ) ।

- २५४ यह....बधू—हसि बोली ब्रजवासनी (घ), ऐसै बोरी ब्रज वासिनी (झ), यह बौरी ब्रजवासिनी (ट) (ठ) ।
- २७४ निर्गुन भए अतीत के सगुन सकल जग माहि (क) (ख) (ट) (ठ) ।
- २७७ कूबरीनाथ—कूबरीदास (ख) (छ) (झ) ।
- २८० जरत या बोल कौ (क) (ख) (ङ) ।
- २८५ कोटि जो ग्यान है (ग) (च) (ज) ।
- २८६ मोहन....होहि—मोहन निर्गुन होइ गहे (ट), मोहन निर्गुन को गहे (ठ) ।
- २९६ गीत—कहत (ख) (घ) (ट) (ठ) ।
- २९८ रोई—रुदित (ग), रोई (ट) ।
- ३०१ नैन....धारहि—अस लै बन की धारनि (क), असु लोचन की धारनि (ख), सिधु लै तन की धारनि (ट) (ठ) ।
- ३०२ भुज बल अबला जाति कचकी भूपन हारहि (ग) (च) (ज), बसननि उलटे गात कचुकी भूपन धारन (घ) ; बहुगुन—भूपन (ट) (ठ) ।
- ३०३ प्रेम-पयोधि—प्रेम औ बंध (क), अरु बिद (ग) (घ) (ज) ; ऊधौ चले बहाइ—ओर न कछु सुहाय (ग) (ज) ।
- ३१३ हौ कही—हौ तो कहि (ट) ; की—सौ (ठ) , रोपि—रूप (क) (ख) (घ) (ङ) ।
- ३१४ है—है (क) (ख) (ग) (च), ह्वै (ठ) ।
- ३१७ प्रेम-पदवी—प्रेम पद पी (ठ) ।
- ३१८ सब—सत (छ) (झ) ।
- ३२३ उर....बाध—उर मे धरी हो बाध (ख), उर मे रह्यो व्याधि (ट), उर मद रह्यो उपाध (ठ) ; बाध—बाढ़ि (ग) (ज) (झ) ।
- ३२७ लौह-मात्र—लोह तुरत (घ) (ट) (ठ) ।

- ३३३ मारग . . . धूरि—ह्वै पग मारग धूरि (ठ) ।
 ३४४ का करै—कहा करै (क), कहा करौ (छ), का करौ (ट) (ठ) ।
 ३५२ तब—जब (ट) (ठ) ; लहै लाख—कहौ लाख (क), नहिं
 लखौ (ट) (ठ) ।
 ३५६ चलौ—स्याम (ट) (ठ) ।
 ३७४ 'नंददास'—जन मुकुद (क) (ख) (ङ) (छ) (ढ) (ण) ।

रुक्मिणी मंगल

- २ कथा कहूँ—यथा कहूँ (ख), कहो यथा (घ) ; पावत—पावन (ख) ।
 ३ चित्त—जो चित (घ) ; सुनै—सुनावै—सुनै—सुनावै (ख) (घ) ।
 ४ मिटै—मिटै (ख) (घ) ; पावै—पावै (ख) (घ) ।
 ७ बिछुरि—छुटी (ग) ।
 ८ नाल तै—माल तै (ग) ।
 १० अलिन-दल—अलिदनि (ग) ।
 ११ पूछति—पूछै (ग), बूझे (घ) ; बात—बाल (ग) ।
 १४ पूछे सुदर मुख मूदे तिहि उत्तर देई (ग) ।
 १५ वदन तै लहिहै—वदन मे लहई (ग) ।
 १६ विरहिनि—कन्या (क) (ख) ; कन्या विरहनि तासों कासों
 वा तब कहई (ग) ।
 १७ के हार, उदार—की माल जोरि (क), की माल सखी (ख) ;
 सखी—जब जब (ख) ।
 १८ सौ—कर (ग) ; अर सौ—अर सै (ख) (घ) ।
 १९ जुर—जरै (ख) ।
 २२ भरै—भरै (ख) ।
 २३ दुरी . . . आरति—दुरी रहत क्यौ पिय रत (ग) ।

- २५ चितत—भंपत (क) (ख), जपत ही (ग) ।
- २७ छाजत—राजत (घ) ; ह्वै गई कछुक बिबरन छीन तन यो छबि छायाँ (ग) ।
- ३० कर-कंकन आही—कर कँगना द्रग जलकन ह्वै जाही (ग) ।
- ३१ टप टप तै—टपक टपक छबी नेनेन सो (क) टप टप, टप टप टपकि नैन सो (ख) ।
- ३२ दल तै भल—दल पर ते (क), दल तिन ते (घ) ।
- ३३ कबहुँक—कबहू (ग) ।
- ३४ पीय—कंत (ग) ।
- ३५ अवा-उर—अवा तन (ख), अवा जिम (घ) ।
- ३६ लाल—लाज (ग), लाच (घ) ।
- ३७ अब धौ—दर्ई अब (घ) ।
- ३८ हठ—हट (ख) ।
- ४० भठ—भट (क) ।
- ४५ तिन—जिन (क) (ख); अज से—अजहूँ (क) ।
- ४६ सिव—सुक (घ) ।
- ४८ नाना—रुकमनि (क) (ख) ।
- ४९ बात—लाज (ग) (घ) ।
- ५० पिया—पीय (ग) ।
- ५१ नाथ-हाथ तुम—नाथ हाथ लै तुम ही (क) ।
- ५२ एती—इतनी (ग) (घ) ।
- ५५ माधुरी—छबि दुरी (ग), छबि धुरी (घ) ; चाहि कै
चित—बिप्र है रह्यौ चकित चित (क) ।
- ५६ छबि—जिन (क) ।
- ५८ अमृत फलन सौ फूले फूले सुर मुन लेखैं (क), अमृत फलन सों फले फरे सुर वर मन लेखे (ख) ।

- ६० तिन—जिन (क) ; रव—वर (क) ।
 ६१ शुक सारिक पिक चातिक मीठी धुनि सो रटई (ग) ।
 ६२ सुढार—सुधार (ग) ।
 ६६ सरोवर तैसै—सरोवर मिरा जु क जैसो (क) ; प्रफुलित
 तैसै—प्रफुलित चंद त व र इंद्री जीव कू तैसे (ग) ।
 ६८ मनो रवि डर तम तजि भज्यौ रोवत ये वारे (ग) ।
 ७० जोति होति—होति जोति (ग) ।
 ७१ फरकै, अरकै—फरकत भलकत (ग) ; जहँ—जहाँ (क) (ग) ।
 ७२ घाम न परसत क कबहू नित ही छाह तिनहि तहा (ग) ।
 ७३ मग—मुख (ग) ।
 ७५ उड़ी—बनी (ग) ।
 ७७ जैसैई देव बिमान द्वारका देखन आये (क) ।
 ७९ हरष भयौ—भयौ हरषि (ग) ।
 ८९ जदुपति कों लखि द्विजपति मन में अति सचु पायो (क) जदु पर-
 खद मध जदुपत कों लख द्विज सचु पायो (घ) ।
 ९१ किधौ मै—किधो मणि मंडल मै (क), किधौ कि मनि मंडल
 मै (ख) ।
 ९२ किरन—करण (क), करनन (ख) ; महा—अति (ख) ।
 ९६ लै कौ—ल्याय चले गृह द्विज वर कौ (ग) ।
 ९७ मन—मनौ (ग) ; ऐन—अन (घ) ।
 १०६ प्रेम-रस—प्रीति के (ग) ।
 ११० पुनि—अब (ग) ।
 ११३ श्रुति-बास—सुख हास (क), सुखदास (ख), श्रुति हास (घ) ।
 ११४ सुदर मुनिवर श्री गोविंद तुम सब बरदाइक (क) ।
 ११७ बिलग जनियै—बिलगु मानियै नाहि जानियै (ख), अलग
 नाहिन मनियें गनियें (ग) ।

- १२० भाये—भाय (ख) ; अमृत—अमी (ग) ।
- १२२ हौ—हम (क) ; नाथ तुम भये—नाथ भये नाथ (ग) (घ) ।
- १२३ अव अनहित नाहिन करचौ बरचौ त्रिभुवन मन सुदर (ग) ।
- १२४ नित्य परम अभिराम स्याम सुख धाम पुरंदर (ग) ।
- १२५ भरे, बरे—भरै बरै (क), भरे सरे (ग) ।
- १२६ कौल—कूटि (क), कूट (ख) ; परे—धरे (ग), मरे (घ) ;
छिन ही . . .ततर—छिन छिन परततर (ग), छिन छिनही
निरंतर (घ) ।
- १२७ पानिप—पानिय (ख) ; धोरे—ढोरे (ग) (घ) ।
- १२८ हार—हरिहि (ख) ।
- १२९ सठ—सट (ख) ।
- १३० चट तै मठ—चठ ते मठ (क), चट तै मट (ख) ।
- १३१ करत . . . मरियै—मरियै लाज यहै तो (ग) ।
- १३२ वारत बृंदा बिदारन बल गोमाय यहै तो (ग) ।
- १३३ जू बलहि—निज मनस (ग), निज संस (घ) ; बिचारौ—विचारै
(ग) (घ) ।
- १३४ बिडारौ—जुठारै (ग) (घ) ।
- १३५ देखत याकौ—देखि तिया कौ (ख), निरखत याको (ग) (घ) ।
- १३६ तुम सब बिधि लायक अछित छिपे सिसुपाल छिपा कौ (ख),
तुम तौ सब बिधि लाइक अछित छुवौ न छिया कौ (ग) ।
- १३७ नागर नगधर नंद कुवर मोहि करिहौ न दासी (क) ।
- १३८ परि—घर (क) ; तन की—तन तिन (क), तन तून (घ) ;
तौ पर हरि पावक जरहों करहों तन तिन कासी (ग) ।
- १४० स्याल . . . कर—छुये सिसुपाल स्याल कर (क) ।
- १४२ तैं—पै (ख) ।
- १४५ करत—कहत (क) (ख) ; बात—हसत (क) (ख) ।

- १४७ लाऊँ रुकमिनि—दुलहिन लाऊँ (क) (ख) ।
- १४८ सार, अग्नि-कन—अग्नि सार किनि (क) ।
- १४९ आरति, हरि अरबर सौ—अरबर दरबर दै इम (ग) (घ) ।
- १५० मन . . . करे—मन की सी गति तन की करि हरि (ग) ।
- १५२ कर तपत करी—के तेज दुखित (क), कर दुखित भई (घ) ।
- १५४ उदै ज्यौ—उदै बिनु (ख), उदित जैसे (घ) ।
- १५५ वाम भुजा लगी—बाये अंग लगे (ग) ; फरकन लागी भुजा-
वाम कचुकि-बंध तरकन (ख) ।
- १५६ हिय सो दुख लाग्यो सरकन उरवर लाग्यो भरकन (ग) ।
- १५७ ताही . . . चलि—तिह छिन द्विज बर चलयौ चलयौ (क) ।
- १५९ पूँछि न सकै—पूछ न सकत (क), पुँछ न सकत (ख) ।
- १६६ ताकी कहा कहियै—ताकी का कहियें (ख), तिहि कू कहा चाहियै
(ग) ।
- १६९ अँग . . . के—अंग सुख दैन जु हित के (ख) ।
- १७२ ललित . . . पगिया—ललित लसै सिर पागे (क) ; तकि तकि—
तकै तक (ख) ।
- १७३ कोउ घुघरारी निरखत भौहन भेट भए है (क) ।
- १७४ दोऊ दृगन छवि गिनत गिनावत ही जुर रहे है (ख) ।
- १८३ कोऊ . . . अग के—कोई यक नेननि अटक गए ते (क), कोऊ
इक नैननि अटक गय ह्वै (ख) ।
- १८६ चित्र . . . अलि—चंप माल स स्याम परस अलि (क), चंप-माल
सिसुपाल परस अलि (ख), जंत्र कमल संसार नीर पर (घ) ;
अलि—डिरि (ग) ।
- १८७ बर—यह (ग) ; बर नाइक—बड़ नाथ (ख) ।
- १८८ संठ—सुनहु (क) (ख) ; संठ रुक्मी—सठ जु रुकमि (ग),
सठ रुक्मिन (घ) ।

- १८६ याही बरैहै—आई बरहै (क), ये ही बरिहैं (ख) ।
 १९० परैहै—परी है (क), जु परि है (ख) ।
 १९२ परे—कर (ग); ओज उबारे—ओज उचारे (ख), ज्यों अंगारे (ग) ।
 १९३ उन—इन (क) (ख); बतायौ—बुलायौ (क) ।
 १९५ ऊजन—उज्जल (क) ।
 १९७ मंदर—मदिर (ख), मंडल (घ); कंदर घन ज्यौ—कंकन नव घन (क), गगन में नभ घन (ख), किकिनी नव घन (घ) ।
 १९८ सब—सो (क) (ख), सुर (घ) ।
 २१२ चलै तिन सौ—भक तिन सो (ग), भखे तीन सौ (घ) ।
 २१४ बीन—बैन (क) (ख) ।
 २१५ अवनि . . . उनमानी—अव परे यो अनुमाने (ग) ।
 २१६ अपनी—अवनी (ग); जानी—जाने (ग) ।
 २१७ देखति छवि सौ छली अपन-वर आरत उलही (ख), ये सब छवि
 • छल अपनी हरि को अर्पन उलही (घ) ।
 २२१ छवि राजत—भिलमिलत (ग), अक्षत छवि (घ) ।
 २२२ बदल—बदरि (ख); दमकत दामिनि अंकुर अरुन कमल में
 जैसे (ग) ।
 २२३ श्रवननि—छुटकी (क) (ख) ।
 २२५ दिये—लिये (क), लिये (ख) ।
 २२७ मुरभि—भुरसि (ख); उरभि उरेभा—उरसि उरेसा (ख) ।
 २२८ बेभा—बेसा (ख) ।
 २३३ छवि सो रथहि चलाइ आन रुकमिन जब आई (ग) ।
 २३५ कछु—इम (ख) ।
 २४४ जूप—पूप (ख), लूप (घ); लागे बज मारे—लारे बज-मारे (ग) ।

- २४५ दै—तै (ख) ।
 २४६ मागध . . . पायौ—मग अति दुख पाये (ग) ।
 २५० आयौ—आये (ग) ।
 २५१ कर कंगना दुख दूनौ दुख करि रोय जु दीनौ (ग) ।
 २५२ पुनि—वहि (ख), तिन (घ) ।
 २६३ चित—हित (क) ।
 २६५ सो . . . भावै—सो सब मंगल पावै (क) ।

रासपंचाध्यायी

- १ करौ—करौ (क) (घ) ।
 ४ नग—मग (छ) (ज) (ञ) ।
 ७ ललित, बिसाल सुभाल—सुंदर भाल बिसाल (छ) (ज) (ञ) ।
 ८ प्रतिबिब—प्रतिबंध (ख) (ञ) (ठ) ।
 १० रसासव—रसामृत (ज) ।
 ११ भवन—भरन (छ) (ज) (झ) (ञ) ।
 १२ मिली सु मंद—मिलि तासु मंद (छ) (ज) (ञ) ; मिली—
 मिलै (झ) ।
 १४ बिच—मधि (ङ) (ञ) ; भाँति—भाति (ठ) ।
 १५ प्रकासै—प्रकासे (ग) (घ) (छ) (ज) (झ) ।
 २० हियौ—हिय (छ) (ज) (ञ) ; भरि—भरी (च) (छ) (ज),
 पूरि (ञ) ।
 २१ अस सोभित—सोभित अति (घ) (झ) ।
 २२ भाति—भाँति (छ) (ज) (ञ) (ठ) ।
 २७ मुक्ति—मुक्त (ख) (छ) (ज) (झ) ।
 ३६ सुकुमार—सुक-सार (ञ) ।

- ३६ जिन—तिन (ख) (ग) (छ) (ज) (ञ), यह (क) (च) ।
 ४० तातै मै—ताही ते (ख) (छ) (ज) (ञ) ।
 ४५ बीरुध—विरुधी (छ) (ज) (झ) ; तून—तन (ख) (छ)
 (ज) (झ) (ञ) ।
 ४६ प्रभाउ—प्रभा (क) (ख) (घ) (च) ; परत न काल प्रभाव
 सदा सोभित है ते ते (ञ) ।
 ४६ संत बसंत—संतत वसत (क) (च) ।
 ५१ ज्यौ—जो (छ) (ज) (ञ) ।
 ५२ भू—भ्रू (छ) (ज) (ञ) ; जगत—ज्योति (घ) ; तित—
 कित (ङ) ।
 ६५ अति सुही—सुही ज्यौ (छ) (ञ) ।
 ७० घर—घर (छ) (ज) (ञ) (ङ) ।
 ७३ तट—नित (ख) (ङ) (ज) ।
 ७४ दौरि जनु—दूरि लौ (छ) (ञ) ; मनि मडित दोऊ तीर उठै
 छवि भरि अति लहरी (ङ), मणि मंदिर दोउ तीर उठत छवि
 अद्भुत भारी (ज) ।
 ७५ तहाँ इक मणिमय सिंह पीठ सोभित सुन्दर अति (छ) (ज) ।
 ८० रुचिर...जस—रुचिर निबिड़ मध्य लागत उड़पति जस (छ),
 रुचिर निबिड़ उर लागत पति जस (ज) ।
 ८५ आक्रात—रुचि लिए (ज) ।
 ९० मधुर हँसि—मरुत बस (छ) (ञ), मधुर हरि (ज) ।
 १०० बिहँसति—बिलसति (छ) (ञ), बहसन (ज) ।
 १०३ अरुनिमा, बन मै—अरुन वा बन मे (घ) (झ), अरुन नभ बन मै
 (छ) (ञ), अरुन मनो बन व्याप (ज) ।
 ११० चतुर—सु घट (च) ; अधरासव—अधरा सुर (ङ), अधरा
 रस (ठ) ।

- ११३ अस—जित (क) (च) ।
- ११४ मनहरन हौइ जस—के मन मोहन हित (क) (च) ।
- ११५ जु सुन्यौ—कीनों (छ) (ज) (ञ) ; ही—हूँ (छ) (ज) (ञ) ।
- ११६ ही—हूँ (छ) (ज) (ञ) ।
- १२१ नाद—अमृत-नाद-ब्रह्म (ञ) ।
- १२३ पचभौतिक—पंच-भूतन (छ) (ज), पंचभूत तिन (ज) ।
- १२६ तिन—तन (छ) (ज) (ञ) ।
- १२७ जिन—तन (क) (च) (ञ) ।
- १३० छीन—छिनक (ङ) (ञ), छिनहिं (ज) ; कीने मंगल—मंगल कीनो (ज), मंगल भुगते (ञ) ।
- १३१ पितल-पात्र—धातु पात्र (ख) (ज), लोह-पात्र (ञ) ।
- १३५ तिन संग-रति सहित (ख) (ज) ।
- १४० छबि—जुत (ख) (ज), जहा (घ), नव (ञ) ।
- १४८ करी—कीयो (ख), करघो (ग) (घ) (ञ), कियो (छ) (ज) ।
- १६३ छविली भाँति सब—भली भाँति सौ (छ) (ज) (ञ) ।
- १६४ मिले . . . तब—रंगीले नयन मिले तब (ङ), मिले है रसिक नैन तब (छ) (ज) (ञ) ।
- १६६ तम . . निकरि—तम के कोन मधि ते निकरि (ख), तमकि कुटिन के माझ (ङ) ।
- १६८ बहुत सरद—स्वच्छ सुन्दर (छ) (ज), सुचि सुन्दर (ञ) ; द्वै—हूँ (क) (ख) (च) ।
- १६९ अनु—अस (घ) ।
- १७१ बर—गुर (ङ) (ठ) ।
- १७३ बंकहि—बाँके (क) (च), बाँकी (छ) (ज) (ञ) ।
- १७८ माटी—मिथ्या (ख) (ग) (ञ) ।

- १८७ दुख के बोझ—दुख सौ दवि (छ) (ज) (ञ); नै—लै (छ) (ज) (ञ) ।
- १९६ कितहि—कत कौ (क), केतीक (ख), कतक (च) (छ) (ज) ।
- २०० धरमन कौ तुम धर्म भर्म फिर आगे को है (छ), घर मैं को तिय भरमै, धरमै या आगै कोहै (ञ) ।
- २०३ नग खग और मृगन को कैसे धर्म रह्यो है (ज), नग, खग और मृगन हूँ नाहिन धरम रह्यो है (ञ) ।
- २०४ छाने ह्वै रहौ पिया अब न कछु जात कह्यो है (छ) (ज) (ञ) ।
- २०५ अस—के (ख) (ज) ।
- २०८ लाल, नैन चचल जु—चपल नेन मानो मीन (ख), नेन चपल मनु मधुप (घ), चपल नयन पिया मीन (ज), चपल-नैन ह्वै मीन (ञ) ।
- २१४ कुदि परि—गिरि परि (ज), परि-परि (ञ) ।
- २१७ प्रेम-पगे सुनि वचन, आँच-सी लगी आइ जिय (ञ); लगी जिय—लगी तबहि हिय (ङ) ।
- २१८ नव-नीत मीत नवनीत-सदूस—नवनीत मीत सुन्दर मौहन (छ) (ज) (ञ) ।
- २२२ तन—नव (ख), है (छ) (ज), चित (झ) (ञ) ।
- २२६ पुनि—छवि (ञ); लुठति—गिरत (छ) (ज) ।
- २२७ गन—मन (ख) (छ) (ज) (ञ) ।
- २२८ घन—संग (क) (ङ) ।
- २३३ कुज, छवि पुंजन—कुज पुजनि छवि (च) ।
- २३६ उत—त (क) (ख) (ग) (घ) (ङ) (च) ।
- २३९ लपटै—पूटै (ञ) ।
- २४० गोद . . . दपटै—गोद भरि-भरि सुख लूटै (छ) (ज) (ञ) ।
- २४२ सुंघावत—सुधा बर (छ) (ज) (ञ) ।

- २४३ मृदु—मृदुल (ख) (घ) (च) (छ) (ज) ।
- २५३ पुनि—पुनि पुनि (क) (घ) (छ) (ज) (ञ); पीयहि—पीय
हीय (ग); पीयहि अलिगति—पियहि अलिगति (ज), पिय-
अवलोकति (ञ) ।
- २५८ भगवान—मोहन (ख) ।
- २६३ जो—जैसे (क) (ग), जौ (घ) (झ), ज्यौ (च), जे (ञ) ।
- २७० तबहि . . . त्यौ—ज्युं जात भयों त्यु (ग), ज्यौ जात भयौ यौ
(ङ), बहुरि फिरि जाय भयो त्यों (ज), बहुरि फिरि जाइ खोइ
त्यौ (ञ) ।
- २७६ किधौ—कै (ञ) ।
- २८१ कंदन—दन्दन (छ) (ज) (ञ) ।
- २८७ अहो पवन सुभ गवन देन सुख रह्यौ अचल अलि (घ), अहो पवन !
सुभ-गमन, सुगंध सँग थिर जु रही चलि (ञ) ।
- २९० तुग—उतंग (ख) (ग) (ज) (ठ) ।
- २९८ बताइ धौ—बताइ देहु (ख), बता देउ (ज), बतावहु (ञ) ।
- ३०० कहति तू—कहो सखी (ख) ।
- ३०२ तिहि—तिन (क) (च), ता (ग), वन (छ) (ज) (ञ) ।
- ३०५ न ही—न भल (च), इन ही कौ (ठ) ।
- ३०७ हरि की सी चलनि—पिय हरि की सी चलनि (ङ), हरि की सब
चलनि (छ) (ज), हरि की सी सब चलनि (ञ); हरि की सी
हेरनि—हरि की हेरनि (छ) (ज), बोलनि हेरनि (ञ),
- ३०८ वह—× (छ) (ज) (ञ) ।
- ३१६ कुलिस, कमल—कलस कमल (ख) (ङ); अति—धुज (ञ) ।
- ३१८ सिर—उर (क) (च) ।
- ३२४ लै . . . बेनी—सु हाथ लै गूथी बेनी (क), सु हथ गुही है बेनी
(ठ); जहँ पिय निज कर कुसुम सुसुम लै गूथी बेनी (छ) (ज) (ञ) ।

- ३२६ भरघौ—बस (ङ) (ञ) ।
- ३२७ कहौ—अहो (ख) (घ), कहु (छ) ।
- ३२८ तिन में तिन के हिय की जानत ऊन उत्तर दीनो (ख), तिन में कोऊ तिनके हित की जिनि उत्तर दीनौ (घ), तिन मधि हिय की जानि, कोऊ यह उत्तर दीन्हौ (ञ) ।
- ३४१ मानिनि-तन—मानो नौतन (ख) ।
- ३४८ ज्यौ, अति—तौ कछु (ग) (घ) (ञ) ।
- ३५६ निहारी—द्रटारी (ख), बिहारी (छ) (ज) (ञ) ।
- ३६० ये—यह (ख) ।
- ३६१ अस्त्र—शास्त्र (क) (ख) (च) ; हाँसी-फाँसी—हाँसी हाँसी (क) (ख) (च) (झ) (ठ) (ड) ।
- ३६२ मोल—मान (ङ) ।
- ३६३ बिष . . . अनल तै—बिष तै, जल तै, ब्याल-अनल तै (ञ) ।
- ३६५ जब . . . सुवन—जनु जसुधा सुत न (क) (च), जनु तुम जसोदा सुवन (ख) (ग), जसुदा सुत जनु तुम न (ज), जनु जसुधा तै प्रगट (ञ) ।
- ३६६ बिधि नै—बिबुध (ङ), बिधना (छ) (ज) (ञ), बिधिहि (ठ) ।
- ३६८ जौ—को (ख) (घ) (ङ) (छ) (ज) ; मरिहौ—मारिहौ (क), मारि (छ) (ज) (ञ) ; करिहौ—करहु (ञ) ।
- ३७४ खचै—खेचि (घ) (ङ) ।
- ३८३ जिहि यह प्रेम सुधाधर मोहन मुख देख्यो पिय (ज), जिन यह प्रेम-सुधाधर-तुम्हरो-मुख निरख्यौ पिय (ञ) ।
- ३८६ तौ—को (ख) ।
- ३९० कूर्प—कूप (ङ), कर्म (ड) ।
- ३९८ उभक्त—जागहि (क) (च), जगति (ञ), उजगहि (ठ) ।

- ४०३ चटपटी—करपट (ङ) ; कोउ चटपट सो भूपटि कोउ पुनि उर वर लपटी (ज), कोऊ चटपट भूपटि जाइ, उर-वर सौ लपटी (ञ) ।
- ४०५ गहि रही . . . पटकी—गहि रही करि पर पटकी (क) (च), गर पर कर पटकी (ग) ; गहि रही पियरे पटकी (घ) (ङ) ।
- ४०६ दामिनि दामिनि—दामिनि दामुन (ज), दामिनी दामन (ञ) ।
- ४०७ लपटी . . नवेली—लटकि मटकि रही नारि नवेली (छ) (ज) (ञ) ।
- ४११ कोऊ पीवत निज रूप नेन मै धरि धरि आवत (ङ), कोऊ पिय को रूप नैन भरि, उर धरि आवत (ज) , कोऊ पिय कौ रूप, नैन-मग उर-धरि ध्यावत (ञ) ।
- ४१६ एव—एक (च) (छ) (ज) (ञ) ।
- ४२२ इकहि . . . मूरति—एक ही बेर एम मूरति (ङ), एक बेर ही एक रूप ह्वै (ञ) ; सब कौ—×× (ञ) ।
- ४२५ कहूँ छिनक—कछूक छिन तहा (ख), तौऊ तहँ (ञ) ।
- ४३३ विन-भजते—अन-भजते (घ) (ङ) ।
- ४३६ तदपि—ते (ञ) ; विवस—विबल (ख), बस (ग), अग्र (क) (च) ।
- ४३८ यह—किन (ख) (छ) (ज) ।
- ४३९ प्रति-उपकार—हों उपगार (घ) ।
- ४४५ सबन रिस—क्रोध सब (छ) (ज) (ञ) ; रिस—गुसौ (क) (ख) (च), गस (ठ) ।
- ४४८ सबहि—सखे (ख) ।
- ४५१ तूल . . . अब—तूल कोउ भयौ न ह्वै अब (ग) , तूल कोउ भयौ न है अब (ठ) ।
- ४५५ मनि—पुनि (ख) (ग), मनु (ञ) ।

- ४६० प्रतिबिब चद्र जस—बहू प्रतिबिब बधू जस (ख), बहु प्रतिबिब बधू जस (छ) (ज), बहु प्रतिबिब होइ जस (ञ) ।
- ४६७ तार—ताल (ग) (छ) (ज) (ञ) ।
- ४६८ की—के (ञ) ।
- ४७३ छबिली—चपल (ञ) ।
- ४७७ तिरप—तिर्प (क) (च), निरपि (ख), चख (ङ); कोउ सखि .
 बाँधि—कोउ सखी उरप तिरप बाँधति (घ), कोऊ सखी उरप
 तिरप करि (ङ), कोउ सखी कर पकरत (ज), कोऊ सखि कर-
 पकर जु (ञ); छबिली—यो छबिली (ज), या छवि सौ (ञ) ।
- ४७८ मानो करतल फिरत देखि नट लटू होत पिय (छ) (ज) ।
- ४८० गावति . . . जस—अरु गावति पिय के जस (छ) (ज) (ञ) ।
- ४८१ तव—नव (क) (घ) (च) ।
- ४८२ बिलास—बिसाल (क) (च) ।
- ४८४ अवर . . . रहत—अवर तिहि वन रहत (ग), अंवर तिहि छन
 . बनत (छ) (ज) , जहँ के तहँ बनि रहत (ञ) ।
- ४८५ सुर-रली—सग जुरली (ख), सुर लीन (घ), रस बली (ज),
 सुर जुरली (ञ) ।
- ४८८ दै तँबोल—देत बोर (क) (च), देत बौल (ख), बोर देत (ङ) ।
- ४८९ नृत्य—रीत (ख) (छ) (ज) (ञ) ।
- ४९० निगम—गवन (ख), रमण (घ), गमन (छ) (ज), गान (ञ) ।
- ४९६ वह निर्तनि—वर निरतत (ग), मुरि निरतत (छ) (ज) (ञ),
 कापै . . . गति—कहि आवै कापै गति (च) ।
- ४९८ मँजुलता . . . बोलनि—ता ता थेई थेई बोलनि (ङ), मँजुल
 ता थेई बोलनि (छ) (ज) (ञ) ।
- ४९९ कोउ उत ते अति गावत सुर लय लेत तान नइ (ज), कोउ गावत
 सुर-लै-सौ लै करि तान नई नई (ञ) ।

- ५०१ जति-गति—जित गाति (ग), जाति पाति (ङ), निज गति (छ) (ज) ।
- ५०३ गंडनि सौ मिलि ललित गड मडल मंडित छवि (ङ) ।
- ५०६ रस—जस (घ) ।
- ५०७ सु सुदर—सु देसनि (ङ), सु देस जु (छ) (ज) (ञ) ।
- ५०९ कहूँ कहूँ—कछू कछू (ख), अति छवि (छ) (ज) (ञ) ।
- ५११ मधि—को (ख) (ग) (छ) (ज) (ञ) ।
- ५१३ उडत अरुन-अति बसन, सु-मंडल मंडित ऐसे (ञ) ।
- ५१७ कुसुम धूरि धूमरी कुज मधुकरन पुज जहां (ग) (छ) (ज) ।
- ५२२ छतियाँ—छाति (ज), छाती (ञ) ; अजहुँ—अज हूँ (ञ) ; जिहि के डर—जिन के डर (ग) (ज), धरि-धरि (ञ) ।
- ५२३ जु सुरत—सुस्तर (ख), सुरतै (ञ) ।
- ५२७ मिलत—चलत (घ) (ञ) ।
- ५२८ लिये—बर (घ), लटकि (ञ) ।
- ५३० मानौ सुदर गिरिबर ते सुरसुरी धार धसी धर (घ), मानौ सिंगार बहर तै सुदर धारा गगाधर (ङ), गिरि ते जिमि सुरसरी, गिरी द्वै धार धारि धर (छ) (ज) (ञ) ।
- ५३५ न जनी केतिक—न जनी कितीक (क), सजनी केतिक (ज) ।
- ५३७ सुख—नव (ङ) ।
- ५६१ भीजे बसननि तन लपटनि सोभित सोभा अस (घ), तन लपटनि बसननि अद्भुत सोभा सोभित सब (ङ), भीजि बसन तन-असन, निपट-छवि अंकित हूँ अस (ञ) ।
- ५६२ है—जस (घ) (ञ), तब (ङ) ।
- ५६३ रुचिर निचोलनि चुवत नीर दिखि भये अधीर मनु (घ), रुचि रुचि अंबर चुवत नीर बसि परत भयो मनु (ङ) ।

- ५६८ जग मै जे सोहनी तिनकी मोहनी ब्रज बहू (घ), जगत-मौहिनी
जिती तिती ब्रज-तिय मौहनि सब (ज) ।
५७२ मानी—जानी (छ) (ज) (ञ) ।
५८२ सो तनकहु नहि—सो न नेक हू (ङ) ।

सिद्धांत पंचाध्यायी

- ४ प्रभु की—प्रभुक (क) (ख), प्रभुहि (ग) ।
१३ पट . . . धरन—निर्गुन अर अवतार धर्म (घ) ।
१७ कहै—कहै (क), कहे (ग) ; रहै—रहै (क), रहे (ग) ।
१८ अपन निज—आप निज (घ) ।
१९ मोहिनी . . . मोहे—मोहनी मोह रूप धरि मोह्यौ (घ) ।
२२ गिरि तै गिरि—गिरि तौ (घ) ; मूरि—पूरि (घ) ।
२४ करचौ—कियौ (ग) (घ) ।
२६ निरतास—निर्तास (ख), निर्जास (घ) ।
२८ रखवारौ—रस रीति (घ) ।
३० तिन मै—तिन तन (घ) ।
३४ कीटात—की जंत (ग), कीटादि (घ) ; सर्वातरजामी—सब
अन्तर जामी (ग) (घ) ।
३६ करुना . . . नदन—करुनानिधान प्रगट नंदनंदन (घ) ।
४० स्मृति—गन (ख) (घ) ।
४२ सब . . . भ्राजै—सब रजनी भ्राजै (घ) ।
५५ इक पैहिलैई गमन मन सुन्दरि धन मूरति हरि (क), इक पहली
जू मग्न मनहि सुदर धन मूरति हरि (घ) ।
६१ ये—इह (ख) (घ) ।
६३ बाढ़त—बाढ़ै (ख) (ग) ।

- ६४ छाँडत—छाड़ै (ख), छाँटे (ग) ।
 ६६ जब—सब (क) (ख) (ग) ।
 ७० तब—सब (क) (ख) (ग) ।
 ७५ यहै . . . गायौ—मिलै यै पंडित गुन गायौ (क), मिलै इह जु पंडित गण गायौ (ख) ।
 ८३ बाछै—छिछै (क), छाहे (ख), मिछै (ग) ।
 ८८ छन छन—ता छिन (घ) ; छवि—बृद्धि (क) ।
 ९९ अनाकृष्ट—अनाकृष्ण (क) ।
 १०५ सुदर—तुम (क), अत (ग) ।
 १०८ समल—समझ (क), समझि (ग) ।
 १११ रति . . . आवै—रहि सोई आवै (क), रहि होइ आवै (ख), रति सेबन आवै (ग) ।
 १२२ यह—यै (क) (ग), ये (ख) ।
 १२८ सौभग—सौभाग (क) ।
 १३६ कोट—कछू (घ) ।
 १४२ प्रयाल—प्रबाल (घ) ।
 १५० कै—किधों (ख), किन (ग) ।
 १५३ बलित—चरित (घ) ।
 १५८ इह—ए (ग) ।
 १५९ ताते जगत गोपी पुनि पुनि शुक मुनि गावै (ख) ।
 १७९ ताते नि मै तनक दुरे पुनि दुरयो न भावे (घ) ।
 १८३ मग—मधु (क) (ख) (ग) ।
 १८८ किन—जनु (घ) ; चंद तै—चंदहि ते (ग) ।
 १९२ लाल—बाल (क) (ग) ।
 २०८ सक्ति अनेक—अनेक शक्ति (ख) ।
 २१३ करि—कर (ग) ।

२२६ बहुरि का . . . ते—बहुरि का बहु कानन ते (ग), फिरि बहुरि कहा करते ते (घ) ।

दशम स्कंध

प्रथम अध्याय

- १ जो—ज्यो (क) (ख) (ग) ।
 ४ कही—कहि (क) (ख), कह्यौ (ग) ।
 १२ हौ को—को हे (क) ।
 २५ कार्ज—कारन (ङ) ।
 २६ कवि जान—जंजान (क) (ग) ।
 २७ भक्त—भक्ति (क) (ख) ।
 ३० नृपन—तपनि (क) ; सो ईसान . . . जथा—सोई सात कथा हे जथा (क) ।
 ३४ सो आश्रय हि दशम स्कंध, प्रगटित मोचन लोचन अंध (ख) ।
 ४३ ईस्वरता . . . ताके—सो ईस्वरता फुरे न ताके (क) ।
 ५१ परीच्छत लह्यौ—परीक्षक लह्यो (क) ।
 ७५ हमरे . . . देव—हमरे तो हे हरि कुल देव (ख) ।
 ११६ इहि . . . कही—इहि बिधि बिबिध बुधन सों कही (क) ।
 १२२ इस के स्थान पर 'ख' ने ये पंक्तियाँ दी हैं—
 सम्यक शास्त्र दिष्ट जे लहे, आतम द्वे प्रकार ते कहे ।
 एक जीव एक भक्त आतमा, जों नित पाइ पलोदत रमा ।
 १३० सब . . . गुन भरी—सर्व देव मय सब गुन भरी (ख) ।
 १३१ दुति—छवि (ख) (ग) ।
 १३७ किंक्यान—केकान (क) ।

१४६ बिमन—बिमल (क) ।

१४६ अमै—अने (क) ।

द्वितीय अध्याय

१-२ अब दुतिये अध्याय सुनि, जहा ब्रह्मादि के बेन ।

करि स्तुति महा गर्भ की, जहा भक्ति बैभव कौ अैन ॥ (क) ।

७ अरगाने—उरगाने (क) (ङ) ।

१४ महिम—महिमा (क) ।

४० तेजरासि—ते राजसि (क) ; राजति . . . बैसी—महा निधूम
अग्नि होइ जैसी (ख) ।

५५ क्रीटनु के जु—क्रीटनि जु अग्र (ख), क्रीडनि केतु (ग) ।

६६ जौ . . . उवाइ—जो दिन दिनमनि दिन न उवाई (ग) ।

६७ करि—ही (क) (ग) ।

६६ नाउ—नाम (ग) ; पार—मार (ग) ।

८० तुम्हरे—सुदर (ख) ।

तृतीय अध्याय

१-३ अब सुनि मित्र तृतीय अध्याय,, प्रगट हे हरि पूरण भाय ।

तात मात सौ बात वनाय, वर्ष हे सुष ब्रज मे आय । (ख)

५ इस के बाद 'ख' ने यह पंक्ति दी है—

जो ग्रह मित्र न ताके रहे, जगत मध्य तब काके कहे ।

२३ इस के पश्चात् 'ख' ने यह पंक्ति दी है—

बड्डे लोयन अस कछु लोने, पाछे भए न आगे होने ।

४५ कीनी . . . बनाइ—देवकी बोली अति सुख पाइ (क), कीनी
थोरी स्तुति बनाई (ख) ।

५३ भागि-जोग—भक्ति जोग (ख) ।

५६ जानै—जानौ (क) ।

६० जथा . . . तितौ—जथा बकासुर हत है तितौ (क) ।

६७ लै लटि—लै सुत (ग) ।

४-७७ इन पंक्तियों के स्थान पर 'ख' में केवल दो पंक्तियाँ हैं—

आनंद भलि अंबुद धिरि आए, फुई फूल वरषते सुहाए ।

ते सहि सक्यो न सेवक सेस, करि लियो फननि को छत्र सुदेस ।

७८ जल—सब (क), छवि (ग) ।

चतुर्थ अध्याय

२ चंडिका—चडिबे (घ) । इस दोहे के स्थान पर 'ख' ने ये पंक्तियाँ दी हैं—

अब चतुर्थ अध्याय सुनि मित्र, जामे चडी बचन विचित्रि ।

सुनि के कस महा डर डरिहै, उठि कै प्रात बात बिस्तरिहै ।

७ उखटत—अखुटत (क), अपुरत (ख) ।

८ छविमई—सुभ मई (क) ।

१२ नीचन . . सुभाउ—नीचनि के केसो हृदभाव (क), नीचनि के कासो हृदभाव (ख) ।

१७ इस के स्थान पर 'ख' ने ये पंक्तियाँ दी हैं—

रे रे मंद कछू न विचारत, हम सी कृपननि कत कहू मारत ।

उपजो है तुव मारन हारो, अरे निष्ट जिन करि जिय गारो ।

२५ सौनक—सूनक (क) ।

२६ जिनि . . अनुराग—सोच न करो सिसुन के राग (ख) ।

३१ इस के पश्चात् 'ख' ने यह अतिरिक्त सोरठा दिया है—

बुरो करे जो कोइ, साध न तऊ मानें बुरो ।

खरो उजरो हो , छार लगायें मुकुर जिम ॥

३२ परी संस—परी बस (घ) ।

३५ ताहि—काहि (क) ।

३८ बलान करै—कबहु न करै (ग) ।

५२ ज्यौं—जो (क) (ख) ।

पंचम अध्याय

२ इस दोहे के स्थान में 'ख' ने यह चौपाई दी है—

अब सुनि लै पंचम अध्याय, सब प्रपंच बंचत ह्वै जाय ।

५ यौ...पेखि—पूत उदय ज्यौ पेनिधि पेखि (क) ।

७ स्वच्छ...अन्हवाये—आपुन सुचि सुगंध जल न्हाए (क) ।

११ बड़डी—बडबडी (ख) ।

१२ बहुरो तेल अरु मुक्ता मिलाय, कीने सप्त शयल बनाय (ख) ।

१३ इस के पश्चात् 'ख' ने यह चौपाई दी है—

जाचक जन परिपूरन भये, दारिद हू के दारिद गये ।

१७ इत मागध—इक मागध (क) ।

२० चले महरि-घर—चले सु बनि बनि (क) ।

२४ मुदित वचन चली भातिन भली, फूली जनु नव कंजन कली (ख) ।

इस पंक्ति के बाद 'ख' ने यह अतिरिक्त पंक्ति दी है—ता पाछे

भोपागन चली, आनंद रली सु लागत भली ।

२७-२८ अंजन जुत लोचन छवि बढ़े, खंजन जनु कुमुदनि पर चढ़े ।

चंचल गति उपजत रसमूल, खसत जु लसत सिरन ते फूल । (ख) ।

३५ चूमे...पाइ—भुमेसकनि सासु के पाइ (क), चूबे सबनि सासु के पाइ (घ) ।

३६-४० इन के स्थान पर 'ख' ने ये पंक्तियाँ दी हैं—

नाचत ग्वाल अनंदनि बोरे, हरद दही माखन तन खोरे ।

अंवर वारत कंवर वारत, बहु धन डारत कछ न विचारत ।

कही न परत अति मंगल भीर, निकसि न जाइ फटत तन चीर ।

इत ए राग रागिनी गावत, नृत्तत नटी जटी छवि पावत ।
 इत मागध बंदी जन रहै, इत ए सूत पुराननि पढ़ै ।
 तेसेई सुरवर वरषति फूलनि, डारत दिव्य दुकूल अमूलनि ।
 उपर्युक्त पद्याश के बाद 'ख' ने पंक्ति ४४, ४५ देकर इस प्रकार
 पाठ रक्खा है—

ता दिन ब्रज छवि कहे वने न, सबनि के ह्वै गए कंचन अने ।
 पंक्ति ४१, ४२, तथा ४३
 तिन पर चपल पताका चमकै, विनु घन जनु कि दामिनी दमकै ।
 जितिक ब्रज वछ वाछि गाई, कचन माल सबनि पहिराई ।
 पंक्ति ५२

जदपि नित्य किशोर ब्रज, राजत अंवुज नेन ।
 प्रगट भये पुनि नंद घर, सबै वयस सुष देन ॥
 पंक्ति ५४, ५६

सोवत रैन नद अकुलाई, उठि के प्रात पूत ढिग जाई ।
 बदन उधारे छबिहि निहारै, बार बार आपुनपौ वारै ।
 पंक्ति ५५, ५३

जसुमति के सुष की को कहे, वार ही वार वदन छवि चहे ।
 दुतिया तिथि भई देवकी, विधु दिषियै जिमि नंद ।
 पून्यौ सी जसुमति लसी, पूरन जहा ब्रजचंद ॥
 श्री नंदजू के प्रेम की उपमा कहत है—

रंक महानिधि पाइ, ज्यौ रहै छतीपर लाय ।
 तैसें नंद महर अहिर, सुंदर सुत को पाय ॥
 ज्यौ मणि उजियारे मणी, विहरत करत अनंद ।
 त्यौ सुत सुष कंदहि निरषि, विचरत ब्रज में चंद ॥

पंक्ति ५७ (इस के बाद 'ख' का पाठ मूल पाठ से मिलता जुलता है ।)

६४ अस—सब (क) (ख) ।

६७ सौ—मे (क) ।

६९ मिलहि जे—मिलहिगे (क)

८६-९० 'ख' ने इन का पाठ इस प्रकार दिया है—

कहत कि हो हरि सरन तुम्हारी, वा सिसु की कीजो रषवारी ।

नद कृपन धन लों सचौ, यह पंचम अध्याय ।

जहा धरे तहा नेन मन, प्रान रहे सब जाय ॥

मगल गोकुल नंद के, नंद जथा मति पाय ।

बरन्यो नित मगल करन, इम पंचम अध्याय ॥

षष्ठ अध्याय

२ इस दोहे के स्थान पर 'ख' ने यह पंक्ति दी है—अब सुनि छठी
अध्याय विचित्र, जामे बकी चरित्र पवित्र ।

१६ तब—सु (ख) ।

१७ डुरावति—दुरावति (ख) (घ) ।

१८ गोप जोहे—गोप सबै इहि विधि करि (ख) ।

३४ है—ही (क) ।

३७ इकलौ—अकिलौ (क) ; ताके—ताते (ग) ।

३८ मंद छबि-कंद—मंद ही मद (ख) ।

४१ जनु कि—जननि (ग) (ङ) ।

४३ कलमल्यौ, हलमल्यौ—हलहल्यौ षलभल्यौ (ख) ।

४९ त्रासहि—विस्मय (ख) ।

५५ सुदर बाल—मोहन लाल (ख) ।

६२ रच्छा डरि कै—रक्षा करी ब्रजति अरि डरि के
(क) ; गोपी सबै नेह रस भीनी, द्वादश नामनि रक्षा
कीनी (ख) ।

६३ प्यायौ—पायो (क) ।

सप्तम अध्याय

- २ अब सप्तम अध्याय सुनि मित्र, जामे अद्भुत वाल चरित्र (ख) ।
- ३ इसके स्थान पर 'ख' ने दो पंक्तियाँ दी है—
सकट विकट उच्चाटन करिहै, तृणावर्त अघ डारिन दरिहै ।
सुनि कै यह पूतना चरित्र वाल भाव रस सिधु पवित्र ।
- ४ काजा—साजा (ग) ; मगन भयो नृप गदगद गरे, पुन शुक मुनि
सों विनती करै (ख) ।
- १४ चावल—चावरी (ख), चवीर (ग) ।
- १६ जब—तब (क) ; तब—कछु (क) ।
- २१ अभिचार—अविचार (ग) ।
- २३ तनक चरन ऊँचे उचकाई, उड गयो उड़नि मे दयो रराई (ख) ।
- ३० कूट—कूल (ङ) ।
- ३७ तब . . . धरघौ—तब घरनी धरनी पर धरघो (ख) ।
- ४२ कित—किन (ख) ।
- ५० डरपि घुरि—डरघो लपटि (ख) ।
- ७२ इस के स्थान पर 'ख' ने ये पंक्तियाँ दी है—
माया किधों किधो यह सपनों, किधों बुद्धि भ्रम है यह अपनो ।
बहुरि कहत यह सपना न होइ, नहि माया नहि छाया कोइ ।
- ७३ इस के बाद 'ख' ने यह पक्ति दी है—
विश्वहि करे हरे संहरे, ऊर्न नाभ लो पुनि विस्तरे ।

अष्टम अध्याय

- ११ इस के बाद 'ख' ने यह पक्ति दी है—
अपनो कछु प्रयोजन आहि, श्री ब्रजराज कहति है ताहि ।
- २५ अद्भुत . . . धाम—पूरनकाम सकल गूणधाम (ख) ।
- ३० बहुत कहा कहियै हो नद, दै है तुम को परमानंद (ख) ।

३६ डोलनि—डोलत (क) ।

३७ को हे—को है (ग) ।

४० नाक—नाथ (ख) ।

४३ चकि रहै—बहु भूलनि (ख) ; पकरचौ चहै . . . लहै—सुष
दिष दिष मैयनि की फूलनि (ख), फबि रहे हार कनक छवि लहे
(घ) ।

५० ब्रजवधू आवति ललहि षिलावति, अंगुरी गहाइ के पगनि चलावति
(ख) । इस पंक्ति के बाद निम्नांकित चौपाई देकर 'ख' ने पंक्ति
५२ दी है—

कवहू नचावति अति गति नई, दोधक दोधक धोदक थेई ।

५७ अरग अरग आवहि दुरि जाहि, दूध दह्यो माषन लै खाहि (ख) ।

६१ खोरि—पोरि (ख) ।

६२-६७ 'ख' ने इन पंक्तियों का पाठ इस प्रकार दिया है—

ओर सुनहु लरिकनि की बात, कित सीषो चोरी की घाते ।
किकिनी पट में लेइ छिपाइ, दुक्त दुक्त घर भीतर जाइ ।
दह्यो मह्यो माषन जो पावै, आपन पाइ लरिकनिहि षवावै ।
चोरी को दध हित सो षाइ, जौ हम देहि तौ देइ बगाइ ।
जसुमति सुदर सुत तन चहै, हसि हसि गोप वधुनि सों कहै ।

६६ मसिहि—मखिहि (क), मखनि (घ), मिषिहि (ङ) ।

६९ ही—हूँ (क) ।

७६ मुख . . . भरि—मुख के (क) ।

७७ जनु—मनो (ख) ।

८० जिनहि क्रिया—जिनहु कृपा (क) ।

८६ दुक्त दुक्त—अरग अरग (ख) ।

८९ अवर लरिक—अरु बालक (ख) ।

९२ चूमति . . . बानी—इतनी जन्म सुफलता मानी (ख) (ग) ।

६३ इस के बाद 'ख' ने दो अतिरिक्त पक्तियाँ दी हैं—

अरे पूत पूतना निपातनि, तो सों इक कहि सकत न बातनि ।

रहत जु निपट धूरि मे सन्यो, पूरब जनम सूकर में मन्यो ।

१०३ हित . . . मात—आन्यौ पकरि आपनौ तात (क), हित सो पिजी
जसोमति मात (ख) ।

१०५ अनियाई—अनुपाई (ख) ।

१०६ यह . . . मेरौ—यह न भूठ बोलै बलि मेरौ (ख) ।

१११ कहति तौ इतै लाइ धौ, देशौ रदन बदन बाइ धौ (ख) ।

११२-१२० 'ख' ने इन पक्तियों का पाठ इस प्रकार दिया है—

जगत मथन मधु मथन मुरारि, डारि कै दीनो बदन पसारि ।

जसुमति जहा चितै चकि रही, थिर चर डवर अवर मही ।

पावक पवन चंद रवि तारक, सत रज तम गुन तिन के धारक ।

ज्योति चक्र जल तेज अनत, इन्द्रियगन मन मूरतिवन्त ।

शब्द स्पर्श रूप रस गंध, काल स्वभाव कर्म जिय बंधु ।

जीव बुद्धि ऋगु लिग शरीर, महदादिक तत्त्वनि की भीर ।

पुनि तहा ब्रज अपनपे समेति, साट लियो सिंसु कहु सिषि देति ।

चाहि चकित भई सब सुधि गई, कहति कि कहा आहि यह दर्ई ।

सुपन किधो हरि देव की माया, मो मति भ्रमी किधों कछु छाया ।

११३ सरित—सहित (क) ।

११६ तब—जब (क) ।

१२४ इसके बाद 'ख' ने ये दो पक्तियाँ दी हैं—

जाकी माया करि सब नचे, दरप अहं ममता मद मचे ।

असी कुमति परी पग बेरी, सो श्री कृष्ण होहु गति मेरी ।

१२६ इस के बाद 'ग' ने ये पक्तियाँ दी हैं—

कहत कि हम ईश्वर जाँनवै, सुलभ है श्रुति मग पहिचाँवै ।

अँ परि हम सुत करि पाइवै, अति दुरभल हसि हियै लाइवै ।

१३५ इसके पश्चात् 'ख' ने यह पंक्ति दी है—

वसुदेव वरन्यो निगम सरूप, विद्या ब्रह्म देवकी रूप ।

१३७ राख्यौ—माख्यौ (ग) ।

१२२-१३८ इन के स्थान पर 'क' ने निम्नलिखित पंक्तियाँ दी हैं—

तौ दर्पन मुख दिखियत जेसैं, त्वेहे कछु इहा यह भ्रम असे ।

सो पुनि बने न यों मन गुन्यो, प्रतिबिब मे बिब नहि सुन्यौ ।

हे यह मो सुत को परिभाव, और न कछू भाव अनुभाव ।

बहुरचौ हरै हरे पहिचाने, अपनौ सुत परमेसुर जानै ।

बहुरि सनेहमई रसमई, माया जननि उपर फिरि गई ।

'घ' तथा 'ङ' ने भी साधारण पाठांतरों के साथ इसी प्रकार का पाठ दिया है ।

१३९-१४२ बाल चरित मधुधार, ताके पीवनहार जे ।

मुक्ति जु चारि प्रकार, छुवै न पारे बारि जिमि ।

इहि अष्टम अध्याइ रस, नंद पिवहि जो कोइ ।

मात पयोधर रसहि पुनि, नेकु पिवै न सोइ ॥ (ख)

नवम अध्याय

११ बिपुल नितंब ललित गति मलकनि, नगनि जरी कबरी की ढरकनि
(ख) ।

१२ नेत—नेत्र (क), नेन (ङ) ।

१३ आनन . . . बनी—श्रम बन कन सु बदन पर परी (ख), आनन
पर श्रम बन कन बनी (घ) (ङ) ; अस—अति (ग) ।

१४ आपनौ—आपने (ख) (घ) । इस के बाद 'ख' ने यह पंक्ति दी
है—रज की राजनि भुजनि की भ्राजनि, कंकन किकिनी की कल
बाजनि (ख) ।

१७ मीड़त—मीजत (क) (ङ) ।

१८ नेत . . . बड़ाइ—गही मधुमथन मथानी आइ (क) ।

४० बिललाही—बिलखाही (ग) ।

४२ सु—सोउ (क) ।

४८ नोई—डोरी (ख) ।

५१ उहै . . . आई—सोई जब पूरन नहि भई (क) (ङ) ।

५४ बस्तु—बसन (क) ।

५७ अवसि—अव (क) ।

५८ आवै—पावे (क) ।

६० अस—अवसि (ख) (ग) ।

६१ रसना . . . नई—वत्सल रस रसनादिक नई (ख) ।

६२ इस के बाद 'ख' ने यह दोहा दिया है—

ज्ञान अगम निगमहि अगम, निपट अगम जम नेम ।

सब विधि दुरगम ब्रजेस सुत, सुगम एक ही प्रेम ॥

६४-६५

जदपि विधि शिव सब ही आत्मा, अवरु वहै घर घरनी रमा ।

तिनहू कवहूँ नाहिन चह्यो, जु सुष नंद की ललना लह्यो ।

(ख) ।

६७ कहँ सुखद है—कहू सुख लहे (क), कह सुखदै (ग) ।

७० गत—गति (ख) ; माया—माइक (क) ।

७५ छीजत इम देषहु तजि मौन, मृदुल मुकुर पर जिमि मुष पौन (ख) ।

७८ आपे—सपे (क), सापे (घ), साप (ङ) ; जु—सु (ग) ।

८१ 'ख' ने इस अध्याय के अंत का दूसरा दोहा पहले दिया है तथा

पहले के स्थान पर यह दोहा दिया है—

नंद नवम अध्याय को, उर धरि राषो षेलु ।

सहजहि उत्तम होइहै, ज्यों तिल तेल फुलेल ॥

दशम अध्याय

- १ सुत . . . पाइ—पूछे सुक जु परीछत राइ (क) ।
- २-३ 'क' ने दूसरी पंक्ति छोड़ दी है और तीसरी का पाठ यों दिया है—हो प्रभु परम भागवत नारद, जाकौ परस सहज भव पारद ।
- ४ जिनहि—मुनि मन (ख) ।
- १३ निर्दय महा बिरथ—निर्दई महा अव्रत (ख) ।
- १५ कौ—करि (क) ; समै—सबै (क) ।
- २० हौइ—द्रोह (ख) (ग) ।
- २२ निर्बल—दुर्बल (ख) (ग) ।
- २६ तुम—पुनि (ग) ।
- ३६-३६ इन के स्थान पर 'ख' में केवल यह पंक्ति दी है—
अहो हो कृष्ण अमित अनुभाव, नहि कहि परत अचित्य प्रभाव ।
- ४२ तुम ही काल विसाल सु वसुकर, विष्णु व्यापी तुम अव्यय ईसुर (ख) ।
- ४३ तुमही प्रकृति सकति सब तुमही, सत रज तम जे लै लै उमही (क) (घ) ।
- ४५ घट . . . सब ही—तौ घट पट ज्ञान विषै सब ही (क) ; घट—तौ धर (ग) ।
- ४५-५१ इन का पाठ 'ख' में इस प्रकार है—
जो कहोहु कि असें हम सब ही, घट पट ज्ञान भये ते तब ही ।
हमरो ज्ञान सबनि किन बनै, तहा कहत कुबेर के तनै ।
प्रभु तुम ग्राम वस्तु ते परे, इंद्रिय वाद डरें अरवरें ।
जैसे चषि फल रूप ही गहै, फल के रसहि नाहिने लहै ।
निज महिमा मधि छपि रहे असे, अअर मे रवि दवि रहत है जैसे ।
तैसे तुम अग्राह्य स्वच्छंद, ताते नमो नमो ब्रजचंद ।

- नारद परम अनुग्रह करचौ, पायो दुलभ दरस रस भरचो ।
 बोले नलकूवर मणिग्रीव, अंजुलि जोरि नमित करि ग्रीव ।
 ५३ वाणी तुव गुन कथन मे रहो, श्रवन कथा रस मे निरवहौ (क) ।
 ५४-५५ इन के स्थान पर 'क' मे यह पंक्ति है—
 चरन कमल रस बस मन भौर, सपने हूं जिन सूझै और ।
 ५६ प्रीतम—प्रिय तुम (ग) ; हमारौ—हमारे (ख) ।
 ६३ डर—जग (ख) ।
 ६४ पुनि . . . पाइ—चले नाथ को माथ नवाइ (ख) ।
 ६७ नभ . . चले—गवने रगमगे (ख) ।
 ७१ कथित यह—यह कथा (ग) ।

एकादश अध्याय

- १-२ अब सुनि एकादश अध्याय, जामे श्री वृंदावन आय ।
 अवर जु अद्भुत अद्भुत केलि, भक्तनि परम अमी रस बेलि (ख) ।
 ४ अति—तहा (ख) (ग) ।
 ५ इस के बाद 'ख' ने यह पंक्ति दी है—
 वडे अकाय दोऊ रूपरे, धरनि ते जरनि सहित ऊपरे ।
 १८ सहज—सबै (ग) ; नाचि—नाच (ख) (ग) ।
 २१ कवहुँक बहुरि—कबहुँ कहू (क) ; कहै—करे (क) ।
 २२ गुहि दै—गुहियै (क) ।
 २४ कोउ . . . वे—अहो कान्ह वे (ख) ; मोहि—नेकु (ख) ।
 २५ ब्रज तिय—निज ब्रज (क) (ग) ।
 २६ सिव कौ सर्वस—सिसु सर्वस सब (क) ।
 ५१ कहन लग्यो हित की सब वात, अब लौ परी आहि कुसरात (ख) ।
 इसे तथा पंक्ति ५० को 'ख' ने पंक्ति ४६ के पहले दिया है ।
 ५६ करे—करै (ग) ; भुवि—गिरि (ग) ।

६१ गाइ-बछ्छ—गाइ की (क) ।

६२ सुठे—गुठे (ख) ; इसे तथा पंक्ति ६३ को 'क' 'घ' तथा 'ङ' ने छोड़ दिया है और यह पंक्ति दी है—

सुनतहि सब आनंद हिलोरे, अपने सकट तुरत ही जोरे ।

६६-७२

वाल चरित लालनु के गावति, राग भरी सब राग रिभावति ।
रोहनी सहित नंद की घरनी, बैठी सकट परत नहि बरनी ।
रमा उमा सी दासी जाकी, सुरपति रवनी कवन वराकी ।
ललित ललाहि गोद मे किये, चद जननी जनु चदहि लिये ।
(ख) ।

७० सीतल कंठ—रूप अनूप (ग) ।

८१ पिक—कपि (क) ।

८१-८२ इन के स्थान पर 'ख' ने ये पंक्तियाँ दी हैं—

औरे भवर मधुर रव राजै, परम प्रवीन बीन जनु वाजै ।
जहा तहा नृतत मत्त जु मोर, रीभे हरि लषि उनकी वोर ।
बोलत पिक कल कट सुहाये, जनु मधु वधु मिलि मगल गाये ।

८२ निकसी . . . गोभा—देखत मन अति उपजति लोभा (घ) ।

८७ सब रस—रस मे (ख) ; जगमगे—जगमगै (ख) ।

१०१ इस के बाद 'ख' ने यह दोहा दिया है—

कलई के से अंभ जिम, दभ करो जिन कोइ ।

दिन दश की रस की चसक, अति ही विगूचन होइ ॥

१०७ गिरि . . . जैसौ—वज्र हत्यो गिरि शृंग है जैसो (ख) (ग) ।

११५-११८ इन के स्थान पर 'ख' ने तीन पंक्तियाँ दी हैं—

अैसे कहि वक उगलन लग्यौ, तिहि छिन अद्भुत कौतुक जग्यौ ।

मुष ते निकसत मधुर मुरारि, पकरि कै चोंच फारि दियो डारि ।

कट को करन हार नर जैसे, डारत फारि पटेरहि जैसे ।

२० घिरि—घुरि (क) ।

द्वादश स्कंध

२-४

गिलि जैहै बछ बालक कोटि, हरिहे हरि ताकौ गल घोटि ।
इक दिन पुनि आनी हरि मन में, करिहै काल्ह कलेऊ वन मे ।
प्रात काल उठि मोहन लाल, वेनु वजाइ बुलाए ग्लाव (ख) ।

७ कनक . . . नीके—काधन धरि लए लागति नीके (क) ।

८ इस के बाद 'ख' ने ये अतिरिक्त पक्तियाँ दी हैं—

उज्जल उज्जल बछ सुहाए, मृदुल फटक के मनो बनाए ।
जिनके तन मे बालक जिते, निज प्रतिबिंब विलोकत तिते ।

९ नद . . . चले—वेनु वजावत गावत चले (ख) ।

१० नग . . . नाइक—जैसे नगनि के मधि मधि नाइक (ख) ।

११ इत—तहाँ (ग) ।

१५-२८ 'ख' ने इन का पाठ इस प्रकार दिया है—

कैइक ग्वाल ताल ढिग जाइ, आवत बैठे वगन खिजाइ ।
पंक्ति १६ [कैइ मिलि—कैइ शिसु ; कुहुकावत—पिजावत] ।
केइ मिलि कल कोकिल कुहुकावत, केइ खगनि छाया गहि धावत ।
पुनि पुनि तिनको चोप दिवावति, हसति हसति बहुरचौ फिरि आवति ।
पंक्ति १८

कहूं दिषि नृत्त मोर किशोर, तैसे ही नृत्त ए चित चोर ।
पंक्ति २२, २१

छवि पुजा गुजा अति सोहे, ललित लालरी दुति तहाँ को है ।
तिनके रुचिर हार गुहि लावै, आनि नंद लालहि पहिरावै ।

पंक्ति २४, २५

इहि विधि बिहरत भरि अनुराग, श्री सुक वरनत तिनको भाग ।
इहि सुप पंडित नहि अनुसरे, रहत है जदपि ब्रह्म सुप ररे ।

- सेवक पुनि यह सुष नहि लहै, ईश्वर जानि डरत नित रहै ।
- २९ संबंधी जिते—जु बंधु जन आहि (ख), संबंधी जन जे (घ) (ङ) ; समभक्त तिते—मानति ताहि (ख), समभक्त जे (घ), समभक्त ते (ङ) ।
- ३० देत . . . ठौर—विहरत वन माही गर वाही (ख) ; नहि और —कोउ नाही (ख) ।
- ३१ जाके . . . कै—दुष भरि चपल चित्त कहु धरे (ख) ; दुख भरि के—तप करे (ख) ।
- ३२ ता करि जा प्रभु की पद धूरि, दूढत फिरत तदपि हू दूरि (ख) ।
- ३३-३४ 'ख' ने इन के स्थान पर ये पंक्तियाँ दी है—
 सो हरि जिन के नेननि आगै, निसि दिन रहत प्रेम रस पागै ।
 तिन लोगन की भाग वडाई, कहा कहिये कछु बरनी न जाई ।
 तिहि छिन अघ आयो तकतक्यौ, बाल केलि सुष देषि न सक्यौ ।
 'ग' ने पक्ति ३३ के बाद उपर्युक्त पहली दो पंक्तियाँ दी हैं, तीसरी छोड़ दी है ।
- ४५-४६ सो अघ अजगर वपु धर नीच, परचौ आनि मारग कै बीच ।
 इक जोजन विस्तरि मुष बाइ, रह्यो असन आसा लव लाइ ।
 (ख) ।
- ५१ शृंग जु बने मनहु अहि दत, निविर तिमिर सु बदन कौ अंत ।
 (क) ।
- ५२ तामे वह मारग की लीह, लपकति जनु अजगर की जीह (ख) ।
- ५७ केवल—सति ही (क) ।
- ६० नद सुवन असे कछु करिहै, वक लौ यहौ नीच कोऊ मरिहै (क) ।
- ६१ सुदर . . . भरे—नाहिन डरे अतिशय मुद भरे (ख) (ग) ।
- ६६ अब ह्यां बने कवन विधि किये, अजगर मरे बाल-वच्छ जिये (ख) ।

८० इस के स्थान पर 'ख' ने दो पक्तियाँ दी हैं—

मुनि हरष स्तुति रस जगमगे, गधर्वो गुन गावन लगे ।

निर्त्तत अपछरा को छवि गनो, लटकति फिरति दामिनी मनो ।

८१-८४ कोलाहल मुनि के सुर ओक ते, अज आए जु अपने लोक ते ।

नंद नदन महिमा अवलोकि, विस्मय करि हिय लीनों रोकि ।

अजगर चरम करम शुभ भरयो, सूक्यो बृंदावन मे परयो ।

ब्रज के जिते ग्वाल वछ बाल, षेलत रहे तहा बहु काल ।

८४ गह्वर—हकरत (क) ।

८६ सो पौगंड वयस कौ पाइ, कह्यौ तिन लरकनि ब्रज आइ (ख) ।

८६-९४ 'ख' ने इन के स्थान पर ये पंक्तियाँ ही दी हैं—

अरु यह जोति परम दुति सानी, हम देखी इन माभ समानी ।

अहो मित्र कछू चित्र न आहि, श्री हरि की महिमा तन चाहि ।

मनो मई मूरति जौ करै, रचक आनि हिय मे धरे ।

९२ सुनि... रह्यौ—किन हूं गह्यौ किन हू नहि गह्यौ (ग) ।

९३ चित्र—चित्त (ग), चित (ङ) ।

९६ इस के बाद 'ख' ने यह पक्ति दी है—

अचरज नयो जु श्री शुक गावै, हरि सारूप्य अघासुर पावै ।

९७ हरि—कै (ग) ; सूत कहत द्विज सो रस ढरयो, राजा सुनि अति

अचरज भर्यौ (ख) ।

९९-१०० यह कौमार वयस को करम, कीनो कमल नयन निज धरम ।

पुनि पौगंड वयस मे आइ, कह्यो लरिकनि यह वन को भाइ (ख) ।

१०५-१०७ इन के स्थान पर 'ख' ने दो पक्तियाँ दी हैं—

अैसे जब पूछे मुनि सत्तम, परम भागवत उत्तम उत्तम ।

सुमिरि हरि चरित रस रगमगे, हिय डगमगे दृगनि जगमगे ।

१०९ नंद... भरि—नंद नेह भरि हेत करि (ग) ।

११२ ज्यौ—लौ (ग) ।

त्रयोदश अध्याय

- ४ हौ—हौ (ग) ।
- ५ जिन के—जिन कौ (क) (ग) ।
- ६-७ छिन छिन प्रति नौतन सी सुनै, सुनि सुनि पुनि पुनि मन मे गुनै ।
सुनत नृपति मानत नहि अैसे, पर तिय बातनि लंपट जैसे (ख) ।
- १२ की—× (क) (ख) ।
- १३ कहत . . . ठौर—अहो मित्र देषहु यह ठौर (ख) ; पाइहौ—
पाइये (ख) ।
- १४ सीतल मृदुल बालुका सच्यो, जमुना सु कर तरंगनि रच्यो (ख) ।
- २० तै—के (ख) ।
- २८ बने—ठने (क) (ख) (ङ) ; घने—वने (क) (ख) (ङ) ।
- ३१ काख . . . रेनु—वेत विषान काष मे लिये (ख) ।
- ३२ हरि—परि (ख) ।
- ३५ केवल—मनुज (ख) ।
- ३७ सौ—कौ (ग) ।
- ४० तहँ—जहा (ख) ।
- ४२ तदनंतर कमलज तहा आयो, अघ कोतुक दिषि बिस्मय पायो (ख) ।
- ४३ इमि कहै—हम कहै (ग) ; चहै—चहै (ग) ।
- ४४ 'ख' ने पक्ति ४५ को न देकर इस का पाठ यो दिया है—
ले गयो कछ ते वछ चुराइ, इत ते लीने बालक आई ।
- ५२ बाल—ग्वाल (क) ; याते नंदलाल तिहि काल, आप भये वछ
वाछी वाल (ख) ।
- ५६ कंकन किंकिनी नूपुर जितौ, सर्व विष्णुमय है यह तितौ (ख) ।
- ५७ बिदित—बदत (ग) ।
- ५८ अैसे नहिन परत हो पायौ, सो यह अर्थ प्रगट दिखरायौ (क) ।

६० 'ख' ने इस के बाद यह पंक्ति दी है—

आप ही अपने वछ निवेरि, लै गए अपने षरकनि घेरि ।

६८ बार . . . हूँसनि—परति न कही नेह की घूमनि (क) ।

७० कोई—जोई (ग) ।

७६ बखरें—बखरै (क), बछरी (ख) ।

८३ बल—वर (ख) ।

८५ हलधर सौ—बलधर सौ (क) ।

८६-८७ सकर्षन तव नीके जान्यो, जव हसि हरि सब भेदु बषान्यो ।

बीत्यो वरष हरष भरि धायो, समाचार विधि लैन ही आयो ।
(ख) ।

९० इस के स्थान पर 'ख' में दो पक्तियाँ हैं—

इत आवे पुनि उत कौ धावै, पचै विरचि मरम नही पावै ।

पुनि अपने विधि देषनि गयो, पाछे अद्भुत कौतुक भयो ।

९४ निरखे चारु—चहे विरचि (ख) ।

९५ सीसनि ललित किरीट सु लोले, कुडल कलित कपोल विलोले (ख) ।

९७ धरे—लसे (ख) ; आयुध . . . करे—निकर बिभाकर दुति
कहु हसे (ख) ।

१०० पुनि इक इक ब्रह्माड के नाइक, सब लाइक सुभकरन सुभाइक (ख) ।

१०१-१०३ 'क' ने १०१ को छोड़ दिया है और अवशिष्ट पक्तियों का
पाठ यो रक्खा है—

ब्रह्मादिक बिभूति जग जिती, अड अड प्रति दिखियत तिती ।

काल कर्म महदादिक जिते, मूरति धरै उपासत तिते ।

१०४-१०५ 'ख' ने इन्हे इस प्रकार दिया है—

अति अचिरज दिषि विधि सुधि गई, इक तौ हुती और भई नई ।

चकित भयो सु थकित अस भयो, हस कौ अस पकरि रहि गयो ।

१११ दृग . . . चहै—दुष भरि दृग उधारि जो चहै (ख) ।

११२-११३ सुरतरु से सव तरुवर जहा, सव रस भरे अमी रस जहा ।

मृग अरु मनुज मृगाधिप जिते, जहा निर्वैर विराजत तिते (ख) ।

११५ निरखे—निरखे श्री (क) ।

११६ ढूँढ़त—तन धरि (क) (ङ) ।

११८ उर फुरै—सुधि करै (ख) ; सो—सिर (ङ) ; पद-पकज सो घुरै—पद कमलनि पर परै (ख) ।

१२२ कमल . . बलबीर—सव नेननि ते वरषत नीर (ख) ।

चतुर्दश अध्याय

२-३ पाछै अद्भुत निरखि बिधात, चक्यौ थक्यौ कछु फुरति न बात ।

सापराध अति थर थर डरै, हरि महिमा अवगाहन करै ।

सुधि न परै तब जैसे चहै, तैसे नमस्कार करि कहै ।

(क) (ङ) ।

५ नेन . . . बनमाल—बिलुलित उर बनमाल रसाल (क) ।

६ रस—छवि (ख) ; कवल . . . बेत्र—वेत्र विषान कवल (ख) ।

७ इस के बाद 'पूर्व पक्ष' लिखकर केवल 'ग' ने यह पक्ति दी है—

जो कहहु कि याकौ कहा कह्यौ, वरन्यो रूप जु तै कछु चह्यौ ।

११ इक—तुम (ख) ; ताहि—जाहि (ख) ।

१३ पायौ . . भेय—जानि परे न रूप रस भेय (ख) ।

१४ तौ पै—तौप (क), तो ए (ख) ।

१७ सत—सतत (क) ।

१६ ठौर—इक ठौर (क) ; जे . . जीवै—जग मे इहि जीवनि ते जीवे (ख) ।

२१ अब—सब (ख) ।

२६ फल . . बिरथ—फल तहा इहि वृथा (ख) ।

३१ मर्म—नर्म (ग) ।

- ३५ नित्य—तिन के (ख) ; तनक—ताकौ (ग) ।
- ३६ तिहि—जिहि (क) ।
- ४५ ताते तुम्हरी कृपा जु आहि, वछ्यो करित रयन दिन ताहि (ख) ।
- ४७ नैक न ललचाइ—चितु अनत न जाइ (ख) ।
- ५६ रज—जो (ख), जन (ग), अग्यानी—अज्ञान (ख) ;
अभिमानि—अभिमान (ख) ।
- ६२ कहत . . . की—तह हौ जैसे चिटी हाथ की (ग) ।
- ६४ हौ—है (क) ।
- ७२ अब विशेष करि जन्म जु अपनो, कहत विरचि नयो करि थपनो
(ख) ।
- ७६-७७ 'ख' ने इन के स्थान पर यह पक्ति दी है—
तौ तू नारायण सुत आहि, जल मे जाहि चाहि लै ताहि ।
- ७७ तहा कहत बिधि बुधि अवगाहि, मदस्मित जुत आनन चाहि (क) ।
- ८० बहुरि नार—बहुरि नारि (क) ।
- ८२ जल मे तुम्हरी यो मूरति आहि, हसत कहा हरि मो तन चाहि (क) ।
- ८३-८४ ताते हम ऐसे करि पाये, पानी मे परिछिन्न बताये ।
तहा कहत अबुज को तात, अहो तात अब सुनिये बात ।
- ८६ जल—रज (ग), कितक .ते—कहाँ ते मो ते (ख) ।
- ८८ तुम—मो (ख) ।
- ८९ की गुरभे—कर उरभे (ग), यह सब तुम्हरी माया नाथ, बहुत
अरुभ मुरभे इहि साथ (ख) ।
- ९१-९२ 'ख' ने पक्ति ९२ को नहीं दिया है और ९१ का पाठ यो रक्खा
है—
जननी हू कौ नहि दिषरायौ, हो तुम ही अब ही वोरायो ।
- ९६ इस के बाद 'ख' मे यह अतिरिक्त पक्ति है—
पीत वसन नव घन तन स्याम, सवनि कै उलसी तुलसी दाम ।

१०८ इहि—इही (ग), और—अमर (क) (घ); नर—नार (ख) ।

१०९ मै—कौ (क) ।

११३ बार बार—पार बार (क) ।

११६ इस के बाद 'ख' ने यह पक्ति दी है—

सर्व व्यापी ब्रह्म जु आहि, प्रभु की प्रभा कहत कवि ताहि ।

११७ परम—सकल (क) ।

१२०-१२८ इन का पाठ 'ख' ने इस प्रकार दिया है—

पान पत्र ते भये हमारे, पियत सुधासव अग तुम्हारे ।

हम करि ये 'कछु' नाहिन रचै, पै अभिमान मात्र ही मथै ।

पुनि इक इक इद्रिय रस रसे, भये कृतार्थ सव दुष नसे ।

जे सब ही बिधि तुम ही लागे, डोलत प्रेम पगे रग मगे ।

१३१-१३२ इन के स्थान पर 'क' ने यह पक्ति है—

मनुज लोक मै जनमु हमारौ, दीजे देव दया विस्तारौ ।

१५१ जब लगि जन नहि भये तुम्हारे, हे ईश्वर ब्रजराज दुलारे (क) ।

१५३ जानहु. चर—ते जानहु ग्यानहु जग गोचर (ख) ।

१५६-१६० तब श्री हरि वे बालक वक्ष, बैठे सब पाए उहि कछ (क) ।

१६५ आये—पाए (क) ।

१७५ इस के बाद 'ख' ने यह पक्ति दी है—

बिच बिच सुसम कुसम की डार, जिन पर भवर करत गुजार ।

१७७ घेरत—टेरत (ख) ।

पंचदश अध्याय

२ धेनुक मारि ताल फल खाइ, सबनि कौ सुख दैहै ब्रज आइ (क) ।

३ सुदेस—सु बेस (क) ; बढत सु बेस—चढत सुदेश (क) ।

४-७ 'ख' ने इन के स्थान मे यह पक्ति दी है—

प्रथम चले वन चारन गाइ, वा छवि की मुहि लगौ वलाइ ।

- ७ लगी—सुभ (ङ) ; बन—उत (क) (घ) ; अवरावन—
आवरहन (घ), अवराहन (ङ) ।
- ८-२४ इन पक्तियों को 'क' ने छोड़ दिया है ।
- ९ बीच . . . कवन—तंडुल बीच सु कौ (ख) ।
- १० दये—दै (ग) (ङ) ; ब्रज—घर (ख) ।
- ११ रूप—परम (ख) ; सब के—रूप (ख) ।
- १२ घनन . . . करै—इहि बिधि गोचारन पर वरै (ङ) ।
- १३ बरन—अंग (ग) (ङ) ।
- १४ सम—से (ग) (ङ) ।
- २१ रगन भरे—इम मन हरै (ख) ; बात . . . ढरे—जनु द्रुम
आप मे वातै करै (ख) ।
- २८ सु रस—सुरसुति (ग) ।
- ३६ निकरि—निकसि (ङ) ; तुव—भुव (ङ) ; कौ—के (ग) ।
- ४० जदपि . . . पाये—छिपे मनुज गति तुम लहि पाए (ग) ।
- ४४ कबहुं निरखि मराल सु चाल, तिन सग खेलत लाल गुपाल (क) ।
- ४५ नंदकिसोर—चित के चोर (क) ।
- ५३ सघन—जघन (क) ।
- ६२ जाइ—जान (क) ।
- ६६ भैया—मईया (क) ।
- ६८ तछिन—ता छिन (क) ।
- ७१ कानन—पैठत (क) ।
- ७२ लिये—जिये (क) ।
- ७७ ऊँचे—उचै (क), ऊंधो (ख) ; भारयो—भारौ (ग) ।
- ८७ गंडनि—मडित (ग) ।
- ९१ दृगन . . . सिराने—बासर विरह सु ताप सिराने (ख) ।
- ९२ हँसनि—हसित (ख) ।

षोडश अध्याय

१ कीनी—कीनौ (ग) ।

६ इस के बाद 'ख' ने यह पक्ति दी है—

बहुरचौ तुमरे मुष ते भरे, अमृत ते अमृत मुष करे ।

१७ कान्ह... हमारी—हमरे वृदावन की (ख) ; क्यौ... भरी
—क्यो विष भरी पूछियै (ख) ।

२६ सुभै—सुरे (ङ) ; मोर मुकट सिर कुचित केस, मंदस्मित जुत
वदन सुवेस (ख) ।

२७ बिभु—हरि (ख) ।

३६ इस के बाद 'ख' ने निम्नांकित पक्तियाँ दी हैं—

जो जन चरन सरन अनुसरे, तिनके हित ए लच्छिन धरे ।
चक्र चिह्न चरननि भलमले, कामादिक रिपु दल दलमले ।
सोहत सुदर दरवर लच्छनि, अज्ञहि तच्छिन करत विचछिन ।
मीन चिह्न छिन छिन छवि धरे, जन के मन ही मीन लो करे ।
रस भरचौ कमल चिह्न इहिभाइ, जन कौ मन अलि अनत न जाइ ।
जब चिह्न सो मन लागै जाकौ, अमल सुजसु जग प्रगटै ताकौ ।
चरन मे अकुस लच्छिन याते, मन मद गज विचले न ताते ।
कुलिस चिह्न जु चरन राजित नित, पातक पर्वत चूर्न करन हित ।
धुजा चिह्न जिहि हिय जगमगै, ताके सकल अमगल भगै ।

५१ पकने—पकने (क), सेकनि (ख) ।

५४ उर—डर (क) ।

५६ इस के बाद 'ख' ने यह पंक्ति दी है—

यों हरि जब दरसे सब सरसे, सुर मुनि सुदर सुमननि बरसे ।

५८ इस के बाद 'ख' ने यह पक्ति दी है—

ते सब तहा आये रस लीन, लै लै ताल पषावज वीन ।

- १ पद कूटिनि मे अहिफन जिते, भगन भए मणि डारत तिते (ख) ।
 १ भार—साज (ख), भाड़ (क) ।
 १ जु दंड—निदड (क) ।
 १ अमित अंडमय वेष तुम्हारौ, ताकौ भयौ यह धारन हारौ (ख) ।
 १-८४ तब तासो बोले वनमाली, रे रे विष जाली अहि काली ।
 तू अब रमनक दीपहि जाहि, गरुड के डर ते कौन डराहि (ख) ।

सप्तदश अध्याय

- १ कहा—कौन (ख) ।
 १ पर्वनि पर्वनि—सर्पनि पर्वनि (क) ।
 १ बल—षग (ख) ।
 १ तातौ—सातौ (क), सातौ (ख) ।
 १ राउ—नाथ (क) ।
 १-३१ अद्भुत अद्भुत नव मनिमाल, अहि जुवतिन पूजे नंदलाल ।
 बने जो तिहि छिन को छवि गनौ, चंदहि ओप दई है मनौ (ख) ।
 १ तिहि—तिन (क), तन (ग) ।

अष्टादश अध्याय

- १ अष्टादश अध्याय की कथा, बरनि सुनाऊँ मो मति जथा (क) (ङ) ।
 १ धूमरे—धूमरे (ङ) ।
 १ जैसी—ऐसी (ख) (ङ) ।
 १ सर—सब (ग) (घ) (ङ) ।
 १-१६ सरनि मे सरसीरुह रस भरे, मधुकर निकरनि चंचल करे ।
 कदिलन ते घन सार तुसार, ह्वै रह्यो दुर्दिन आकार ।
 सीतल मंद सुगंध समीर, कही न परति अति परिमल भीर ।
 केकी कोकिल करि जु गावत, सुरपुर के गंधर्व रिभावत ।
 (ख) ।

- २० खेलत बेलन—मेलत खेलनि (ग) ।
 २८ इस के बाद 'ख' ने यह पंक्ति दी है—श्री हरि करि तब ही वह पायो, तजि वह खेल अवर उपजायो ।
 ३१ अवर . . . बीरी—आवहु खेलहि वटि वटि बीरी (ख) ; बीरी—भीरी (क) ।
 ३२ इस के बाद 'ख' ने यह पंक्ति दी है—चढा चढी खेलहि वदि ठाव, धरि धरि आवहु अपने नाँव (ख) ।
 ३४ ललित . . . कसे—ललित करनि भूपटै पद कसे (ग) ।
 ४१ ओर—आर (ङ) ; अपनी—अप घनी (क), अप पनी (ङ) ।
 ४३ हरि पर वन्यो श्री दामा अैसे, सरद चद ऊपर गुरु जैसे (ख) ।
 ४६ चढ़ि—बढ़ि (क) ।
 ५१ बमंत—वगत (ग) ।

एकोनविंश अध्याय

- ७ कुज पुज—मजु कुज (ग) ।
 १६ जनु . . . पग्यौ—जनु सब सुषत निफल रस पग्यौ (ग) ।
 २५ उमहि—उतहि (ग) , नार—भार (ग) ।
 ३५-३६ सुनतही नंद सुवन के बैन, भट दै सबहिन मूदे नैन ।
 जौ देखौ तौ बट भडीर, ठाढ़े हे सब ताके तीर (क) ।
 ३९ इस के बाद 'ख' ने ये पंक्तियाँ दी हैं—
 अैसे कहत सषा मुद भरे, तिन तन दिषि मोहन हसि परे ।
 नद सुवन कौ हसिवो जु है, जगत मोहनी माया सु है ।

विंश अध्याय

- ३ प्रावृट—पावस (ख) ।
 ६ यह—अरु (क) ।

- १० तपे—तये (ग) ।
 १६ सुकी—शुष्क (ख), सुद्ध (ग) ।
 २१ बुढी—मुढी ; लुढी—ढुरी (ग) ।
 ३० परसे पै निरसै—सरसे पै निरसे (क) ।
 ३२ बिप्र सु—विद्विष (ग) ।
 ३५ घुमडनि—मडल (ख) ।
 ४३ घरनि—घरनी (क) (ग) ; बिबस—बिखड़ (क) ।
 ४५ दत—दंभ (ख) ।
 ५३ ऐनन—औहनि (क) ।
 ६६ नहि निज—नाहिन (ख), नयन जु (ग) ।
 ७७ ह्वै—कौ (क) ।
 ८५ गगन—अगन (क) ।
 ८६ मन—यौ (क) ।

एकविंश अध्याय

- ८ तरवर... जिते—तरवर सर के खग गन जिते (क) ।
 १० सुर—धुनि (ख) ; बजवत—बाजत (क) (ख) ।
 २१ सु—सौ (क) ।
 २४ तिन ... फरै—तिन फल प्रियतम दरसत फरे (ङ) ।
 २७ रागिनि—रागनी (ग) ।
 ४२ मधुन—मधुर (ग) ।
 ४३ निरखि निरखि—हरखि हरखि (ग) ।
 ५७ चित्र—चरित (ख) ।
 ६१ कवरि—कवर (क) ।
 ७३ उमगत—धूमत (क), रूपत (ग) ; धूमत—ऊँधत (क) ।
 ७५ मुनि पुनि—पुनि पुनि (ख) ।

- ८३ स्याम—राम (क) ।
 ८६ दामिनि—नीबी (ग) ।
 ८७ सखा कौ—सखा भयौ घन घन सु स्याम कौ (ग) ।
 ८९ हे सखि रहौ—हे सखि मौहन हू की रहौ (ग) ।
 ९२ पये—लए (क) ।
 ९५ हसनि—हम न (क) ।

द्वाविंश अध्याय

- ५ जु—निज (ग) ।
 १५ सरै—अनुसरै (क) ।
 २० देवि—भरे (क) ।
 २६ कै—चख (क) ।
 ३६ ऐड सौ—असौ (ख), और सौ (ग) ।
 ४३ भाइ—सुभाइ (ख) ; नदराइ—कसराइ (क) (ग) ।
 ४६ हो—है (ग) ; सब रस—सरबस (क), रस वस (ख) ।
 ५४ ब्रज—करि (ग) ।

त्रयोविंश अध्याय

- ८ प्रहारनि—पहारिनि (क) ; पापनि—पावन (घ) ।
 ४० कछु—कहूँ (ख) ।
 ४१ अँगन—अवनि (ख) ।
 ४८ चुस, लिह—लिह चोष्य (ख) ।
 ५९ अवस्था—अवस्थ (ख) ।
 ६१ प्रतिबंधक—पत बधक (क) ।
 ६९ जजन—गृहन (क) ।
 ७६ तुम—गहि (ख) (घ) ।

- ८६ बृद्धि—विरध (ग) (घ) ।
 ९६ जाहि—जाइ (क) जैय (ख), जेइ (घ) ।
 ०४ खोहनी—पोहनी (ग) ।
 ०६ सेव न तत्त्व—वासन आत्म (ख) ।
 १५ भरी—रीभि (घ) ।

चतुर्विंश अध्याय

- १ अब सुनि चतुरविस अध्याइ, चतुर सिरोमनि हरि के भाइ (ख) ।
 ३ निर्मद—निर्मल (क) (ग) ।
 ८ चाइ—जाय (ग), आनि (घ) ।
 २० सब के—केशव (ख) ।
 २२ डारचौ—मारचो (क) ।
 ४२ सबै विधि—सब छवि (ख) ।

पंचविंश अध्याय

- ४ घाती—खाती (क) (ख) ।
 १२ सब—अब (क) ।
 २१ इस के बाद 'ग' ने यह दोहा दिया है—
 गाइनि की उह आवनी वनी वनिक इकहि ढार ।
 जनु हरिसागर मिलनहित गंग भई सत धार ॥
 ५५ ओप की—प्रेम की (ख) ।
 ५६ लोकन लै—ओकन चले (ख) ।

षड्विंश अध्याय

- ११ ऐन लै जाइ—आयु पी जाइ (ज) ।
 २६ निर्मल—निर्विष (ख) ।

३० पंछी—अनपसु (क) (ग) ।

३८ रीत—पीत (क) (ख) ।

४५ अति परिभव करि सकै न अैसे, हरि अनुसरि सुर निर्भय जैसे (ख) ।

सप्तविंश अध्याय

६ गर्व—गरभ (ग); जु लोक तिहू कौ—तिलोकी विभु कौ (ख) ।

२० गुरु-गुरु—के गुरु (ख) ।

२६ मनु अंजन रंजन—मनरजन अजन (ख) ।

६० बूड़ि गई—बढ़ी गाड़ (ख) ।

अष्टविंश अध्याय

३ सुख—फल (घ) (ङ) ।

३० स्वच्छ मुक्ति जो—सूक्ष्म गति जो (ख) ।

३१ बिस्मय—निश्चै (ख) ।

३५ बैठे—पठए (ख); पूरन—परम (क) (ख) (घ); किरनमय—करुनामय (ख), कीरतिमय (घ) ।

३६ विषै—वेषे (क) ; इहि . . .अरे—अह ब्रह्म करि तामे ररे (ख) ।

४० अरु कौतुक—और कीरति (क) ; गिरिबर . . .भरे—गिरि उधरन आदि रंग भरे (ख) ।

४७ जाकी धूप—जाकौ रूप (घ) ।

५० मुक्ति न मन-मानी—मुक्तिहि मन मानी (क), मुक्ति न अन-मानी (घ) ।

एकोनत्रिंश अध्याय

२२ दलमली—हलमली (क) ।

२५ मन—मत (क) ।

- २७ धरे—धारे (ग) ।
 ३२ ध्यान....तैसे—धरत भई निज हिय में तैसे (ग) ।
 ३५ कहत—कहति (क) (ग) ।
 ३८ घाटि—निकट (क) ; कब—अब (क) ।
 ४६ ऊपर—उप रस (ग) ।
 ५२ ते ही—देही (क) ।
 ५३ हृद—द्वरि (क) ।
 ५६ भरे, रहे—ररे भरे (क) ।
 ५६ समकंध—सम सरस (ग) ।
 ६७ यह सजनी—आये सजनी (क) ।
 ७६ बहुतै बिप्रिय—बहुत बिग्य प्रिय (ग) ।
 ८२ ढार—दार (ग) ; सुत धार—सुति धार (ग) ।
 ९१ मुमुखन—मनुषन (ग) ।
 ९२ सुश्रूषन—स्वभूषन (क) ।
 ९६ च्याये—च्याने (क) ।
 १०५ हियौ—हाथौ (क) ।
 १०६ महा....अनिवारौ—दयौ जुद्ध छय अनल हमारौ (क) ।
 १४३ भृंगन....घरनी—भृंगनि तहा भृंगनि की घरनी (ग) ;
 बीन सी—बसी (ग) ।
 १४५ कल—फल (ग) ।
 १५० अंग—रग (क) ।

पदावली

- ५ डोलै—लोले (क) ; बाँधति लोलै—बाधती डोले (क) ।
 ६ सथिया—सतिए (ऊ) ।
 १४ गृह—जे (ऊ) ।

- १९ अंजनजुत—अंजन द्विति (ए) ।
 २२ कौन—कहा (क) ।
 २८ ठाँ . . . भूल्यौ—निरखि निरखि मन भूल्यौ (ऊ) ।
 २९ आगम—आँगन (ए) , सुवन फूल—ठौर ठौर (ऊ) ।
 ३६ तरनि तेज—अरुन उदय (उ) (क) ।
 ४५ जैसे—अति (ए) ।
 ४६ आई—ओई (उ) ।
 ६६ पहिरे—लिये (ख) ।
 ८० कानि—काज (क) ।
 ९२ चढ़ि . . . उचकैयाँ—धाय चढ़त लीनी उचकैया (ई) , चढ़ि लई
 कुलाच कीनी उभकहियां (ए) , चढ़ि कुलाचल उचकैयाँ (क) ।
 ९६ तेज सदन—श्वेत दशन (क) ।
 १०९ निकट—निकट (ख) ।
 १२५ खेलि—फैल (क) ; नग रंगन—नगन रग (क) ।
 १२६ भुज या—भुव यह (क) ।
 १२९ सैनन मै—सेनमेन (ई) ।
 १३० रहे—रहसि (ई) ; धगुरनि—गुनन (क) ।
 १३४ बिबिध . . . भूषन—शोभित सवे शृंगार बनावत (क) ।
 १४४ ब्रजजन—ब्रजकुल (ई) ।
 १४६ अपनौ—थाभ्यो (ई) ।
 १६७ मनिमाला—उरमाला (क) ।
 १६९ रिभवति—रिभये (ई) ।
 १७० जाइ—फाग (ए) ।
 १७५ उत तै . . . आई—आई उत ते जुरि सुदरि सब (आ) ।
 १७७ उठि—उठीयै (आ) ।
 १८० बर—नर (आ) ।

- १८३ परम अनंद—प्रेमानंद (ई) ।
 २०२ भरि लालै—भरि लाजे (ई); नहि—तब (ई) ।
 २२४ मूरति धरे अनंग—सुरत धरे राग रंग (ई) ।
 २३४ गति—गहि (क) ।
 २३६ धिरि—जुरि (अ) ।
 २३७ छेके है मदनगोपाल—रोके हैं सांवरे लाल (क) ।
 २४२ रस—रंग (अ) (आ) ।
 २४३ मति—गति (अ) ।
 २४४ सांवरे—माधुरी (अ), सांवरी (ई) ।
 २५४ लिये—ले (ई) (क) ।
 २५५ अंबुद—अंबर (ई) (क) ।
 २५७ प्रेम—लाल (ई) ।
 २५९ धनुधर—धुरंधर (अ), धनुर्धर (ई) ।
 २७० चित हू न परै चैन—चित हूं न परे चैन मुख हूं न आवे बेन (क) ।
 २७३ श्रवनमई री—स्रमित मई री (ऊ) ।
 २८१ उपमा को—उपमा नाहि (ऊ), उपमा काहि (क) ।

४ पदों की प्रथम पंक्ति की अकारादि-क्रम-सूची

प्रथम पंक्ति	पृष्ठ संख्या
अक्षय तृतीया अक्षय सुख निधि पिय को पीव चढावे चंदन ..	३७६
अखिया मेरी लालन संग अकी	४३८
अद्भुत बाग बन्यो नव निकुज मध्य	४१७
अधरन रँग राखौ अरुन अत प्रेम-प्रीति के पान हरित तन बीरा ..	४४८
अपने हाथ पातन को छतना कोउ ढाप डला पर दीजे हो ..	३८३
अब नैंक हमहिं देहु कान्ह गिरिवर	३३५
अरी एसी नव यामिनी देखैं भामिनी तोहि क्यों भवन सुहाय ..	३६५
अरी चल दूलहे देखन जाय	३७४
अरी चलि बेगि छबीली हरि सँग खेलन जाइ	३३६
अरी होरी खेलन जैये सांवरे सलोने सों	३६४
अरे तेरी याही मे बन आई	४२७
अहो तो सौं नँद-लाड़िले भगरूँगी	३३१
अहो हरि भोजन कीजै, आई छाक इक बार	४४५
आगन उजारे बैठ करोहो कलेउ लाल भवन अंधेरो हे रे दोउ भैया	३८१
आई जु श्याम घटा घन घोर	३८४
आगम गहेर गहेर गरज सुन औचक बाल सलोंनी	३८२
आगे आगे भाज्यो जात भगीरथ को रथ पाछे पाछें आवत तरंग भरी गंग	४००
आज अटारी पर उसीर महल रचि दंपति व्याह करत	४१२
आज आये मेरे धाम श्याम माई नागर नंद किशोर	४२१
आज बनि-ठनि फाग खेलन निकस्यौ नंददुलारौ	३४०
आज बृंदा बिभिन कुंज अदभुत नई	४४५

प्रथम पंक्ति	पृष्ठ संख्या
आज मेरे धाम आए री नागर नंदकिशोर	४२८
आज सिँगार स्यामसुंदर कौ देखे ही बनि आवैं	३३१
आज हरी खेलन फाग बनी	३६४
आजु भूली सुरंग हिंडोरे प्यारी पिय के संग	४४०
आपन चलिये लालन कीजिये न लाज	४१६
आय क्यों न देखो लाल अपनी प्यारी की छवि	३७०
आयो आगम नरेश देश देश में आनंद भयो	३८२
आलस उनीदे नयन लाल तिहारे कहा तुम रैन बिताए	४३१
आली तेरी बदन चंद देखत, बस भए कुजबिहारी	४४६
आली री मंद मंद मुरली धुनि बाजत नृत्यत कुवर कन्हैया	४३४
आली री सघन कुज पुहुप पुज उसीर की रावटी	४४७
आली री सामरी मूरति तेरे जीय में वसति	४५१
आली श्रावन की पून्यो हरि हरियारी भूमि सोहत पिया संग	३८८
आवत ही यमुना भर पानी	४०८
आवरी बावरी उजरी पाग में मेल के बाध्यो मंजुल चोटा	४१४
ऊँनीदी आँखे लागत प्यारी, कजरारी कोर बारी	४४२
उपरना वाही के जु रह्यो	४०२
उसीर महल में विराजे मंडल मध्य मोहन छाक खात	४०७
ऊसीर के मैहल ब्यारु करत दोऊ भैया	४४६
ए आज अरुन अरुन डोरे दृगन लाल के लागत हैं अति भले	४०२
एक दिस वर ब्रज बाला एक दिस मोहन मदन गोपाला	३६६
ए बाल आवत डगर डगरी	४०५
एरी इन बांसुरिया माई मेरो सरवस चोरायो	४२८
एरी तेरी सेज की मुसक्यान मोहन मोह लीनो	४२८
ए री सखी निकसे मोहनलाल, खेलन ब्रज में फाग री	३३६

प्रथम पंक्ति

पृष्ठ संख्या

ए री सखी प्रकटे कृष्ण मुरारि	३६१
एसे केसे कहीयतु ब्रज वधुवन सोई ते आये धों पिछोड़ी ..	३६८
एसो को है जो छुवे मेरी मटुकी अछूती दहेडी जमी ..	३६७
कन्हैया माई पनघट बाट रोके रहतु	४३४
कपि चल्थो सीय सुधि कों पुनि पायन तन लटकि कें .	३६६
कहो जू दान लेहो केसे हम तो देव गोवर्द्धन पूजन आई ..	३६७
कान्ह अटा चढ चंग उडावत मे अपने आंगनहू ते हेयों ..	३७७
कान्ह कुवर के कर पल्लव पर मानो गोबर्द्धन नृत्य करे ..	३७२
कान्हर खेलियै हो बाढचौ श्री गोकुल में अनुराग .	३३८
काहे कु तुम प्यारे सषी भेष कीनो	४२०
काहे न आय आप देखो रानी जु अपने सुत के कर्म ..	३६७
कुज कुटीर मिलि यमुना तीर खेलत होरी रस भरे अहीर ..	३८६
कुसुम सेज पोढे दंपति करत हे रस बतियां ..	४२२
कृष्ण जन्म सुनि अपने पति सो ढाढिन यों बोली जु ..	३६५
कृष्ण-नाम जब तैं श्रवन सुन्यौ री आली .	३४१
केलि करे प्यारी पिय पोढे लख चादन मे .	३७१
केलि कला कमनीय किशोर उभयरस पुजन कुंजके नेरे ..	४११
केसे केसे गाय चराइ गिरिधर	३७३
कोन लई कौन दई इंडुरिया गोपाल मेरी ..	४०४
कौन दान दानी को	४२६
खंभ की ओभल ठाढो सुबल प्रवीण सखा ..	४०६
खेलत रास रसिक रस नागर	३७२
खेले नंद को नंदन होरी अपने रंगीले ब्रज मे ..	३६७
गाइ खिलावत सोभा भारी	३३४
गिरिधर रोकत पनघट घाट	३६८

प्रथम पंक्ति	पृष्ठ संख्या
गुलाबी कुंजन छवि छाई भुलत दोउ	३८६
गोकुल की पनिहारी पनिआ भरन चली	४०५
गोधन धूरि मे हरि आवत, कैसे नीके लागत मोर मुकट की ढरकन	४४६
घर नंदमहर के मिष ही मिष आवे गोकुल की नार	४१२
घुमड रहे बादर सगरी निशा के अहो महेरि लाले दीजे जगाय	३८१
घोरि घन मन मोहे सोहे भूमि हरियारी	४३८
चंचल ले चली री चितचोर	४३०
चंदन पहर नाव हरि बैठे संग वृषभान दुलारी हो	३७९
चंदन भवन मध करत व्याह परोस धरी हे कंचन थारी	३७९
चंदन सुगंध अंग लगाय आय मेरे ग्रह हमही मग जोवत लाल तिहारो हे	४१०
चंद्रमा नटवारी मानो साभ सभे बनते ब्रज आवत नृत्य करण	४११
चटकाव-री पावरी पगन, भगन पैहैर निकसे नंदलाल पिआ	४४८
चटकीलो पट लपटानो कटि, बसीबट जमुना के त्रट ठाडो नागर नट	३७०
चढ वढ विडर गई अंग अंग मानवेली तेरे सयानी	४१८
चलिये कुंवर कान्ह सखी वेष कीजे	४२२
चलिहे भरत गिरिधरन लाल को बनि बनि अनगन गोपी	४३६
चली हे कुवरि राधे खेलन होरी । पंकज पराग भर लीनें हे भोरी	३९८
चहुं दीश टपकन लागी बुदे	३८४
चांपत चरण मोहनलाल	४२१
चित्र सराहत चितवत मुर मुर गोपी बहुत सयानी	४०६
चिबुक कूप मध्य पिय मन पर्यो अधर सुधारस आस	४१४
चिरैया चुहचुहानी, सुनि चकई की बानी	३३१
छगन मगन बारे कन्हैया नेंकु उरे धों आउ रे लाला	३६६
छबीली राधे पूज लेनी गन गोर	३७८
छोटो सो कन्हैया एक मुरली मधुर छोटी	३६६

प्रथम पंक्ति	पृष्ठ संख्या
जगावति अपने सुत को रानी . . .	४३०
जब कूद्यौ हनुमान उदधि जानकी सुधि लेन कौं . . .	३३२
जयति रुक्मिणीनाथ, पद्मावतिपति, बिप्र-कुल-छत्र, आनंदकारी	३४२
जर जाओ री लाज मेरे ऐसी कोन काज आवे . . .	४१५
जल कों गई सुघट नेह भर लाई परी हे चटपटी दरस की . . .	४१५
जहां तहां बोलत मोर सुहाये . . .	३८१
जाको वेद रटत ब्रह्मा रटत शंभु रटत शेष रटत . . .	४०८
जागे हो रेन तुम सब नयना अरुण हमारे . . .	४०१
जानन लागे री लालन मिल विछुरन की वेदन . . .	४०२
जितें जितें माई सभा अथाई भर द्विज बेटे वरसोंडी षात . . .	४४६
जुरि चली हैं बधाये नंद महर घर, चंचल ब्रज की बाला . . .	३२८
जैमत हैं-री मोहन, जिन जाओ तिबारी . . .	४४४
जो तु दरपन ले निरख निरख हसत सो तो मे जानी री माई . . .	४२५
भुलत प्रीतम संग जान न परत दीन जामीनी . . .	३८५
भुलावत पचरंग डोरी ब्रज वधु . . .	३८५
भूलत मोहन रंग भरे, गोपबधू चहुँ ओर . . .	३३५
भूलत राधा मोहन कार्लिदी के कूल . . .	३८६
ठाढी री खिरक माई कोन को किसोर . . .	४४३
डला भरहो लाल केसे के उठावे, पठावो ग्वाल छाक ले आवे . . .	४०७
डोल भुलावत सब ब्रज सुंदरी भूलत मदन गोपाल . . .	३६२
डोल भूलत है गिरिधरन भुलावत बाला . . .	३३६
ढीले ढीले पग धरत ढीली पाग ढरक रही . . .	४०१
तपन लाग्यौ तरनि परत अत घाँम भैया, कहूँ छाँह सीतल किन देखौ	४४५
तमचुर अबलन कों दुखदाई . . .	४४२
तुम कब ते सीखे हो लालन या लगन कों जानन . . .	४४१

प्रथम पंक्ति	पृष्ठ संख्या
तुम कोन के बस खेलो हो रंगीले हो हो होरिया	३६०
तुम पहिलें तो देखो आय मानिनी की शोभा लाल	४१८
तू तो नेक कान दे सुंदर बांसुरी मे बजावे तुव नाम	४२८
तूं न मानन देत आली री मन तेरो मानवे को करत	४१६
तेरी भ्रोंह के मरोरन तें ललित त्रीभंगी भये	४१५
तेरे री नव जोवन के अंग रंग से लागत परम सुहाए	४१६
तेरे री मनावे तें मान नीको लागत	४१६
तेरे री वदन कमल पर नंद नंदन आली मुरली नाद करत गुजार	४५१
दंपति पोढेई पोढे रसवतिया करन लागे दोउ नयना लाग गये	४२२
दंपति रस भरे भोजन करत लाडिली लाल	४०६
दान देउ ठहेरो इक ठैया	३६८
दीपदान दै हटरी बैठे नंद बबा के साथ	३३४
दूलह गिरिधर लाल छबीलो दुलहिन राधा गोरी जू .	३७४
दूलहे दुलहिन सुरंग हिंडोरे भूले प्रथम समागम अहो गठ जोरे .	३८५
देखन देत न बैरिन पलके।	४१२
देखो माई नंद नंदन रथ ही विराजे	३८०
देखो देखो री नागर नट, निर्तत कार्लिदी तट	३३३
दोरी दोरी आवत मोहि मनावत दाम खरच कछु मोल लई री	४२४
धन धन प्रभावती जिन जाई असी बेटी	४२६
धरे वांकी पाग वांकी चंद्रिका वांके बिहारीलाल	४११
धरे टेढी पाग टेढी चंद्रिका टेढे त्रीभंगी लाल	४११
नंद को लाल ब्रज पालने भूले	३६४
नंद गाम नीको लागत री	४०३
नंद भवन को भूषण माई	४०४
नंदराय जू के द्वारे भोरहि उठि पहाउ	४३१

प्रथम पंक्ति

पृष्ठ संख्या

नंदसदन गुरुजन की भीर तामे मोहन बदन न नीके देखन पाऊं ..	४०३
नयो नेह नयो मेह नई भूमि हरियारी नवल दूल्हो प्यारो नवल दुल्हैया	३८२
नाचत रस रंग भरी निज भुज हरि अंग धरी	४३४
निकस कुवर खेलन चले रंग हो हो होरी	३९०
निरंजन अंजन दिये सोहे नंद के आंगन माई ..	३६६
निर्त्तत कुजन की परछाही	३३३
नीकसी ठाडी भई री चढ नवल धवल महेल रंगीली आली मन माझ	३८१
नेह कारण यमुना प्रथम आई	४२९
पनिआँ न जाउँ-री आली, नंद नंदन मेरी—	४४४
पनियां भरन कैसे जाउँरी भटुरी .. .	४०५
पिछौरा केसर रंग रँगायौ	४४४
पिय प्यारी के चरन पलोटत	४२२
पीताबर काजर कहा लाग्यो हो ॥ ललना कोन के पोछे हैं नयन	३९२
पुत्र भयो हे आज श्री ब्रजराज के	३५९
पोढे माई प्रीतम प्यारी संग	४२४
प्यारी भूलति नवल लाल के संग	४३९
प्यारी तेरे मुख-सम करिबे कों चंदा बहु तपयौ	४४८
प्यारी, तेरे लोयन-लोंने जिन मोहे स्याम-सलोने	४४६
प्यारी पग हरे हरे घर	४२१
प्यारे पैया परन न दीनी	४१४
प्रकटित सकल सृष्टि आधार, श्रीमदबल्लभ राजकुमार ..	३४२
प्रगट्यो आनंद कंद गोकुल गोपाल भयो	३६०
प्रात समय श्री बल्लभ सुत को पुण्य पवित्र विमल यश गाऊं ..	४३१
प्रात समें पंछी बोलत हैं, छाँडी हरि ! अंचल घर जाऊँ ..	४४१
प्रात समै श्री बल्लभ-सुत के बदन-कमल कौ दरसन कीजै ..	३४१

प्रथम पंक्ति	पृष्ठ संख्या
प्रात समै श्री बल्लभ सुत कौ उठतहि रसना लीजै नाम ..	३४१
फुलन के मेहेल बने फुलन वितान तने ..	३७८
फुलन को मुकुट बन्यो फूलन को पिछोरा	३७७
फुलनसों बेनी गुही फुलन की अंगिया .	३७८
फूलन की माला हाथ फूलि सब सखी साथ	४०१
बड़े खिरक मे धूमरि खेलत	३७२
बधाई माई आज बधाई	३२८
बधाई री बाजत आज सुहाई श्री गोकुलराज के धाम ..	३६३
बन ठन कहा चले ऐसी को मन भाई सावरे से कुवर कन्हाई	४१३
बन तै आवत गावत गौरी	३३२
बनी आज श्वेत पाग लाल सिर चलो सखी देखन जाय	४१७
बरसाने की सीम खेलत रंग रह्यो हे	३६२
बरसाने ते दोरि नारि एक नंद भवन में आई जू .	४३६
बराजोरी होरी मचावै री	४३३
बल वामन हो जग पावन करण	३८०
बाल गोपाल ललन कौ, मोद भरी जसुमति हुलरावति .	३३१
बिलसत रंग महल रंग लाल	४२४
बुंदाबन बंसी बट, कुज जमुना के तट .. .	३३३
बुंदाबन रास रच्यो वनवारी	४३५
बेठी अटा मानों चंद छटा सी सोच करत दृग बारन बोरे ..	३८०
बेसर कोन की अति नीकी	४१६
बोली मदन गुपाल लाल सुनि मानिनी	४३२
ब्यारू करत भाँमते जिअके	४४७
ब्यारू करत बलराम स्याम जैसी घटा स्याम सुख स्याम देखत मन	४४७
ब्रज में खेले री धमार मोहन प्यारो री नंद को	३६१

प्रथम पंक्ति	पृष्ठ संख्या
भक्त पर करि कृपा यमुना ऐसी	४२६
भजो श्री वल्लभ सुत के चरणं	३७६
भले जु भले आये मो मन भाये प्यारे रति के चित्त दुराये ..	४१३
भलें भोर आए नैना लाल	४४२
भाग्य सौभाग्य यमुना जो दे री	४३०
भादों की अष्टमी आधी रात्र मे कान्ह भयो सब के मन भायो	३५६
भोजन भयो लाल नीकी विधि सों सदन कुंज की मांह ..	३८५
भोर भये भोगी रस विलस भयो ठाडो	३७७
माई आज गोकुल गाम, कैसौ रह्यौ फूल के	३३०
माई आज तो हिडोरे भूले छैयां कदम की	३८७
माई भुलत नवल लाल भुलावत ब्रज बाल	३८७
माई फूल को हिडोरो बन्यो फूल रही यमुना	३८७
माई फूलन को हिडोरो बन्यो फूल रही यमुना	३८८
माई री प्रात काल नंदलाल पाग वंधावत	४०३
माई री लाल आए री मेरे ही महल तन मन धन सब वारों ..	४२४
माई वावरी सो जों वासुरी सो लरे	४५०
माधो जु तनक सो वदन सदन शोभा को तनक भृकुटी पर तनक दिठोना	३६५
मान न घटयो आली तेरो घट जु गई सब रेन	४२०
मुरली रस वाजें राजें जोवन घन आली अति आनंद अरगजी धुनि	४५०
मेरे री बगर मे आवत छबि सों कमल फिरावत	४१३
मो भोरी को मन भोरयो हे मन भावन बिन ही गुन मन दोरयो हे	३६६
मो सों क्यों बोले रे नैद के लाल, तेरी कहा लिये जात ..	४४६
मोहन जैमत छाक ग्वाल मंडली मांह	३८४
मोहे बोलबो न चालबो बुलायवो न बोलवो	४२६
यमुना तट नव निकुंज द्रुम नव दल पड़ोप पुंज	४०६

प्रथम पंक्ति	पृष्ठ संख्या
यमुना तट भोजन करत गोपाल	४०७
यमुना पुलिन सुभग वृंदावन नवल लाल गोबर्द्धनधारी ..	४३०
यमुने यमुने यमुने जो गावो	४२६
यह विधि पार पोहोँच्यो पवन पूत दूत श्री रघुनाथ को ..	३६६
ये आखी तनक कनक की दोहनी, सोहनी गढाय दे री मैया ..	४१२
ये दोऊ नागर ढोटा माई कोन गोप के बेटा ..	४०४
ये मन मान मेरो कह्यो काहे को रुसानी ..	४१८
योगी रे बसो तो बसो गोबर्द्धन नगर बसो तो मथुरा धाम ..	४२७
रंग भरी भूलति स्याम संग राधिका प्यारी ..	३३६
रंग भिनि ढाढनि अति रुचि सों चारु मंगलरा गावे हो ..	३६४
रंग मेहेल रंग राग तहा बेटे दूल्हे लाल तू चल चतुर रंगीली राधे	३८३
रंगीले हिंडोरे भूले रंग भरे अति	४४०
रच्यो खसखानों आज अति तामें राजे	४०६
रथ चढि चलत श्री गिरधर लाल	४३७
राखी नंदलाल कर सोहे	३४०
राखी बाधत गर्ग श्याम कर	३८६
राजत रंग भिनी भामिनी सांवरे प्रीतम संग ..	३७०
राजे गिरिराज आज गाय गोप जाके तर ..	३७३
राधा बनी रंग भरी रंग होरी खेले अपने प्रीतम के संग ..	३६८
राम कृष्ण कहिए निशि भोर	४२६
रास में रसिक दोऊ नांचत आनंद भरि	४३५
रुखरी मधुवन की मोहन संग निस दिन रहत खरी ..	४२५
रुचिर चित्रसारी सघन कुज के मधि कुसुम रावटी राजे ..	४१७
रेन तो घटन्ती जाती सुनरी सयानी बातें ..	४२०
रेन रीभी हो प्यारे हरि को रास देख	३७१

प्रथम पंक्ति	पृष्ठ संख्या
लक्ष्मण घर बाजत आज बधाई	३७६
लहेकन लागी वसंत वहार सखि त्यों त्यों बनवारी लाग्यो बहेकन	४०२
लाडिली न माने लाल आप पाउं धारो	३७५
लाल तुम परे हमारे ख्याल, स्याम लाल दान ही दान भई नकवानी	३६७
लाल तुम मांगत दान कैसो	४२७
लालन अनत रतिमान आयेहोजमेरेगेह रसीले नयन बेन तुतरात	४१३
लाल बने रंग भीने गिरिधर लाल बने रंग भीने	३७५
लाल संग रितुमानी मे जानी कहे देत नैना रंग भोंए	४२५
लाल सिर पाग लहैरिया सोहै	४४३
वाके तो नयन मने चाहे पें वे प्यारी नही मानत	४२३
श्याम चल कुजन मे आये दोर	३८३
श्री गोकुल जुग जुग राज करौ	३४२
श्री गोपाल लाल गोकुल चले, हौ बलि बलि तिहि काल	३२६
श्री बृषभान नृपति के आगन, बाजत आज बधाई	३३०
श्री विट्ठल मंगल रूप निधान	३७६
श्री ब्रजराज के आंगन बाजत रंग बधाई	३६३
सखि नव नंद नंदन रुचिर रूप । नवल नागरी गुन अनूप	४३३
सजनी आनंद उर न समाऊं	३७३
सब अंग छीटे लागी नीको बन्धों बान	३८६
सब ब्रज गोपी रही तक ताक	४०७
सारंग नयनी री काहे को कियो एतो मान	४०८
सिर सोने के सूतन सोहत पाग पेचन ऊपर नग लगे	४१४
सुंदर मुख पर वारो टोना । बेनी बारन की मृद बेना	४०४
सुंदर श्याम पालने भूले	३६४
सुनति खसानी दूती, चलि पीतम पै गई है लजाइ	४४६

प्रथम पंक्ति	पृष्ठ संख्या
सुरंग दुरंग होत पाग कुरंग लाल कसें लोयन लोने ..	४१०
सैन दै बुलावौ लाल, बैठी है—भरोखे बाल, बन ठन के छिप री	४४८
स्याम अचानक आए सजनी, फिर पाछे कहूँ भागे ..	४४१
स्याम सलूने गात हैं काहु को ढोटा	४१६
हटरी बैठे श्री ब्रजनाथ	३३४
हांके हटक हटक गाय ठठक ठठक रही . ..	४१०
हिंडोरे भूले नवल लाल गिरिधारी	४४०
हिंडोरे माई भूलत गिरिधर लाल . ..	३३५
हिंडोरे भूलत बंसी बाला	३८६
हों तो वार डारी तन मन धन लालन पर ..	४२५
हो हो होरी खेलै नंद कौ नवरगी लाला ..	३३८
हो हो हो हो होरी बोलै, नंद-कुँवर ब्रज बीथिन डोलै ..	३३७

५ शब्दार्थ-कोष

रूपमंजरी

- ८ छिल्लर—छोटा तालाब ।
 ४६ अमराइ—ग्राम का बाग़;
 बरारी—बलिष्ठ, धनी;
 ती—थी ।
 ४९ चटसार—पाठशाला ।
 ५१ कासार—छोटा तालाब ।
 ५६ ननकारति—अस्वीकार करती
 है ।
 ६० पनच—प्रत्यंचा ।
 ६३ अहेर—शिकार ।
 ६६ हिमवत—हिमालय; बारी—
 कन्या ।
 ६७ लटकि लटकि—बल खाते
 हुए ।
 ६९ गोहन—साथ ।
 १२७ पासी—पाश, बंधन ।
 १५८ सुठौन—सुदर ।
 १७१ ओरे—ओले ।
 १९६ मनू—रुद्र ।
 २१४ गहबर—दुर्गम ।
 २१५ चखौंडे—दिठौने ।
 २१६ पेसल—कोमल; आलबाल
 —थाला ।
 २५७ टटावक—कदाचित् टुटका ।
 ३०१ हाउ—“संयोग समय में
 नायिका की स्वाभाविक चे-
 ष्टाएँ जो पुरुष को आकर्षित
 करती हैं” (हिंदी-शब्द-
 सागर) ।
 ३०५ हेला—“नायक से मिलने के
 समय नायिका की विविध
 विलास या विनोद-सूचक
 मुद्रा” (हिंदी-शब्दसागर);
 रेला—अधिकता ।
 ३१२ डभकि दै—डबडबा कर ।
 ३४१ घन हर घोरै—बादल मंद-
 गति से गरज रहा है ।
 ३४२ पटबिजना—जुगनू ।
 ३६८ परव—परेवा, कबूतर ।
 ३७२ उखी—देग, बटलोई ।
 ३७६ चीत्यौ—चैतन्य, बुद्धिमान ।
 ३७८ बगावै—वेग से जाता है ।
 ३७९ फरी—एक प्रकार की छोटी
 चमड़े की ढाल ।

३८५ जरा—मगध देश के किसी श्मशान मे रहने वाली एक राक्षसी । ऐसा प्रसिद्ध है कि मगध के बृहद्रथ राजा को भगवान् चंडकौशिक ने प्रसन्न हो कर एक फल दिया था और उस का यह प्रभाव बतलाया था कि जो स्त्री इसे खाएगी उस के केवल एक पुत्र होगा । राजा बृहद्रथ के दो स्त्रियाँ थी अतएव उन्होंने ने उस फल के दो समान भाग कर के अपनी दोनों स्त्रियों को खिला दिया । कालांतर मे दोनों स्त्रियों के आधे आधे शरीर वाला एक मृत बालक उत्पन्न हुआ । विवश हो कर इस बालक को श्मशान मे फेक दिया गया । जरा राक्षसी ने बालक के शरीर के दोनो भागों को जोड़ कर उसे जिलाया था इसी से उस का नाम जरासंध पडा ।
जरा . . . जुराई—रूपमंजरी इंदुमती से कहती है कि जरा

राक्षसी को बुला कर राहु के शरीर के दोनों भागों को क्यों नही जुड़वा लेती क्योंकि शरीर जुड़ जाने पर जब राहु चंद्रमा को ग्रसेगा तब वह उसे बिलकुल पचा देगा । चंद्रमा उस के उदर से निकल कर पुनः विरहीजनों को कष्ट न दे सकेगा ।

३८६ अहरनि—निहाई ।

३८७ जब ही . . तहाँ—जब चंद्रमा का प्रतिबिंब शीशे पर पड़े ।

३८८ बितन—कामदेव ।

४०० नाट—स्वाँग, तमाशा ।

४०६ मुलकि—प्रसन्न हो कर ।

४१४ चाचर—होली का स्वाँग और हुल्लड़ ।

४१५ पटतारनि—पटताल, मृदंग मे बजाई जाने वाली एक ताल; पहपटिया—शोर-गुल करने वाला ।

४१७ बोलन—बुलाने ।

४३१ चपरि कै—शीघ्रतापूर्वक ।

४४३ कुंभ—घट, शरीर ।

४५७ घैर—अपयश ।

४६१ रिसिआई—कुपित हो कर ।

४६७ मिरा-मत्त—मदिरा पी कर
मतवाला व्यक्ति ।

४६८ निवारि सी लई—समाप्त
सी कर ली गई, मृत सी जान
पड़ने लगी ।

५४० कन्याइ—गोद में बिठलावे,
आदर-सत्कार करे ।

५४१ थलराये पै—स्थिर अथवा
शात होने पर; निरपीड़े—
कष्ट पहुँचाने पर; निरसाइ
—म्लान हो जाती है ।

५५३ बिबधान—विच्छेद ।

५६१ करौत—आरा, चीरि...
गात—सूर्योदय ने दोनों को
एक दूसरे से पृथक् होने पर
विवश किया ।

बिरहमंजरी

१९ रस-बलिता—रस-युक्त ।

९७ परौरत—मंत्र पढ़ कर
फूँकता है, मंत्र बल से पीड़ित
करता है ।

१०२ धुरवा—बादल; पटे—कि-
रच के आकार की लोहे की
फट्टी ।

रसमंजरी

२३ नक्र-मुख—घड़ियाल का
मुख ।

२५ धानी—धान्य, किसी प्रकार
का अन्न । (विशेष—कदा-
चित् इस शब्द के स्थान पर
मूल पाठ में 'धानी' रहा होगा
क्योंकि अर्थ की दृष्टि से वह
बहुत सगत प्रतीत होता है) ।

३५ संकुरै—संकुचित होती है ।

६४ चंदचूड़—शिव ।

७३ गहगहि—प्रफुल्लित ।

७६ चुरकुट—चूर चूर, पूर्णतया
शिथिल ।

९३ सागस—द्वेषयुक्त, सापराध ।

९४ चुचात है—टपक रहा है ।

१०४ अवधारै—विचारपूर्वक नि-
श्चित करती है ।

१२३ पेट...सर—पेट गिराने
पर भी सिर न बचेगा ।

१९७ आरति करि—विरक्ति
दिखला कर ।

२०० मूझै—मुरझाती है, उदास
होती है ।

२०५ घूम परधौ—चक्कर अ

- २२६ मूड—शिव; त्राता—
रक्षक ।
- २३६ गैबर—श्रेष्ठ हाथी (गज
वर) ।
- २७७ भंगुर गति—बल खाती हुई
चाल; लटी—क्षीण, पतली ।
- २७६ धमिल—बँधी चोटी ।
- ३१४ धोरै—निकट, टकटोरै—
टटोलती है ।
- ३१७ जारत की नहियाँ—जलाता
है कि नहीं ।
- ३२५ कुभीपाक—एक नरक
विशेष ।
- ३७६ चोप—उत्साह ।
- १४६ हाँतौ कीय—दूर किया,
मिटाया ।
- ३८२ साति परी...नाह—यह
अच्छा ही हुआ कि तेरा
विवाह नहीं हुआ, नहीं तो
तू अपने पति को दुःख देती ।
- ३१३ तल्प—शय्या ।
- ४६६ कंडु—खुजली ।
- ५२३ असु—प्राण ।

अनेकार्थमंजरी

- ४१ गज-पुष्कर—हाथी की सूँड़ ।
- ६० बहिक्रम—आयु ।
- ६६ भगर-बिद्या—हाथ की स-
फाई, जादू ।
- ६६ द्विभुजस्फालन—दोनो हाथों
का संघर्ष, ताली ।

मानमंजरी नाममाला

- २ करुनार्नव—दया के सागर ।
- ७६ लुकअजन—“वह कल्पित
अंजन जिसके विषय में यह
प्रसिद्ध है कि इसके लगाने से
लगानेवाला अदृश्य हो जाता
है” (हिंदी-शब्दसागर) ।
- १०० उसीसे सौ उठैंगि—तकिया
की टेक लगा कर ।
- ११८ मुहकरि—कदाचित् आम
की चोपी ।

स्यामसगाई

- १४ अरदास—प्रार्थना ।
- २२ चरबाई—चतुर, चालाक ।
- २३ लंगर—नटखट ।
- २५ अचपलौ—अत्यंत चंचल ।
- ४४ अरस-परस—दर्शन ।
- ५४ ब्हँक—बहँक कर, बेसुध हो
कर ।
- ६४ ही—थी ।

- ७४ गारुड़ी—मंत्र द्वारा सर्प का विष उतारने वाला व्यक्ति ।
- ९६ बाइगी—कहने वाला (विशेष—कदाचित् इस शब्द का सबध हिंदी 'बायक' तथा स० 'वाचक' से है^१) ।
- १११ डोल—भूला ।
- ११२ भोंटा—भोंका ।

भँवरगीत

- ४१ उपाधि—छल, भ्रम ।
- ५३ अवतारि कै—उत्पन्न कर ।
- ५६ जोग ऊधौ जेहि पावौ—जिसे (योग का) अधिकारी समझो ।

^१ श्री विश्वम्भर नाथ मेहरोत्रा इस शब्द का संबंध 'बाई' से जोड़ते हुए लिखते हैं—“बाई वह रोग है जिसके प्रकोप से मनुष्य अपने होश में न रहकर ऊटपटांग बातें बकने लगता है । संभवतः 'ऊटपटांग' बातों के अर्थ में ही 'बाइगी' शब्द का यहाँ प्रयोग हुआ है” ('स्याम-सगाई, और रुकमिनी-मंगल,' टिप्पणी, पृ० ५) ।

- ८४ सायुज्य—एक प्रकार की मुक्ति जिस में जीवात्मा परमात्मा में लीन हो जाती है ।
- १२३ करम... किये—क्रम क्रम से अथवा क्रमपूर्वक कर्म करने से ।
- १२६ कर्म बंधन हूँ आवै—अवतार धारण करने के कारण हरि को कर्म करने पड़ते हैं ।
- १३१ नस्वर—नाशवान ।
- १३३ अधोक्षज—विष्णु ।
- १४२ वीरे—कान का एक आभूषण; बागे—अंग्रे की तरह का एक पहनावा, जामा ।
- १४७ बिडराति फिरति—व्याकुल हो कर इधर उधर भागती फिरती है ।
- १८२ संधान—निशाना; आयुध—अस्त्र ।
- १९९ नाहिन कोऊ चित्र—कोई आश्चर्यजनक बात नहीं है अर्थात् ये (कृष्ण) चाहे जैसा विचित्र कार्य करें उसे साधारण ही समझना चाहिए ।

- २२७ घातै—प्रहार, आक्षेप ।
 २३२ मसिहारे—काले ।
 २५३ हरि भौंति कौ—कृष्ण की
 रीति अथवा युक्तियों को ।
 २६५ बादि—व्यर्थ, निष्प्रयोजन ।
 २६६ सथा—शिक्षा, पाठ ।
 ३२३ बाध—बाधा, रुकावट ।
 ३२८ अवसेसहि—शेष भाग को ।
 ३५२ जबहि... मूठी—जब तक
 मनुष्य की मूठ बँधी रहती
 है अर्थात् जब तक वह वास्त-
 विकता से अनभिज्ञ रहता है ।

रुक्मिणी मंगल

- १८ अर सौ—हठपूर्वक ।
 ५२ काहू नाहि पतीजौ—किसी
 का विश्वास न करना ।
 ६२ सुढार—सुदर; चटा-गन—
 विद्यार्थियों के समूह ।
 ६७ अनुहारे—समान रग-रूप
 वाले ।
 ६८ रोवत है बारे—सूर्य के डर
 से अंधकार भाग जाता है,
 अमर उसी के छोटे छोटे
 बालक है जो उस के चले
 जाने के कारण रो रहे हैं ।

- ७१ अरकै—टकराती है; अरक-
 किरन—सूर्य की किरणें ।
 ७३ जाल-रघ्न-मग... धुरवा—
 अट्टालिकाओं के झरोखों की
 जालियों के मार्ग से निकलता
 हुआ अगर लकड़ी का धुआँ
 जलपूर्ण मेघ के समान प्रतीत
 होता है ।
 ७५ बगर बगर—प्रत्येक महल के
 ऊपर; गुड़ी—पतंग ।
 ८७ छिप्र गति—शीघ्रतापूर्वक ।
 १०६ सचु—सुख ।
 १२६ कौल—कौर, ग्रास; तंतर—
 लाचार, विवश (विशेष—
 कदाचित् इस शब्द का
 संबंध सं० 'तंत्र' से है) ।
 १२७ पानिप—ओप, काति; धोरे
 —श्वेत, उज्ज्वल ।
 १२८ ओरे—ओले ।
 १३२ गोमाय—शृगाल ।
 १३५ परेवा—कबूतर ।
 १३६ छिया—छोकरी, लड़की ।
 १४४ अरबर मै—अत्यंत शीघ्रता
 करने के कारण, हड़बड़ी में ।
 १४८ दाह... जैसै—अरणी नामक
 काठ के बने हुए एक यंत्र

को तेज़ी से मथने से अग्नि
उत्पन्न होती है ।

१७८ चहले दहले—थाले के कीचड़
मे ।

१८१ श्रीवत्स-बच्छ—विष्णु का
वक्षस्थल ।

१९२ ओज उबारे—शक्ति का उ-
बाल अथवा जोश, पराक्रम
की लंबी चौड़ी बाते ।

१९५ ऊजन—सुदृढ़ ।

२१९ डहडह्यौ—आनदित ।

२२० गहगह्यौ—कातियुक्त ।

२२३ खुभी—कान का एक आभू-
षण ।

२२५ अंस—कधा ।

२२८ बेभा—निशाना, लक्ष्य ।

२३३ हरै हरै—धीरे धीरे ।

२३८ मधुहा—शहद निकालने
वाला व्यक्ति ।

२४४ जूप—यज्ञ का वह खंभा
जिस में बलि का पशु बाँधा
जाता है । जूप लागे—यूप
से बँधे हुए बलि-पशु के
समान विवश; बजमारे—
वज्र से मारे (एक प्रकार की
गाली) ।

२५३ कुलही—टोपी ।

रासपंचाध्यायी

५ नीलोत्पल-दल—नीले कमल
का पत्र ।

२१ कुडिका—कूंडी, पथरी ।

२३ सिध . . . अस—गरदन पर
घने बाल (अयाल) वाले
सिंह के समान शोभित ।

३३ गार—गहरा गड्ढा ।

३८ पंचप्रान—पाँच वायु (प्राण,
अपान, समान, व्यान और
उदान) ।

४५ बीरुध—बेल ।

७० धर मै—पृथ्वी के भीतर ।

७५ इक बितस्ति कौ—एक
बालिस्त का; संकु—खंभा ।

७७ करनिका—कमल का छत्ता ।

७९ कौस्तुभ मनि—समुद्र से
निकला हुआ एक रत्न जिसे
विष्णु अपने वक्षस्थल पर
धारण करते हैं ।

८० उड़—नक्षत्र ।

१०० छपा—रात्रि ।

१०५ कुज-रंध्रनि—कुजों के छिद्रों
के बीच से (कुजों की

- पत्तियों के बीच के रिक्त स्थान से) ।
- १०६ बितन—फैला हुआ, विस्तृत; बितान—शामियाना; तनाव—शामियाने को खींचे रहने वाली रस्सियाँ ।
- १२३ पंचभौतिक तै न्यारी—पंच भूत (पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश) द्वारा बने हुए मनुष्यों के साधारण शरीर से भिन्न ।
- १२६ सच्यौ—एकत्रित ।
- १३५ चली ढुकि—शीघ्रतापूर्वक चली ।
- १४० छबि-बिलुलित—सुदरता से हिलती हुई ।
- १५० उदर-दरी. रखवारी—जब परीक्षित अपनी मा उत्तरा के गर्भ में थे तभी द्रोणाचार्य के पुत्र अश्वत्थामा ने उन पर ब्रह्मास्त्र का प्रहार किया था । उस समय गर्भ के भीतर प्रवेश कर के कृष्ण ने उन की रक्षा की थी^१ ।
- १६६ राका-मयक—पूर्णिमा का चंद्रमा ।
- १६९ अनु—समीप ।
- २०० घर... है—स्त्रियो का गृहस्थ धर्म भ्रम है (असत् ज्ञान है), तुम्हारे रूप के सामने उस का कोई महत्त्व नहीं है ।
- २०४ ते रहे कौर तै—वे एक पक्ति से (मंत्रमुग्ध की भाँति) खड़े हुए हैं ।
- २१८ नव-नीत... हिय—नए प्राप्त किए हुए मित्र का मक्खन के तुल्य (कोमल) हृदय ।
- २२६ भीर—समूह ।
- २३३ धूंधरी—धुंधली ।
- २६० छिलछिल—छिछिला ।
- २६५ पुट—हलका रंग ।
- २७३ जाति—चमेली की जाति का एक पुष्प । जूथिका—जूही का पुष्प ।
-
- ^१ दे० 'दशम स्कंध', अध्याय १, पंक्ति ८३-८८ तथा 'श्रीमद्भगवत्', स्कंध १, अध्याय ८

- २७६ करबीर—कनेर ।
- २८१ दुख-कंदन—दुःख को नष्ट करने वाले ।
- २८७ नैसुक—थोड़ा ।
- २९२ पनस—कटहल ।
- ३०२ मुख-चाँदने—मुख के प्रकाश में, मुखचंद्रिका में ।
- ३१३ भृंगी—बिलनी नाम कीड़ा ।
इस के विषय में यह प्रसिद्ध है कि यह किसी कीड़े को पकड़ कर मिट्टी से ढक देता है और स्वयं उस पर बैठ कर भिन्न भिन्न शब्द करता है ।
भृंगी के भय से वह कीड़ा भी उसी का सा हो जाता है ।
- ३४१ मानिनि-तन-काछे—मानिनी का शरीर धारण किए हुए ।
- ३४५ क्वासि—कहाँ हो ।
- ३५३ दृगचल—पलक ।
- ३५५ अदुरि-बदुरि—लौट कर ।
- ३५८ अवधि-भूत इदिरा—अपने चरम उत्कर्ष को प्राप्त लक्ष्मी ।
- ३७१ प्रनत-मनोरथ-करन—प्रणाम करते हुए अर्थात् शरणागत की इच्छाओं को पूर्ण करने वाले ।
- ३८६ सनै सनै—धीरे धीरे ।
- ३९० अटवी में अटत—वन में घूमते फिरते हो; कूर्प—कटीली घास; अन्यारे—नुकीले ।
- ३९२ अलबल बोलें—ऊटपटाँग बातचीत करती है ।
- ३९४ दृष्टिबंध करि—(इंद्रजाल अथवा जादू के प्रभाव से दर्शकों की) नज़र बाँध कर; नटवर—श्रेष्ठ नट या मदारी ।
- ४०५ पटकी—कमर में बाँधा जाने वाला दुपट्टा ।
- ४१६ एव—ही ।
- ४५१ तूल—भगडा ।
- ४५२ निरवधि—असीम, सूल—पीडा, दुःख ।
- ४७७ तिरप—“नृत्य में एक प्रकार का ताल जिसे त्रिसम या तिहाई कहते हैं” (हिंदी-शब्दसागर) । त्रिसम अथवा तिहाई के ताल में नृत्य करने वाला तीन बार तेज़ी से एक ही स्थान पर चक्कर खाता है । अंतिम बार

जिस समय वह रुकता है
उसे त्रिसम का मुख्य ताल
(सम) कहते हैं ।

४७७-७८ कोई सुंदर स्त्री किसी
सखी के हाथ (हथेली) पर
त्रिसम का ताल बाँध कर
अथवा त्रिसम की गति से
नाचती है । उसे नाचता देख
कर ऐसा प्रतीत होता है मानों
हथेली पर लट्टू नाच रहा
हो; इस दृश्य को देख कर
कृष्ण लट्टू (मुग्ध) हो जाते
हैं ।

४९६ सुलफ—कदाचित् यह शब्द
'सुलप' (=सुंदर आलाप) का
विकृत रूप है ।

५१६ गोलक—आँख की पुतली ।

५३४ दगरौ—मार्ग ।

५३८ ब्रीडन—लज्जित करने
वाले ।

५३९ मरगजी-माल—गीजी अथवा
मली हुई माला ।

५५९ भाँति—रीति ।

५८३ अधिकारी—उपयुक्त पात्र ।

५८६ हरि-धर्म-बहिर्मुख—वैष्णव-
धर्म-विरोधी ।

सिद्धांत पंचाध्यायी

६ महाभूत—पचतत्त्व (पृथ्वी,
जल, अग्नि, वायु, आकाश) ।

७ महत्त्व—जीवात्मा ।

१० बिस्व-प्रभव—विश्व की
उत्पत्ति का कारण ।

१४ आश्रय—अवलंब, आधार;
अवधि-भूत—चरम उत्कर्ष
को प्राप्त ।

१८ निरोध—प्रतिबंध अथवा
नियंत्रण ।

२६ निरतास—इस शब्द का
भावार्थ सार या निचोड़
जान पड़ता है ।

२७ ननु—निश्चयपूर्वक ।

६० खेवा—संभवतः इस शब्द का
प्रयोग यहाँ 'समूह' के अर्थ
में हुआ है ।

६१ निदेसा—निर्देश, आज्ञा ।

७७ आत्मा-निष्ठ—आत्मा में
स्थित; आत्म-गामी—
आत्मा को जानने वाला ।

७८ अनावृत—जो ढँका न हो,
प्रत्यक्ष ।

८० निरवृत्ति-परा तै—मुक्ति-

- दायिनी होने के कारण ।
 ८४ इच्छै—इच्छा करते हैं ।
 १५८ ऊती—क्रीड़ा, खेल ।
 २१६ काम्य—“वह यज्ञ वा कार्य जो किसी कामना की सिद्धि के लिए किया जाय” (हिंदी-शब्दसागर) ।
 १२० अनाकर्न—न मुनने वाला ।
 २२३ अविसेखै—समान रूप से ।
 २२५ अष्टाग-साधना—आठ प्रकार की योग की क्रियाएँ (यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, और समाधि) ।
 २३३ आलात—जलती हुई लकड़ी ।
 २३४ अंसनि—कधो पर ।
 २४० अनागत—अकस्मात् ।
 २७४ छिया करि—घृणित वस्तु मान कर ।

दशम स्कंध

प्रथम अध्याय

- १ लच्छन—श्रीमद्भागवत पुराण के वर्ण्य विषय जो सृष्टि की उत्पत्ति और लय

आदि से संबध रखते हैं । इन की संख्या दस है—सर्ग, विसर्ग, स्थान, पोषण, ऊति, मन्वन्तर, ईशानुकथा, निरोध, मुक्ति, और आश्रय । इन में प्रथम नौ का वर्णन दसवे विषय ‘आश्रय’ (परब्रह्म श्री कृष्ण का चरित्र) को भलीभाँति मनोगत करने के लिए है । फलतः ‘आश्रय’ को नौ लक्षणों का लक्ष्य कहा गया है^१ ।

- १२ रेनुकनूका—धूल का कण ।
 १७ दया दरेर—दया के ‘प्रवाह’ का ‘धक्का’ अर्थात् असीम दया ।
 २४ महदादिक—‘महत्’ अथवा महत्तत्त्व (तथा पञ्च महाभूत, शब्दादि, तन्मात्रा व इन्द्रिय) आदि प्रकृति में होने वाले विकार । महर्षि कपिल के साख्य मत में इन्हें सृष्टि का

^१ दे० ‘श्रीमद्भागवतभाषा’, स्कंध २, अध्याय १० तथा स्कंध १२, अध्याय ७

- कारण माना गया है और 'कारणसृष्टि' की संज्ञा दी गई है ।
- २५ बिसर्ग—महत्तत्त्व आदि कारणों द्वारा उत्पन्न समस्त चराचर के स्थूल शरीर । इन्हें 'स्थूलसृष्टि' अथवा 'कार्यसृष्टि' कहा गया है ।
- २६ मर्जाद बितान—मर्यादा का विस्तार अथवा उत्कर्ष; 'थान'—अपनी अपनी मर्यादा का पालन करते हुए सूर्यादिक जिस उत्कर्ष अथवा श्रेष्ठता को प्राप्त करते हैं उस का नाम 'स्थान' है ।
- २६ समीचीन—यथार्थ; 'मन्वंतर' वृत्ति—मनु आदि के धर्माचरण में संलग्न होने का नाम ।
- ३० 'ईसान कथा'—राजाओं का जीवनचरित ।
- ३१ निरोध—दुष्ट राजाओं को परास्त कर के अपने वश में करना (विशेष—श्री कर्मचंद गुगलानी के अनुसार 'निरोध' शब्द का यह अर्थ श्रीधर स्वामी कृत है) ।
- ३६ अवर निरोध भेद—उपर्युक्त गुगलानी जी के अनुसार वल्लभाचार्य ने 'निरोध' शब्द का अर्थ दो प्रकार से किया है—(१) प्रपञ्च विस्मृतिपूर्वक भगवान् में भक्त की आसक्ति (२) आत्मविस्मृतिपूर्वक भगवान् की अपने भक्त में आसक्ति । आगे की पंक्तियों में कवि ने दोनों प्रकार के 'निरोध' का वर्णन किया है ।
- ६४ पितृहि न . . दियौ—यदु ययाति राजा के पुत्र थे । एक समय ययाति के पापाचरण से क्रुद्ध हो कर शुक्राचार्य ने उन्हें श्राप दे कर तुरंत वृद्ध कर दिया किंतु क्रोध शांत होने पर बाद में उन्होंने ने यह भी कहा कि तुम किसी पुरुष की युवावस्था के साथ अपनी वृद्धावस्था बदल सकोगे । कामुक ययाति ने अपने पुत्र यदु से अपनी युवावस्था देने के लिए आग्रह किया किंतु उस ने ऐसा

- करना अस्वीकार किया^१ ।
 ६६ बिभावन—उत्पन्न करने वाले ।
 ६६ इषे—इच्छानुसार ।
 ७१ मुमुषन कौ—मुमुक्षुओं को, मुक्ति पाने के इच्छुक व्यक्तियों को; संसृति—आवागमन ।
 ७७ अतिरथि—वह व्यक्ति जो बहुत योद्धाओं के साथ अकेले ही लड़ सकता हो ।
 ८० गिलत—निगलते हुए ।
 ८१ दुरत्यय—अपार ।
 ८६ उदर-दरी में पैसे—देखिए पृष्ठ ५८१ ।
 ९० अर्भ—बालक ।
 ९४ धर्म के बर्म—धर्म के रक्षक ।
 १०१ बैयासिक—व्यास के पुत्र ।
 ११० कलमल्यौ—आकुल हुए ।
 ११६ बिबुधन सौ—देवताओं से ।
 १२४ परिकर—अनुचरों का समूह ।
 १३७ किंक्यान—केकान देश के
- घोड़े; पलान—चारजामा ।
 १४४ जंता—सारथी ।
 १४७ आनकदुदुभि—वसुदेव ।
 १४६ अमै—क्षति, अनिष्ट^१ ।
 १६१ सुरापी—शराबी ।
 १७४ औन—कदाचित् इस शब्द का संबंध सं० 'अवन' (= सुख) से है ।
 १९७ कर्म-कषाय—कर्म रूपी क-सैलापन ।

द्वितीय अध्याय

- २९ बिसंसृत भयौ—गिर गया ।
 ४१ सुसा—बहिन; गुबिनी—गर्भिणी ।
 ५६ प्रपन्न—आश्रित ।
 ६३ ऊर्ननाभि—मकड़ी ।
 ६४ बिस्फुल्लिग—चिनगारी ।
 ७० वार—इस पार अर्थात् संसार में ।
 ७७ उखटि कै परे—लड़खड़ा कर गिरे ।

^१ दे० श्रीमद्भागवत, स्कंध ६, अध्याय १८

^१ श्री कर्मचन्द गुगलानी ने इस का अर्थ “इस तरह” दिया है ।

तृतीय अध्याय

- ५७ उपसंहारौ—परित्याग करो ।
 ६७ लटि रही—लुभा रही ।
 ७० धूमि—चक्कर खा कर,
 व्याकुल हो कर ।

चतुर्थ अध्याय

- ३ रौर—कोलाहल ।
 १७ गारौ—गर्व ।
 २३ ब्रम्हहा—ब्रह्महत्या करने
 वाला ।
 २५ सौनक—कसाई ।
 ३८ बल्गन करै—बक बक करते
 हैं, बाते मारते हैं ।
 ५२ बृकन—भेड़ियों को; अजन
 प्रति—बकरियों के समीप ।

सप्तम अध्याय

- २० बरहे—खेत सीचने वाली
 छोटी नाली ।
 २१ अभिचार—मंत्र आदि के
 प्रयोग द्वारा प्रेरित ।
 ३० कूट—पर्वत की चोटी ।
 ३६ सोंकरी—संकट, कष्ट ।
 ४३ परी... धुकि—पृथ्वी पर
 गिर पड़ी ।

- ५० घुरि गयौ—लिपट गया ।
 ५३ किरच किरच—टुकड़े टुकड़े
 होकर ।

अष्टम अध्याय

- १२ अतीन्द्रिय—इन्द्रियों के अनु-
 भव के परे, अगोचर ।
 ४० नाक-नथूली—नाक की छोटी
 नथ; भगूली—बच्चों के
 पहनने का ढीला कुरता ।
 ४१ जटित बधूली—सोने अथवा
 चाँदी में जड़ा हुआ छोटा
 बाध का नाखून ।
 ६१ खरिक—पशुओं के रहने का
 स्थान, बाड़ा; खोरि—गली ।
 ६४ अरग अरग—चुपके चुपके ।
 ८६ लिलाई—लीला अथवा क्रीड़ा
 करता है ।
 १०१ माखन मो हारे—यह पाठ
 चिंत्य है ।
 १०३ हित-ईषनी—हित की प्रबल
 इच्छा रखने वाली ।

नवम अध्याय

- ११ पृथु—चौड़ी; बिलुलित—
 हिलती हुई; कबरी—
 चोटी ।

१२ नेत—मथानी की रस्सी ।

४८ नोई—दूध दुहते समय गाय के पैर बाँधने की रस्सी ।

४९ अवर . . . साँठि — और (रस्सी) जोड़ ली ।

८२ दरबी—दाल आदि चलाने का पात्र, चमचा ।

दशम अध्याय

४२ अब्यय—सदा एक से रहने वाले ।

५४ परिचर्या—सेवा ।

६८ ऊक—अंगार; बिभाकर . . टूक—दो सूर्यो के टुकड़े ।

७० गुह्यक—कुबेर के यक्ष ।

एकादश अध्याय

२४ पाँवरि—खड़ाऊँ ।

५५ नाख्यौ—पटका, फेका ।

६२ सुठे—सुदर ।

१११ बिचेतन—मूर्च्छित ।

१३७ अगदराज—औषधियो के राजा ।

द्वादश अध्याय

२९ नर-दारक—मनुष्य का बेटा ।

४३ तिलोदक—“मृतक संस्कार की एक क्रिया जिस में जल और तिल लेकर मृतक के नाम से छोड़ते है” (हिंदी-शब्दसागर) ।

५४ तरहर—नीचे ।

८४ गह्वर—अंधकारमय, गूढ़ स्थान ।

९७ सूत—पुराणवक्ता ।

११२ अनघ—पाप से मुक्त ।

त्रयोदश अध्याय

२१ बिसाखा—सत्ताइस नक्षत्रों के समूह में सोलहवाँ नक्षत्र ।

१०७ अजा जवनिका—माया का पर्दा ।

चतुर्दश अध्याय

४ ईड्य—प्रशंसनीय, स्तुत्य; तड़िदिव—बिजली की भाँति ।

६ अवतंस—श्रेष्ठ ।

४७ अनासक्त—लोभ रहित ।

६७ त्रिसरैन—“वह चमकता हुआ कण जो छेद में से आती हुई धूप में चलता या

घूमता दिखाई देता है”
(हिंदी-शब्दसागर) ।

षोडश अध्याय

- ८ हृद—भील ।
१७ अमुना—इस से ।
४८ बरियारौ—बलवान ।
५१ माड़े—मैदे की बनी हुई
एक प्रकार की बहुत पतली
रोटी; ^१ भाँड़े—बरतन ।

सप्तदश अध्याय

- ६ दौर—धावा ।
१४ भिहरानौ—टूट पड़ा; मधु-
रिपु-आसन—गरुड़ ।
२६ लेलिह—सर्प ।

अष्टादश अध्याय

- ३१ बीरी—समूह, दल ।
४० टोल—मडली ।

एकोनविंश अध्याय

- २० बगदी—लुढ़क चली ।

विंश अध्याय

- ३ प्रावृट—पावस, वर्षा ।
१६ उत्पथ—कुमार्ग ।
२१ बुढी—राम की बुढिया, बीर-
बहूटी, लुढी—लुढ़क चली;
उछलीध्र—कुकुरमुत्ता ।
२७ ऊग्मी—तरंग, लहर ।
५४ बनौकस—बनवासी ।
५६ कचोर—कटोरा ।
६८ गतकल्मष—पाप रहित ।
८७ पुहुपवती—रजस्वला ।

एकविंश अध्याय

- ४५ भई . . ईरति—मुनियो (के
हृदय) को आदोलित अथवा
चंचल किया ।

द्वाविंश अध्याय

- २ दारिका—कन्याएँ ।
६ हविषा—साकल्य, जौ तिल
आदि मिली हुई हवन की
सामग्री ।

^१ दे० श्रीमद्भागवत, १०-१६-
२४ पर श्रीधर स्वामी की टीका—
“मंडकपाकभाजनंतद्वत्” ।

- १३ अमुना—इस ।
 ३५ बेपत—कॉपती है ।
 ४६ आत्यंतिक—बहुत काल तक
 ठहरने वाला ।

त्रयोविंश अध्याय

- ११ जाचंग्या तै—माँगने से ।
 २० ओदन—भात ।
 २१ मचिबौ—उत्तेजित होना ।
 ३० अरथी—गरज वाला ।
 ६७ अध्यास—मिथ्याज्ञान, भ्रम ।
 ६६ जजन—यज्ञ का स्थान ।
 ७० सन्न—समीप [संभवतः इस
 शब्द के स्थान पर 'सत्र'
 (=यज्ञ) पाठ रहा होगा^१] ।
 ७७ रलक—चोटी ।
 ८२ असूया—ईर्ष्या ।

पंचविंश अध्याय

- १ पचविंस—पंच तत्त्व तथा
 उन की पाँच प्रकृतियाँ ।
 ४ घाती—छल, चालबाजी ।
 ५ उरन पूँछि—भेड़ की पूँछ ।

- २६ सॉप बंठना—कदाचित् यह
 कुरुरमुत्ता का प्रादेशिक नाम
 है । श्रीमद्भागवत में इस के
 लिए 'छत्राक' शब्द प्रयुक्त
 हुआ है^१ ।

सप्तविंश अध्याय

- २१ दुरासद—कठिन ।

एकोनत्रिंश अध्याय

- १६ खर्जादिक—संगीत के षड्ज
 आदि सात स्वर ।
 ४६ पारषद—पास रहने वाला,
 मुसाहब ।
 १२० कलगी—पक्षियों के पंख
 जिन्हें मुकुट आदि पर लगाया
 जाता है ।
 १२१ आरज-पथ—उच्च कुल की
 मर्यादा ।
 १२२ कौर तै—पक्ति से, क्रतार
 में ।

पदावली

- ६ कोरन सथिया चीतति—
 कोनो में स्वस्तिक चिह्न

^१ दे० श्रीमद्भागवत, १०-२३-

- चित्रित करती है । कर ।
- ८४ गौरी—एक राग । १८४ भुरकौ—छिड़का हुआ ।
- १०७ उरप तिरप—नृत्य का एक २३४ अनाघात—“संगीत के
भेद । अंतर्गत ताल विशेष । वह
१२० हस्तक—ताली । विराम जो गायन में चार
१२८ मड़हन—मुंडेरियो पर । मात्राओं के बाद आता है
१३२ हटरी—दिवाली के अवसर और कभी कभी सम का
पर मिट्टी का बनाया हुआ एक काम देता है” (हिंदी-शब्द-
छोटा सा मकान जो विशेष सागर) ।
रूप से सजाया जाता है । २८५ निस्तम—अंधकार रहित,
१५१ रमकि रमकि—पेग मार उज्ज्वल ।
-

